माणिकचन्द्र दि० जैन ग्रन्थमाला : ग्रन्थांक-४८

जैन शिलालेख संग्रह

[भाग चार]

संग्राहक-संपादक

डॉ० विद्याधर जोहरापुरकर,
एम० ए०, पीएच० डी०

प्रकाशक

भारतीय ज्ञानपीठ काशी

प्रथमावृत्ति] वीर निर्वाण संवत् २४९१ [मूल्य — रुपये

अनुक्रमणिका

प्रधान सम्पादकीय

प्राचीन कालकी मानवीय प्रवृत्तियोका विधिवत् वर्णन व विश्लेषण ही इतिहास है। ऐसे इतिहासके लिए आधारभूत सामग्री प्राप्त होती है मानव-की निर्मितियोके भग्नावशेषो अर्थात् गुफाओ, चैत्यो, स्तूपो, समाधियो, गृहो, मन्दिरादि धर्मायतनो व मूर्तियो जैसे स्थापत्यके भग्नावशेषोसे, चित्रोमे व साहित्यिक रचनाओसे। किन्तु इनसे भी अधिक प्रामाणिक और यथावत् वृत्तान्त उन लेखोसे मिलता है जो राजाओ व अन्य धनिकोके दानकी तथा उनके द्वारा निर्माण कराये गये मन्दिरादिकी स्मृति-रक्षणार्थ पाषाणखण्डो व ताम्रपटो आदि पर उत्कीर्ण कराये गये पाये जाते है। ऐसे प्राचीनतम लेखोकी लिपि बहुधा वही ब्राह्मी है जिससे आजकी नागरी लिपि विकसित हुई है, तथापि उसका प्राचीनतम रूप इतना भिन्न था कि उसे पढना बहुत कठिन सिद्ध हुआ। बडे परिश्रमके पश्चात् उस लिपिकी कुजी हाथ लगी, जिससे लगभग गत अढाई सहस्र वर्षोके शिलालेख पढे और समझे जा सके। किन्तु चालीस-पचास वर्ष पूर्व सिन्धु घाटीसे ऐसे भी मुद्रालेख प्राप्त हुए है, जिन्हे पढने और समझनेका अभी प्रयास ही चल रहा है, कोई सफलता प्राप्त नही हो सकी।

जो प्राचीन शिलालेख पढे गये और प्रकाशित हुए वे पुरातत्त्व विभागके बहुमूल्य व दुर्लभ ग्रन्थमालाओ व पत्रिकाओमे समाविष्ट पाये जाते है। इनमें जैन धर्म सम्बन्धी शिलालेखोका वितरण भी यत्र तत्र बिखरा पाया जाता है। इन लेखोका ऐतिहासिक महत्त्व तब प्रकट हुआ जब सन् १८८९ मे मैसूरके पुरातत्त्व विभागकी ओरसे श्रवणबेलगोलके १४४ शिला-लेखोका अलगम सग्रह एक विद्वत्तापूर्ण प्रस्तावना सहित प्रकाशित हुआ। सन् १९२२में इसका सशोधित और परिवर्धित सस्करण प्रकाशमें आया

जिसमे शिलालेखोंकी संख्या ५०० हो गयी। इसी बीच सन् १९०८ मे फ्रांसीसी विद्वान् गैरीनोकी एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई, जिसमे उन्होंने तब तक प्रकाशित हुए आठ सौ पचास जैन शिलालेखोका परिचय कराया। इस सब सामग्रीके सम्मुख आनेपर कुछ जैन विद्वानोकी आँखें खुलीं, और उन्हें अनुभव हुआ कि जब तक इस सामग्रीका उपयोग करते हुए धर्म व साहित्य सम्बन्धी लेख नहीं लिखे जायेंगे तबतक जैनधर्मका प्रामाणिक इतिहास प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। स्वभावतः उस समय जो विद्वान् जैन साहित्य और इतिहासके संशोधनमें तल्लीन थे उन्हे इस आवश्यकताका विशेष रूपसे बोध हुआ। इनमे माणिकचन्द्र ग्रन्थमालाके संस्थापक व प्रधान सम्पादक स्वर्गीय पं० नाथूरामजी प्रेमीकी याद आती है। उन्होंने ही अपनी प्रेरणा-द्वारा जैनशिलालेख संग्रहका प्रथम भाग तैयार कराकर प्रस्तुत ग्रन्थमालाके २८वें पुष्पके रूपमे प्रकाशित किया, जिसमे श्रवण-बेलगोलके उपर्युक्त पाँच सौ शिलालेख नागरी लिपिमे हिन्दी सारांश तथा विस्तृत भूमिका व अनुक्रमणिकाओं सहित जिज्ञासुओं व लेखकोंको अति सुलभ हो गये। इसका तुरन्त ही हमारे साहित्य व इतिहास संशोधन कार्यपर महत्त्वपूर्ण प्रभाव दृष्टिगोचर होने लगा। तद्विषयक लेखोंमे इनके उपयोग द्वारा बड़ी वांछनीय प्रामाणिकता आने लगी जिसके लिए प्रेमीजी-जैसे विद्वान् बहुत आतुर थे। अब उन्हे अन्य शिलालेखों को भी इसी रूपमे सुलभ पानेकी अभिलाषा तीव्र हुई जिसके फलस्वरूप उक्त गैरीनो महोदयकी रिपोर्टके आधार शिलालेख संग्रह भाग २ और ३ में ('ग्र० ४५-४६ सन् १९५२, १९५७) आठ सौ पचास लेखोंका पाठ व परिचय हमारे सम्मुख आ गया।

आगेका लेख-संग्रह कार्य बड़ा कठिन प्रतीत हुआ, क्योंकि इसके लिए कोई व्यवस्थित सूचियाँ उपलब्ध नही थीं। किन्तु इस कार्यको पूरा कराना हमने अपना विशेष कर्तव्य समझा। सौभाग्यसे डॉक्टर विद्याधर जोहरापुरकरने यह कार्य-भार अपने ऊपर लेकर विशेष प्रयासों द्वारा यह छह सौ

चौवन लेखोका परिचय करानेवाला चौथा संग्रह प्रस्तुत कर दिया। प्रस्तावनामें उन्होने लेखोका काल, प्रदेश, भाषा, प्रयोजन, मुनिसघ, गोत्र-वश आदि दृष्टियोमे जो विश्लेपण व अध्ययन किया है वह बहुत महत्त्वपूर्ण है इसके लिए हम उनके बहुत कृतज्ञ है। हमें दु ख है कि पण्डित नाथूरामजी प्रेमी आज हमारे बीच नहीं रहे। कितना हर्ष होता उन्हें इस नये लेख सग्रहको देखकर।

शिलालेख-सग्रहके इन भागोमें सकलित सामग्रीका जैन साहित्य और इतिहासके सशोधन कार्यमें विशेष उपयोग हो रहा है, और होगा इसमें सन्देह नही। किन्तु इस विषयमें अब तकके अनुभवके आधारसे कुछ सूचनाएँ कर देना हम अपना कर्तव्य समझते है—

१ लेखोका जो मूल पाठ यहाँ प्रस्तुत किया गया है, वह सावधानी पूर्वक तो अवश्य लिया गया था, तथापि उसे अत-प्रमाण होनेका दावा नही किया जा सकता। कन्नड लेखाको यहा जो देवनागरीमें लिखा गया है उसमें भी लिपिभेदसे अशुद्धियाँ हो जाना सम्भव है। आगे-पीछे विशिष्ट विद्वानो-द्वारा पाठ व अर्थ-सशोधन सम्बन्धी लेख लिखे ही गये होगे। अतएव विशेष महत्त्वपूर्ण मौलिक स्थापनाओके लिए सशोधकोको मूलस्रोतोका भी अवलोकन कर लेना चाहिए।

२ इधर कुछ कालसे ऐसी प्रवृत्ति दिखाई देती है कि जहाँ दो आचार्योंमें नाम-साम्य दिखाई दिया वहाँ उन्हें एक ही मान लिया गया। किन्तु यह बात भ्रामक है। एक ही नामके अनेक आचार्य विविध कालोमें भी हुए है और सम-सामयिक भी। अतएव उन्हें एक सिद्ध करनेके लिए नाममात्रके अतिरिक्त अन्य प्रमाणोकी भी खोज करना चाहिए।

३ इन प्रकाशित शिलालेखोंमे यह अपेक्षा नही करना चाहिए कि उनमें समस्त प्राचीन आचार्योंका उल्लेख आ ही गया है अतएव इनमें किसी आचार्यके नामका अभाव किसी विशिष्ट अनुमान व तर्कका आधार

नहीं बनाया जा सकता। ये लेख जैन मुनियोंकी पूरी गणनाका लेखा नहीं समझना चाहिए।

४. कन्नड लेखोंका जो सार हिन्दीमें दिया गया है उसीके आधार मात्रसे कोई नयी कल्पनाएँ नही करना चाहिए। उसके लिए मूल पाठ और उसके शब्दशः अनुवादका अवश्य अवलोकन करना चाहिए।

यथार्थतः ये लेख-संग्रह सामान्य जिज्ञासुओंके लिए तो पर्याप्त हैं। किन्तु विशेष संशोधकोंके लिए तो ये मूल सामग्रीकी ओर दिग्निर्देश मात्र ही करते हैं।

इस ग्रन्थमालाको अपनी गोदमें लेकर श्री शान्तिप्रसादजी व श्रीमती रमारानीजीने न केवल समाजके एक अग्रणी हितैषी सेठ माणिकचन्द्रजीकी स्मृतिकी रक्षा की है व ग्रन्थमालाके जन्मदाता पं० नाथूरामजी प्रेमीकी भावनाको सम्मान दिया है किन्तु जैन साहित्यकी रक्षा व जैन इतिहासके नवनिर्माण कार्यमें बड़ी महत्त्वपूर्ण सेवा की है जिसके लिए समाज सदैव उनका ऋणी रहेगा।

— ही. ला. जैन
— आ. ने. उपाध्ये
(प्रधान सम्पादक)

प्राक्कथन

प्रस्तुत संग्रहका प्रथम भाग डा० हीरालालजी जैन द्वारा संपादित होकर सन् १९२८ में प्रकाशित हुआ था। उसमें श्रवणबेलगोल तथा निकटवर्ती स्थानोंके ५०० लेख संकलित हुए थे। इसका दूसरा तथा तीसरा भाग श्री विजयमूर्ति शास्त्री-द्वारा संकलित हुआ। इन दो भागोंमें फ्रेंच विद्वान् डॉ० गेरिनो द्वारा संपादित पुस्तक 'रिपोर्टर द एपिग्राफी जैन'के आधारमें ८५० लेख दिये हैं। डॉ० गेरिनोकी पुस्तक पैरिससे सन् १९०८ में प्रकाशित हुई थी। अतः इन दो भागोंमें सन् १९०८ तक प्रकाशित हुए लेख ही आ सके हैं। इन ८५० लेखोंमें-से १४० लेख प्रथम भागमें आ चुके हैं तथा १७५ लेख श्वेताम्बर सम्प्रदायके हैं अतः इनकी सूचना भर दी गयी है – शेष ५३५ लेखोंका पूरा विवरण दिया गया है। इस तरह पहले तीन भागोंमें कुल १०३५ लेखोंका संग्रह हुआ है।

सन् १९५७ में इस संग्रहके तीसरे भागके प्रकाशित होनेपर श्रीमान् डॉ० उपाध्येजीने हमें प्रस्तुत चौथे भागके संपादनके लिए प्रेरित किया। तबसे कोई चार वर्ष तक अवकाशके समयका उपयोग कर यह कार्य हमने किया। इसे कुछ विस्तृत रूप देनेके लिए हमने सन् १९६१ की गर्मियोंकी छुट्टियोंमें दो सप्ताह तक उटकमंड स्थित प्राचीनलिपिविद्–कार्यालयमें भी अध्ययन किया। इसके फलस्वरूप सन् १९०८ के बाद प्रकाशित हुए कोई ६५४ लेखोंका संग्रह प्रस्तुत भागमें प्रकाशित हो रहा है।

यद्यपि ये सब लेख पुरातत्त्वविभागके प्रकाशनोंमें पहले प्रकाशित हो चुके हैं तथापि साधारण अभ्यासकके लिए वे सुलभ नहीं हैं – उनका संपादन अँगरेजीमें हुआ है तथा उनका मूल्य भी बहुत अधिक है। अतः इस संग्रहमें उनका पुनः प्रकाशन उपयोगी होगा

इसमें सन्देह नही है ।

यह कहना तो संभव नहीं है कि इन भागोंमे अबतक प्रकाशित सब लेख संगृहीत हो चुके है – तथापि अधिकांश लेखोंका संग्रह करनेकी हमने कोशिश की है ।

यह स्पष्ट ही है कि इन प्रकाशित लेखोंके अतिरिक्त अभी सैकड़ों लेख अप्रकाशित भी है – विशेपकर मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात तथा उत्तरप्रदेशके सैकडों मूर्तियों तथा मन्दिरों आदिके लेखोंका अध्ययन अभी बहुत कम हुआ है । परिशिष्टमे दिये हुए नागपुर मूर्तिलेख संग्रहसे इस कार्यके विस्तारकी कल्पना हो सकती है । हमें आशा है कि इन लेखोका संग्रह भी प्रस्तुत मालाके अगले भागोंमे प्रकाशित हो सकेगा ।

माणिकचन्द्र ग्रन्थमालाके प्रारम्भसे ही इसका कार्य स्व० नाथूरामजी प्रेमीने बहुत श्रद्धा तथा उत्साहसे सँभाला था । हमें जैन इतिहासके अध्ययनमे उनसे बहुत प्रोत्साहन मिला है । खेद है कि इस पुस्तकके सम्पादनके पूर्ण होनेसे पहले ही उनका स्वर्गवास हो गया । हम उन्हें कृतज्ञतापूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करते है ।

प्रस्तुत संग्रहकी प्रेरणाके लिए हम आदरणीय डॉ० उपाध्येजीके भी ऋणी है । उटकमंडके प्राचीन लिपिविद् कार्यालयके प्रमुख डॉ० दिनेशचन्द्र सरकारसे वहाँके पुस्तकालयमें अध्ययनकी सुविधा मिली तथा वहाँके अन्य अधिकारी डॉ० गै एवं श्री० रित्तीसे अच्छा सहयोग मिला एतदर्थ हम उनके ऋणी हैं । उन सब विद्वानोंका ऋण तो स्पष्ट ही है जिन्होने इन लेखोंका पहले सम्पादन किया था तथा विभिन्न पत्रिकाओंमे उन्हें प्रकाशित किया था ।

अन्तमें कन्नड भाषा अथवा इतिहासके अज्ञानवश जो त्रुटियाँ रही हों उनके लिए हम पाठकोंसे क्षमा चाहते है ।

जावरा – दिसम्बर १९६१ – वि० जोहरापुरकर

संकेत-सूची

(अ) पूर्णतः उपयुक्त पत्रिकाएँ –

ए० इ०	एपिग्राफिया इण्डिका
रि० इ० ए०	एन्युअल रिपोर्ट आन इण्डियन एपिग्राफी
रि० सा० ए०	एन्युअल रिपोर्ट आन साउथ इण्डियन एपिग्राफी
इ० म०	इंस्क्रिप्शन्स ऑफ दि मद्रास प्रेसिडेन्सी
इ० पु०	इन्स्क्रिप्शन्स ऑफ दि पुदुकोट्टै स्टेट
ए० रि० मै०	एन्युअल रिपोर्ट ऑफ दि मैसोर आर्किऑलॉजिकल डिपार्टमेण्ट
रि० आ० स०	एन्युअल रिपोर्ट ऑफ़ दि आर्किऑलॉजिकल सर्व्हे आफ इण्डिया

(आ) अंशतः उपयुक्त पत्रिकाएँ –

सा० इ० इं०	साउथ इण्डियन इंस्क्रिप्शन्स
इं० ए०	इण्डियन एण्टिक्वेरी
मे० आ० स०	मेमॉयर्स आफ दि आर्किऑलाजिकल सर्व्हे ऑफ इण्डिया
इ० हि० का०	इण्डियन हिस्टॉरिकल कांग्रेस रिपोर्ट
इ० ओ० का०	इण्डियन ओरिएण्टल कान्फरन्स-रिपोर्ट

प्रस्तावना

१ लेखोंका साधारण परिचय—

जैन शिलालेख संग्रहके प्रस्तुत चौथे भागमे कुल ६५४ लेख संगृहीत है। इन्हे समयके क्रमसे प्रस्तुत किया है। इसमे सनपूर्व चौथी सदीका १ (क्र० १) सनपूर्व तीसरी सदीका १ (क्र० २), सनपूर्व पहली सदीके ११ (क्र० ३ से १३,) सन् पहली सदीका १ (क्र० १४), दूसरी सदीके ४ (क्र० १५ से १८), पाँचवी सदीका १ (क्र० १९), छठी सदीके दो (क्र० २० व २१), सातवीं सदी के २२ (क्र० २२ से ४३) आठवीं सदीके १० (क्र० ४४ से ५३), नौवी सदीके २० (क्र० ५४ से ७३), दसवी सदीके ४२ (क्र० ७४ से ११५), ग्यारहवी सदीके ६७ (क्र० ११६ से १८२), बारहवी सदीके १३४ (क्र० १८३ से ३१६,) तेरहवी सदीके ७३ (क्र० ३१७ से ३८९), चौदहवी सदीके ३० (क्र० ३९० से ४१९), पन्द्रहवी सदीके ३५ (क्र० ४२० से ४५४) सोलहवीं सदीके ४७ (क्र० ४५५ से ५०१), सत्रहवी सदीके १५ (क्र० ५०२ से ५१६), अठारहवी सदीके ११ (क्र० ५१७ से ५२७), तथा उन्नीसवी सदीके ८ (क्र० ५२८ से ५३५) लेख है। शेष ११९ लेखोंका समय अनिश्चित है।

इन ६५४ लेखोंमें राजस्थानके २१, उत्तरप्रदेशके ९, बिहारके ४, बंगालका १, गुजरातके ३, मध्यप्रदेशके १५, उडीसाके १६, महाराष्ट्रके ७, आन्ध्रके ४६, मद्रासके ८२, केरलका १ एवं मैसूर प्रदेशके ४४७ लेख है।

भाषाकी दृष्टिसे इन लेखोंका विभाजन इस प्रकार है — प्राकृतके १८, संस्कृतके ८८, हिन्दीके ३, तेलुगुके ८, तमिलके ७७ एवं कन्नडके ४६०।

प्रयोजनकी दृष्टिसे ये लेख मुख्यतः चार भागोंमें बांटे जा सकते हैं –८७ लेखोंमें जिनमन्दिरोंके निर्माण अथवा जीर्णोद्धारका वर्णन है, १२६ लेखोंमें जिनमूर्तियोंकी स्थापनाका वर्णन है, २०८ लेखोंमें मन्दिरों तथा मुनियोंको गाँव, जमीन, सुवर्ण, करोंकी आय आदिके दानका वर्णन है, तथा १६४ लेखोंमें मुनियों, गृहस्थों तथा महिलाओंके समाधिमरणका उल्लेख है। इसके अतिरिक्त १३ लेखोंमें गुहा-निर्माणका, ४ लेखोंमें (क्र० ४८६, ४८७, ४८९ तथा ५७६) मठोंके आर्थिक व्यवहारोंका, ३ लेखोंमें (क्र० ४२५, ४७१ तथा ४७२) साम्प्रदायिक समझौतोंका एवं एक लेख (क्र० ५०७) में सामाजिक कुरूढिके निवारणका वर्णन है।

लेखोंके इस स्थूल परिचयके बाद हम इनसे प्राप्त ऐतिहासिक तथ्योंका कुछ विस्तारसे अवलोकन करेंगे – पहले जैनसंघके बारेमें तथा बादमें राजवंशों आदिके विषयमें।

२. जैनसंघका परिचय—

(अ) यापनीय संघ—प्रस्तुत संग्रहमें यापनीय संघका उल्लेख कोई १७ लेखोंमें हुआ है। इनमें सबसे प्राचीन लेख गंग राजा अविनीतका ताम्रपत्र है जो छठी सदीके पूर्वार्धका है (ले० २०)[1]। इसमें 'यावनिक' संघ-द्वारा अनुष्ठित एक मन्दिरके लिए राजा-द्वारा कुछ दान दिये जानेका वर्णन है।

इस संघके कुमिलि अथवा कुमुदि गणका उल्लेख चार लेखोंमें है[2] (क्र० ७०, १३१, ६११ एवं ६१२)। इनमें पहले लेख (क्र० ७०) में नौवीं सदीमें इस गणके महावीर गुरुके शिष्य अमरमुदल गुरुका वर्णन है। इन्होंने कीरेप्पाक्कम् ग्रामके उत्तरमें देशवल्लभ जिनालयका निर्माण

---

१. पहले संग्रहके क्र० ९९, १०० तथा १०५ लेखोंमें ५वीं सदीके उत्तरार्धमें भी यापनीय संघका उल्लेख है।

२. पहले संग्रहमें इस गणका कोई उल्लेख नहीं है।

कराया था। दूसरे लेख (क्र० १३१) में सन् १०४५ में इस गणके कुछ आचार्योंका वर्णन है। इस समय चावुण्ड नामक अधिकारीने मुगुन्द ग्राममें एक जिनालय बनवाया था। अन्य दो लेख (क्र० ६११ तथा ६१२) अनिश्चित समयके निषिधि लेख हैं। इनमे पहला लेख इस गणके शान्तवीरदेवके समाधिमरणका स्मारक है।

यापनीय संघका दूसरा गण पुन्नागवृक्षमूल गण चार लेखोंमे ज्ञात होता है (क्र० १३०, २५९, १६८, ६०७)। पहले लेखमें सन् १०४४ में इस गणके बालचन्द्र आचार्यको पूलि नगरके नवनिर्मित जिनालयके लिए कुछ दान दिये जानेका वर्णन है। इसी लेखके उत्तरार्धमे सन् ११४१ में इस गणके रामचन्द्र आचार्यको कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। इस गणका अगला उल्लेख (क्र० २५९) सन् ११६५ का है। इसमें इस गणकी गुरुपरम्परा इस प्रकार दी है – मुनिचन्द्र – विजयकीर्ति – कुमारकीर्ति त्रैविद्य – विजयकीर्ति (द्वितीय)। शिलाहार राजा विजयादित्यके सेनापति काल्लणने एक्कसम्बुगे नगरमें एक जिनालय बनवाकर उसके लिए विजयकीर्ति (द्वितीय) को कुछ दान दिया था। एक लेखमे (क्र० १६८) वृक्षमूलगणके मुनिचन्द्र त्रैविद्यके शिष्य चारुकीर्ति पण्डितको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है – यह सन् १०९६ का लेख है। एक अनिश्चित समयके लेख (क्र० ६०७) मे भी वृक्षमूलगणके एक मन्दिर कुसुमजिनालयका उल्लेख है। हमारा अनुमान है कि इन दो लेखोंका वृक्षमूलगण पुन्नागवृक्षमूलगणसे भिन्न नहीं होगा।[1]

यापनीय संघके कण्डूर गणका उल्लेख तीन लेखोंमें है (क्र० २०७, २६८,३८६) इनमें पहला लेख १२वी सदीके पूर्वार्धका है तथा इसमे

---

१ पहले संग्रहमें पुन्नागवृक्षमूलगणके दो उल्लेख सन् ८१२ तथा सन् ११०८ के हैं (क्र० १२४, २५०)।

इस गणके बाहुबली, शुभचन्द्र, मौनिदेव एवं माघनन्दि इन चार आचार्यों-का वर्णन है – इनमे परस्पर सम्बन्ध बतलाया नही है। दूसरे लेखमे १३वी सदीमे इस गणके एक मन्दिरका उल्लेख है तथा तीसरे लेखमे इसी समयकी एक जिनमूर्तिका उल्लेख है।[1]

इसी संघके कारेयगणका उल्लेख १२वी सदीके पूर्वार्धके एक लेख (क्र० २०९) मे है। मुल्लभट्टारक तथा जिनदेवसूरि ये इस गणके आचार्य थे।[2]

पांच लेखोमे यापनीय संघका उल्लेख किसी गण या गच्छके बिना ही प्राप्त होता है (क्र० १४३,२९८–३००,३८४)। इनमे पहला लेख सन् १०६० का है तथा इससे जयकीर्ति – नागचन्द्र – कनकशक्ति इस गुरुपरम्पराका पता चलता है। अगले दो लेख १२वी सदीके है तथा इनमें मुनिचन्द्र एवं उनके शिष्य पाल्यकीर्तिके समाधिमरणका उल्लेख है। अन्तिम लेखमे १३वी सदीमे श्रैकीर्ति आचार्यका उल्लेख है।

इस तरह प्रस्तुत संग्रहसे यापनीय संघका अस्तित्व छठी सदीसे तेरहवीं सदी तक प्रमाणित होता है।[3]

(आ) मूलसंघ—प्रस्तुत संग्रहमे मूलसंघके अन्तर्गत सेनगण, देशी गण, सूरस्थगण, बलगारगण (बलात्कार गण) क्राणूरगण तथा निगमा-

---

१. पहले संग्रहमें इस गणका उल्लेख सन् ९८० में हुआ है (क्र० १६०)।

२. पहले संग्रहमें इस गणके दो लेख सन् ८७५ तथा दसवीं सदी-पूर्वार्धके हैं (क्र० १२०,१८२)।

३. पहले संग्रहमें यापनीय संघके तीन और गणोंका उल्लेख है – कनकोपलसम्भूत वृक्षमूल गण, श्रीमूलमूलगण तथा कोटिमडुव गण-(तीसरा भाग-प्रस्तावना पृ० २७–२९)।

न्वय इन छह परम्पराओंके उल्लेख विस्तारसे मिलते हैं।[1] इनका अब क्रमशः विवरण प्रस्तुत करेंगे।

(आ १) सेनगण—इसका प्राचीनतम उल्लेख सन् ८२१ का है (क्र० ५५)। इस लेखमें इसे 'चतुष्टय मूलसंघका उदयान्वय सेनसंघ' कहा है। इसकी आचार्यपरम्परा मल्लवादी-सुमति पूज्यपाद-अपराजित इस प्रकार थी। लेखके समय गुजरातके राष्ट्रकूट शासक ककराज सुवर्णवर्षने अपराजित गुरुको कुछ दान दिया था।[2]

सेनगणके तीन उपभेद थे – पोगरि अथवा होगरि गच्छ, पुस्तक गच्छ, एवं चन्द्रकवाट अन्वय। पोगरि गच्छका पहला लेख (क्र० ६१) सन् ८९३ का है तथा उसमें विनयसेनके शिष्य कनकसेनको कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। इस लेखमें इसे मूलसंघ-सेनान्वयका पोगरियगण कहा है। दूसरा लेख (क्र० १३४) सन् १०४७ का है तथा इसमें नागसेन पण्डितको सेनगण-होगरि गच्छके आचार्य कहा है। इन्हें चालुक्य रानी अक्कादेवीने कुछ दान दिया था।[3]

चन्द्रकवाट अन्वयका पहला लेख (क्र० १३८) सन् १०५३

---

१ पहले संग्रहमें उल्लिखित देवगणका कोई लेख इस संग्रहमें नहीं है। पहले संग्रहमें मूलसंघके प्राचीन उल्लेख (क्र० ९०, ९४) पाँचवीं सदीके हैं। तथा उनमें गण आदिका उल्लेख नहीं है।

२ पहले संग्रहमें सेनगणका प्राचीनतम उल्लेख सन् ९०३ का है (क्र० १३७)। इसे देखकर डॉ० चौधरीने कल्पना की थी कि आदिपुराणकर्ता जिनसेन ही सेनगणके प्रवर्तक होंगे (तीसरा भाग प्रस्तावना पृ० ४४) किन्तु प्रस्तुत लेखसे जिनसेनके गुरु वीरसेनके समयमें ही सेनसंघकी परम्पराका अस्तित्व प्रमाणित होता है। वीरसेनने धवलाटीकाकी रचना सन् ८१६ में पूर्ण की थी।

३ पहले संग्रहमें पोगरिगच्छके चार उल्लेख सन् १०५५ से १२७१ तक के आये हैं। (क्र० १८६,२१७,१८६,५११)

का है तथा इसमें अजितसेन-कनकसेन-नरेन्द्रसेन-नयसेन इस परम्पराका वर्णन है। लेखके समय सिन्द कुलके सरदार कंचरसने नयसेनको कुछ दान दिया था। नयसेनके शिष्य नरेन्द्रसेन (द्वितीय) का उल्लेख सन् १०८१ के लेख (क्र० १६५) मे मिलता है। दोण नामक अधिकारी-द्वारा इन्हे कुछ दान दिया गया था। इन लेखोमे नरेन्द्रसेन तथा नयसेनकी व्याकरण-शास्त्रमे निपुणताके लिए प्रशंसा की गयी है।[1]

एक लेख (क्र० १४७) मे चन्द्रिकवाट वंशके शान्तिनन्दि भट्टारकका सन् १०६६ मे उल्लेख है। इसमे मूलसंघका उल्लेख है किन्तु सेनगणका उल्लेख नही है।

सेनगणके तीसरे उपभेद पुस्तकगच्छका वर्णन १४वी सदीके एक लेख (क्र० ४१५) मे है। इसमे ग्यारह आचार्योंकी परम्परा बतलायी है। इस परम्पराके प्रभाकरसेनके शिष्य लक्ष्मीसेनके समाधिमरणका प्रस्तुत लेखमे वर्णन है। लक्ष्मीसेनके शिष्य मानसेनका समाधिमरण सन् १४०५ मे हुआ था (ले० ४२१)।

प्रस्तुत, संग्रहके पांच लेखोमे सेनगणका उल्लेख किसी उपभेदके बिना हुआ है (क्र० ४९२, ४९३, ५०४, ५०७, ६२६)। पहले दो लेखोमे सन् १५९७ मे सोमसेन भट्टारक-द्वारा एक मन्दिरके जीर्णोद्धारका वर्णन है। अगले दो लेखों (५०४, ५०७) मे समन्तभद्र आचार्यका सन् १६२२ एवं १६३२ मे उल्लेख है। सन् १६२२ मे उन्होंने एक मन्दिरका जीर्णोद्धार किया था तथा सन् १६३२ मे दीवालीका त्योहार मनानेके ढंगमे कुछ सुधार किया था। अन्तिम लेख अनिश्चित समयका है तथा इसमे प्रसिद्ध वादी भावसेन त्रैविद्यचक्रवर्तीके समाधिमरणका उल्लेख है।[2]

---

१. पहले संग्रहमें चन्द्रकवाट अन्वयका कोई वर्णन नहीं है।

२. भावसेन कृत संस्कृत ग्रन्थ विश्वतत्त्वप्रकाश जीवराज ग्रन्थमाला (शोलापुर) द्वारा प्रकाशित हो रहा है। इसकी प्रस्तावनामें हमने भावसेनका समय १३वीं सदीका उत्तरार्ध निश्चित किया है।

इस तरह प्रस्तुत संग्रहके १३ लेखोंसे सेनगणका अस्तित्व आठवीं सदीसे सत्रहवी सदी तक प्रमाणित होता है।[1]

(आ २) देशीगण—प्रस्तुत संग्रहमे देशीगणके पुस्तकगच्छ, आर्यसंघग्रहकुल, चन्द्रकराचार्याम्नाय, तथा मैणदान्वय इन चार परम्पराओंका उल्लेख हुआ है।

पुस्तकगच्छका एक उपभेद पनसोगे (अथवा हनसोगे) बलि था। इसका पहला उल्लेख (क्र० ७४) दसवी सदीके प्रारम्भका है[2] तथा इसमें श्रीधरदेवके शिष्य नेमिचन्द्रके समाधिमरणका उल्लेख है। इस बलिका दूसरा लेख (क्र० २७२) सन् ११८० के आसपासका है तथा इसमे नयकीर्तिके शिष्य अध्यात्मी बालचन्द्र-द्वारा एक मूर्तिकी स्थापनाका वर्णन है। इस शाखाके चार लेख और है (क्र० २९२, ३३५, ४१६ तथा ५३८) जो बारहवींसे चौदहवी सदी तकके है। इनमें ललितकीर्ति, देवचन्द्र तथा नयकीर्ति आचार्योंका उल्लेख है। अन्तिम लेखमें 'पनशोकवली' इस प्रकार इस शाखाके नामका संस्कृतीकरण किया गया है।

पुस्तकगच्छका दूसरा उपभेद इंगुलेश्वर बलि था। इसका उल्लेख सात लेखोंमें (क्र० २९०, ३१०, ३६९, ३७८, ३८२, ६०६, ६४२) मिला है। ये सब लेख १२वी – १३वी सदीके है। तथा इनमें हरिचन्द्र, श्रुतकीर्ति, भानुकीर्ति, माघनन्दि, नेमिदेव, चन्द्रकीर्ति तथा जयकीर्ति

---

१ सेनगणकी पुष्करगच्छ नामक शाखा कारंजा (विदर्भ) में १५वीं सदीसे २०वीं सदी तक विद्यमान थी। इसका विस्तृत वृत्तान्त हमारे ग्रन्थ 'भट्टारक सम्प्रदाय' में दिया है। पुष्करगच्छ सम्भवत पोगिरि गच्छका ही संस्कृत रूप है।

२ यहाँ इस संग्रहमें देशीगणका पहला उल्लेख है। पहले संग्रहमे देशीगणके उल्लेख सन् ८६० (क्र० १२७) से मिले हैं तथा पनसोगे शाखाके उल्लेख सन् १०८० (क्र० २२३) से प्राप्त हुए हैं।

इन आचार्योंके उल्लेख मिलते है।[1]

प्रस्तुत संग्रहमें पुस्तकगच्छके उल्लेख बिना किसी उपभेदके भी कई लेखोंमें मिलते हैं। इनमें पहला लेख (क्र० १६४) सन् १०८१ का है तथा इसमें सकलचन्द्र भट्टारकका उल्लेख है। इस प्रकारके अन्य लेख १७ है (क्र० १३१, १७७–८, १९०, २०३, २३४, २५१, ३१८–९, ३६१-६, ४९०, ५६१)। ये लेख १६वी सदी तकके है। इनसे कोई विस्तृत गुरुपरम्पराका पता नहीं चलता[2]!

देशीगणके दूसरे उपभेद आर्यसंघग्रहकुलका उल्लेख एक ही लेख (क्र० ९४) मे मिला है। यह लेख दसवी सदीका है तथा इसमें कुलचन्द्रके शिष्य शुभचन्द्रका उल्लेख है। विशेष यह है कि यह लेख उड़ीसाके खण्डगिरिपर्वतपर मिला है जब कि देशीगणके अन्य उल्लेख मैसूर प्रदेशके है।[3]

देशी गणका तीसरा उपभेद चन्द्रकराचार्याम्नाय भी एक ही लेखसे ज्ञात होता है (क्र० २१७) तथा यह मध्यप्रदेशमें मिला है। इसमे प्रतिष्ठाचार्य सुभद्र-द्वारा १२वीं सदीके पूर्वार्धमे एक मन्दिरकी प्रतिष्ठाका उल्लेख है।[4]

देशी गणके चौथे उपभेद मैणदान्वयके शुभचन्द्र आचार्यका एक उल्लेख १३वीं सदीमें मिला है (क्र० ३७२)।[5]

---

१. पहले संग्रहमें इंगुलेश्वर बलिके उल्लेख सन् ११८२ (क्र० ४११) से सन् १५४४ (क्र० ६७२) तकके हैं।

२. पहले संग्रहमें पुस्तक गच्छके उल्लेख सन् ८६० (क्र० १२७) से सन् १८१२ (क्र० ७५२) तक दिये हैं।

३, ४ पहले संग्रहमें इन दोनों उपभेदोंका कोई उल्लेख नहीं है।

५. पहले संग्रहमें इस अन्वयका उल्लेख नहीं है इससे मिलता जुलता एक उपभेद वाणद बलि है जो पुस्तकगच्छके अन्तर्गत था (क्र० ४०८) इसका उल्लेख सन् १२२२ का है।

किसी उपभेदके बिना भी देशीगणके कई उल्लेख मिले हैं। इनमें दो लेखोंमें (क्र० ८३, १६९) सन् ९५० तथा १०९६ में गुणचन्द्र और रविचन्द्र आचार्योंका उल्लेख है। इन लेखोंमें देशी गणके साथ सिर्फ कोण्डकुन्दान्वय यह विशेषण है। कोई १८ लेखोंमें मूलसंघ – देशीगण इस प्रकार उल्लेख है। इनमें प्राचीनतर लेख (क्र० १९३, २२९, २५६) बारहवीं सदीके हैं। कोई ८ लेखोंमें देशीगणके साथ अन्य कोई विशेषण नहीं है। ऐसे लेखोंमें प्राचीनतर लेख (क्र० १२६, १३९, १४०) सन् १०३२ तथा १०५४ के हैं और इनमें अष्टोपवासी कनकनन्दि आचार्यको कुछ दान देनेका वर्णन है।

(आ ३) कोण्डकुन्दान्वय—देशी गणके पुस्तक गच्छको प्रायः कोण्डकुन्दान्वय यह विशेषण दिया गया है। कुछ लेखोंमें किसी संघ या गणके बिना सिर्फ कोण्डकुन्दान्वयका उल्लेख है। ऐसे लेखोंमें प्राचीनतर लेख (क्र० १८०, २२२) ग्यारहवीं बारहवीं सदीके हैं। एक प्राचीन लेख (क्र० ५८) में सन् ८०८ में कोण्डकुन्देय अन्वयके सिमलगेगूरु गणके कुमारनन्दि-एलवाचार्य-वर्धमानगुरु इस परम्पराका उल्लेख है। वर्धमानगुरुको राष्ट्रकूट राजा कम्भराजने एक ग्राम दान दिया था। इस लेखमें कोण्डकुन्देय अन्वय यह शब्द प्रयोग है जो स्पष्टतः कोण्डकुन्दे स्थानका सूचक है।[1]

(आ ४) सूरस्थ गण – प्रस्तुत संग्रहमें इस गणका पहला उल्लेख सन् ९६२ का है (क्र० ८५)। इसमें प्रभाचन्द्र – कल्नेलेदेव-रविचन्द्र-

---

१ पहले संग्रहमें कोण्डकुन्दान्वयका प्रथम उल्लेख सन् ७९७ में (क्र० १२२) बिना किसी गणके हुआ है। वहाँ सिमलगेगूर गणका कोई उल्लेख नहीं है। कोण्डकुन्दान्वय यह विशेषण क्वचित् द्राविड संघ, सेनगण आदिके लिए भी प्रयुक्त हुआ है (तीसरा भाग प्रस्तावना पृ० ४८, ५१)

रविनन्दि-एलाचार्य इस परम्पराका वर्णन है। गंग राजा मारसिंह २ ने एलाचार्यको एक ग्राम अर्पण किया था।[1]

सूरस्थ गणके दो उपभेदोंका पता चला है — कौरूर गच्छ तथा चित्रकूटान्वय।[2] कौरूर गच्छका एक ही लेख है (क्र० ११७) तथा इसमे सन् १००७ में अर्हणन्दि पण्डितका वर्णन है। चित्रकूटान्वयके १० लेख हैं। पहले लेखमे (क्र० १५३) सन् १०७१ मे इस अन्वयके श्रीनन्दि पण्डितकी एक शिष्याको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है। श्रीनन्दिकी गुरुपरम्परा इस प्रकार थी — चन्द्रनन्दि-दामनन्दि-सकलचन्द्र-कनकनन्दि-श्रीनन्दि। श्रीनन्दि तथा उनके गुरुबन्धु भास्करनन्दिके समाधिलेख सन् १०७७-७८ के हैं (क्र० १६०)। इस अन्वयका तीसरा लेख (क्र० १५८) सन् १०७४ का है तथा इसमे अरुहणन्दिके शिष्य आर्य पण्डितको कुछ दान मिलनेका वर्णन है। अगले दो लेखोंसे (क्र० २३७-३८) इस अन्वयकी एक परम्पराका पता चलता है जो इस प्रकार थी — वासुपूज्य-हरिणन्दि-नागचन्द्र। हरिणन्दि तथा नागचन्द्रको सन् ११४८ मे कुछ दान मिला था। इस अन्वयके अन्य लेख अनिश्चित समयके है। इस प्रकार कोई १४ लेखोंसे सूरस्थ गणका अस्तित्व दसवीं सदीसे बारहवी सदी तक प्रमाणित होता है।[3]

(आ ५) बलगार-(बलात्कार)-गण — इस गणका पहला उल्लेख

---

१. सूरस्थ गणका प्राचीन लेख पहले संग्रहमें सन् १०५४ का है (क्र० १८५)।

२. पहले संग्रहमें इन दोनों उपभेदोंका वर्णन नहीं है। वहाँ चित्रकूटान्वयका सम्बन्ध बलगार गणसे भी पाया गया है (क्र० २०८)

३. कुछ लेखोंमें सेनगण और सूरस्थगणको (जिसे कहीं-कहीं सूरस्थ भी कहा है) अभिन्न माना है। इसका विवरण हमने 'भट्टारक सम्प्रदाय' के सेनगण विषयक प्रकरणमें दिया है।

सन् १०७१ का है (क्र० १५४)।[1] इसमें मूलसंघ-नन्दिसंघका बलगार गण ऐसा इसका नाम है तथा इसके ८ आचार्योंकी परम्परा दी है जो इस प्रकार है – वर्धमान-महावादी विद्यानन्द–उनके गुरुबन्धु तार्किकार्क माणिक्यनन्दि-गुणकीर्ति विमलचन्द्र-गुणचन्द्र–गण्डविमुक्त-उनके गुरुबन्धु अभयनन्दि।[2] अगले लेख (क्र० १५५) में इसी परम्पराके तीन और आचार्योंके नाम है–अभयनन्दि-सकलचन्द्र-गण्डविमुक्त २–त्रिभुवनचन्द्र। इन लेखोंमे गुणकीर्ति तथा त्रिभुवनचन्द्रको मिले हुए दानोंका विवरण है। लेख १५७ में सन् १०७४ में पुन त्रिभुवनचन्द्रका उल्लेख है। इस गणके अगले महत्त्वपूर्ण लेख (क्र० ३४२, ३७६) तेरहवीं सदीके है। इनमें शास्त्रसारसमुच्चय आदि ग्रन्थोंके कर्ता माघनन्दि आचार्यका वर्णन है। इनकी गुरुपरम्परामे १९ आचार्योंके नाम दिये है किन्तु उनका क्रम व्यवस्थित प्रतीत नही होता।

चौदहवीं सदीसे बलात्कारगणके साथ सरस्वतीगच्छका उल्लेख मिलता है। इसकी एक परम्पराके आचार्य अमरकीर्ति थे। इनके शिष्य माघनन्दिने सन् १३५५में एक मूर्ति स्थापित की थी (क्र० ३९३) इसी परम्पराके तीन लेख और है। इनमे वर्धमान, धर्मभूषण तथा वर्धमान २ इन भट्टारकोंका उल्लेख है। ये लेख सन् १३९५ तथा १४२४ के है (क्र० ४०३,

---

१ इस लेखसे बलगार गणकी परम्पराका अस्तित्व सन् ९०० तक ज्ञात होता है। अत डॉ० चौधरीकी यह कल्पना गलत प्रतीत होती है कि यह बलहारि गणका ही रूपान्तर है। बलहारि गणका उल्लेख पहले संग्रहमें सन् ९५० के लगभग मिला है (तीसरा भाग प्रस्तावना पृ० २९, ३०)।

२ इस परम्परामें माणिक्यनन्दिका नाम उल्लेखनीय है। हमारा अनुमान है कि परीक्षामुखके कर्ता माणिक्यनन्दि इनसे अभिन्न होंगे।

४०४, ४३४)।[1]

बलात्कारगण-सरस्वतीगच्छकी उत्तर भारतीय शाखाओंके तीन लेख इस संग्रहमे है (क्र० ४४८, ४६०,४६८)।[2] इनमे सन् १५०० मे रत्नकीतिका तथा सन् १५३१ मे धर्मचन्द्रका उल्लेख है।

(आ ६) क्राणूर गण – इस गणके उल्लेखोंमे पहला दसवी सदीका है (क्र० ९६)।[3] इसमे एक विस्तृत गुरुपरम्पराका वर्णन है किन्तु लेखके बीच-बीचमे घिस जानेसे इस परम्पराका ठीक ज्ञान नही होता। इस लेखमे मुनिचन्द्र आचार्यके एक शिष्यको कुछ दान मिलनेका उल्लेख है।

क्राणूर गणके तीन उपभेदोंके उल्लेख मिले है – तिन्त्रिणी गच्छ, मेपपापाण गच्छ तथा पुस्तकगच्छ। तिन्त्रिणी गच्छके ६ लेख है (क्र० २१२, २९१, ३२३, ४७६, ५६५, ६१९)। पहले दो लेख बाहारवीं सदीके है[4] तथा इनमे मेघचन्द्र तथा पर्वतमुनि इन आचार्योंका वर्णन है। तीसरा लेख सन् १२०७ का है तथा इसमे अनन्तकीर्ति भट्टारकको कुछ दान मिलनेका वर्णन है। अनन्तकीर्तिके पूर्ववर्ती छह आचार्योंके नाम भी इस

---

१. इस परम्पराका वर्णन पहले संग्रहके क्र० ५७२ तथा ५८५ में भी है।

२. पहले संग्रहमें ऐसे दो लेख हैं (क्र० ६१७, ७०२)। क्र० ६१७ में इसे मदसारद गच्छ पढ़ा गया है, यह 'श्रीमद्‌शारद गच्छ'- अर्थात् सरस्वतीगच्छका ही रूपान्तर है। उत्तर भारतमें बलात्कारगणकी इस शाखाएँ १४वीं सदीसे २०वीं सदी तक विद्यमान थीं। इनका विस्तृत वृत्तान्त हमने 'भट्टारक सम्प्रदाय' में दिया है।

३. पहले संग्रहमें क्राणूरगणका प्राचीनतम लेख सन् १०७४ का (क्र० २०७) है।

४. पहले संग्रहमें तिन्त्रिणीगच्छका पहला लेख सन् १०७५ का (क्र० २०९) है।

लेखमें दिये हैं। इस गच्छके चौथे लेख (क्र० ४७६) में सन् १५५६ में देवकीर्ति-मुनिचन्द्र-देवचन्द्र यह परम्परा दी है। लेखके समय देवचन्द्रको कुछ दान मिला था।

मेषपाषाणगच्छके दो लेख हैं (क्र० २१४, ६०३)। पहले लेखमें सन् ११३० में प्रभाचन्द्रके शिष्य कुलचन्द्र आचार्यका वर्णन है। दूसरा लेख इस गच्छकी एक वसदिके बारेमें है।[1]

पुस्तक गच्छका एक लेख (क्र० २४०) सन् ११५० का है किन्तु यह बीच-बीचमें घिसा हुआ है अतः इसका तात्पर्य स्पष्ट नहीं है।[2]

बारहवीं-तेरहवीं सदीके चार लेखोंमें (क्र० २०२, ३१२, ३२६, ३७३) क्राणूरगणके कनकचन्द्र, माघवचन्द्र तथा सकलचन्द्र आचार्योंका वर्णन है। इनका गच्छ नाम अज्ञात है।

इस तरह कोई १५ लेखोंसे क्राणूरगणका अस्तित्व दसवीं सदीसे सोलहवीं सदी तक प्रमाणित होता है।

(आ ७) निगमान्वय—मूलसंघ-निगमान्वयका एक लेख (क्र० ३६०) सन् १३१० का है। इसमें कृष्णदेव-द्वारा एक मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है।[3]

उपर्युक्त विवरणसे मूलसंघके भेद-प्रभेदोंका अच्छा परिचय मिलता है। कोई १५ लेखोंमें किसी भेदका उल्लेख किये बिना मूलसंघका उल्लेख मिलता है। इनमें प्राचीनतर लेख (क्र० ११२, १४५, २०४) दसवीं-

---

१ पहले संग्रहमें मेषपाषाणगच्छका पहला उल्लेख सन् १०७९ का है (क्र० २१६)

२ पहले संग्रहमें इस गच्छका कोई उल्लेख नहीं है (देशीगण तथा सेनगणमें भी पुस्तकगच्छ थे उनका वर्णन पहले आ चुका है।)

३ पहले संग्रहमें इस अन्वयका कोई लेख नहीं है।

ग्यारहवीं सदीके हैं। इस तरह प्रस्तुत संग्रहमें कुल मिलाकर मूलसंघके कोई १५० लेख आये हैं।

(इ) गौड़ संघ—इस संघका एक लेख (क्र० ८४) मिला है। इसमें सोमदेवसूरि-द्वारा एक जिनालयके निर्माणका उल्लेख है।[1]

(ई) द्राविड संघ—इस संघके नन्दिगण-अरुंगल अन्वयका एक लेख ग्यारहवीं सदीका है (क्र० १७५)

इसमें शान्तिमुनि-वादिराज-वर्धमान यह परम्परा दी है। वर्धमानके समाधिमरणका स्मारक उनके गुरुबन्धु कमलदेवने स्थापित किया था। इस अन्वयका अगला लेख सन् ११९२ का है (क्र० २८२) तथा इसमें वासुपूज्यके शिष्य वज्रनन्दिका वर्णन है। इनकी गुरुपरम्परा काफ़ी विस्तार-से दी है किन्तु उसमें आचार्योंका क्रम स्पष्ट नहीं है। चौदहवी सदीके एक लेखसे (क्र० ३४४) इस अन्वयके श्रीपाल-पद्मप्रभ-धर्मसेन इस परम्पराका पता चलता है।

द्राविड संघके तीन लेखोंमें (क्र० २५२, ३५७, ४०९) अरुंगल अन्वयका उल्लेख नहीं है। ये लेख सन् ११५९, १२०५ तथा १४वी सदीके हैं। अन्तिम दो लेखोंमें क्रमशः गुणसेन तथा लोकाचार्यका नाम ज्ञात होता है। इस तरह प्रस्तुत संग्रहके कोई आठ लेखोंसे इसका अस्तित्व ११वी सदीसे १४वीं सदी तक प्रमाणित होता है।[2]

---

१. गौडसंघका पहले संग्रहमें या अन्यत्र साहित्यमें कोई वर्णन नहीं है। सोमदेवसूरिके लिखित यशस्तिलकचम्पू तथा नीतिवाक्यामृत ये ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं।

२. पहले संग्रहमें द्राविड संघके उल्लेख सन् ९९० (क्र० १६६) से मिले हैं। इसे कहीं-कहीं मूलसंघ-द्रविडान्वय और द्रविड संघ-कोण्डकुन्दान्वय कहा है (तीसरा भाग प्रस्तावना पृ० ३५-४२)

(उ) माथुर संघ—इसका उल्लेख सन् ११७० के एक लेखमें (क्र० २६५) है। इस संघके महामुनि गुणभद्र द्वारा इस लेखकी रचना की गयी थी। लेखमें लोलक श्रेष्ठी-द्वारा पार्श्वनाथमन्दिरके निर्माणका वर्णन है।[1]

(ऊ) पंचस्तूप निकाय—प्रस्तुत संग्रहके एक लेख (क्र० १९) में काशीके पंचस्तूप निकायके आचार्य गुहनन्दिका वर्णन है। इनके शिष्योंके लिए वटगोहाली ग्राममें एक विहार था जिसे ब्राह्मण नाथशर्माने सन् ४७९ में कुछ दान दिया था।[2]

(ऋ) जम्बूखण्डगण—इसका उल्लेख छठी-सातवीं सदीके एक लेखमें (क्र० २२) हुआ है। इसके आचार्य आर्यनन्दिको सेन्द्रक राजा इन्द्रणन्दने कुछ दान दिया था।

(ॠ) सिहवूर गण—इसका एक लेख (क्र० ५६) मिला है। इसमें सन् ८६० में सम्राट् अमोघवर्ष-द्वारा इस गणके नागनन्दि आचार्यको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है।[3]

(ऌ) जैन संघके विषयमें साधारण विचार—अब तक जैन मुनियोंके विभिन्न संघोंका जो परिचय दिया गया है उससे स्पष्ट है कि इनमें व्यवहार-

---

१ माथुर संघ बादमें काष्ठासंघका एक गच्छ बन गया था। इसका विस्तृत वृत्तान्त हमने 'भट्टारक सम्प्रदाय' में दिया है।

२ धवलाटीकाके कर्ता वीरसेन आचार्य पंचस्तूप अन्वयके ही थे (धवला-प्रशस्ति)। किन्तु उनके प्रशिष्य गुणभद्र उन्हें सेनान्वयका कहते हैं। हो सकता है कि पंचस्तूपान्वयको ही बादमें सेनान्वय नाम प्राप्त हुआ हो। किन्तु सेनान्वय सन् ७८० के लगभग अस्तित्वमें आ चुका था यह पहले स्पष्ट कर चुके हैं।

३. जम्बूखण्ड गण तथा सिहवूर गणका वर्णन पहले संग्रहमें नहीं है।

की दृष्टिसे कोई खास भेद नहीं था। इन सभी संघोंके मुनि मठ-मन्दिर बनवाते थे, उनके लिए खेत, घर, बगीचे, गांव आदिका दान ग्रहण करते थे, राजसभाओंमें वादविवाद करते थे, प्रसंगानुकूल राजकार्यमें मदद देते थे तथा मन्त्रसाधना, ज्योतिष और वैद्यकका आश्रय लेकर जैन संघका प्रभाव बढ़ानेकी कोशिश करते थे। ये सब प्रवृत्तियाँ जैन साधुके मूलभूत उद्देश्य-वीतराग भावकी साधनाके कहाँतक अनुकूल है यह प्रश्न विचारणीय है। इन्हें रोकनेका ऐसा कोई व्यवस्थित प्रयत्न दिगम्बर सम्प्रदायमें हुआ हो ऐसा प्रमाण नहीं मिला है।[१]

यह तो नहीं कहा जा सकता कि दिगम्बर साधुसंघके सभी मुनि इस प्रकारकी प्रवृत्तिप्रधान गतिविधियोंमें ही मग्न रहते थे – साधुसंघका एक वर्ग अवश्य ही प्राचीन आत्मार्थमार्गका निःस्पृह भावसे अनुसरण करता रहा होगा। किन्तु लौकिक कार्योंसे दूर रहनेके कारण इन वीतराग साधुओंका शिलालेखों आदिमें वर्णन मिलना कठिन है।

२. राजवंशोंका आश्रय—

(अ) उत्तर भारतके राजवंश—प्रस्तुत संग्रहमें जैन संघका सम्मान करनेवाले जिन राजवंशोंका उल्लेख है उनमें कलिंगके राजा खारवेलका वंश प्रथम व प्रमुख है। सनपूर्व पहली सदीमें इस वंशके तीन राजपुरुषों-द्वारा जैन साधुओंके लिए खण्डगिरि पर्वतपर कई गुहाएँ बनवायी गयीं। खारवेलकी पटरानी, महाराज कुदेपश्री तथा कुमार वडुख ये वे तीन राजपुरुष हैं (ले० ३–५)। यहींके एक लेख (क्र० ६) में नगरके न्यायाधीश

---

१. श्वेताम्बर सम्प्रदायमें इन प्रवृत्तियोंको रोकनेके कुछ प्रयत्न होते रहे हैं। इस विषयमें पं० नाथूरामजी प्रेमीका लेख 'चैत्यवासी और वनवासी' (जैन साहित्य और इतिहास-द्वितीय संस्करण) देखने योग्य है।

सुभूति-द्वारा निर्मित गुहाका भी उल्लेख है।[1]

पाटलिपुत्रके गुप्त राजाओंके समयका एक लेख (क्र० १९) प्रस्तुत संग्रहमें है। यह सन् ४७९ का है तथा इसमें एक ब्राह्मण-द्वारा वटगोहालीके जैन विहारको कुछ दान मिलनेका वर्णन है।[2]

हस्तिकुण्डी (राजस्थान) में राष्ट्रकूट वंशके राजा विदग्धराजका उल्लेख सन् ९४० के एक लेख (क्र० ८१) में मिला है। आचार्य वासुदेवके उपदेशसे इस राजाने ऋषभदेवका एक मन्दिर बनवाया था। इस मन्दिरके लिए राजाने अपनी सुवर्णतुला कराकर दान दिया था तथा नगरके व्यापारियोंसे कुछ करोंकी आय भी अर्पित की थी। यह कार्य सन् ९१७ में हुआ था। विदग्धराजके पुत्र मम्मटने सन् ९४० में उक्त दानको पुनः सम्मति दी। मम्मटके पुत्र धवलकी वीरताका विस्तारसे वर्णन इस लेखमें मिलता है। धवलके पुत्र बालप्रसादके समय सन् ९९७ में उक्त मन्दिरका जीर्णोद्धार हुआ था।

उड़ीसाके राजा उद्योतकेसरीके समय – दसवीं सदीके दो लेख (क्र० ९३-९४) इस संग्रहमें हैं। इनमें खण्डगिरिके पुरातन मन्दिरोंके जीर्णोद्धारका वर्णन है।

---

१ पहले संग्रहमें खारवेलके जीवनके विषयमें एक विस्तृत लेख (क्र०२) आ चुका है। उसके पहले मौर्य सम्राट् अशोकके लेखमें (क्र० १) निर्ग्रन्थों (जैनों) की देखभालका भी उल्लेख हुआ है।

२ पहले संग्रहमें गुप्तकालके तीन लेख (क्र० ९१-९३) आये हैं। उसके पहले शक और कुषाण राजाओंके कई लेख भी हैं।

३ पहले संग्रहमें इस राजवंशका उल्लेख नहीं है। वहाँ इसके पहले गुर्जर प्रतिहार राजा भोजका एक लेख (क्र० १२८) है। इसी समयके कच्छपघात तथा चन्देल वंशोंके भी कुछ लेख पहले संग्रहमें आये हैं (क्र० १५३, २२८ आदि)।

मालवाके परमार वंशके राजा भोजके समयका – ग्यारहवीं सदी (पूर्वार्ध) का एक लेख (क्र० १३५) मिला है।[1] इसमें सामन्त यशोवर्मा-द्वारा कल्कलेश्वर तीर्थके मुनिसुव्रतमन्दिरके लिए कुछ दान दिये जानेका वर्णन है। इसी वंशके उदयादित्यके समयका एक मन्दिर ऊनमें है (क्र० १७४)।

गुजरातके चौलुक्य राजा भीमदेव (प्रथम) का एक लेख मिला है (क्र० १४६)। इसने सन् १०६६ में वायड अधिष्ठानकी वसतिकाके लिए कुछ भूमि दान दी थी। इसी वंशके राजा भीमदेव (द्वितीय) के समय – बारहवीं सदीके अन्तका एक लेख (क्र० २८७) है। इसमें वेरावलके चन्द्रप्रभमन्दिरके जीर्णोद्धारका वर्णन है। अणहिल्लपुरमें राजा-द्वारा नन्दि-संघके आचार्य श्रीकीर्तिके सम्मानका भी इसमें उल्लेख है।[2]

बुन्देलखण्डके कलचुरि वंशका एक लेख मिला है (क्र० २१७)। इसमें राजा गयाकर्ण तथा उसके सामन्त गोल्हणदेवके समय – बारहवीं सदीके पूर्वार्धमें एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है।[3]

राजस्थानके चाहमान वंशके पांच लेख हैं (क्र० २१८, २३१-३२, २३५, २६५)।[4] पहले चार लेख नडोलके राजा रायपालके समयके सन् ११३३ से ११४६ तकके हैं। इनमें पहले लेखमें रानी मीनलदेवी-द्वारा यतियोंके लिए दानका तथा बादके लेखोंमें ठाकुर राजदेव-द्वारा मन्दिर

१. इस वंशका उल्लेख पहले संग्रहमें नहीं है। परमार वंशकी बाँस-वाडा व चन्द्रावती शाखाके लेख वहाँ आये हैं। (क्र० २०४, २३१, ४७२)।

२. चौलुक्य कुमारपालका एक लेख (क्र० ३२२) पहले संग्रहमें है।

३. इस वंशके कोई लेख पहले संग्रहमें नहीं हैं।

४. पहले संग्रहमें नडोलके चाहमान वंशके दो (क्र० २५७-५८) तथा जालोरके चाहमान वंशका एक (क्र० ५०७) लेख है।

और यतियोंके लिए कुछ दानका वर्णन है। पाँचवा लेख शाकम्भरीके चाहमान राजा सोमेश्वरके समयका सन ११७० का है। इसमें बिजोलिया-के पार्श्वनाथ मन्दिरके लिए पृथ्वीराज २ तथा सोमेश्वर-द्वारा दो गाँव दान दिये जानेका वर्णन है। इस राजवंशके कोई ३० पीढ़ियोंका वर्णन इस लेखमें मिलता है।[1]

मुगल साम्राज्यके तीन लेख इस संग्रहमें हैं (क्र० ४८१, ५०६, ५१२)। पहला लेख अकबरके समयका सन् १५७१ का है। इसमें महेश्वरके आदिनाथ मन्दिरका जीर्णोद्धार मण्डलोई सुजानराय-द्वारा होने-का वर्णन है। शाहजहांके राज्यका एक लेख (क्र० ५०६) सन् १६२८ का है। इसमें भी एक जिनमन्दिरके जीर्णोद्धारका वर्णन है। तीसरा लेख सन् १६६२ का – औरंगजेबके समयका है। इसमें राजा जयसिंहके मंत्री मोहनदास द्वारा एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है।[2]

(आ) दक्षिण भारतके राजवंश—

(आ १) गंग राजवंश—इस वंशके १३ लेख प्रस्तुत संग्रहमें हैं। इनमें पहला (क्र० २०) राजा अविनीतका एक दानपत्र है जो छठी सदीके पूर्वार्धका है। इसमें यापनिक संघके जिनमन्दिरके लिए राजा-द्वारा कुछ भूमिके दानका वर्णन है। दूसरा लेख (क्र० २८) सातवीं सदीके अन्तका शिवकुमार पृथ्वीकोंगुणिवृद्धराजके समयका है। इसमें राजा तथा कुछ अन्य सज्जनों-द्वारा एक जिनमन्दिरके लिए भूमिदानका वर्णन है। तीसरे लेखमें (क्र० ८८) आठवीं सदीके अन्तमें राजा श्रीपुरुष तथा नवीं सदीके प्रारम्भमें राजा शिवमारके समय कुछ अधिकारियों द्वारा एक जिनमन्दिरके

---

१ पहले संग्रहमें इसके बाद गुजरातके वाघेल और ग्वालियरके तोमर वंशके कुछ लेख हैं।

२ पहले संग्रहमें मुगल राज्यके कई लेख श्वेताम्बर सम्प्रदायके हैं। एक लेख (क्र० ७०२) दिगम्बर सम्प्रदायका भी है।

लिए दो गाँवोके दानका वर्णन है। चौथे लेखमे (क्र० ६३) राजा दुग्गमार-द्वारा नवी सदीमे एक मन्दिरको भूमिदान देनेका उल्लेख है। इसके वाद दसवीं सदीके प्रारम्भके एक लेखमे (क्र० ७६) एरेय राजाके समय एक जैन आचार्यके समाधिमरणका वर्णन है। सन् ९५० के एक लेख (क्र० ८३) मे राजा बूतुगकी रानी पद्मब्बरसि-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरके लिए कुछ दानका वर्णन है। सन् ९६२ मे राजा मारसिह २ ने अपनी माता-द्वारा निर्मित मन्दिरके लिए एलाचार्यको एक गाँव दान दिया था (क्र० ८५) इसी वर्षमे इस राजाने मुंजार्य नामक जैन ब्राह्मणको भी एक गाँव दान दिया था (क्र० ८६)। सन् ९७१ मे इस राजाके समय शंखजिनालयको कुछ दान मिलनेका वर्णन एक लेखमे (क्र० ८८) मे है। दसवी सदीके अन्तके एक लेख (क्र० ९६) मे राजा रक्कसगंग तथा नन्नियगंगके समय कुछ दानका वर्णन है। एक लेख (क्र० १५४) मे बूतुग राजा तथा रानी रेवकनिर्मडिका उल्लेख है। इनकी स्मृतिमे गंगकन्दर्प नामक जिनमन्दिर अण्णिगेरे नगरमे बनवाया गया था। एक अन्य लेखमे (क्र० २०७) पुन: रानी रेवकनिर्मडिका उल्लेख हुआ है। इस तरह गंगवंशके राज्यकालमे जैनसंघकी स्थिति सदा ही प्रभावशाली रही थी।[1]

(आ २) कदम्ब वंश – इस वंशके स्वतन्त्र राज्यकालका एक लेख (क्र० २१) इस संग्रहमे है जो छठी सदीके राजा रविवर्माके समय-का है। इस राजाने एक सिद्धायतनके लिए कुछ भूमि दान दी थी।[2] राष्ट्रकूट तथा चालुक्य साम्राज्यमे कदम्बवंशके कई सामन्त प्रादेशिक शासक थे। ऐसे सामन्तोंके कोई १५ लेख मिले है। सन् ८९० के एक

---

१. पहले संग्रहमें गंग वंशके कई लेख हैं, जिनमें सबसे प्राचीन लेख (क्र० ९०) पाँचवीं सदीके उत्तरार्धका है।

२. पहले संग्रहमें इस वंशके दस लेख हैं जो पाँचवीं व छठी सदीके हैं (क्र० ९६-१०५)।

लेखमे कदम्ब महासामन्त अल्यिमरस-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरका वर्णन है (क्र० ६०)। सन् १०४५ के एक लेखमें कोंकण प्रदेशमें महामण्डलेश्वर चट्टय्यदेवके शासनका उल्लेख है (क्र० १३१) तथा एक मन्दिरको कुछ दान मिलनेका वर्णन है। सन् १०८१ के दो लेखोंमें कदम्ब राजा गोवल्देव तथा 'कादम्बचक्रवर्ति' वीरमके समय एक वसदिको दान मिलनेका तथा एक महिलाके समाधिमरणका वर्णन है (क्र० १६३-४)। सन् १०९६ में कदम्ब कुलके सामन्त एरेयगकी रानी असवब्बरसिने एक मन्दिर बनवाया था (क्र० १६९)। सन् ११२३ और ११३० के दो दानलेखोंमें (क्र० २०२ व २१४) कदम्ब सामन्त तैलपदेव तथा मयूरवर्माके शासनका उल्लेख है। तैलपदवके शासनका उल्लेख सन् ११४८ के दो दानलेखोंमें भी है (क्र० २३६-२३८)। सन् १२०७ के एक दानलेखमे कदम्ब सामन्त ब्रह्मका तथा सन् १२१८ मे जयकेशीका उल्लेख मिला है क्र० ३२३ व ३२५)। सन् १५०४ में कदम्ब लक्ष्मप्परसने चारुकीर्ति पण्डिताचार्यके शिष्यको धर्माधिकार प्रदान किये थे (क्र० ४५५)। एक अनिश्चित समयके लेख (क्र० ६१४) में त्रिभुवनवीर नामक कदम्ब शासककी रानीके समाधिमरणका उल्लेख है।

(आ ३) राष्ट्रकूट वंश – प्रस्तुत संग्रहमें इस वंशके देज्ज महाराजके सामन्त सेन्द्रक इन्द्रणन्दका एक लेख है (क्र० २२) जो छठी-सातवी सदीका है। इन्द्रणन्दने आर्यनन्दि आचार्यको एक ग्राम दान दिया था।[1] राष्ट्रकूट वंशकी प्रधान शाखाके कोई १३ लेख इस संग्रहमे है।[2] इनमें पहला

1 देज्ज राजाका राष्ट्रकूटोंके प्रमुख वंशसे क्या सम्बन्ध था यह स्पष्ट नहीं है। सेन्द्रक वंशके तीन लेख पहले संग्रहमें है – (क्र० १०४,१०६,१०९)।

२ पहले संग्रहमें इस शाखाके दस लेख है जिनमें पहला (क्र० १२४) सन् ८०२ का है।

लेख सन् ८०८ का है (क्र० ५४)। इसमे सम्राट् गोविन्दराज जगत्तुंगके राज्यकालमे उनके ज्येष्ठ बन्धु रणावलोक कम्भराज-द्वारा वर्धमानगुरुको एक गाँवके दानका वर्णन है। दूसरे लेख (क्र० ५५) मे सन् ८२१ में सम्राट् अमोघवर्षका तथा उनके चाचाके पुत्र कर्कराज सुवर्णवर्षका उल्लेख है। कर्कराजने अपराजितगुरुको एक खेत दान दिया था। सन् ८६० मे सम्राट् अमोघवर्षने नागनन्दि आचार्यको भूमिदान दिया था (क्र० ५६)। सन् ८६४ मे इसी सम्राट्के राज्यकालमे एक समाधिलेख लिखा गया था (क्र० ५७)। नवी-दसवी सदीके एक लेखमे नेमिचन्द्र आचार्यका वर्णन है जिसमे उन्हे राष्ट्रकूट वंशके लिए आनन्ददायी कहा है (क्र० ७२)। सन् ९०२ के एक मन्दिरलेखमे सम्राट् कृष्ण २ अकालवर्षके शासनका तथा सन् ९२५ के एक मन्दिरलेखमे सम्राट् गोविन्द ४ नित्यवर्षके शासनका उल्लेख है (क्र० ७७, ७८)। कृष्ण २ की रानी चन्दियब्बेने सन् ९३२ मे एक जिनमन्दिर निर्माण कराया था (क्र० ७९)। सन् ९५० के एक लेखमे कृष्ण ३ अकालवर्षके शासनका तथा इसके बादके एक लेखमे सम्राट् खोट्टिगका वर्णन है (क्र० ८३,८७)। इन्द्र ४ नित्यवर्षने एक जिनमूर्तिका पादपीठ बनवाया था (क्र० ८९)। सम्राट् इन्द्र ३ के सेनापति श्रीविजयकी प्रशंसामे एक स्तम्भलेख मिला है (क्र० ९७)।

बारहवीं सदीके एक लेख (क्र० २१७) में कलचुरि राजा गयाकर्णके अधीन राष्ट्रकूट कुलके सामन्त गोल्हणदेवका उल्लेख है।

(आ ४) पाण्ड्य वंश – इस वंशके पाँच लेख प्रस्तुत संग्रहमे है।[1] इनमें पहला (क्र० २३) सातवीं सदीके राजा वरगुण विक्रमादित्यके समयका दानलेख है। आठवीं सदीके एक लेखमें (क्र० ५०) सुन्दर पाण्ड्य राजा-द्वारा एक जिनमन्दिरकी जमीनोको करमुक्त करनेका वर्णन है। सन् ८७० मे राजा वरगुण २ के समय दो मूर्तियोंका जीर्णोद्धार हुआ

---

१. पहले संग्रहमें इस वंशका कोई लेख नहीं है।

था (क्र० ५८)। सित्तन्नवासलके गुहामन्दिरका जीर्णोद्धार नवी सदीमें राजा अवनिपशेखर श्रीवल्लभके समयमें हुआ था (क्र० ६२)। इस वंशका अन्तिम लेख (क्र० ३५६) सन् १२९० का एक दानलेख है तथा इसमें मारवर्मन् विक्रम पाण्ड्यके राज्यका उल्लेख है।

(आ ५) पल्लववंश—इसका उल्लेख तीन लेखोंमें है। इनमे पहला लेख (क्र० २०) छठी सदीके पूर्वार्धका है। इसमें पल्लव राजा सिंहविष्णु-की माता-द्वारा निर्मित एक जिनमन्दिरका वर्णन है। दूसरे लेख (क्र० ३९) मे सातवी-आठवी सदीके शासक पल्लवादित्य वादिराजुलको अर्हत् भट्टारक-का पादानुध्यात कहा है। तीसरा लेख (क्र० ५३७) अनिश्चित समयका है तथा इसमें पेरुंजिगदेव नामक पल्लव राजाके शासनका उल्लेख है।[1]

(आ ६) चालुक्य वंश—बदामीके चालुक्य राजाओंके दो लेख इस संग्रहमें हैं।[2] पहला (क्र० ४६) सन ७०८ का है तथा इसमें राजा विजयादित्यकी रानी कुंकुमदेवी-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरका उल्लेख है। दूसरे लेख (क्र० ४६) मे राजा कीर्तिवर्मा २के राज्यमें सन् ७५१ में एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है।

वेंगीके चालुक्य राजाओंके तीन लेख इस संग्रहमें हैं।[3] पहला (क्र० ४४) लेख राजा जयसिंहवल्लभ २ के राज्यका—आठवी सदीके प्रारम्भका है तथा इसमें रट्टगुडि वंशके सामन्त कल्याणवसन्त-द्वारा अर्हत् भट्टारकको कुछ दानका वर्णन है। दूसरा लेख (क्र० ४९) आठवी सदीके उत्तरार्धमे राजा सर्वलोकाश्रय विष्णुवर्धनके समयका है तथा इसमें सामन्त गोकय्य-द्वारा एक जिनमन्दिरके लिए दानका वर्णन है। तीसरे (क्र० १००)

---

१ इस वंशका एक लेख पहले संग्रहमें है (क्र० ११५)।

२ इस शाखाके ६ लेख पहले संग्रहमें है (क्र० १०६-८ तथा १११, ११२,११४)।

३ इस शाखाके तीन लेख पहले संग्रहमें है (क्र० १४३-१४४, २१०)।

में दसवीं सदीके उत्तरार्धमे अम्मराज २-द्वारा विजयवाटकके जिनमन्दिरके लिए एक गाँवके दानका वर्णन है।

कल्याणीके चालुक्य राजाओंके लेख संख्यामे सर्वाधिक--५८ है। लेखों-की अधिकताके कारण हम यहाँ उन लेखोंका ही उल्लेख करेंगे जिनमे इस वंशके सम्राटोंका जैन धर्मकार्योंसे साक्षात् सम्बन्ध आया था – जिन-मे सिर्फ उनके राज्यकालका उल्लेख है उनका निर्देश सूचीमे होगा ही। इस वंशके लेखोमे पहला (क्र० ११७) सन् १००७ का है तथा इसमे सामन्त नागदेवकी पत्नी-द्वारा एक जिनमन्दिरके निर्माणका वर्णन है। यह लेख सम्राट् सत्याश्रय आहवमल्लके समयका है। सन् १०२७ के एक लेखमे (क्र० १२४) सम्राट् जयसिह २ की कन्या सोमलदेवी-द्वारा एक मन्दिर-को कुछ दान मिला था ऐसा वर्णन है। सन् १०३२ के एक लेखमें सम्राट् जगदेकमल्ल-द्वारा एक मन्दिरको दान मिलनेका वर्णन है (क्र० १२६)। इस मन्दिरका नाम ही जगदेकमल्ल जिनालय था। जगदेकमल्लकी बहन अक्कादेवीने सन् १०४७ में गोणदवेडंगि जिनालयको कुछ दान दिया था (क्र० १३४)। सन् १०५५ के एक लेखमें आचार्य इन्द्रकीर्तिको त्रैलोक्यमल्लकी सभाका आभूषण कहा है। (क्र० १४१)। इस वंशका अन्तिम लेख (क्र० २७४) सन् ११८५ का है तथा इसमे सोमेश्वर ४ के राज्यकालमें एक मन्दिरको कुछ दानका वर्णन है।[1]

(आ ७) चोल वंश—इस वंशका उल्लेख कोई २५ लेखोंमे है।[2] इनमें पहला (क्र० ८२) सन् ९४५ का है तथा इसमे राजा परान्तक १ के समय एक कूपके निर्माणका वर्णन है। सन् ९९९ के एक लेखमे

---

१. पहले संग्रहमें इस वंशके कई लेख हैं जिनमें पहला (क्र० १६६) सन् ९६० के आसपासका है।

२. पहले संग्रहमें इस वंशके तीन लेख (क्र० १६७, १७१, १७४) हैं।

(क्र० ९२) राजराज १ के समय कुछ जैन आचार्योंका उल्लेख है। दसवीं सदीके उत्तरार्धके एक दानलेखमें (क्र० ९८) गण्डरादित्य मुम्मुडि चोल राजाका उल्लेख है। सन् १००९ के एक लेखमें (क्र० ११९) राजराज १ की आज्ञाका वर्णन है जो ब्राह्मणों तथा जैनोंको नियमित रूपसे कर देनेके लिए दी गयी थी। दो दानलेखोंमें (क्र० १२१,१२९) ग्यारहवीं सदी-पूर्वार्धमें राजेन्द्र १ चोलके शासनका उल्लेख है। सन् १०६८ के दो दानलेख राजेन्द्र २ के शासनकालके हैं (क्र० १५०-५१)। कुलोत्तुंग १ के शासनके पाँच लेख हैं (क्र० १६७,१७३,१९४,१९५,१९८)। जो सन् १०८६ से १११८ तकके दानलेख हैं। विक्रमचोलके शासनके दो दानलेख सन् ११३१ तथा ११३४ के हैं (क्र० २१५,२१९) कुलोत्तुंग २ के राज्यकालके तीन लेख हैं जिनमें एक सन् ११३७ का है (क्र० २२३, २२४,२२६)। राजराज २ के शासनके तीन लेख सन् ११५६-५७ के हैं। (क्र० २४८-२५०)। कुलोत्तुंग ३ के समयके दो लेख हैं (क्र० ३२४,३८०) इनमें पहला सन् १२१६ का तथा दूसरा अनिश्चित समयका है। इस दूसरे लेखके अनुसार कुलोत्तुंग राजाने नल्लूर नामक गाँव एक देवमन्दिरको अर्पण किया था।

इस तरह हम देखते हैं कि चोल राजाओंके प्रायः सब लेख राजपुरुषों से साक्षात् सम्बन्ध नहीं रखते।

युद्धके दिनोंमें चोल सेना-द्वारा जिनमन्दिरोंका विध्वंस होनेका वर्णन सन् १०७१-७२ के एक लेखमें (क्र० १५४) हुआ है।

(आ ८) होयसल वंश—इस वंशके कोई ३० लेख प्रस्तुत संग्रहमें हैं।[1] इनमें सबसे पहला लेख (क्र० १४५) सन् १०६२ का है तथा

1. पहले संग्रहमें इस वंशके कई लेख हैं जिनमें पहला (क्र० २००) सन् १०६२ का ही है।

इसमे राजा विनयादित्य-द्वारा अभयचन्द्र पण्डितको दान दिये जानेका वर्णन है। सन् १०६९ के एक लेखमे विनयादित्य-द्वारा एक जिनमन्दिरके निर्माणका वर्णन है। ग्रामीण लोग गरीबीके कारण यह कार्य नहीं कर सके थे अतः राजाने सहायता देकर यह मन्दिर बनवाया था (क्र० १५२) ग्यारहवी सदी-अन्तिम चरणके एक लेखमें (क्र० १७५) वर्धमान आचार्यको होयसल राज्यके कार्यकर्ता यह विशेषण दिया है। राजा बल्लाल १ के सेनापति मरियानेने बारहवी सदीके प्रारम्भमें एक मूर्ति स्थापित की थी (क्र० १८३)। बारहवीं सदी – प्रथम चरणके दो लेखोमे राजा विष्णुवर्धनकी रानी चन्तलदेवो तथा उसके बन्धु दुद्दमल्ल-द्वारा जिन-मन्दिरोंको दान देनेका वर्णन है (क्र० १८८-८९)। इस समयके चार लेखोंमें (क्र० २००, २०१, २१२, २१३) विष्णुवर्धनके चार सेनापतियों—गंगराज, उसका पुत्र बोप्प, पुणिसमय्य तथा मरियानेके धर्मकार्योंका – मन्दिर निर्माण, दान आदिका वर्णन है। राजा नरसिंह १ ने सन् ११५९मे एक मन्दिरको कुछ दान दिया था (क्र० २५२) तथा उसके सेनापति भरतिमय्य एवं माचियणने सन् ११४५ तथा ११५३ में इसी प्रकारके दान दिये थे (क्र० २३३, २४६)। सन् ११७६ तथा ११९२ के लेखोंमें (क्र० २७१, २८२) राजा वीरबल्लाल २ द्वारा जिनमन्दिरोंको दान देनेका वर्णन है तथा सन् ११७३ एवं ११९० के लेखोंमें इसी राजाके अधीन अधिकारियों-द्वारा ऐसे ही दानोंका उल्लेख है (क्र० २६८, २८१)। इसी राजाके समयके तीन दानलेख और है (क्र० २८५, २८६, ३२३) जो सन् ११९९ से १२०७ तक के है तथा दो समाधिलेख है (क्र० ३२०-३२२)। राजा नरसिंह ३ ने सन् १२६५मे एक जिनमन्दिरको दान दिया था (क्र० ३४२) तथा उसके अधीन अधिकारियोंने सन् १२५७, १२७१ तथा १२८५ मे ऐसे ही धर्मकार्य किये थे (क्र० ३३५, ३४५, ३५१)। एक लेखमे राजा रामनाथ-द्वारा पार्श्वनाथ मन्दिरको दान देनेका वर्णन है (क्र० ३६०) तथा एक अन्य लेखमें राजा वीरबल्लाल ३ के समय सन्

१३११में कुछ स्थानीय अधिकारियों-द्वारा ऐसे ही दानका उल्लेख मिलता है (क्र० ३९१)।

(आ ९) कलचुर्य वंश—प्रस्तुत संग्रहमें इस वंशका उल्लेख सात लेखोंमें है।[1] इनमें पहला लेख सन् ११५९ का है तथा इसमें किसी सेनापति-द्वारा एक जैन आचार्यको दान मिलनेका वर्णन है (क्र० २५१)। यह लेख राजा बिज्जलके समयका है। इस राजाका उल्लेख चार अन्य लेखोंमें है (क्र० २५६, २६०-२६२)। ये लेख सन् ११६१ से ११६८ तक के हैं तथा इनमें स्थानीय अधिकारियों-द्वारा जैन आचार्योंको मिले हुए दानोंका वर्णन है। इस वंशके अन्तिम दो लेख राजा सोविदेवके राज्यके सन् ११७३ तथा ११७५ के हैं (क्र० २६७, २७०) तथा इनमें भी स्थानीय व्यक्तियोंके दानोंका उल्लेख है।

(आ १०) यादव वंश—देवगिरिके यादवोंका उल्लेख प्रस्तुत संग्रहके १५ लेखोंमें है।[2] इनमें पहला लेख (क्र० ३२६) राजा सिंहणके समय सन् १२२० में लिखा गया था तथा एक मन्दिरके लिए कुछ दानका इसमें वर्णन है। इस राजाके समयके तीन अन्य लेखोंमें (क्र० ३२८, ३२९, ३३०) तीन महाप्रधानों – प्रभाकरदेव, मल्ल तथा बीचिराज-द्वारा जिनमन्दिरोंके लिए दानोंका वर्णन है। ये लेख सन् १२४५ तथा १२४७ के हैं। राजा कन्हरदेवके राज्यके चार लेख हैं (क्र० ३३४, ३३६, ३३७, ३३९)। ये लेख सन् १२५७ से १२६२ तकके हैं इनमें तीन दानलेख है तथा एक समाधिलेख है। राजा महादेवके समयके तीन लेख हैं (क्र० ३४०, ३४१, ३४४), ये सन् १२६५ तथा १२६९ के हैं तथा तीनों समाधिमरणके स्मारक हैं। राजा रामचन्द्रके समयके चार लेख हैं (क्र० ३५२, ३५४, ३५५, ३५९), ये सन्

---

१ पहले संग्रहमें इस वंशके तीन लेख हैं (क्र० ४०८, ४२५, ४२६)।

२ पहले संग्रहमें इस वंशके ९ लेख हैं, जिनमें पहला (क्र० ३१०) सन् ११४२ का है।

१२८५ से १२९७ तक के हैं। पहले लेखमें सर्वाधिकारी मायदेव-द्वारा एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है, दूसरा एक समाधिलेख है, तीसरेमें एक मन्दिरके लिए दानोंका वर्णन है तथा चौथेमें महामण्डलेश्वर तिकमदेव-के मन्त्रीके पुत्र-द्वारा एक मन्दिरके जीर्णोद्धारका उल्लेख है।

(आ ११) विजयनगरके राजवंश—विजयनगर राज्यके कोई २० लेख प्रस्तुत संग्रहमें है।[1] इनमें पहला (क्र० ३९३) सन् १३५५ का है तथा हरिहर राजाके समय एक जिनमूर्तिकी स्थापनाका इसमे उल्लेख है। बुक्क राजाके समयके दो लेख हैं (क्र० ३९४, ३९६), ये सन् १३५७ तथा १३७६ के हैं। पहला लेख एक जिनमन्दिरके अवशेषोंमें है तथा सेनापति बैचयका इसमे उल्लेख है। दूसरा एक समाधिलेख है। राजा हरिहर २ के सेनापति इरुगने एक जिनमन्दिर बनवाया था (क्र० ४०३)। तथा इस राजाके अधीन गोवाके शासक माधवके सेनापति नेमण्णने पार्श्वनाथ-मन्दिरको सन् १३९५ मे कुछ दान दिया था (क्र० ४०२)। सन् १३९५ के ही एक लेखमे बैचय दण्डनायकके पुत्र इम्मडि बुक्कमन्त्रीश्वर-द्वारा एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है (क्र० ४०४)। राजा बुक्क २के समयके दो लेख है (क्र० ४०६, ४१५) इनमें एक शान्तिनाथमन्दिरके निर्माणका स्मारक है तथा दूसरेमें लक्ष्मीसेन भट्टारकके समाधिमरणका उल्लेख है। राजा देवरायके समयके दो लेख है (क्र० ४२५, ४३४) – पहला सन् १४१२ का है तथा दो मन्दिरोंकी सीमाओंके बारेमें एक समझौतेका इसमे वर्णन है। दूसरा सन् १४२४ का है तथा इसमे राजा-द्वारा नेमिनाथ-मन्दिरके लिए वरांग ग्रामके दानका वर्णन है। राजा मल्लिकार्जुनके समय सन् १४५० मे एक मन्दिरको मिले हुए दानोका वर्णन एक लेखमें है (क्र० ४४०)। कृष्णदेव महारायके समयके एक लेखमें (क्र० ४५६)

१. पहले संग्रहमें इस वंशके कई लेख हैं जिनमें पहला सन् १३५३ का है (क्र० ५५८)।

मन्दिरोकी भूमियाको करमुक्त करनेका वर्णन है, यह लेख सन् १५०९ का है। वराग ग्रामकी मन्दिरकी जमानको खेतीयोग्य बनानेका वर्णन सन् १५१५ क एक लेखमे है (क्र० ४५८)। राजा अच्युतदेवने सन १५३० मे एक जिनमूर्तिकी पूजाके लिए कुछ कराकी आय दान दी थी (क्र० ४६७)। राजा सदाशिवके समय रामराजने सन् १५४५ मे एक जिनमन्दिरका कुछ भूमि दान दी थी (क्र० ४७३)। इसी राजाके समयका एक दानलेख सन् १५५६ का है (क्र० ४७६)। राजा रामदेवके समय सन् १६१९ म एक जैन विद्वानको कुछ दान दिया गया था (क्र० ५०३)। इस राज्यका अंतिम लेख सन् १७५७ का है (क्र० ५२०) तथा इसमे सदाशिव रायके अधीन शासक अरसप्पोडेय-द्वारा चारुकीर्ति पण्डितको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है।

(आ १२) दक्षिण भारतक छोटे राजवश—अब हम उन राजवशोक उल्लेखोका विवरण देगेंग जिन्होने राष्ट्रकूट, चालुक्य, होयसल या यादव राज्योम सामन्तोके रूपमे महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया था। ऐसे वशोमे नोलम्बवश प्रथम है जिसके चार लेख मिले है (क्र० ५९, ६१, १२३, १३९)।[1]

इनमे पहले दो लेख राजा महेन्द्रके समयके है। एकमे राजा द्वारा सन् ८७८ मे एक जिनमन्दिरको दान मिलनेका वर्णन है तथा दूसरेमे सन् ८९३ मे आचार्य कनकसेनके लिए कुछ दानका उल्लेख है। नोलब घटेयनकारने एक जिनमन्दिरको सन् १०२८ में भूमिदान दिया था (क्र०१२३)। नोलब ब्रह्माधिराजके समय सन् १०५४ मे अष्टोपवासी मुनिको कुछ दान मिले थे (क्र० १३९)।

हुम्मचके सान्तर वशके चार लेख मिले है (क्र० १३७,२५८,४२२-

---

१ पहले सग्रहमें नोलम्बवाडिके कई उल्लेख हैं किन्तु नोलम्ब राजाओंका कोई लेख नहीं है।

४३१)।[1] इनमें पहला लेख सन् १०५३ का है तथा इसमें राजा वीर सान्तरद्वारा उसके जैन मन्त्री नकुलरसको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है। दूसरे लेखमें राजा नेन्नडेवक जैन सेनापति गोग्गिकी मृत्युके बाद राजाद्वारा उसके कुटुम्बियोंको कुछ दान मिलनेका वर्णन है। यह लेख सन् ११६२ का है। तीसरे लेखमें राजा पाण्ड्यभूपालद्वारा एक जिन-मन्दिरके लिए भूमिदानका वर्णन है। यह लेख सन् १४१० का है। चौथा लेख सन् १५२२ का है तथा इसमें इम्मडि भैरवरस राजाद्वारा वरांगके नेमिनाथमन्दिरके लिए एक गाँवके दानका वर्णन है।

सिन्द कुलके सामन्तोंके चार उल्लेख मिले हैं (क्र० १३८, १६६, २६१, २६४)।[2] इनमें पहला सन् १०५३ का है तथा इसमें सिन्द कंचरस-द्वारा नयसेन आचार्यको कुछ दान मिलनेका उल्लेख है। दूसरा लेख सन् १०८५ का है तथा यह सिन्द वर्मदेवरसके समयका दानलेख है। तीसरे लेखमें सन् ११६७ में सिन्द होलरसद्वारा एक बसदिको दान दिये जानेका वर्णन है। अन्तिम लेखमें सन् ११७० में सिन्द चावुण्डरसद्वारा जैन मालाको भूमिदान मिलनेका वर्णन है।

रट्ट कुलके उल्लेख छह लेखोंमें हैं (क्र० १७३, १८३, २५२, ३१३, ३१८, ३१९)।[3] इनमें पहला लेख ११वीं सदीके राजा कार्तवीर्य २ के समयका है, इसका विवरण अधूरा है। दूसरा लेख सन् ११०८ का है तथा इसमें राजा कन्नकैरद्वारा निर्मित जिनमन्दिरका उल्लेख है। तीसरे लेखमें सन् ११६५ में राजा कार्तवीर्य ३-द्वारा एक्कसम्बुगेके जिनमन्दिरके

---

१. पहले संग्रहमें इस वंशके कई लेख हैं जिनमें पहला (क्र० १२६) सन् ९५० के आसपासका है।

२. पहले संग्रहमें सिन्द राजाओंके लेख नहीं हैं।

३. पहले संग्रहमें इस वंशके दस लेख हैं जिनमें पहला (क्र० १३०) सन् ८७५ का है।

दर्शनका वर्णन है। अन्तिम तीन लेख कार्तवीय ४ के राज्यके सन् १२०१ तथा १२०८ के हैं। इनमें राजा द्वारा जिनमन्दिरोंके लिए दानोंका वर्णन है।

शिलाहार वंशके चार लेख मिले हैं (क्र० १९२, २२१, २२२, २५९)।[1] इनमें पहला सन १११५ का है तथा इसमें राजा गण्डरादित्य-द्वारा उनके जैन सामन्त नोलम्बको दो गाँवोंके दानका वर्णन है। अगले दो लेखोंमें गण्डरादित्यके जैन सामन्त निम्बका वर्णन है। इसने सन् ११३५ में एक जिनमन्दिरका निर्माण कराया था। अन्तिम लेखमें गण्डरादित्यके जैन सेनापति जिनण तथा विजयादित्यके सेनापति काल्णका उल्लेख है। काल्णने सन् ११६५ में एक मन्दिर बनवाया था।

काकतीय वंशका एक लेख सन् १११७ का मिला है (क्र० १९७)।[2] इसमें राजा प्रोलके मन्त्री बेतकी पत्नी-द्वारा अनमकोण्डमें पद्मावती देवीका मन्दिर बनवानेका वर्णन है।

गुत्त वंशके महामण्डलेश्वर विक्रमादित्यने सन् ११६२ में पार्श्वनाथ-मन्दिरके लिए कुछ दान दिया था (क्र० २५७)।[3]

कागाल्व वंशके शासक वीरकोंगाल्वने सन् १११५ के आसपास सत्यवाक्यजिनालय नामक मन्दिर बनवाया था (क्र० १९३)।[4]

मैसूरके राजा चामराजकी रानी देवीरम्मणिने मैसूरके शान्तिनाथ-मन्दिरमें दीपस्तम्भ तथा कलश दान दिये थे (क्र ५२८-५२५)। इनका

---

१ पहले संग्रहमें इस वंशके तीन लेख हैं (क्र० २५०, ३२०, ३३४)।

२ ३ पहले संग्रहमें इन दो वंशोंका उल्लेख नहीं है।

४ पहले संग्रहमें इस वंशके छह लेख हैं जिनमें पहला सन् १०५८ का है (क्र० १८६)।

समय १८वीं सदीका अन्तिम चरण है।[1]

(इ) राजाश्रयके विषयमें साधारण विचार – उपर्युक्त विवरणसे यह स्पष्ट होता है कि जैन संघको प्रायः सभी राजवंशोंके समय–विशेषकर दक्षिण भारतीय राजवंशोंके समय–अपने धर्मकार्योंमें अच्छी सहायता मिली है। इस सम्बन्धमे एक बातका ध्यान रखना चाहिए कि इनमें-से अधिकांश राजाओंका कुलधर्म जैनधर्म नहीं था – वे विष्णु, शिव, सूर्य या लक्ष्मीके उपासक थे।[2] तथापि उनकी प्रजामे जैन आचार्योंका अच्छा प्रभाव रहा होगा अतः जैन संघके विषयमे उनकी नीति सहानुभूतिपूर्ण रही है।

४ जैन संघकी दुरवस्था – बारहवीं सदीसे दक्षिण भारतमें वीरशैव तथा श्रीवैष्णव सम्प्रदायोंका प्रभाव बढ़ता गया तथा इनके आक्रामक रुख-का परिणाम जैन आचार्यों तथा मठ-मन्दिरोंको सहना पड़ा। इसके प्रत्यक्ष उल्लेख पहले संग्रहके दो लेखोंमे है।[4] इस संग्रहके कई लेखोंसे अप्रत्यक्ष रूपसे यही बात स्पष्ट होती है – ये लेख विष्णुमन्दिरों तथा शिवमन्दिरोंमें लगे पाये गये है। स्पष्ट है कि जैन मन्दिरोंके ध्वंसावशेषोंसे ही ये पत्थर

---

१. पहले संग्रहमें मैसूरके राजाओंके कई लेख हैं।

२. जिन्हें हम 'जैन' राजा कह सकते हैं ऐसे राजाओंकी संख्या सीमित ही है – कलिंगके खारवेल, नवीं सदीसे दसवीं सदी तकके गंग राजा, दसवीं- ग्यारवीं सदीके होयसल राजा तथा कुछ सामन्त ये जैन राजा कहे जा सकते हैं। आठवीं सदी तकके गंग राजा तथा बारहवीं सदीके तथा बादके होयसल राजा भी विष्णु, शिव आदिके उपासक थे।

३. यहाँ उल्लिखित राजवंशोंके राजनीतिक प्रभाव, राज्यविस्तार आदिके बारेमें तीसरे भागकी प्रस्तावनामें डॉ० चौधरीने विस्तारसे लिखा है अतः वे बातें यहाँ दुहरायी नहीं हैं।

४. लेख क्र० ४२५-२६।

विष्णु या शिवके मन्दिरोंमें ले जाये गये हैं। इसका महत्त्वपूर्ण उदाहरण कोल्हापुरका महालक्ष्मी मन्दिर है जहाँके कुछ स्तम्भोंपर पार्श्वनाथमन्दिर सम्बन्धी लेख मौजूद हैं (क्र० २२२)। आन्ध्र प्रदेशमें अनमकोण्ड पहाड़ीपर देवी पद्मावतीका मन्दिर था जो बादमें पूरी तरह ब्राह्मणोंके अधिकारमें चला गया (क्र० १९७)। इस तरहके अन्य उदाहरण भी हैं।

५ समारोप—जैनधर्म, साहित्य तथा समाजके इतिहासके लिए शिलालेखोंका महत्त्व सर्वमान्य है। अबतक इस संग्रहके लेखोंमें प्राप्त तथ्योंका जो विवरण दिया है उससे यह बात अतिस्पष्ट होगी। इस ऐतिहासिक जानकारीका उपयोग कर जैन साहित्य तथा कथाओंकी प्रामाणिकता परखना आवश्यक है। साहित्यिक तथा शिलालेखीय दोनों साधनोंके समन्वित उपयोगसे ही तथ्यपूर्ण इतिहासका निर्माण सम्भव है।

इस संग्रहके अन्तमें तीन परिशिष्ट दिये हैं। पहले परिशिष्टमें इस संग्रहकी तैयारीके समय जो श्वेताम्बर लेख हमारे अवलोकनमें आये उनकी सूची दी है। दूसरे परिशिष्टमें उन जैनेतर लेखोंकी संक्षिप्त जानकारी दी है जिनमें जैन व्यक्तियोंसे सम्बद्ध कुछ उल्लेख हैं। तीसरे परिशिष्टमें नागपुरके समस्त मूर्तिलेखोंका संग्रह है। यह संग्रह आजसे कोई २५ वर्ष पहले श्रीमान् शान्तिकुमारजी ठवलीने तयार किया था जो कई कारणोंसे अबतक प्रकाशित नहीं हो सका। इस पुस्तकमें प्रस्तुत संग्रहको अन्तर्भूत करनेकी अनुमतिके लिए हम श्रीठवलीजीके आभारी हैं। हमें आशा है कि इन तीन परिशिष्टोंमें प्रस्तुत संग्रह अभ्यासकोंके लिए अधिक उपयोगी सिद्ध होगा।

❦

जैन शिलालेख संग्रह

[मूल लेख तथा सारांश]

मूल लेख तथा सारांश

१

बारली (जि० अजमेर) (राजस्थान म्युजियम)

बारलीसे एक मील दूर मिलोत माताके मन्दिरमें।

प्राकृत, ब्राह्मी—सन्पूर्व ४थी सदी

१ वीराय भगव (ते)

२ चतुरासिति व (से)

३ ये सा (लि) मालिनि

४ र नि (वि) ठ माझिमिके

[इस लेखमें भगवान् वीरका निर्देश है जिससे प्रतीत होता है कि यह किसी जैन मन्दिरका लेख होगा। इसकी लिपि सम्राट् अशोकके लेखोंकी लिपिसे प्राचीन है। इससे अनुमान होता है कि इसमें जो ८४वें वर्षका निर्देश है वह महावीरके निर्वाणके बादका ८४वाँ वर्ष होगा। इसकी अन्तिम पंक्तिमें माध्यमिका नगरीका उल्लेख है। लेख टूटा है अतः इसका उद्देश्य ज्ञात नही होता।]

[इ० ए० ५८ (१९२९) पृ० २२९]

२

मालकोण्ड (नेलोर, आन्ध्र)

प्राकृत–ब्राह्मी, सन्पूर्व ३री सदी

[यह लेख स्थानीय पहाड़ीकी एक गुहाके अग्रभागमें है। यह गुहा अरुवाहि कुलके नन्दसेठिके पुत्र विरिसेठिने अर्पित की ऐसा लेखमें कहा है।

लिपि सन्पूर्व ३री सदीकी है। ये गुहाएँ श्रमणोंके लिए उत्कीर्ण की गयी थीं।]

[रि० सा० ए० १९३७-३८ क्र० ५३१ पृ० ५९]

३

खण्डगिरि (ओरिसा)— (मंचपुरी गुहा—ऊपरका भाग)

प्राकृत—ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

१ अरहंतपसादाय कालिंगा (नं) (सम) नानं लेणं कारितं राजिनो लालाक (स)

२ हथिसाहस-पपोतस धु (तु) ना कलिंगच (कवतिनो सिरिखा)-रवेलस

२ अगमहिसि (ना) कारि (तं)

[अरहंतोंकी कृपासे कलिंग प्रदेशके श्रमणोंके लिए यह गुहा कलिंग-चक्रवर्ती खारवेलकी महारानीने बनवायी। यह हस्तिसाहसके प्रपौत्र लालाककी कन्या थी]

[ए० इं० १३ पृ० १५९]

४

खण्डगिरि—(मंचपुरी गुहा—नीचेका भाग)

प्राकृत—ब्राह्मी सन्पूर्व पहली सदी

१ खरस महाराजस कलिंगाधिपतिनो महा (मेघ) वाह (नस) कुदेपसिरिनो लेण

[कलिंगके अधिपति महाराज खर महामेघवाहन कुदेपश्रीने यह गुहा बनवायी।]

[ए० इं० १३ पृ० १६०]

५

खण्डगिरि—(मचपुरी गुहा—नीचेका भाग)

प्राकृत—ब्राह्मी, सनूपूर्व पहली सदी

कुमारो वडुखस लेण

[यह गुहा कुमार वडुखने बनवायी ।]

[ए० इ० १३ पृ० १६१]

६

खण्डगिरि (सर्पगुहा)

प्राकृत-ब्राह्मी, सनूपूर्व पहली सदी

चूलकमस कोठाजेया च

[चूलकम्म (क्षुद्रकर्म अथवा चूडाकर्म) का कक्ष ।]

[ए० इ० १३ पृ० १६२]

७

खण्डगिरि (सर्पगुहा)

प्राकृत-ब्राह्मी, सनूपूर्व पहली सदी

१ कमम हलखि-

२ णय च पसादो

[कर्म तथा हलखिण (सल्लक्षण) का बनवाया प्रासाद ।]

[ए० इ० १३ पृ० १६२]

८

खण्डगिरि (हरिदास गुहा)

प्राकृत-ब्राह्मी, सनूपूर्व पहली सदी

[यह लेख सर्पगुहाके पहले लेखके समान ही है ।]

[ए० इ० १३ पृ० १६२]

९

खण्डगिरि (वाघ गुहा)

प्राकृत-ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

१ नगर अखदंस

२ सभूतिनो लेणं

[नगरके न्यायाधीश सुभूतिकी गुहा]

[ए० इं० १३ पृ० १६३]

१०

खण्डगिरि (जम्बेश्वर गुहा)

प्राकृत-ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

महामदास बारियाय नाकियस लेणं

[महामदकी पत्नी नाकियाकी गुहा]

[ए० इं० १३ पृ० १६३]

११

खण्डगिरि (छोटा हाथीगुंफा)

प्राकृत-ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

अगिख····स लेणं

[अगिख····की गुहा]

[ए० इं० १३ पृ० १६४]

१२

खण्डगिरि (तत्त्वगुहा)

प्राकृत-ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

पादमुलिकस कुसुमास लेणं फि····

[पदमूलिकके कुसुमकी गुहा]

[ए० इं० १३ पृ० १६४]

१३

खण्डगिरि (अनन्तगुहा)

प्राकृत–ब्राह्मी, सन्पूर्व पहला सदी

दोहद समणान लेण

[दोहदके श्रमणोकी गुहा]

[ए० इ० १३ पृ० १६४]

१४

खण्डगिरि (तत्त्वगुहा)

ब्राह्मी, पहली सदी

१ घ

२ ण त थ द ध न

३ ण त थ द ध न श ष स

४ ण त थ द ध न प फ ब श ष स ह

५ त थ द ध न प फ व श ष स ह

६ थ

[यह वर्णमाला चित्रित की गयी है जो सम्भवत किसी नवदीक्षित साधुका कार्य है।]

[ए० इ० १३ पृ० १६५]

१५

मथुरा (उत्तर प्रदेश)

प्राकृत–ब्राह्मी, वर्ष ८४ (दूसरी सदी)

१ ओं सिद्ध स ८० ४ व ३ दि २० ५ एतस्मि पूर्वय दमित्रस्य धितु ओख-

२ रिकाये कुटुबिणिये दताये दान वर्धमानप्रतिमा प्रतिथपिता

३ गणतो कोट्टियतो····सत्यसेनस्य····धरवृधिस्य नि····

[वर्ष ८४ मे वर्षा ऋतुके तीसरे महीनेके २५वें दिन दमित्रकी पुत्री तथा ओखरिककी पत्नी दता (दत्ता) ने यह मूर्ति स्थापित की। कोट्टिय गणके····सत्यसेन····धरवृद्धि।] [यदि लेखका वर्ष शककालका हो तो वह सन् १६२ होगा।]

[ए० इं० १९ पृ० ६७]

१६

मथुरा

प्राकृत—ब्राह्मी, पहली-२ री सदी (खण्डित जैनमूर्तिके पादपीठपर)

(शा) खातो वाच (कस्य) आर्य ऋ (षि) दासस्य निर्वर्तना···· रकस्य भट्टिदामस्य····

[····शाखाके वाचक आर्य ऋषिदासने यह बनवायी।····रक भट्टिदामकी····]

[रि० आ० स० १९११-१२ पृ० १७]

१७-१८

मथुरा

प्राकृत—ब्राह्मी, २री सदी

[यह लेख २री सदीकी लिपिमें है। अरहतके प्रणामसे इसका प्रारम्भ होता है तथा लाघकके पुत्रका इसमें उल्लेख है। एक अन्य पादपीठपर इसी समयकी लिपिमें वर्धमानको प्रणाम किया है।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ५२८-२९ पृ० ७७]

१९

पहाड़पुर ताम्रपत्र (जि० राजशाही, बंगाल)

गुप्त वर्ष १५९ = सन् ४७९ संस्कृत

अगला भाग

१ स्वस्ति पुण्ड्र (वर्ध) नादायुक्तका आर्यनगरश्रेष्ठिपुरोगाश्चाधिष्ठा नाधिकरण दक्षिणांशकवीथेयनागिरट्ट-

२ माण्डलिकपलाशाट्टपार्श्विक - वटगोहालीजम्बूदेवप्रावेश्यपृष्ठिमपोत्तक गोषाटपुञ्जक-मूलनागिरट्टप्रावेश्य-

३ नित्वगोहालीषु ब्राह्मणोत्तरान् महत्तरादिकुटुम्बिन कुशलमनुवर्ण्यानुबोधयन्ति । विज्ञापयत्यस्मान् ब्राह्मणनाथ

४ शर्मा एतद्भार्या रामी च युष्माकमिहाधिष्ठितानाधिकरणे द्विदीनारिक्यत्रुल्यवापेन शश्वत्कालोपभोग्याक्षयनीवीसमुदयबाह्या-

५ प्रतिकरखिलक्षेत्रवास्तुविक्रयोनुवृत्तस्तदहं थानेनैव क्रमेणावयो सकाशाद् दीनारत्रयमुपसंगृह्यावयो स्वपुण्याप्या-

६ यनाय वटगोहाल्यामवास्यान् काशिक पंचस्तूपनिकायिकनिर्ग्रन्थ श्रमणाचार्य गुहनन्दि-शिष्यप्रशिष्याधिष्ठितविहारे

७ भगवतामर्हतां गन्धधूपसुमनोदीपाद्यर्थन्तलवाटकनिमित्त च अ (त) एव वटगोहालीतो वास्तुद्रोणवापमध्यर्ध ज-

८ म्बूदेवप्रावेश्य पृष्ठिमपोत्तकेत् क्षेत्र द्रोणवापचतुष्टय गोषाटपुञ्जाद् द्रोणवापचतुष्टय मूलनागिरट्ट-

९ प्रावेश्यानित्वगोहालीत अर्धत्रिकद्रोणवापानित्येवमध्यर्ध क्षेत्र-कुल्यवापमक्षयनीव्या दातुमि (त्यत्र) यत प्रथम-

१० पुस्तपालदिवाकरनंदि पुस्तपालधृतिविष्णु - विरोचनरामदास हरिदास-शशिनन्दिषु प्रथमनु मवधारण-

११ यावधृतमस्त्यस्मदधिष्ठितानाधिकरणे द्विदीनारिक्यकुल्यवापेन शश्वत्कालोपभोग्याक्षयनीवीसमु (दयबा) ह्याप्रतिकर-

१२ (खिल) क्षेत्रवास्तुविक्रयोनुवृत्तस्तद् यद् युष्मान् ब्राह्मणनाथ-शर्मा एतद्भार्या रामी च पलाशाट्टपार्श्विकवटगोहालीस्थ

पिछला भाग

१३ ········कपञ्चस्तूपनिकायिकाचार्यनिर्ग्रन्थ-गुहनन्दि- शिष्यप्रशिष्या-
धिष्ठितसद्विहारे अर्हतां गन्ध (धूपा) द्युपयोगाय

१४ (तलवा) टकनिमित्तं च तत्रैव वटगोहाल्यां वास्तुद्रोणवाप-
मध्यर्धं क्षेत्रं जम्बूदेवप्रावेश्यपृष्ठिमपोत्तके द्रोणवापचतुष्टयं

१५ गोषाटपुञ्जाद् द्रोणवापचतुष्टयं मूलनागिरट्टप्रावेश्यनित्वगोहालीतो
द्रोणवापद्वयमाढवा (पद्व) याधिकमित्येवम-

१६ मध्यर्धं क्षेत्रकुल्यवापं प्रार्थयतेत्र न कश्चिद् विरोधः गुणस्तु यत्
परमभट्टारकपादानामर्थोपचयो धर्मषड्भागाप्याय-

१७ नं च भवति तदेवं क्रियतामित्यनेनावधारणाक्रमेणास्माद् ब्राह्म-
णनाथशर्मत एतद्भार्याराभियाश्च दीनारत्र-

१८ यमायीकृत्यैताभ्यां विज्ञापितक्रमोपयोगायोपरिनिर्दिष्टग्रामगो-
हालीकेषु तलवाटकवास्तुना सह क्षेत्रं

१९ कुल्यवाप अध्यर्धोक्षयनीवीधर्मेण दत्तः कु १ द्रो ४ तद् युष्माभिः
स्वकर्मणाविरोधिस्थाने पट्कनडेरप-

२० विच्छय दातव्योक्षयनीवीधर्मेण च शश्वदाचन्द्रार्कतारककालमनु-
पालयितव्य इति सं १०० (+) ५० (+) ९

२१ माघ दि ७ उक्तं च भगवता व्यासेन । स्वदत्तां परदत्तां वा यो
हरेत वसुन्धरां ।

२२ स विष्ठायां कृमिर्भूत्वा पितृभिः सह पच्यते ॥ षष्टिवर्षसह-
स्राणि स्वर्गे वसति भूमिदः ।

२३ आक्षेप्ता चानुमन्ता च तान्येव नरके वसेत् ॥ राजभिर्बहुभिर्दत्ता
दीयते च पुनः पुनः । यस्य यस्य

२४ यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥ पूर्वदत्तां द्विजातिभ्यो
यत्नाद् रक्ष युधिष्ठिर । महीं महिमतां श्रेष्ठ

२५ दानाच्छ्रेयोनुपालनम् ॥ विन्ध्याटवीष्वनम्भ,सु शुष्ककोटर-
वासिन । कृष्णाहिनो हि जायन्ते देवदाय हरन्ति ये ॥

[यह ताम्रपत्र गुप्तवर्ष १५९ के माघ मासके ७वें दिन लिखा गया था। ब्राह्मण नाथशर्मा तथा उसकी पत्नी रामीने पुण्ड्रवर्धनके राजकोषमें तीन दीनार देकर डेढ कुल्यवाप जमीन प्राप्त की। इसमें ४ द्रोणवाप जमीन पृष्ठिमपोत्तक गांवमें, ४ द्रो० गोपाटपुञ्जक गांवमें, २½ द्रो० नित्व-गोहालीमें और १½ द्रो० वटगोहालीमें थी। काशीके पञ्चस्तूपनिकायके निर्ग्रन्थ श्रमणाके आचार्य गुहनन्दिके शिष्य-प्रशिष्योंका एक विहार वट-गोहालीमें था। वहां भगवान् अर्हत्की पूजाके लिए गन्ध, धूप, फूल, दीप आदिकी व्यवस्थाके लिए यह जमीन नाथशर्मा तथा रामीने दान दी। इस ताम्रपत्रमें परमभट्टारक पदसे किसी सम्राट्का उल्लेख किया है। ये सम्भवत गुप्तवंशीय सम्राट् बुधगुप्त थे। पहाडपुरके समीपका गोआलभिटा गांव ही सम्भवत प्राचीन वटगोहाली है। यहांके एक बडे मन्दिरके उत्खननमें कई जैन, बौद्ध तथा ब्राह्मण अवशेष मिले है।]

[ए० इ० २० पृ० ५९]

२०
होसकोटे (मैसूर)
६वीं सदी पूर्वार्ध संस्कृत

पहला पत्र

१ स्वस्ति जित भगवता गतघनगगनाभेन पद्मनाभेन श्रीमज्जाह्न-
वेयकुलामलव्यो-
२ मावभासनभास्करस्य स्वभुजजवजयजनितसुजनजनपदस्य
दारुणारिगण-
३ विदारणरणोपलब्धव्रणविभूषणभूषितस्य काण्वायनसगोत्रस्य श्री-
४ मत्कोंगणिवर्मधर्ममहाधिराजस्य पुत्रस्य पितुरन्वागतगुणयुक्तस्य

५ विद्याविहितविनयस्य सम्यक्प्रजापालनमात्राधिगतराज्य-
प्रयोजनस्य

द्वितीयपत्र : पहला भाग

६ विद्वत्कविकांचननिकपोपलभूतस्य विशेपतोप्यनवशेपस्य नीति-
शास्त्रस्य वक्तृप्र-

७ योक्तृकुशलस्य सुविभक्तभक्तभृत्यजनस्य दत्तकसूत्रवृत्तेः प्रणेतुः
श्रीमन्माधववर्मम-

८ हाधिराजस्य पुत्रस्य पैतृपितामहगुणयुक्तस्य अनेकचतुर्दन्त-
युद्धावाप्त-

९ चतुरुदधिसकिलास्वादितयशसः समदद्विरदतुरगारोहणातिशयो-
त्पन्नतेजसो धनुर-

१० भियोगजनितसम्पादितसम्पद्विशेपस्य श्रीमद्धरिवर्ममहाधिराजस्य
पुत्रस्य

द्वितीय पत्र : पिछला भाग

११ गुरुगोब्राह्मणपूजकस्य नारायणचरणानुध्यातस्य श्रीमद्विष्णु-
गोपमहाधि-

१२ राजस्य पुत्रस्य त्र्यम्बकचरणाम्भोरुहरजःपवित्रीकृतोत्तमांगस्य
व्यायामोद्वृत्तपीन-

१३ कठिनभुजद्वयस्य स्वभुजवलपराक्रमक्रयक्रीतराज्यस्य चिरप्रनष्ट-
ब्रह्मदे-

१४ यबहुसहस्रविसर्गाग्रग्रणकारिणः क्षुत्क्षामोष्टपिशिताशनप्रीतिकर-
निशितधा-

१५ रासेः कलियुगमलपंकावसन्नधर्मवृपोद्धरणनित्यसन्नद्धस्य श्रीमाधव-
महाधिराज-

तृतीय पत्र : अगला भाग

१६ स्य पुत्रेण जननीदेवतापर्यंकनल्समधिगतराज्येन निजप्रभाव-खडित-

१७ रिपुनृपतिमडलेनाखडलविलविविमतविक्रमेण करितुरगवरारोहणसौष्ठ-

१८ वजनितगुणविशेषेण स्वदानकुसुममजरीसुरभितसमतद्दिगत-रामिग-

१९ तबुधमधुकरसमुदयन वरागनापागशरविक्षेपलक्षागेन प्रजापरिरक्ष-

२० णैकदीक्षाक्षपितकल्मषेणापरिणतवयसापि परिणतमतिसत्त्व-सम्पदा परम-

तृतीय पत्र पिछला भाग

२१ धार्मिकेण श्रीमता कोंगण्यधिराजेनात्मन· प्रवर्धमानविजयैश्वर्ये द्वादशे सवत्स-

२२ रे कार्तिके मासे शुक्लपक्षे तिथौ पौर्णमास्या शासनाधिकृतस्य सम्यग्मन्त्रतन्त्रागं-

२३ तस्य विविधागमजलप्रक्षालितविशुद्धबुद्धे सिहविष्णुपल्लवाधि-राजस्य

२४ जनन्या मर्तृकुलकीतिजनन्यार्थं चात्मनश्च धर्मप्रवर्धनार्थं च प्रतिष्ठापिताय अर्हद्दे-

२५ वतायतनाय यावनिकसघानुष्ठिताय कोरिकुन्दभागे पुल्लिऊर् नाम ग्रामे

चतुर्थ पत्र अगला भाग

२६ महातटाकस्याधस्तात् मूलभ्यासो श्रमणकेदारसहितसप्तकण्डुका-वापमात्र

२७ क्षेत्र मध्यभागे पचकण्डुकावापमात्र क्षेत्र इक्षुनिष्पादनक्षमम-

२८ कन्तोदक्षेत्र ग्रास दक्षिणेन कण्डुकावापमात्र पञ्च उत्तरेण च द्वा-

२९ दशकण्डुकावापमात्रमारण्यक्षेत्रं च देवतायतनसन्निकृष्टमेकं वेश्म च

३० एतत् सर्वं सर्वपरिहारपरिगृहीतं पानीयपातपुरस्सरं दत्तं योस्य

चतुर्थपत्र : पिछला भाग

३१ लोभात् प्रमादाद् वापि हर्ता स पंचमहापातकसंयुक्तो भवति अपि चास्मिन्न-

३२ र्थे मनुगीता(न्) श्लोकानुदाहरन्ति ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम्

३३-३८ (नित्यके शापात्मक श्लोक)

३९ कुवलालत्वष्टकारस्य इदम्पट्टुवस्य पुत्रेण पेरेरन्नामलिखिताम्पट्टिका ॥ शिवमस्तु

[यह ताम्रपत्र गंगवंशीय राजा माधव (द्वितीय) के पुत्र कोंगण्य-धिराज (अविनीत) द्वारा राज्यवर्ष १२ के कार्तिक शु० १५ को दिया गया था। इसमें यावनिक संघ-द्वारा अनुष्ठित एक अर्हद्देवतायतन (जिन-मन्दिर) के लिए पुल्लिऊर ग्रामकी कुछ भूमि और एक घर दान दिये जाने-का उल्लेख है। यह मन्दिर पल्लव राजा सिंहविष्णुकी माता-द्वारा निर्माण किया गया था। ताम्रपत्रको इदम्पट्टुवके पुत्र पेरेरने लिखा था।]

[ए० रि० मै० १९३८ पृ० ८०]

२१

कोरमंग (मैसूर)

६वीं सदी, संस्कृत

प्रथम पत्र

१ सूर्यांशुद्युतिपरिपिक्तपंकजानां शोभां यद् वहति सदास्य पाद-पद्मम्।

सिद्धम्

२ द्द्राना मकुटमणिप्रमाभिषिक्त सर्वज्ञ. स जयति सर्व-
लोकनाथ (॥१)

३ कीर्त्या दिगन्तरव्यापी रघुरासीद्धराधिप (।) काकुस्थतुल्य काकु-
स्थो यवीयास्तस्य भूपति (॥२)

४ तस्याभूत् तनय श्रीमाण् शान्तिवर्मा महीपति (।) मृगेशस्तस्य
तनयो मृगेश्वरपराक्रम (॥३)

५ कदम्बामलवशाङ्क मौलितामागतो रवि (।) उदयाद्रिमकुटटोप
(टाटोप) दीप्तांशुरिवांशुमान् (॥४)

६ नृपरुळ्लनकी विष्णुर्दैत्यजिष्णुरय स्वय (।) हिरण्मयचलन्माल
त्यक्त्वा चक्र विभावित (॥५)

७ साम्राज्ये नन्दमानापि न माद्यति परतप (।) श्रीरेषा मदयत्य-
न्यानतिपीतेव वारुणी (॥६)

द्वितीय पत्र

८ नर्मद त मही प्रीत्या यमाश्रित्याभिनन्दति (।) कौस्तुभामारुण
च्छाय वक्षो लक्ष्मीर्हरेरिव (॥७)

९ रवावधि जयन्तीव सुरेन्द्रनगरी श्रिया (।) वैजयन्ती चलच्चित्र
वैजयन्ती विराजते (॥८)

१० रवेर्भुजगदासीव चन्दनप्रीतमानसा (।) तथा श्रीर्नाभवत् प्रीता
मुरारेरपि वक्षसि (॥९)

११ विश्वा वसुमती नाथन्नायते नयकोविदम् (।) द्यौरिवेन्द्र ज्वलद्व-
ज्रदीप्तिकोरकिनायदम् (॥१०)

१२ यस्य मूर्ध्नि स्वय लक्ष्मी हेमकुम्भोदरच्युतै (।) राज्याभिषेकम-
करोदम्भोजशबलैर्जलै (॥११)

१३ रघुणालम्बितामौली (मौलौ) कुण्डो गिरिधारयत् (।) रवेराज्ञा
वहत्यद्य मालामिव महीधर (॥१२)

१४ धर्मार्थं हरिदत्तेन सोयं विज्ञापितो नृपः (।) स्मितज्योत्स्नाभिषि-
क्तेन वचसा प्रत्यभाषत (॥१३)

द्वितीय पत्र : दूसरा भाग

१५ चतुस्त्रिंशत्तमे श्रीमद्राज्यवृद्धिसमासमा (।) मधुर्मासस्तिथिः
पुण्या शुक्लपक्षश्च रोहिणी (॥१४)

१६ यदा तदा महाबाहुरासंग्रामपराजितः (।) सिद्धायतनपूजार्थं
संघस्य परिवृद्धये (॥१५)

१७ सेतोरुपलकस्यापि कोरमंगाश्रितां महीम् (।) अधिकान्निवर्त-
नान्येव दत्तवां स्वामरिन्दमः (॥१६)

१८ आसन्दी दक्षिणस्याथ सेतोः केदारमाश्रितम् (।) राजमानेन
मानेन क्षेत्रमेकनिवर्तनम् (॥१७)

१९ समणे सेतुबंधस्य क्षेत्रमेकनिवर्तनम् (।) तच्चापि राजमानेन
वेटिकोंटेत्रिनिवर्तनम् (॥१८)

२० उन्छादिपरिहर्तव्ये समाधिसहितं हितम् (।) दत्तवांश्श्रीमहाराज-
स्सर्वसामन्तसंनिधौ (॥१९)

२१ ज्ञात्वा च पुण्यमभिपालयितुर्विशालं तद्भंगकारणमितस्य च
दोषवत्ताम्

तीसरा पत्र :

२२ ········ममस्खलितसंयमनैकचित्ताः संरक्षणेस्य जगतीपतयः
प्रमाणं (॥२०)

२३ बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः (।) यस्य यस्य यदा
भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं (॥२१)

२४ अद्भिर्दत्तं त्रिभिर्भुक्तं सद्भिश्च परिपालितम् (।) एतानि न निवर्त-
न्ते पूर्वराजकृतानि च (॥२२)

२५ स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुधरा (।) षष्टिर्वर्षसहस्राणि नरके पच्यते तु स (॥२३)

[यह ताम्रपत्र कदम्बवंशीय राजा मृगेशके पुत्र रविवर्मा-द्वारा दिया गया था। हरिदत्तके निवेदनपर राजाने सिद्धायतनकी पूजा तथा संघ-की वृद्धिके लिए कोरमग ग्रामकी कुछ जमीन दान दी ऐसा इसमें निर्देश है। दानकी तिथि राज्यवर्ष ३४ के चैत्र शुक्ल पक्षकी पुण्यतिथि कही गयी है।]

[ए० रि० मै० १९३३ पृ० १०९]

२२

गोकाक ताम्रपत्र (जि० बेलगाँव, मैसूर)

६–७वीं सदी, संस्कृत–नागरी

१ स्वस्ति ॥ वर्धतां वर्धमानेन्दोर्वर्धमानगणोदधे । शासन नाशित-
२ रिपोर्मासुर मोहशासन ॥ (१) इहास्यामवसर्पिण्यान्तीर्थं-
३ कराणां चतुर्विंशतितमस्य सन्मते श्रीवर्धमानस्य वर्धमा-
४ नाया तीर्थसन्ततावागुहायिकाना राज्ञामष्टसु वर्षशते-
५ षु पंचचत्वारिंशदग्रेषु गतेषु राष्ट्रकूटान्वयजातश्रीदे-

दूसरा पत्र पहला भाग

६ ज्जमहाराजस्याभिमत श्रीसेन्द्रकामलकुलाम्बरोदितदी-
७ प्रदिवाकरो विजयानन्दमध्यराजात्मज श्रीमानिन्द्रणन्दाधि-
८ राज स्ववश्यानामात्मनश्च धर्मवृद्धये कष्माण्डीविषये
९ पर्वतप्रत्यासन्नजलारग्रामे जम्बूखण्डगणस्थाय ज्ञान-
१० दर्शनतपस्सम्पन्नाय आर्यनन्द्याचार्याय भगवदर्ह-

दूसरा पत्र : दूसरा भाग

११ प्रतिमानवरतपूजार्थं शिक्षकग्लानवृद्धानां च तपस्विनां वै-

१२ यावृत्यार्थं ग्रामस्योत्तरतः पूर्वाणग्रामविरेयसीमकं द-

१३ क्षिणेन मुञ्जजलमार्गपर्यन्तं अपरतः पुन्दावीरत्तुस-

१४ हितवल्मीकं तस्मादुत्तरतः पुष्करणी ततश्च यावत् पूर्वविरेय-

१५ कं राजमानेन पंचाशन्निवर्तनप्रमाणक्षेत्रन्द-

तीसरा पत्र

१६ त्तवानेतद् यो हरति स पंचमहापातकसंयुक्तो भवति ॥ उक्तञ्च

१७-२० बहुभिर्वसुधा भुक्ता-(नित्यके शापात्मक श्लोक)

[यह ताम्रपत्र सेन्द्रक वंशके अधिराज विजयानन्दके पुत्र इन्द्रणन्द-द्वारा जम्बूखण्डगणके आचार्य आर्यणन्दिको दिया गया था। अर्हत्प्रतिमाकी पूजाके लिए तथा तपस्वियोंकी सेवाके लिए जलार ग्रामके पासकी कुछ भूमि उन्हें दी गयी थी। राजा इन्द्रणन्द राष्ट्रकूट वंशके देज्ज महाराजका सामन्त था। इस ताम्रपत्रका काल आगुप्तायिक राजाओंका ८४५वाँ वर्ष इस प्रकार कहा है। किन्तु इसमें कौन-सी कालगणना अभिप्रेत है यह स्पष्ट नहीं क्योंकि लिपिकी दृष्टिसे यह ताम्रपत्र छठी या सातवीं सदीका प्रतीत होता है।]

[ए० इं० २१ पृ० २८९]

२३

चितरल (केरल)

७वीं सदी, तमिल

भगवती मन्दिरके लिए प्रसिद्ध तिरुच्चाणत्तुमलै पहाड़ीपर

[इस लेखमें अरिट्टनेमि भटारके शिष्य गुणन्दांगि कुरत्तिगल-द्वारा देवीके लिए कुछ सोनेके आभूषण दान देनेका निर्देश है। यह लेख विक्रमादित्य वरगुणके २८ वें वर्षका है।]

[इ० म० तिरुवांकुर २]

२४

कुलगाण (मैसूर)

संस्कृत–कन्नड, ७वीं सदी

पहला पत्र

१ स्वस्ति श्री जित भगवता श्रीमज्जाह्नवेय
२ श्रमणाचार्यमाधिन स्वसङ्गैक
३ रात्मैकयशस दारुणारिगणविदार
४ ण्वायनसगोत्रस्य श्रीमत्कोङ्गणिवर्मध

दूसरा पत्र

५ र्मनस्य श्रीमन्माधवमहाधिराजस्य प्रियोरसस्य श्रीविष्णुवर्म-
गोपमहाधिराजस्य अने
६ कचतुरन्तयुद्धावासचतुर्दधिसलिलास्वादितयशस पुत्रस्य श्री-
मन्माधवमहाधिराज-
७ जस्य पुत्रस्य श्रीमत्कृष्णवर्ममहाधिराजस्य भागिनेयस्य श्रीमत्-
कोङ्गणिवृद्धराजस्या-
८ विनीतनाम्न पुत्रस्य श्रीदुर्विनीतनामधेयस्य समस्तपाणाटपुन्ना-
टाधिपतेरात्मजस्य श्री-

दूसरा पत्र (ब)

९ मत्कोङ्गणिवृद्धराजस्य प्रथितमुष्करद्वितीयनामधेयस्य सर्वविद्या-
पारगस्य सूनो श्रीम-
१० त्पृथिवीकोङ्गणिवृद्धराजस्य श्रीविक्रमद्वितीयनामधेयस्य सर्व-
विद्यानिकषोपलभूतस्य प्र-
११ योगनिपुणतरस्य श्रीविक्रमोपार्जितानेकजनपदस्य प्रतापोपनत-
सकलसामन्तस्य

१२ वनविनीतस्यात्मजे श्रीमत्पृथिवीकोंगणिवृद्धराजे प्रणितानेक-
राजन्य मकुटमणिम-

तीसरा पत्र

१३ यूखपुंजपिंजरितांगुष्ठे वरयुवतिमनोनयनसुभगे रिपुनृपतिगजाश्व-
रथनरोल्बन-

१४ लोकम्मनद्द्विरदतुरगारोहणोपर्मासमाननिरतिशयनिजशरीरश्री-
वल्लभे सकल-

१५ पाणाटपुन्नाटाद्यनेकजनपदाधिपतौ मनोविनीतस्य भ्राता शिव-
कुमारः श्रीमत्पृथिवी-

१६ कोंगणिवृद्धराजः स्थिरविनीतः अवनिमहेन्द्रविख्यातः पाणाटपु-
न्नाटाद्यनेकजनपदाधि-

तीसरा पत्र (ब)

१७ पतिः पृथिवीं परिपालयति कोडुगून्नाडा केल्लिपुनूरा चेट्टिअक्कं
कर्गुलप्पोल तट्टवल्लु-

१८ वेरेडं वर्म्मदिगालुमेरडु कळनिडं तोट्टमुं मनेत्तानमुं पृथिवीकोंगणि
मुत्तरसरनुमतदो-

१९ ळं पल्लवेकारमर् पोय्द्दार् कोकन्दियुं मयिलूरगयुं मेल्पालुं
जादिगालु कोळिगंकेरेक्कालु ओन्दुतोट्टमुमा-

२० क कळनिडं पृथिवीकोंगणि मुत्तरसरनुमतदोळं गंजेनाडर् कण्णमन्
पोय्द्दार् चन्त (न्द्र) मेनाचा-

चौथा पत्र

२१ र्यर् कर्त्तारराग अद्कें साक्षि केळ्ळिपुमूर् पन्निर्वरं अयसामन्तरं
नाल्त्तोणिडं इदा-

२२ नल्दिोन् पचमहाशातगनप्पोन् श्री वहुमिर्वसुधा भुक्ता राजभि-
स्सक (ग)-

२३ राद्रिमि यस्य यस्य यदा भूमि ( ) तस्य तस्य तदा फल ॥
देवस्व तु विप घो-

२४ र न विप विपमुच्यते विपमेकाकिन हन्ति देवस्व पुत्रपौत्रक ॥
स्वदत्ता परदत्ता वा

चौथा पत्र (न)

२५ यो हरेति वसुन्धरा षष्टि वर्पसहस्राणि घारे तमसि वतते ।
मारगो-

२६ टेररोन्डु नोट पाय्न्नार् देवरा पसु गोट्टोन्डु नोट कोण्डनु गज-
नाडर्

२७ कण्णम्मन् कोडुगूर्नाटाल श्रीरकल्वायगर मंभ्रालवायगरसिवर
तुण्णूरालअरसरान-

२८ नुमनप्पदिम्मि पोयदडु तुल टिल् काल् किल्पुमूर् चेद्रियक्क

पाँचवाँ पत्र

२९ से ३२ तक पक्तियाँ १२ से १६ तक के समान है ।

३३ पाणाटपुन्नाटाद्यनेकजनपदाधिपति पृथिवीं परिपालयति कडुगूर्-
विपये

३४ कल्लियुसूर् नाम ग्रामे जिनालयाय वमदिकालु जातिकालु
मेल्पालु कोल्लि-

३५ गन्‌केरकालु कर्गुंलदापोल तट्टुवल्लुवेरड पुलुकल्निड नाल्गु-
तोट्मु म-

३६ नेत्तानमु चन्द्रसेनाचार्यर्गे उदपूर्व कोट्टरदर्क साक्षी कोट्टर
कारेअरकु

[इस ताम्रपत्रके प्रारम्भमे गंग वंशके राजाओंकी वंशावली इस प्रकार बतलायी है – कोंगणिवर्मा माधव – विष्णुवर्मगोप – माधव – अविनीत कोंगणिवृद्धराज – दुर्विनीत – मुष्कर कोंगणिवृद्धराज – श्रीविक्रम पृथिवीकोंगणिवृद्धराज – श्रीवल्लभ पृथिवीकोंगणिवृद्धराज। श्रीवल्लभके बन्धु शिवकुमार अवनिमहेन्द्र पृथिवीकोंगणिवृद्धराजके शासनकालमे यह लेख लिखा गया था। पल्लवेल अरसने राजाकी अनुमतिसे केल्लिपुसूर् ग्रामका एक खेत, बगीचा और कुछ जमीन एक जिनमन्दिरको दान दी उसका इस लेखमे निर्देश है। इसी समय गंजेनाड निवासी कण्णम्मन्ने भी कुछ खेत इस मन्दिरको अर्पण किये। मारुगोट्टेरस्ने एक बगीचा तथा ओरंकल्वायूगर् और सीम्पाल्वायूगर्ने कुछ खेत दान दिये। राजाने भी कुछ खेत दान दिये थे। इस जिनमन्दिरके अधिष्ठाता चन्द्रसेनाचार्य थे।]

[ए० रि० मै० १९२५ पृ० ९०]

२५-२६-२७

कोनकोण्डल (अनन्तपुर, आन्ध्र)

७वीं सदी, कन्नड

[ये तीन लेख रसासिद्दुलगुट्ट नामक पहाड़ीपर पाषाणोंपर खुदे है। इनमे निम्नलिखित नाम उत्कीर्ण है –

१ सिंगनन्दिरन्दिरन्

२ श्रीउरिगपल्लिण्डि

३ श्रीमूलाकोमरन्

इनकी लिपि ७वी सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४५४-५५-५६ पृ० १२६]

२८

रत्नगिरि (कटक, उडीसा)

संस्कृत, ७वीं सदी

[इस लेखमें ७वीं सदीकी लिपिमें एक जिनालयका उल्लेख है। लेख खण्डित है।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४४८ पृ० ६७]

२९

पेनिकेलपाडु (कडप्पा, आन्ध्र)

संस्कृत-तेलुगु, ७वीं सदी

[इस लेखमें वृषभ नामक जैन आचार्यकी प्रशंसा की गयी है। उन्हें भव्यरूपी कमलके लिए मेघके समान तथा वाद-विवादमें पर्वतके समान दृढ कहा है। इस स्थानको अब संन्यासिगुण्डु कहा जाता है। लिपि ७वीं सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ८०१ पृ० १२०]

३०

कोंगरपुलियंगुलम् (मद्रास)

वट्टेलुत्तुलिपि, ७वीं सदी

(एक जैनमूर्तिके नीचे —) श्रीअज्जणन्दि

[यहाँसे ३८वें लेख तक ९ लेखोंका समय लिपिके आधारपर कहा है।]

[रि० सा० ए० १९१० पृ० ५७ क्र० ५४]

३१

मुत्तुप्पट्टि (मद्रास)

वट्टेलुत्तुलिपि, ७वीं सदी

[(जैनमूर्तिके नीचे –) यह मूर्ति वेण्बुनाडुके कुरण्डि अट्टउपवासि भटारके शिष्य गुणसेनदेवके शिष्य कनकवीरपेरियडिगल्-द्वारा बनवायी गयी थी ।]

[रि० सा० ए० १९१० पृ० ५७ क्र० ६१]

३२

मुत्तुप्पट्टि (मद्रास)

वट्टेलुत्तुलिपि, ७वीं सदी

[यह मूर्ति कुरण्डि अष्टोपवासिके शिष्य माघनन्दि-द्वारा बनवायी गयी थी ।]

[रि० सा० ए० १९१० पृ० ५७ क्र० ६२]

३३-३८

कीलक्कुडि (मद्रास)

वट्टेलुत्तुलिपि, ७वीं सदी

[यहाँ जैन मूर्तियोंके समीप निम्न नाम खुदे है – कनकनन्दि भटारके शिष्य अभिनन्दन भटारके शिष्य अरिमण्डल भटारके शिष्य अभिनन्दन भटार (२) ।

अज्जणन्दिकी माता गुणमतियार् ।

गुणसेनदेवके शिष्य अनत्तवन् मासिनन्का भतीजा आच्चन् श्रीपालन् ।

गुणसेनदेवके शिष्य कण्डन् पोर्पट्टन् । वेण्बुनाडुके तिरु कुरण्डिके सेवक कनकनन्दि । गुणसेनदेवके शिष्य अरैयंगाविदि, पल्लिके प्रमुख ।]

[रि० सा० ए० १९१० पृ० ५७ क्र० ६३–६९]

३९

नलजनम्पाडु (आन्ध्र)

तेलुगु, ७वीं-८वीं सदी

अगला भाग

१ स्वस्ति भ-
२ गवदर्हत (प)-
३ रमभट्टारकस्य पा-
४ दानुध्यात परमभा-
५ हेश्वर पर(मे) श्वर प-
६ ल्लवादित्य श्रीवादि-
७ राजुल ग्रन्दु पल्ले-
८ यरि कोडुकु बादि (रा)-
९ जेन्वानूर राजमा (न)-
१० बु मूनूर बुट्टु आलं-
११ पटट्ठ क्षेत्रबु प(रि)-
१२ सि पल्लेयारि (द्रा)-
१३ यनबुनाकु इच्चे
१४ दोनि रक्षिचिनवानि (कि)

पिछला भाग

१५ अडुगडु-
१६ गश्वमेधवुना
१७ पलबगु
१८ दोनि लचिचन-
१९ वानिकि एक्लु
२० श्रीपर्वतबु
२१ लचिचन पाप-
२२ बगु वाच्चो-
२३ लाल कोडुकु
२४ पदरवाचा-
२५ र्यस्य लिकि-
२६ तम् (॥)

[इस लेखमें परमेश्वर पल्लवादित्य वादिराजुल नामक शासक-द्वारा ३ पुट्टि जमीन किसी ग्राममुख्यको दिये जानेका उल्लेख है। वादिराजुलको अर्हत्भट्टारक तथा महेश्वर दोनोंका भक्त कहा गया है। लेखकी लिपि ७वीं-८वीं सदीकी है।]

[ए० इ० २७ पृ० २०३]

४०-४३

सातानिकोट (कुर्नूल, आन्ध्र)

कन्नड, ७वीं-८वीं सदी

[यहाँ एक खेतमे पाषाणोंपर निम्न नाम खुदे है –

१ श्री····कोपा (शि) की निसिधि

२ संसारमीत

३ श्रीविमलचन्द्रन्

४ गणिगे महाव्रति

इनकी लिपि ७वीं-८वी सदीकी है ।]

[रि० सा० ए० १९३७-३८ क्र० ३३०, ३३२, ३३७, ३३९ पृ० ४१-४२]

४४

माचेर्ल (कृष्णा, आन्ध्र)

तेलुगु, ८वीं सदी, पूर्वार्ध

[यह लेख पूर्वीय चालुक्य राजा सकललोकाश्रय जयसिंहवल्लभ (द्वितीय) के राज्यवर्ष ८ मे लिखा गया था । दयावसन्त पृथिवीदेशरट्टगुडिके प्रपौत्र तथा धन्यवसन्त पृथिवीदेशरट्टगुडिके पुत्र कल्याणवसन्तुलु-द्वारा अरहन्तभटारको कुछ भूमि दान दिये जानेका इसमे उल्लेख है । इस दानकी रक्षा कोंडूरुके रट्टगुडि वंशके शासक करेंगे ऐसा लेखमे कहा है ।]

[रि० सा० ए० १९४१-४२ क्र० १८ पृ० १३१]

४५

शिग्गाव (धारवाड, मैसूर)

शक ६३० = सन् ७०८

संस्कृत-नागरी

[यह ताम्रपत्र चालुक्य राजा विजयादित्यके ११वें राज्यवर्ष शक ६३० में आषाढ पौर्णिमाके दिन दिया गया था। किसुवोल्लके राजस्कन्धावारमें राजाने पुरिगेरे नगरमें कुंकुमादेवी-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरके लिए गुड्डिगेरे ग्राम दान दिया ऐसा इसमें उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९४५-४६ ए० क्र० ४९]

४६

अण्णिगेरि स्तम्भलेख (जि० धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष ६ = सन् ७५१-५२, कन्नड

१ स्वस्ति कीर्तिवर्म(सत्या)श्रय
२ श्रीपृथु(वीवल्लभ) महाराजा
३ धिराज परमेश्वर भटारर
४ राज्य मान्दुत्तरमभिवृद्धि स-
५ ले आरनेया वर्षं प्रव-
६ र्दमानभागे जे-
७ बुलगेरिय कलि-
८ यम्म रामुण्डुगेय्दी
९ चेन्दियमानुमाविमिदोद्
१० इदर सुन्दे कोण्दि-
११ गुल्कुप्र कीर्तिवर्म-
१२ गामामिय निरिसिन
१३ कीर्तन। ईशापालस्य लि-
१४ खित। प्रभुनामन्।

[यह लेख बदामीके चालुक्य राजा कीर्तिवर्मा द्वितीयके राज्यके छठे वर्षका अर्थात् सन् ७५१-५२ का है। इसमें जेबुलगेरिके ग्रामाधिकारी कलियम्म-द्वारा एक चैत्य अर्थात् जिनमंदिर बनवाये जानेका निर्देश है।]

[ए० इ० २१ पृ० २०४]

४७

कुडलूर (मैसूर)

कन्नड, ८वीं सदी

श्रीयम्मं तोरेय तडिय तोण्टदोल् तम्म भागमं देवर्गे कोट्टर् अय्यप्प राउणद् पक्कद्तोण्टमं कोण्डु तोरेय तडिय तम्म भागद् तोण्टमं मूडण-बम्मदिगे कोट्टर् रणपाकरम्मर् आले कोण्डु तोट्टर् ॥

[इस लेखमे रणपाकरसके राज्यकालमे श्रीयम्म तथा अय्यप्प-द्वारा किसी नदीतीरपर स्थित पूर्वीयवसदिके लिए कुछ उद्यान आदिके दानका उल्लेख है। लिपि ८वीं सदीकी प्रतीत होती है।]

[ए० रि० मै० १९०९ पृ० १४]

४८

नरसिंहराजपुर (मैसूर)

संस्कृत–कन्नड, ८वीं-९वीं सदी

[यह ताम्रपत्र गंग राजा श्रीपुरुष-द्वारा दिया गया था। इस राजाके 'अनुकूलवर्ती' पसिण्डि गंग कुलके नागवर्मा तथा कदम्बकुलके तुलुअडिने तगरे प्रदेशके तोल्लग्राममें स्थित चैत्यालयके लिए मल्लवल्लि ग्राम दान दिया था। इसी प्रकार कौशिक वंशके मणलि मनेओडेयोंनेने कुछ भूमि दान थी। इसी ताम्रपत्रके अन्तिम भागमें गंग राजा शिवमारके राज्यमें सिन्दनाडु ८००० के शासक विट्टरस-द्वारा तोल्लरके चैत्यके लिए करिमानी ग्रामके दानका भी उल्लेख है। तदनन्तर इसी चैत्यके लिए राजा शिवमारके मामा विजयशक्ति अरस-द्वारा द ग्वंडुगभूमिके दानका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९२० पृ० २७]

४९

मुनुगोडु (गुण्टूर, आन्ध्र)

तेलुगु, ८वीं सदी

[यह लेख पूर्वीय चालुक्य राजा सर्वलोकाश्रय विष्णुवर्धनके राज्यवर्ष ३७ का है। इस समय महामण्डलेश्वर गोकय्यने मुनुगोडुके जिनालयके लिए कुछ भूमि दान दी थी। यहींके एक अन्य लेखमें गोकके सेवक बायुगट्ट-द्वारा इस जिनालयके जीर्णोद्धारका उल्लेख है जिसका निर्माण अग्गोनि-द्वारा मुनिसुव्रतके तीर्थमें किया गया था।]

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० १७-१८ पृ० ६]

५०

तिरुगोकर्णम् (मद्रास)

तमिळ, ८वीं सदी

[यह लेख शडैयापारै नामक पहाडीपर एक जिनमूर्तिके पास है। पाण्ड्य राजा कोणेरिम्मैकोण्डान् सुन्दरपाण्ड्यदेवके २४वें वर्षकी एक राजाज्ञाका इसमें उल्लेख है। तदनुसार तेंकविणाडुके निवासियोंसे कहा गया था कि करलारुप्पल्लिके पेरुनर्किलि चोलप्पेरुम्पल्लि आल्वारके पूजादिके लिए स्थानीय पल्लि (जिनमन्दिर) के व्यवस्थापकों-द्वारा अर्पित जमीनोंको करमुक्त किया गया।]

[इ० पु० क्र० ५३० पृ० ८५]

५१-५३

ब्रिटिश म्यूजियम (लन्दन)

८वीं-९वीं सदी, संस्कृत-नागरी

१ अनन्तवीर्य   २ सुलोचना   ३ धृति

[ये नाम तीन मूर्तियोंके पादपीठोंपर खुदे हैं। ये मूर्तियाँ यक्ष तथा

५८ तगुणान्वित (॥) तस्मै त ग्राम अदात् स्वपुत्रश्रीशंकरगण विज्ञापनेन श्रीकम्मदेव श्रीविजय-

५९ वसतेय तल्वननगरे प्रतिष्ठितायै। तस्य सीमान्तराणि वडगण दिश पोलपुं-

चतुर्थ पत्र　दूसरी ओर

६० लि वडगण पडुवण कोनदु पामत्तिगल्लु पडुवणसीम कम्ब-गेरेय पेर्वं

६१ ग पडुवण तेंकण कोनेदु पोगुदवल्लिय तेंकोल्व तेंकण सीम बेल्क्काल तला-

६२ दवे तेंकण मूडण कोनेंडडु मुदुरश्चि कोरलु मूडणसीमे कल्लि-वेट्टिन मूडण पोरे

६३ ये मूर वेट्टु ओल्गु मूडण नडगण कान्नदु बद्निडिय वडगण ओल्वे

६४ अस्य दानस्य साक्षिण पण्णवतिसहस्रविषय प्रकृतय

६५ योस्यापहर्ता लोभान्मोहात् प्रमादेन च स पचभिर्महद्भि पातकै ( ) सयुक्ता

६६ भवति यो रक्षति स पुण्यभाग् भवति अपि चात्र मनुगीता ( ) श्लोका ( ) स्वदत्ता परदत्ता

६७ वा यो हरेत वसुन्धरा (।) षष्टि वर्षसहस्राणि विष्ठाया जायते क्रिमि (॥) स्व दातु

६८ सुमहच्छक्य दु ख अन्यस्य पालन (।) दान वा पालन वेत दानाच्छ्रेयोनुपा-

पॉचवॉ पत्र　पहली ओर

६९ लन (॥) बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभि (।) यस्य यस्य यदा भूमि ( ) तस्य

७० तस्य तदा फलं (॥) देवस्वं तु विषं घोरं न विषं विषमुच्यते (।) विषमेकाकिनं हन्ति

७१ देवस्वं पुत्रपौत्रिकं (॥) विश्वकर्माचार्येण लिखितं (॥)

[यह ताम्रपत्र राष्ट्रकूट सम्राट् गोविन्दराज (तृतीय) के राज्यकालमे सम्राट् (ध्रुव निरुपम) धारावर्षके पुत्र रणावलोक कम्भराज-द्वारा कार्तिक शु० १५ शक ७३०, सोमवारके दिन दिया गया था। कोण्डकुन्देय अन्वय-सिर्मलगेगूरु गणके कुमारणंदि भट्टारकके प्रशिष्य तथा एलवाचार्यके शिष्य वर्धमानगुरुको वदनोगुप्पे ग्राम दान दिये जानेका इसमे उल्लेख है। यह दान तलवननगरकी श्रीविजयवसतिके लिए दिया गया था।]

[ए० रि० मै० १९२७ पृ० ११२]

५५

सूरत ताम्रपत्र (गुजरात)

शक ७४३ = सन् ८२१, संस्कृत—नागरी

१ ओं । श्रियः पदं नित्यमशेषगोचरं नयप्रमाणं प्रतिषिद्धदुष्पथं । जनस्य भव्यत्वसमाहितात्मनो जयत्यनुग्राहि जिनेन्द्रशासनं ॥ (१) स वो-

२ व्याद् वेधसां धाम यन्नाभिकमलं कृतं । हरश्च यस्य कान्तेन्दु-कलया कमलंकृतं ॥ (२) आसीद् द्विषत्तिमिरमुद्यतमण्डलाग्रो ध्वस्तिन्नय-

३ नभिमुखो रणशर्वरीषु । भूपश्शुचिर्विधुरिवास्तदिगन्तकीर्ति-गोविन्दराज इति राजसु राजसिंहः ॥ (३) दृष्ट्वा चमूमभि-

४ मुखीं सुभटाट्टहासामुन्नामितं सपदि येन रणेषु नित्यं । दष्टाधरेण दधता भ्रुकुटिं ललाटे खड्गं कुलं च हृद(यं)-

५ च निजं च सत्वं ॥ (४) खड्गं कराग्रान्मुखतश्च शोभां मानो मनस्तस्समभेव यस्य । महाहवे नाम निशम्य सद्यस्त्र-

६ य रिपूणा विगल यकाण्डे ॥ (५) तस्यात्मजो जगति विश्रुत-
दार्घकीर्तिरार्तार्तिहारिहरिविक्रमधामधारी । भूप-

७ त्रिविष्टपनृपानुकृति कृतज्ञ श्रीकर्कराज इति गोत्रमणिर्बभूव ॥
(६) तस्य प्रभिन्नकरटाच्युतदानद-

८ न्तिदन्तप्रहाररुचिरोल्लिखितांसपीठ । क्ष्माप क्षितौ क्षपितशत्रु-
रभूत्तनूज सद्राष्ट्रकूटकनकाद्रिरिवेन्द्रराज ॥ (७) तस्योपा-

९ र्जितमहसस्तनयश्चतुरुदधिवलयमालिन्या । भोक्ता भुव[श्]शत
क्रतुसदृश श्रीदन्तिदुर्गराजोभूत् ॥ (८) काञ्चीशकेर-

१० लनराधिपचोलपाण्ड्यश्रीहर्षवज्रटविभेदविधानदक्ष । कर्णाटक
बलमचिन्त्यमजेयमन्यैर्भृत्यै कियद्भिर-

११ पि यस्सहसा जिगाय ॥ (९) अभ्रूविभङ्गमगृहीतनिशातशस्त्र-
मश्रान्तमप्रतिहताज्ञमपेतयत्न । यो वल्लभ सपदि दण्ड-

१२ बलेन जित्वा राजाधिराजपरमेश्वरतामवाप ॥ (१०) आसेतो-
र्विपुलोपलावलिलसल्लोलोर्मिमालाजलादाप्रालेयक-

१३ लङ्कितामलशिलाजालातुषाराचलात् । पूर्वापरवारिराशिपुलिन-
प्रान्तप्रसिद्धावधेर्येनेयं जगती स्वविक्रमबलेनैका-

१४ तपत्रीकृता ॥ (११) तस्मिन् दिव प्रयाते वल्लभराजे क्षतप्रजा-
बाध । श्रीकर्कराजसूनुर्महीपति कृष्णराजोभूत् ॥ (१२) यस्य
स्वभुजप-

१५ राक्रमनिश्शेषोत्सादितारिदिक्चक्र । कृष्णस्येवा(कृष्ण) चरित
श्रीकृष्णराजस्य ॥ (१३) शुभतुरगतुरगप्रवृद्धरेणूद्धरुद्धरवि-
किरण । ग्रीष्मेपि नभो निखिल

१६ प्रावृट्कालायते स्पष्ट ॥ (१४) दीनानाथप्रणयिषु यथेष्टचेष्ट
समीहितमजस्र । तत्क्षणमकालवर्षो वर्षति सर्वार्थिनिर्व(प)ण ॥
(१५) राहप्पमा-

२६ वीर्यं ॥ (२३) रक्षता येन निश्शेष चतुरम्भोधिसंयुत । राज्य धर्मेण लोकाना कृता हृष्टि परा हृदि ॥ (२४) योसौ प्रसाधित- (समुन्नत) सारदुर्ग गाणौघसन्ततनिरोध-

२७ विरूढकीर्ति । आत्मीकृतोन्नतवृषाङ्कविभूतिरुच्चैर्यश्च ततान परमेश्वरतामिहैक ॥ (२५) तस्यात्मजो जगति सत्प्रथितोरु- कीर्तिर्गोविन्दराज इ-

२८ ति गोत्रललामभूत त्यागी पराक्रमधन प्रकटप्रताप सन्तापि- ताहितजनो जनवल्लभोभूत् ॥ (२६) पृथ्वीवल्लभ इति च प्रथित यस्या-

२९ पर ज(ग)ति नाम । यश्चतुरुदधिसीमामेको वसुधा वशे चक्रे ॥ (२७) एकोप्यनेकरूपो यो ददृशे भेदवादिभिरिवात्मा । परनल- जलधिमपार

३० तरन् स्वदोर्भ्यां रणे रिपुभि ॥ (२८) एको निर्हेतिरह गृहीतशस्त्रा मे परे बहवो । या नैवविभ्रमकरोच्चित्त स्वप्नेपि किमुताजौ ॥ (२९) राज्याभिषेककलशैरभि-

३१ षिच्य दत्ता राजाधिराजपरमेश्वरता स्वपित्रा । अन्यैर्महानृपति- भिर्बहुभिस्समस्य स्तम्भादिभिर्भुजबलादवलुप्यमाना ॥ (३०) एकोनकनरेन्द्रवृन्दसहिता-

३२ न्यस्तान् समस्तानपि प्रोत्खा(ता)सिलताप्रहारविधुरा बध्वा महामयुगे । लक्ष्मी(म)प्यचला चकार विलसत्सच्चामरग्राहिणीं ससाद्दगुरुविप्रसज्जनसुहृद्ब-

३३ न्धुपभोग्या भुवि ॥ (३१) तत्पुत्रोत्र गते नाकमाकम्पितरिपुव्रजे । श्रीमहाराजसर्वाख्य ख्यातो राजाभवद् गुणै ॥ (३२) अर्थिषु यथार्थता यस्समभिष्टफलाप्तिलब्धतो-

३४ षेषु । वृद्धिन्निनाय परमाममोघवर्षाभिधानस्य ॥ (३३) राजा-

नून् तत्पितृभ्यो रिपुभवविभवोद्भूत्यभावैकहेतुर्लक्ष्मीवानिन्द्रराजो गुणिजननिकरान्तश्चमत्का-

३५ रकारी। रागादन्यान् व्युदस्य प्रकटितविनया यं नृपं सेवमाना राजश्रीरेव चक्रे न(कल)कविजनोद्गीततथ्यस्वभावं ॥ (३४) निर्वाणावाप्तिवानासहितहितजनो –

३६ पास्यमाना सुवृत्तं वृत्तं जित्वान्यराज्ञां चरितमुदयवान् सर्वतो हिम्मकेभ्यः। एकाकी दसवैरिस्खलनकृतिसहप्रातिराज्येशशंकुर्लाटीयं मण्डलं

३७ यस्तपन इव निजस्वामिदत्तं ररक्ष ॥ (३५) यस्यांगमात्रजयिनः प्रियसाहसस्य क्ष्मापालवेषफलमेव वभू(व) सैन्यं। मुक्त्वा च सर्वभुवनेश्वरमादिदे –

दूसरा पत्र : दूसरा भाग

३८ वं नावन्दतान्यममरेष्वपि यो मनस्वी ॥ (३६) श्रीकर्कराज इति रक्षितराज्यभारस्सारः कुलस्य तनयो नयशालिशौर्यः। तस्या –

३९ भवद् विभ(व)नन्दितबन्धुसार्थः पार्थः सदैव धनुषि प्रथमश्शुचीनां ॥ (३७) दानेन मानेन सदाज्ञया वा शौर्येण वीर्येण च कोपि भूपः। एतेन साम्योस्ति

४० न वेति कीर्तिस्सकौतुका भ्राम्यति यस्य लोके ॥ (३८) स्वेच्छागृहीतविषया(न्)दृढसंघभाजः प्रोद्वृत्तदसतरशौल्किकराष्ट्रकूटान्। उत्खातखड्गनिज –

४१ बाहुबलेन जित्वा योमोघवर्षमचिरात् स्वपदे व्यधत्त ॥ (३९) तेनेदमनिलविद्युच्चंचलमालोक्य जीवितमसारं। क्षितिदानपरमपुण्यः प्रवर्तितो ध –

४२ र्मदायोयम् ॥ (४०) स च समधिगताशेषमहाशब्दमहासामन्ता-

धिपति सुवर्णवर्षश्री(क)र्कराजदेव कुशली सर्वानेव यथासंबध्य-
मानान् राष्ट्रपति –

४३ विषयग्रामपतिग्रामकूटयुक्त नियुक्तवासावकाधिकारिकमहत्तरादि-
कान् समनुदर्शयत्यस्तु वस्संविदित यथा मया श्रीनङ्किकानट –

४४ स्थावासितविजयस्कन्धावारस्थितेन मातापित्रोरात्मनश्चैहिका
मुष्मिकपुण्ययशाभिवृद्धये श्रीनागसारिकाश्रवसर्वविद्याहवं या-
ल(या)यतनं नि(बद्ध) –

४५ सवपुराम्यमण्डितवसतिकाया खण्डस्फुटितनवकर्मचरबलिचरुन-
पूजार्थं तथा तथानिबध्यमानचातुष्टयमूलसंघोदयान्वयसेन –

४६ सेनसंघमल्लवादिगुरोशिष्यश्रीसुमतिपूज्यपाद तच्छिष्य श्रीमद-
पराजितगुरो श्रीनागसारिकाप्रतिबद्ध अम्बापाटकग्रामस्य
उत्तरदिशि

४७ हिरण्ययोगाभिधाना वापुरापी यस्याघाटनानि पूर्वत श्रीघर-
वापिका दक्षिणतो वह अपरत पूराखी महानदी उत्तरत-
स्सम्बपुर –

४८ वापिका । एवमिय चतुराघाटोपलक्षिता सधान्यहिरण्यादेया
अचाटभटप्रवेश्यस्सवराजकीयानामहस्तप्रक्षेपणीय आच –

४९ न्द्रार्कार्णवक्षितिसरित्पर्वतसमकालीन शिष्यप्रशिष्यान्वयक्रमोप-
भोग्य शकनृपकालातीतसंवत्सरशतेषु सप्तसु त्रिचत्वारिंशद –

५० धिकेष्वतीतेषु वैशाखपौर्णमास्या स्ना वोदकातिसर्गेण प्रतिपादि-
तास्योचितया आचार्यस्थित्या भुञ्जतो भोजयत कृषत कर्षयत
प्रतिदि –

५१ शतो वा न केनचित् परिपन्थिना कर्णीया ॥ तथागामिनृपति-
भिरस्मद्वंश्यैरन्यैर्वा सामान्य भूमिदानफलमवेक्ष्य विद्युल्लोला-
न्यनित्यान्यैश्च –

५२ र्याणि तृणाग्रलग्नचंचलविन्दुचंचलं च जीवितमाकलय्य स्वदाय-
निर्विशेषोयमनुमन्तव्यः परिपालयितव्यश्च । यश्चाज्ञानतिमिर-
पटलावृत –

५३ मतिराच्छिन्द्यादाच्छिद्यमानकं वानुमोदेत स पं(च)भिर्महापात-
कैरुपपातकैश्च संयुक्तस्स्यादित्युक्तं च भग(व)ता वेदव्यासेन
व्यासेन ॥

५४-५८ [नित्यके शापात्मक श्लोक – षष्टिं वर्षसहस्राणि आदि]

५९ यथा चैतदेवं तथा शासनदाता लिपिज्ञस्स्वहस्तेन स्वमतमारोप-
यति ॥ स्वहस्तोयं मम श्रीकर्कराजस्य श्रीमदि –

६० न्द्रराजसुतस्य ॥ लिखितं चैतन्मया महासन्धिविग्रहाधिपतिना
नारायणेन कुलपुत्रकश्रीदुर्गभट्टसूनुना ॥ जीयाद्दुरितविद्वेपि
शासनं जि –

६१ नशासनं । यदन्यमतशैलानां भेदने कुलिशायते ॥ (४९)
जयति जिनोक्तो धर्मष्पड्जीवनिकायवत्सलो नित्यं । चूडामणि-
रिव लो(के)

६२ विभाति यस्सर्वधर्माणाम् ॥ (५०)

[यह ताम्रपत्र शक ७४३ में वैशाख पूर्णिमाको दिया गया था। इसमें पहले राष्ट्रकूट सम्राटोंकी वंशावली अमोघवर्ष (प्रथम) तक दी गयी है। तदनन्तर अमोघवर्षके पितृव्य(चाचा)इन्द्रराजके पुत्र कर्कराज सुवर्णवर्ष-का उल्लेख है जो गुजरातमें शासन कर रहा था। अमोघवर्षके राज्यारोहण-के बाद कई सामन्तोंने विद्रोह किया था उनपर विजय प्राप्त करनेमें कर्क-राजकी ही मदद उपयोगी सिद्ध हुई थी। कर्कराजने उक्त वर्षमें मूलसंघ-सेनसंघके मल्लवादिगुरुके शिष्य सुमतिपूज्यपादके शिष्य अपराजितगुरुको नागसारिकाके जिनमन्दिरके लिए हिरण्ययोगा नामक खेत दान दिया था।]

[ए. इं. २१ पृ. १३३]

५६

राणिबेण्णूर (धारवाड, मैसूर)

शक ७८१ = सन ८६०, कन्नड

[यह लेख राष्ट्रकूट सम्राट अमोघवर्ष (प्रथम) के समयका है। नागुल पोल्लवे द्वारा स्थापित नागुलबसदिके लिए शक ७८१ में कुछ भूमि दान दिये जानेका इसमें निर्देश है। यह दान सिहवूरगणके नागनन्द्याचार्यको दिया गया था।]

[रि० आ० स० १९३०-३४ पृ० २०१]

५७

बेंदूर (मैसूर)

शक ७८५ = सन् ८६४, कन्नड

[यह लेख राष्ट्रकूट सम्राट् अमोघवर्ष १ के समय शक ७८५, तारण सवत्सरमें लिखा गया था। चिक्कण्ण नामक अधिकारीको कुछ भूमि दिये जानेका इसमें उल्लेख है। व्रतोंका पालन और सयमन इनका भी उल्लेख हुआ है। अत यह समाधिमरणका स्मारक प्रतीत होता है।]

(मूल कन्नडमें मुद्रित)	[सा० इ० इ० ११ पृ० ६]

५८

पेवरमलै (मदुरा, मद्रास)

शक ७९२ = सन् ८७०, तमिल

१ शकर याण्डुमुलु नूर्त्तोण्णूरिरण्डु
२ पोन्दणवरगुणर्कु याण्डु मट्टु गुणवीरक्कु
३ रवडिगल् माणाक्क(र)काल्तु शान्तिवीरक्-
४ कुरवर् तिरुत्रयिरं पोरिश्र (पार्श्व)प(म)डारैयुमिय-
५ क्कि अव्वैगल्यु पुदुक्कि इरण्डुक्कुमुट्-

६ टावयियुमोरडिगलुक्कु शोराग अमैत्त पो-
७ ण् ऐन्नूरॆन्डु काणम् ॥

[यह लेख पाण्डय राजा वरगुण २ के राज्यवर्ष ८, शक ७९२ का है। इस समय गुणवीरके शिष्य शान्तिवीरने तिरुवयिरै स्थित पार्श्वनाथ मूर्ति तथा यक्षीमूर्तिका जीर्णोद्धार किया था। इसके लिए उन्हे ५०२ काणम् (सुवर्णमुद्रा)दान मिला था।]

[ए० इं० ३२ पृ० ३३७]

५९

धर्मपुरी (सालेम, मद्रास)

शक ८०० = सन् ८७८, कन्नड

किलेमें मारियम्मन देवालयके आगे पड़े हुए स्तम्भपर

[इस लेखमें पल्लव महेन्द्र नोलम्ब-द्वारा किसी जैन मन्दिरके लिए दान दिये जानेका निर्देश है। इस लेखका समय शक ८००, विलम्बि संवत्सर था।]

[इ० म० सालेम ८१]

६०

कोप्पल (रायचूर, मैसूर)

कन्नड, शक ८११ = सन् ८९०

[इस लेखकी तिथि कार्तिक पूर्णिमा, शक ८११, शोभन संवत्सर ऐसी है। इस समय दण्डनायक अम्मरसने कुपण तीर्थकी यात्रा की तथा महासामन्त कदम्बवंशीय अलियमरस-द्वारा निर्मित वसदिके लिए कुछ दान दिया था।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १५९ पृ० ४१]

६१
धर्मपुरी (सालेम, मद्रास)
शक ८१८ = सन् ८९३, कन्नड

मल्लिकार्जुन मन्दिरके आगे एक स्तम्भपर

[राजा महेन्द्राधिराज नोलम्बके समय शक ८१५ मे यह लेख लिखा गया। इसमे निधियण्ण और चण्डियण्ण-द्वारा मलसघ, सेनान्वय, पोगरियगणके आचार्य विनयसेन सिद्धान्तभटारके शिष्य कनकसेन सिद्धान्तभटारको मूलपल्लि ग्राम दान देनेका उल्लेख है।]

[इ० म० सालेम ७४]

६२
सित्तन्नवासल (पुदुकोट्टै, मद्रास)
९वीं सदी, तमिल

[यह लेख पाण्ड्य राजा अवनिपशेखर श्रीवल्लभके समयका है। इलगौतमन् (इसीका नाम मदिरै आशिरियन् भी था) द्वारा अन्तर्मण्डपका जीर्णोद्धार तथा बाह्य मण्डपका निर्माण किये जानेका इसमें उल्लेख है। इस मन्दिरको अरिवन् कोयिल् (अर्हन्मन्दिर) कहा गया है। इस गुहामन्दिरके बाहरी भागपर कई यात्रियोंके नाम खुदे हैं जिनकी लिपि ७वी सदीकी है।]

[रि० आ० स० १९२९-३० पृ० १६७-१६९ रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० २१५ पृ० ९९]

६३
हेब्बलगुप्पे (मैसूर)
९वीं सदी, कन्नड

१ स्वस्तिश्रीनरसींगेरे अप्पोर् दुग्गमार

२ कोयिल्वसदिगे अरगण्डुगब्बेदे मण् कोट्टर्

३ अरमण्डमेगालुमगोकेमोगेयु ओड्डिपा-
४ डियुं गोयियन्दम्मगलरुगण्डुग बेदेगेल् मण्कोट्टर्
५ इदानलित्तु केडिसिदोनोक्कल् केडुग पंचम-
६ हापातकनक्कवन् मक्कलु साग-
७ वसदियानुकेयदोन् नारायण पे-
८ रुन्तचन्

[यह लेख ९वी सदीको लिपिमे है। नरसीगेरे अप्पोर् दुग्गमार (जो गंगवंशका राजपुत्र था) द्वारा एक जिनमन्दिर (कोयिल्वसदि) को ६ खण्डुग भूमि दान दिये जानेका इसमे उल्लेख है। इतनी ही भूमि अरमण्डमेगलु, अगोकेमोगे, ओड्डिपाडि इन ग्रामोंके निवासियों-द्वारा तथा गोयिन्दम्म-द्वारा दान दी गयी थी। श्रेष्ठ शिल्पकार नारायणने इस वसदिका निर्माणकार्य किया था।]

[ए० रि० मै० १९३२ पृ० २४०]

६४

मोटे बेन्नूर (धारवाड, मैसूर)

९वी सदी, कन्नड

[यह लेख ९ वीं सदीको लिपिमे है। इसमे किसी वसदिके लिए चन्द्रनन्दि भट्टारको भूमि दान दी जानेका उल्लेख है। इस लेखकी स्थापना इन्दर पिट्टम्मके सेनबोव कुण्डमय्य-द्वारा की गयी थी।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई १११ पृ० १२९]

६५

कलकत्ता (नाहर म्युजियम)

९वीं सदी, कन्नड

१ श्री जिनवल्लभन सज्जन
२ भागियव्वेय माडिसिद
३ प्रतिमे

[यह लेख पीतलको चौवीसतीर्थंकरमूर्तिके पादपीठपर है। लिपि ९वीं सदीकी है। यह मूर्ति जिनवल्लभकी स्वजन (पत्नी) भागियब्बे-द्वारा स्थापित की गयी थी। लिपिसे स्पष्ट होता है कि यह मूर्ति कर्नाटकमें निर्मित हुई थी।]

[ए० रि० मैं० १९४१ पृ० २५०]

६६-६७

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

९वीं सदी, तमिल

[इस लेखमें कहा है कि तिरुनरुगोण्डैके विलैप्पल्लि (जैन मन्दिर) का चतुर्मुगत्तिरुक्कोयिल् (चतुर्मुख वसति) तथा पूर्वका सभामण्डप तलक्कूडि निवासी विरैयनल्लूलान् कुमरन् देवन्ने बनवाया था। लेखकी लिपि ९वीं सदीकी है। यहींके अन्य दो भागोंमें इसी समयकी लिपिमें वाणकोवरैयर् तथा आरुलगपेरुमान्का उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०६-७ पृ० ६६]

६८-६९

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

९वीं सदी, तमिल

[इस लेखमें नारियप्पाडि निवासी शिंगणार पेरियवडुगणार्-द्वारा दो जैन पल्लियों (मन्दिरों) के लिए १० पोन् (मुद्राएँ) दान दिये जानेका निर्देश है। यहींके एक अन्य लेखमें नारियप्पाडि निवासी पेरियन-वक्कनार्के पुत्र (नाम लुप्त) द्वारा भी कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है लिपि ९वीं सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०८-९ पृ० ६६]

७०

कीरप्पाक्कम् (चिगलपेट, मद्रास)

९वीं सदी, तमिल

[इस लेखमे कीरैपाक्कम्के उत्तरमे देशवल्लभ जिनालयका उल्लेख है। इसका निर्माण यापनीय संघ कुमिलिगणके महावीरगुरुके शिष्य अमरमुदलगुरु-द्वारा किया गया था। लिपि ९वी सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० २२ पृ० १०]

७१

वेगूर (बंगलोर, मैसूर)

९वीं सदी, कन्नड

[इस निसिधिलेखमे मोन भट्टारके शिष्य····न्दिभटारके समाधिमरणका उल्लेख है। लिपि ९वीं सदीकी है। यह लेख नागेश्वर मन्दिरमे लगा है।]

[ए० रि० मै० १९१५ पृ० ४६]

७२

वेलगाँव (मैसूर)

९वीं-१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख नेमिनाथमूर्तिके पादपीठपर है। इस मूर्तिकी स्थापना 'राष्ट्रकूट वंशरूपी समुद्रके लिए चन्द्रके समान' मणिचन्द्रके गुरु नेमिनाथ (नेमिचन्द्र ?) द्वारा की गयी थी।]

[रि० आ० स० १९२८-२९ पृ० १२५]

७३

अलगरमलै (मदुरा, मद्रास)

वट्टेलुत्तु लिपि—९वी-१०वीं सदी

[यह लेख एक जिनमूर्तिके समीप खुदा है]

(मूल-) १ श्री अच्चणं – २ दि शेयल्

[आर्यनंदि आचार्यका यह नामोल्लेख है। लिपि ९वी-१०वी सदी-की है।

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ३९६ पृ० ६२]

७४-७५

चिक्कहनसोगे (मैसूर)

१०वीं सदी–प्रारम्भ, कन्नड

[इस निसिधिलेखमें मूलसंघ देसिगण–पनसोगे शाखाके श्रीधरदेवके शिष्य नेमिचन्द्रके समाधिमरणका उल्लेख है। यह लेख १०वी सदीके प्रारम्भका है तथा इस समय रामेश्वर मंदिरमें लगा है।

यहीके एक अन्य निसिधिलेखमें नागकुमारकी पत्नी जक्कियब्बेके समाधिमरणका उल्लेख है। समय १०वी सदीके प्रारम्भका है।]

[ए० रि० मै० १९१४ पृ० ३८]

७६

चिक्कहनसोगे (मैसूर)

१०वीं सदी–प्रारम्भ, कन्नड

१ एरेय समु-
२ द्रवेष्टितधरात-
३ लम प्रतिपालिसु
४ त्तुमित्तेरेग म-
५ हारिमण्डलिक-
६ रिं येमकरये विला-
७ सयेल्गेय म-
८ रेवकरूरनेन्दे-
९ निसल आल्पोरी
१० स्तितसन्ध्यरिन्दु वन्दे-
११ रग समन्तु क-
१२ लनेलेयदेवर
१३ पादपयोरुह-
१४ गलाल् ॥ स्थावरज-
१५ गमतीर्थं मावि-
१६ सि पेल्दागलोरदे गो-
१७ म्मटदेवर् स्थावर-
१८ तीर्थ कल्नेलेदेव-
१९ र् भूनलयदोलगे
२० जगमतीर्थं ॥

२१ वेल्देवं वरेदं २२ इल्वेडे मल्लाचा-
२३ रि ॥

[इस लेखमे (गंग राजा) एरेयके समय एलाचार्यके समाधिमरणका तथा उनके शिष्य कल्नेलेदेव-द्वारा उनकी निसिधिकी स्थापनाका उल्लेख है। गोम्मटदेवको स्थावरतीर्थ तथा कल्नेलेदेवको जंगमतीर्थ कहकर उनकी प्रशंसा की है। लेख १०वीं सदीके प्रारम्भका है।]

[ए० रि० मै० १९१४ पृ० ३८]

७७
वन्दलिके (मैसूर)
शक ८२४ = सन् ९०२, कन्नड

[यह लेख राष्ट्रकूट राजा कृष्ण २ अकालवर्षके समयका है। महासामन्त वकेयरसके पुत्र लोकटेयरसके अधीन पेर्गडे विट्टय्य-द्वारा शक ८२४ में वन्दणिकेमे एक वसदिके निर्माणका इसमें उल्लेख है। लोकटेयरसने इस वसदिके लिए नागर खण्ड ७० विभागका दण्डिपल्लि ग्राम विट्टय्यको दान दिया था।]

[ए० रि० मै० १९११ पृ० ३८]

७८
असुण्डि (मैसूर)
शक ८४७ = सन् ९२५, कन्नड

[यह लेख राष्ट्रकूट सम्राट् गोविन्द (चतुर्थ) नित्यवर्षके समय शक ८४७, पार्थिव संवत्सरमें लिखा गया था। इसमें नागय्य द्वारा एक जिनालयका निर्माण तथा उसके लिए कुछ भूमिदान किये जानेका उल्लेख है। यह दान वंकापुरके धोरजिनालयके प्रमुख चन्द्रप्रभ भटारके शासनकाल्में दिया गया था।]

(मूल कन्नडमें मुद्रित) [सा० इ० इ० ११ पृ० २०]

७९

हलहरवि (बेल्लारी, मैसूर)

शक ८५४ = सन् ९३२, कन्नड

[यह लेख शक ८५४ पार्थिव संवत्सर (यह वर्षनाम गलत है) का है। इसमें राजा नित्यवर्षके राज्यकालमें कन्नरदेवकी रानी चन्दियब्बे द्वारा नन्दवरमें एक जैन वसदिका निर्माण तथा उसके लिए कुछ करोंका उत्पन्न पद्मनन्दि आचार्यको अर्पित किये जानेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९१५-१६ क्र० ५४० पृ० ५२]

८०

कोप्पल (रायचूर, मैसूर)

शक ८६२ = सन् ९४०, कन्नड

[यह लेख जिनशासनकी प्रशंसासे शुरू होता है। तिथि शक ८६२, विकारि संवत्सर ऐसी दी है। अन्य विवरण प्राप्त नहीं।]

[रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १९६ पृ० ३७]

८१

विजापुर (उदयपुरके समीप, राजस्थान)

संवत् ९९६ = सन् ९४० तथा संवत् १०५३ = सन् ९९७

संस्कृत नागरी

१ जयस्तव । परिशाम्यतु ना परा(थव्या)पना जिना ॥१
ते च पातु(जिना)विनामसम(ये यत्रा)दपद्मोन्मुखप्रेम्णामरय-
मयूर(शे)खरलसश्रेणीषु बिम्बोदयात् । प्रायैकादशभिर्गुणं दश-
शती शक्रस्य शुभदृशा कस्य स्याद् गुणकारका न यदि वा
स्वच्छात्मना संगम ॥२

२ ····नामत्करोलो(?)शोभितः। सुगे(खर)····लौ मूर्ध्नि रूढो महीभृतां ॥३ अभिविभ्रद् रुचिं कांतां सावित्रीं चतुराननः। हरिवर्मा बभूवात्र भूविभुर्भुवनाधिकः ॥(४) सकललोकावलोकनपंकजस्फुरदनंबुदबालदिवाकरः। रिपुवधूवदनेंदुहृतद्युतिः

३ समुदपादि विदग्धनृप(स्ततः) ॥(५)स्वाचार्यैर्यो रुचिरवच(नैर्वा)सुदेवाभिधानैर्बोध नीतो दिनकरकरैर्नीरजन्माकरो व। पूर्वं जैनं निजमिव यशो (कारयद् ह-)स्तिकुंड्यां रम्यं हर्म्यं गुरुहिमगिरेः श्रृंगश्रृंगारहारि ॥६ दानेन तुलितबलिना तुलादिदानस्य येन देवाय। भाग(द्वयं)व्यतीर्यत भागश्चा –

४ (चार्यव)र्याय ॥(७) तस्मादभू(ल्लुब्ध)सत्वो मंमटाख्यो महीपतिः। समुद्रविजयो श्लाघ्यतरवारिः सद्धर्मिकः ॥८ तस्मादसमः समजनि (समस्त)जनजनितलोचनानंदः। ध(व)लो वसुधाव्यापी चंद्रादिव चंद्रिकानिकरः ॥(९) भंक्त्वाघाटं घटाभिः प्रकटमिव मदं मेदपाटे भटानां जन्ये राजन्य –

५ जन्ये जनयति जनताजं रणं मुंजराजे। (श्री)-माणे (प्र)णष्टे हरिण इव भिया गूर्जरेशे विनष्टे तत्सैन्यानां शरण्यो हरिरिव शरणे यः सुराणां बभूव ॥(१०) श्रीमद्दुर्लभराजभूभुजि भुजैर्भुंजत्यभंगां भुवं दंडैर्भण्हनशोण्डचंडसुभटैस्तस्याभिभूतं विभुः। यो दैत्यैरिव तारक –

६ प्रभृतिभिः श्रीमान् महेन्द्रं पुरा सेनानीरिव नीतिपौरुषपरोनैषीत् परां निर्वृतिं ॥(११) यं मूलादुदमूलयद् गुरुबलः श्रीमूलराजो नृपो दर्पांधो धरणीवराहनृपतिं यद्वद् द्विपः पादपं। आयातं भुवि कांदिशीकमभिको यस्तं शरण्यो दधौ दंष्ट्रायामिव रूढमूढमहिमा कोलो महीमंडलं ॥१२

७ इत्थं पृथ्वीभर्तृभिर्नाथमानैः सा····सुस्थितैरास्थितो यः। पाथोनाथो वा विपक्षात् स्वप(क्ष)रक्षाकांक्षे रक्षणे बद्धकक्षः ॥(१३) दिवा-

करम्येव कर कठोर करा न्ता नृपकदम्बकस्य । अशिथ्रियताग्रहनो
हनाथ यमुनन पादपङ्कजनीधा ॥(१४) धनुर्धरशिरोमणेरमलधर्म-
मन्यम्यता जगा –

८ म जल्पेर्गुणो (गु)रमुष्य पार पर । मर्मागुरपि ममुग्ना मुमुग्व
मार्गणाना गणा मता चरितमद्भुत मकलमेव लोकात्तर ॥(१५)
यात्रासु यस्य वियदाणविपुर्विशेषान् वेलाचुरगखुरमानमहीरजाम्भि।
तेजोनिरूर्तिरमनेन विनिर्जितरवाद् भाम्वान् निलजित इवानितरा
विरोभन् ॥१६

९ न कामना मनो धीमान् ध ल्ना दधौ । अनन्योद्दार्यमन्कार्य-
मारदुर्योर्थतोदि य ॥(१७) यस्तेजोभिरहम्कर करुणया शौद्धा-
दनि शुद्धया भीष्मो वचनरचितेन वचमा धर्मेण धर्मात्मज ।
प्राणेन प्रल्यानिलो बलभिदो मन्त्रेण मन्त्री परो रूपेण प्रमदाप्रियेण

१० मदनो दानेन क(र्णो)भवन् ॥(१८) सुनयतनय राज्ये वाल्यमाद
मनिष्टिपत परिणतवया नि मगो या बभूव सुधी स्वय कृतयुग-
कृत कृत्वा कृत्य कृतामचमन्कृतीरकृत सुकृती नो कालुष्य
करोति कलि सता ॥(१९) काले कल्पावधि विरामरमतदीय
लोका विलोक्य करनातिगत गुणौ –

११ घ । (पार्थो)दिपार्थिव(गुणा)न गणयतु मध्यानेक व्यधाद् गुण-
निधिं यमितीव वेधा ॥ २० गोचरयति न वाचो तच्चरि । चन्द्र-
चन्द्रिकारुचिर । वाचम्पतर्वचम्वी को वान्यो वर्णयत् पूर्ण ॥(२१)
राजधानी भुवो भर्तुम्तस्याम्ते इन्तिकुण्डिका । अलका धनदस्येव
धनाढ्यजनमेविता ॥ (२२) नीहारहारहरहाम(हि)—

१२ (मा) शुद्धारि (का) रका(र) यारि (भु)वि राजविनिर्गरा । ।
यान्तव्यमव्यजनचित्तमम (म)भवान् मताग्मपदपद्धारपर परंपा ॥
(२३) धौतकल्धौतकलशाभिरामरामाम्लना द्रव न यम्या ।

संत्यपरेष्यपहाराः सदा सदाचारजनतायां ॥ (२४) समदमदना लीलालापाः प—

१३ नाकुलाः कुवलयदृशां मंदृश्यते दृशस्तरलाः परं । मलिनितमुखा यत्रोद्वृत्ताः परं कठिनाः कुचा निविडरचना नी(वी) बंधाः परं कुटिलाः कचाः ॥ (२५) गाढोत्तुंगानि सार्वं शुचिकुचकलशैः कामिनीनां मनोज्ञैर्विस्तीर्णानि प्रकायं सह घनजघनैर्देवतामंदिराणि । भ्राजंते दभ्रशुभ्राण्य—

१४ तिशयसुभगं नेत्रपात्रैः पवित्रैः सत्रं चित्राणि धात्रीजनहृतहृदयै- विभ्रमैर्यत्र मत्रं ॥ (२६) मधुरा वनपर्वाणो हृद्यरूपा रसाधिकाः । यत्रेक्षुवाटा लोकेभ्यो नालिकत्वाद् भिदेलिमाः ॥ (२७) अस्यां सूरिः सुराणां गुरुरिव गु(रु)भिर्गोरवार्हो गुणैर्वैभूपानां त्रिलोकीवलयविल—

१५ सितानंतरानंतकीर्तिः । नाम्ना श्रीशांतिभद्रोभवदभिभवितुं भास- (या)वासमाना कामं कामं सम(र्था) जनितजनमनःसंमदा यस्य मूर्तिः ॥ (२८) मन्येमुना मुनींद्रेण (म)नोभू रूपनिर्जितः । स्वप्नेपि न स्वरूपेण समगंस्तातिलज्जितः ॥ (२९) प्रोद्यत्पद्माकरस्य प्रकटितविकटाशेपभाव—

१६ स्य सूरेः सूर्यस्येवामृतांशुं स्फुरितशुभरुचिं वासुदेवाभिधस्य । अध्यासीनं पदव्यां यममलविलसज्ज्ञानमालोक्य लोको लोकालोकावलोकं सकलमचकलत् केवलं संभवीति ॥ (३०) धर्माभ्यासरतस्यास्य संगतो गुणसंग्रहः । अभग्नमार्गणेच्छस्य चित्रं निर्वाणवांछना ॥ (३१)

१७ कमपि सर्वगुणानुगतं जनं विधिरयं विदधाति न दुर्विधः । इति कलंकनिराकृतये कृता यमकृतेव कृताखिलसद्गुणं ॥ (३२) तदीयवचनान्निजं धनकलत्रपुत्रादिकं विलोक्य सकलं चलं दल-

मिनानिलादो(लि)त । गरिष्ठगुणगोष्ठ्यदं समुद्दीधरद् धीरधीर-
दारमतिसुदर प्रथम—

१८ तीर्थंकृन्मदिर ॥ (२३) (रक्त) वा रम्यरामाणा मणितारा-
वराजित । इद सुरसमिवाभाति भासमानवराल्क ॥ (२४)
चतुरस्र (पट्टज) तथा(ङ्ग)निक शुभशुक्तिकरोद्भ्रुतमिद बहु-
भाजनराजि जिनायतन प्रविराजति भोजनधर्मसमं ॥ (२५)
विदग्धनृपकारिते जिनगृहे—

१९ तिर्जीर्णे पुन सम कृतसमुद्धृताविह भवाब्धिरात्मन — नि-
ष्पित सोऽयथ प्रथमतीर्थनाथाकृति स्वकातिमिव मूर्तताभुपगता
सिताशुद्युतिं ॥ (२६) शात्याचार्यैस्त्रिपचाशे सहस्रे शरदामिय
माघशुक्लत्रयोदश्या सुप्रतिष्ठे प्रतिष्ठिता ॥ (२७) विदग्धनृपति
पुरा यदतुल तुलादे—

२० र्ददौ सुदानमवदानधीरिदमपीवल्भ्याद्भुत । यतो धवलभूपति-
र्जिनपते स्वय सात्म (जो) रघट्टमथ पिप्पलोपथ (द्रु) पक
प्रादिशत् ॥ (२८) यावच्छेषशिरस्थमंकरजतस्थूणास्थितास्युल्ल-
सत्पातालातुलमडपामलतुलामालवते भूतल । तावत्ता—

२१ स्वामिरामरमणी(ग)र्वधीरध्वनिर्धामन्यत्र धिनोतु धार्मिकधिय -
(स)द्धूपवेलाव(धौ) ॥ (२९) सालकारा समधिकरसा साधु-
सधानबधा श्लाघ्यश्लेषा ललितविलसत्तद्धिताख्यातनामा । सद्-
वृत्ताढ्या रचिरविरतिर्धुर्यमाधुर्यवर्या सूर्याचार्यैर्व्यरचि रमणीवा—

२२ नि(रम्या) प्रशस्ति ॥ (४०) सवत् १०५३ माघशुक्ल १३
रविदिने पुष्यनक्षत्रे श्रीऋषभनाथदेवस्य प्रतिष्ठा कृता महाध्वज-
श्चारोपित ॥ मूलनायक ॥ नाहकजिंदजसशपपूरभद्रनागपोचि-
(स्थ)श्रावकगोष्ठिकैरशेषकर्मक्षयार्थं स्वसतानभवाब्धितर—

२३ (णार्थं) च न्यायोपार्जितवित्तेन कारित ॥वृ॥ परवादिदर्पमथन

हेतुनयसहस्रभंगकाकीर्णं । भव्यजनदुरितशमनं जिनेंद्रवरशासनं जयति ॥ (१) आसीद् धीधनसंमतः शुभगुणो भास्वत्प्रतापो-ज्वलो विस्पष्टप्रतिमः प्रभावकलितो भूपोत्तमांगार्चितः । योपित्पी—

२४ नपयोधरांतरसुखाभिष्वंगसंलालितो यः श्रीमान् हरिवर्म उत्तम-मणिः सद्वंशहारे गुरौ ॥ (२) तस्माद् बभूव भुवि भूरिगुणोपपेतो भूपप्रभूतमुकुटार्चितपादपीठः । श्रीराष्ट्रकूटकुलकाननकल्पवृक्षः श्री-मान् विदग्धनृपतिः प्रकटप्रतापः ॥ (३) तस्माद् भूप—

२५ गणा""तमा (कीर्तेः) परं भाजनं संभूतः सुतनुः सुतोतिमतिमान् श्रीमंमटो विश्रुतः । येनास्मिन् निजराजवंशगगने चन्द्रायितं चारुणा तेनेदं पितृशासनं समधिकं कृत्वा पुनः पाल्यते ॥ (४) श्रीबलभद्राचार्यं विदग्धनृपपूजितं समभ्यर्च्य । आचंद्रार्कं यावद्-दत्तं भवते भया—

२६ ····॥ (५) (श्रीहस्ति)कुण्डिकायां चैत्यगृहं जनमनोहरं भक्त्या। श्रीमद्बलभद्रगुरोर्यद्विहितं श्रीविदग्धेन ॥ (६) तस्मिन् लोकान् समाहूय नानादेशसमाग(ता)न् । आचंद्रार्कस्थितिं यावच्छासनं दत्तमक्षयं ॥ (७) (रू)पक एको देयो वहतामिह विंशतेः प्रवह-णानां । धर्म—

२७ ····क्रयविक्रये च तथा ॥ (८) संभृतगंत्र्या देयस्तथा वहंत्याश्च रूपकः श्रेष्ठः । घाणे घटे च कर्पो देयः सर्वेण परिपाट्या ॥ (९) श्री(मट)लोकदत्ता पत्राणां चोल्लिका त्रयोदशिका । पेल्लकपेल्लक-मेतद् द्यूतक(रैः) शासने देयं ॥ (१०) देयं पलाशपाटकमर्यादा-वर्तिक—

२८ ···· । प्रस्थरव(ं) धान्याढकं तु गोधूमयवपूर्णं ॥ (११) पेढ्डा च पंचपलिका धर्मस्य विशोपकस्तथा भारं । शासनमेतत्पूर्वं विदग्ध-

राजेन सदत्त ॥ (१२) (कर्णा)पकाम्यकुकुमा(पुर)माजिष्ठादिमव-
माडस्य । (द)श दश पलानि भारे देयानि विक—

२९ ॥ (१३) आदानादेतस्माद् भागद्वयमर्हत कृत गुरुणा ।
शेषस्तृतीयभागो विद्याधनमात्मनो विहित ॥ (१४) राज्ञा
तत्पुत्रपौत्रैश्च गोष्ठ्या पुरजनेन च । गुरुदेवधन रक्ष्य नोपे(क्ष्य
हितमीप्सुभि) ॥ (१५) दत्ते दाने फल दानात् पालिते पालनात्
फल । (भक्षितो)पेक्षिते पाप गुरुदे—

३० (वधने)धिक ॥ (१६) गोधूममुद्गयवलवणारा(का)देरतु मेयजा-
तस्य । द्रोण प्रति माणकमेकमत्र सर्वेण दातव्य ॥ (१७) बहु-
भिर्वसुधा भुक्ता राजभि सगरादिभि । यस्य यस्य यदा भूमि-
स्तस्य तस्य तदा फल ॥ (१८) रामगिरिनन्दकलिते विक्रमकाले
गते तु शुचिमा(से) ।

३१ (श्रीम)द्बलभद्रगुरोर्विदग्धराजेन दत्तमिद ॥ (१९) नवसु शतेषु
गतेषु तु षण्णवतीसमधिकेषु माघस्य । कृष्णैकादश्यामिह सम-
र्थित ममटनृपेण ॥ (२०) यावद् भूधरभूमिभानुभरत भागीरथी
भारती भाम्व(द्भा)नि भुजगराजमव(न) आजद्मवामोधय ।
ति(ष्ठ)—

३२ न्त्यत्र सुरासुरेन्द्रमहित (जै)न च सच्छासन श्रीमत्केशवसूरि-
सततिकृते तावत् प्रभूयादिद ॥ (२१) इद चाक्षयधर्मसाधन
शासन श्रीविदग्धराज्ञा दत्त ॥ सवत् ९७३ श्रीमम्मट(राज्ञा
समर्थि)त सवत् ९९६ । सूत्रधारोन्द्र(रात)योगेश्वरेण उत्कीर्णेय
प्रशस्तिरिति ।

[इस बृहत् शिलालेखके दो भाग हैं । दूसरा भाग जो २३वी
पक्तिसे शुरु होता है समयकी दृष्टिसे पहलेका है । इसमें राष्ट्रकूट
कुलके राजा हरिवर्माके पुत्र विदग्धराजका वर्णन किया है । आचार्य

वासुदेवके उपदेशसे विदग्धराजने राजधानी हस्तिकुण्डिकामें ऋषभदेवका मन्दिर बनवाया था। इसने अपनी सुवर्णतुलाका दो तिहाई भाग इस मन्दिरके लिए तथा एकतिहाई भाग गुरुके लिए दान दिया था। विदग्धराजने इसी मन्दिरके लिए हस्तिकुण्डीके व्यापारियोंके कई करोंका उत्पन्न बलभद्र गुरुको दान दिया था। इस दानकी तिथि आषाढ़, संवत् ९७३ थी। विदग्धराजका पुत्र मंमट हुआ। इसने उक्त दानको माघ कृष्ण ११, संवत् ९९६को पुनः सम्मति दी। मंमटका पुत्र धवल हुआ। इसकी वीरताका विस्तृत वर्णन लेखमें किया है। जब मुंजराजने मेदपाटकी राजधानी आघाटको नष्ट किया तब वहाँके राजाको धवलने आश्रय दिया था। दुर्लभराजके आक्रमणसे महेन्द्रका रक्षण इसीने किया तथा मूलराजके द्वारा पराजित धरणीवराहको भी आश्रय दिया। वृद्धावस्थामें धवलने अपने पुत्र बाल प्रसादको सिंहासनपर स्थापित किया। इसके समय संवत् १०५३ में वासुदेवके शिष्य शान्तिभद्रसूरिके उपदेशसे हस्तिकुण्डीकी गोष्ठी (व्यापारियोंके समूह) ने विदग्धराज-द्वारा निर्मित मन्दिरका जीर्णोद्धार किया। गोष्ठीके सदस्योंके नाम पंक्ति २२में गिनाये हैं। लेखके पहले भागमें जो ४० श्लोकोंकी प्रशस्ति है वह सूर्याचार्यने लिखी थी। लेखके अन्तमें केशवसूरिका उल्लेख है] [ए० इं० १० पृ० १७]

८२

विलप्पक्कम (जि. उत्तर अर्काट, मद्रास)

सन् ९४५, तमिल

नागनाथेश्वर मन्दिरके आगे पड़ी हुई शिलापर

[यह लेख चोल राजा मदिरैकोण्ड परकेसरिवर्मन् (परान्तक १) के राज्यके ३८ वें वर्षमें लिखा गया था। तिरुप्पानमलैके आचार्य अरिष्टनेमिकी एक शिष्याके द्वारा एक कुआँ बनवानेका इसमें उल्लेख है।]

[इ० म० उत्तर अर्काट २१६]

८३

नरेगल (मैसूर)

शक ८७३ = सन् ९५०, कन्नड

[यह लेख राष्ट्रकूट सम्राट् अकालवर्ष कृष्णराजदेव (तृतीय) के सामन्त गंगवंशीय बुतय्य पेर्मांडिके समयका है। इसकी रानी पद्मब्बरसि-द्वारा निर्मित बसदिके दानशालाके लिए नमयर मारसिंगय्यने एक तालाब अर्पित किया था। यह दान कोण्डकुन्दान्वय देसिग गणके महेन्द्र पण्डितके प्रशिष्य तथा वीरणन्दि पण्डितके शिष्य गुणचन्द्र पण्डितको सौंपा गया था। दानकी तिथि पौष शु० १० रविवार, उत्तरायण संक्रान्ति, शक ८७२ साधारणसंवत्सर ऐसी दी है।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित]　　　　[सा० इ० इ० ११ पृ० २३]

८४

वेमुलवाड (करीमनगर, आन्ध्र)

१० वीं सदी—उत्तरार्ध (लगभग सन् ९६०)

संस्कृत–कन्नड

[इस मूर्तिलेखमें चालुक्य राजा वद्दिग-द्वारा गौडसंघके आचार्य सोमदेव-सूरिके लिए एक जिनालय बनवाये जानेका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० १५८]

८५

धारवाड (मैसूर)

शक ८८४ = सन् ९६२, कन्नड

[यह ताम्रपत्र गंग राजा मारसिंह (द्वितीय) के समय पौष कृष्ण ९ मंगलवार, शक ८८४, दुन्दुभि संवत्सर, उत्तरायण संक्रान्तिके दिन दिया गया था। इसमें राजा-द्वारा मेल्पाडिके स्कन्धावारसे कोगल देशमें

स्थित कादलूरु ग्राम एलाचार्यको अर्पण किये जानेका उल्लेख है। उसकी माता कल्लब्बे-द्वारा निर्मित जिनालयके लिए यह दान दिया गया था। एलाचार्यकी गुरुपरम्परामे निम्न नाम दिये है—सूरस्थ गणके प्रभाचन्द्र योगीश—कल्नेलेदेव—रविचन्द्रमुनीश्वर—रविनन्दिदेव—एलाचार्य।]
[रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० ए० २३ पृ० ७]

८६

कुडलूर (मैसूर)

शक ८८४ = सन् ९६२, संस्कृत-कन्नड

[इस ताम्रपत्रमे गंग राजा मारसिंह-द्वारा मुंजार्य अपर नाम वादिघंघल भट्टको चैत्र शु० ५ शक ८८४, रुधिरोद्गारि संवत्सरके दिन गुरुदक्षिणाके रूपमे पूनाड़ु प्रदेशका बागियूर ग्राम दान दिये जानेका उल्लेख है। मुंजार्य पराशर गोत्रका ब्राह्मण था तथा 'स्याद्वादोदयशैल-भास्कर–स्याद्वादरूपी उदयपर्वतके लिए सूर्यके समान था।]
[ए० रि० मै० १९२१ पृ० १८]

८७

कोक्किचाड (धारवाड, मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख जिनशासनकी प्रशंसासे प्रारम्भ होता है। राष्ट्रकूट राजा खोट्टिग तथा उनके सामन्त गंगवंशीय सत्यवाक्य कोंगुणिवर्म धर्म-महाराजका इसमें उल्लेख है।]
[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ८९ पृ० ३५]

८८

लक्ष्मेश्वर (मैसूर)

शक ८९३ = सन् ९७१, कन्नड

[यह लेख बहुत घिस गया है। गंग राजा मारसिंघदेवके समय

कातिक शु० (?) शक ८९३, प्रजापति संवत्सरके दिन शखजिनालयको कुछ दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ३० पृ० १६३]

८९

दालवुलपाडु (जि० कडप्पा, आन्ध्र)

१०वीं सदी (लगभग सन् ९७२), संस्कृत—कन्नड

भग्न जैन मन्दिरमें स्थित मूर्तिके पादपीठपर

[इस लेखमें राष्ट्रकूट सम्राट् नित्यवर्ष (इन्द्र ४)-द्वारा शान्तिनाथके अभिषेकके लिए यह पादपीठ बनवानेका निर्देश है।]

[इ० म० कडप्पा १४८]

९०

विंडिगनवले (मैसूर)

शक ८९७ = सन् ९७५, कन्नड

पहली ओर

१ भद्रमस्तु जि-　　२ नशासना-　　३ य श्रीमत्

४ मकवर्ष ८-　　५ ९७य शु-　　६ वसंवत्सर-

७ द आषाढ-　　८ मासद शु-　　९ द्ध दशमियु

१० सोमवार　　११ मु स्वातिन-

दूसरी ओर

१२ क्षत्रमुमा　　१३ गे अमृत्त-　　१४ ब्बे कन्तिय

१५ रदु नोन्तु　　१६ समाधि　　१७ यिं (मुडिपि)

१८ दरवर म-　　१९ क्कळनिमि-　　२० त्तपरोप-

२१ कारिगल् प-　　२२ मनन्दिभटा-

तीसरी ओर

२३ रकरवर्गो २४ नेय २५ ....
२६ निलिसिदर्

[यह लेख एक स्तम्भके तीन बाजुओंपर खुदा है। इसमें अमृतब्बे-कन्ति नामक महिलाके समाधि-मरणका तथा उसके पुत्र पद्मनन्दिभट्टारक-द्वारा इस स्तम्भकी स्थापनाका उल्लेख है। तिथि आषाढ़ शु० १०, सोमवार, शक ८९७, युवसंवत्सर, इस प्रकार दी है।]

[ए० रि० मै० १९३९ पृ० १९२]

९१

वेल्लट्टि (धारवाड, मैसूर)

(शक) ९११ = सन् ९९०, कन्नड

[जोगीवण्डि नामक पाषाणपर यह लेख है। अज्जरय्यके पेर्गडे आयतवर्मा-द्वारा निर्मित वसदिका इसमें उल्लेख है। वर्ष ९११ दिया है जो सम्भवतः शकवर्षका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० २०४ पृ० ३८]

९२

वेडल (जि० उत्तर अर्काट, मद्रास)

सन् ९९९, तमिल

आण्डार् मडम् नामक पहाड़ीकी एक गुहाके आगे

[यह लेख चोल राजा राजकेसरिवर्मन्के १४ वें वर्षका है। इसमें गुणकीर्तिभटारके शिष्य कनकवीर कुरत्तिका तथा मादेवी अरिन्दमंगलम्का उल्लेख है।] [इ० म० उत्तर अर्काट ७४४]

९३

खण्डगिरि—ललतेंदुकेसरि गुहा

१०वीं सदी, संस्कृत–नागरी

१ ओं श्री उद्योतकेसरिविजयराज्यसंवत् ५

२ श्री कुमारपर्वतस्थाने निर्णवापि जिर्णं इमण
३ उद्योतित तस्मिन थाने चतुर्विन्सति तीर्थंकर
४ स्थापित प्रतिष्ठा (का) ऐ ह (रि) ओप जमनदिक
५ श्रीपारस्यनाथस्य कमराय

[यह लेख राजा उद्योतकेसरीके ५वें वर्षका है। कुमारपर्वतकी वापी तथा मन्दिरोंका जीर्णोद्धार करके चौबीस तीर्थंकरोंकी मूर्तियोंकी स्थापना-का इसमें उल्लेख है। कुमारपर्वत खण्डगिरिका पुराना नाम है। अंतिम भागमें जसनदि (यशोनंदि)का उल्लेख हुआ है।]

[ए० इ० १३ पृ० १६६]

९४

खण्डगिरि—नवमुनि गुहा

१०वीं सदी, संस्कृत–नागरी

१ ओं श्रीमदुद्योतकेसरिदेवस्य प्रवर्धमाने विजयराज्ये संवत १८
२ श्रीआर्यसंघप्रतिबद्धग्रहकुलविनिर्गतदेशीगणाचार्य श्रीकुलचन्द्र-
३ भट्टारकस्य तस्य शिष्यशुभचन्द्रस्य

[इसका सारांश जै० शि० सं० भाग २में क्रमांक २४५में दिया है। किन्तु उस समय मूल लेख प्राप्त नहीं हुआ था। इसमें राजा उद्योतकेसरी-के १८वें वर्षमें देशीगणके आचार्य कुलचन्द्रके शिष्य शुभचन्द्रका उल्लेख किया है।] [ए० इ० १३ पृ० १६५]

९५

खण्डगिरि—नवमुनि गुहा

१०वीं सदी, संस्कृत—नागरी

१ ओं श्रीआचार्यकुलचन्द्रस्य तस्य
२ शिष्य खलशुभचन्द्रस्य
३ छात्र विजो

[इस लेखमे आचार्य कुलचन्द्रके शिष्य शुभचन्द्रके शिष्य विजो (?) का निर्देश है ।] [ए० इं० १३ पृ० १६६]

९६

ईचवाडि (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

१ ....बूतुग पेर्मादि तद्पत्यण् पेरेयपं तत्सुत वीर

२ ....राचमल्लनहितरमल्ल । अन्ता राचमल्लनिन्देरेयंगनातन मगं

३ ....नातन पुत्रं सैगोट्ट....राचमल्ल....

४ ....मिल्लुकदिरलेढद कय्योल् मदमातंगमने पिडिदु निलिसिद ।

५ ....क्काणूर्गणद आचार्यावतारमेन्तेन्दोडे । दक्षिणदेशनिवासि । गंगमहीमण्डलिक....

६ ....नन्दिभट्टारकरुं बालचन्द्रभट्टारकरुं मेवचन्द्र त्रैविद्यदेवरुं....

७ ....पेम्पं तलेदं गुणनन्दिदेव शब्दब्रह्म । अवरिं बलिकं अकलंक सिंहासनस....

८ ....मदमातंगरुं बौद्धवादितिमिरपतंगरुं सांख्यवादिकुलाद्रिवज्र-धररुं नैयायिका....

९ सिद्धान्तवार्धिवर्धनसुधाकररुं । सकलसाहित्यप्रवीणरुं । मनोभव-भयरहितरुं....

१० श्रीमतु प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवर शिष्यरु अनवद्याचार्यर माघनन्दि-सिद्धान्त....

११ अवरं शिष्यरु । चतुरास्यं चतुरोक्तियिं प्रभुतेयिन्दीशं गुणव्याप-कस्थितियं विष्णु सुबुद्धि वि—

१२ सिद्धान्तविभूषणंगेनिसिदं श्रीमत्प्रभाचन्द्रमं । अवर सधर्मरु । श्रुतसिद्धान्त—

१३ समप्रतिम तानेने पम्पुवेत्तु मुदितोदात्तर जगद्वन्द्यर् ऊर्जितर-
द्योतित—

१४ मनोभवविशालहरनिदिकाक्ष वादिमदरद्नविदुव भेदिपमृग
राज जयतु श्रुतकीर्तिबुध ।

१५ वादिराज दलेनिसिद गोलु । अवर सधर्मरु । चारित्रचक्रि
सम्यमधारि ज्ञापूर्गणा

१६ शिष्यर । वरशास्त्राम्बुधिवर्धनहरिणाक वादिमद सिरत
तानेनलेसेद्—

१७ वारणवागि कीर्ति नर्तिसुवुदु पेम्पुवेत्त नतिमेरुगे दलागेमेबुदु
सद्गुण

१८ नोडि पिरिदु निस्तेजमैदिर्द नोडद * प्रभुनेय ताल्दिर्प
कर

१९ सुडिगलु सत्यसुवर्णभूषणगण भुरलगल करण्डक तनुतप

२० धेनुव्रतिरूपम तलेदुदो मूजातवी धरेयोलु तापस

२१ मुनिप रत्नाकर । इन्तनिसि नेगल्दाचार्य * तिलकर निन-
सद्म

२२ वारिधिशीतरोचि स्तुम्य जिनपदाब्जद्वयभृग भुजबलगग

२३ तम्म गगान्वयदवर पडिसदिसुत्तु मरबेम नागि माडिमि

२४ दत्ति तद्दिगरे सर्वबाधापरिहारा केरेय केलगे नलवृत्ति

२५ मारसिगननुज मन्द नन्नियगगक्षितिपालक तद्नुज

२६ वल्लि येम्भूम्म बसदि मूडलुगद्दे

२७ गुड्ड नन्नियगगदेव एम्भूम्म आगदेयि तें

२८ सिद्धान्तदेवर गुड्ड रक्कसगगं नन्नियगग मीमींरि तेंक

२९ मूडणदेस नद कल्लुगलु

३० मुनिचन्द्रसिद्धान्तदेवर गुड्ड । भुजबलदिं शत्रुमहीभुज
(३१ से ३६ तक पंक्तियाँ घिस गयी हैं)

३७ तलप्रहारदोले····नूं गुटदिन्दे मोण्डुवं····कवुंगु····

३८ धर्ममहाराजाधिराजपरमेश्वरं । कोलालपुरवरेश्वरं । नन्दगिरिनाथं मदगजेन्द्र····

३९ मण्डलिकदेवेन्द्रं दर्पोद्धतारातिवनजवनवेदण्डं···

४० देवं माडिसिद····तीर्थद वसदियं····

४१ ····चन्द्रसिद्धान्तदेवर शिष्यर् मुख्यवागि बिट्ट दत्ति····

४२ नन्नियगंगदेवनुं पट्टमहादेवि····

४३ काणिकेयं नाडूरगलोलु पणवं कोट्टरा····

[इस विस्तृत लेखकी पहली कुछ पंक्तियाँ टूट गयी है तथा अन्य पंक्तियोंके बहुत-से अक्षर घिसे है । गंगवंशके राजा रक्कसगंग तथा नन्नियगंगके समय यह लेख लिखा गया था । इनके द्वारा तट्टिकेरे ग्रामको कुछ भूमि····चन्द्रसिद्धान्तदेवको दान दी गयी थी । लेखमे क्राणूरगणकी आचार्य-परम्परा इस प्रकार बतलायी है — ····नन्दिभट्टारक, बालचन्द्रभट्टारक, मेघचन्द्रत्रैविद्यदेव, गुणनन्दि शब्दब्रह्म, अकलंक, प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेव, माघनन्दिसिद्धान्तदेव, प्रभाचन्द्र (द्वितीय), उनके गुरुबन्धु श्रुतकीर्ति, — (यहाँ कुछ नाम घिस गये है) । अन्तमे मुनिचन्द्र सिद्धान्तदेवके एक शिष्यका उल्लेख है । राजा नन्नियगंगकी वंशावलीमे बूतुग पेर्मांडि, एरेयप्प, राचमल्ल, एरेयंग सैगोट्ट तथा राचमल्ल इनका उल्लेख किया है ।]

[ए० रि० मै० १९२३ पृ० ११४]

९७

दानवुलपाडु स्तंभलेख (जि० कडप्पा, आन्ध्र)

१०वीं सदी, संस्कृत-कन्नड

पहला भाग

१ पतिय बेसर्दिद—
२ दिनिक्कि गेल्दु परिपा—
३ महितरनतिकोप—
४ लि(सि)दं । चतुरुदधि—

५ वलयमल्लमन–	६ तिरथनो दण्ड(ना)य–
७ क श्रीविजय ॥(१)	८ तुरगधलगल–
९ नाड्डिद् करिधटे–	१० य गिरियनर–
११ (गि)य वल्लणिय ।	१२ धुरदेडे(यालि)रि–
१३ दु गेल्गु करद्(म्मि)	१४ करमरिद्दु रण–
१५ दोल्नुपमकविय ॥(२)	१६ कुपितव्रति श्रीवि–
१७ जये वलिदुर्गति–	१८ लक नरेन्द्रदण्डाधि–
१९ पतौ । गिरिरगि(रि)वन–	२० मवम जलमज–
२१ ल रिपुम(मू)द्दव–	२२ ल्मवल ॥(३)

दूसरा भाग

२३ वसुमतियोल–	२४ गिल्देण्टु (दे)सगल
२५ कुसुकुरुमनेय्दि	२६ माणद् मत्त । (विम)–
२७ रहुगर्माण्डक्क प–	२८ मरिमिदुदु(र्की)र्ति ने–
२९ दनुपमकीय ॥(४)	३० आश्रितजनकल्पत–
३१ कविंश्रुतरि(पु)नृप–	३२ तितृणद्वानलमूर्ति ।
३३ श्रीवनितास्मरपादा	३४ पातुस्तत्र बाहु म–
३५ दिर्नी श्रीविजय ॥(५)	३६ चतुरद्धिवलय–
३७ वलयितवसुन्ध–	३८ रामिन्द्रशासनात् स–
३९ रक्ष(न्) । श्रीविजय	४० दण्डनायक (जी)व
४१ चिर दानधर्मनि–	४२ रतमनरक ॥(६)
४३ मगऊ माहाथा ॥	

तीसरा भाग

४४ भद्रमस्तु भगवते (जि)नशासना(य) ॥

४५ अष्टविधकर्ममल्लमनड्डु–	४६ वरिगोण्डु कोडिर्प(नें)बुदे वगेर्यि।

४७ (पु)ट्टिदनुदात्तमत्वं नेट्टने विट्ठु ४८ धेन्द्रचन्द्रनरिविंगोजम् ॥(७)

४९ तानरिट्टु तो(र)ट्टु नेट्टने मानि– ५० सवालावुदेंट्टु संन्यासनदोल्।

५१ मानसिके गिडदे कोण्डो(न)नून– ५२ सुग्वास्पदमनल्तियोल् श्रीविजयं ॥(८)

५३ निर्गतमय नीनर(स)मर्ग– ५४ म नानोल्लेनेन्दु पेसि विसु–

५५ वं । मर्गद् मागमनुण्डपत्र– ५६ र्गक्कडियिट्टोनरिदोननुप–

५७ मकवियं ॥(९)दण्डिन साम ५८ ध्रिगे परमण्डलमल्लाडे

५९ (स)र्वविक्रमतुंगं । दण्डिन वी– ६० रश्रीगोल्गण्डं श्रीदण्डनायकं

६१ श्रीविजयं ॥(१०) (च)ण्डपराक्र ६२ मनुरदरिमण्डलिकरनट्टि पि-

६३ डिट्टु पनिगोण्डिसुवोल्गण्ड प्रच-६४ ण्डनोमूमण्डलदोल् दण्डनायकं

६५ श्रीविजयं ॥(११) अनुपम– ६६ कविय सेनवोवं गु–

६७ णवर्म वरेदं ॥

[यह शिलालेख दण्डनायक श्रीविजयकी प्रशंसामें लिखा गया है। अरिविंगोज, अनुपमकवि तथा सर्वविक्रमतुंग ये इसके विरुद थे। यह वलिकुलमें उत्पन्न हुआ था तथा इन्द्रराजकी सेनाका पराक्रमी सेनापति था। इन्द्रराज (तृतीय) ही सम्भवतः यहाँ उल्लिखित है जिसका राज्य सन् ९१४ से ९२२ तक था। लेखके तीसरे भागमें कहा है कि श्रीविजयने समस्त वैभव छोड़कर संन्यास धारण किया था। यह लेख श्रीविजयके सेवक गुणवर्माने लिखा था।] [ए० इं० १० पृ० १४७]

९८–९९

चोलवाण्डिपुरम् (दक्षिण अर्काट, मद्रास)

१०वीं सदी, तमिल

[यह लेख राजा गण्डरादित्य मुम्मुडि चोलके दूसरे वर्षका है। इसमें चेदि सिद्धवडवन् नामक शासककी प्रशंसा है। उसे कोवलका स्वामी तथा

मल्लकुलोद्भव कहा है। स्थानीय पहाडोंपर उत्कीर्ण मूर्तियोंकी पूजाके लिए उसने कुछ दान दिया था। कुरुम्बिके गुणवीर भट्टारकका भी इसमें उल्लेख है। उत्कीर्ण मूर्तियाँ महावीर, पार्श्वनाथ, गोम्मटदेव तथा पद्मावती की है। यहीके एक अन्य लेखमें १०वीं सदीकी लिपिमें कहा है कि इन मूर्तियों (तेवारम्) का निर्माण वलि कोंग्रेयर् पुत्तडिगल्ने किया था।]

[रि० सा० ए० १९३६–३७ क्र० २५१–५२ पृ० ३४]

१००

मसुलिपट्टम ताम्रपत्र (आन्ध्र)

१०वीं सदी, संस्कृत–तेलुगु

१ व्याकृष्टरत्नरचितायतशार्ङ्गचापा यस्येन्द्रकार्मुकविनीरपयोद-वृन्दम्। निर्मर्त्स्यतीव तिमा—

२ ति स कृष्णकान्तिर्विष्णुश्चिरमवतु वो त्रिलोकम् ॥ (१) स्वस्ति श्रीमतां सकलभुवनसंस्तूयमानमा—

३ नव्यसगोत्राणां हारीतिपुत्राणां कौशिकीवरप्रसादलब्धराज्यानां मातृगणपरिपालितानां स्वामि—

४ महासेनपादानुध्यातानां भगवन्नारायणप्रसादसमासादितवरवराह-लाञ्छनेक्ष—

५ णवशीकृतारातिमण्डलानामश्वमेधावभृथस्नानपवित्रीकृतवपुषां चालुक्यानां कु—

६ लमलंकरिष्णोस्सत्याश्रयवल्लभेन्द्रस्य भ्राता कुब्जविष्णुवर्धनोष्टा-दशवर्षाणि—

७ वेंगीदेशमपालयत्। तदात्मजो जयसिंहस्त्रयस्त्रिंशतम्। तदनुजे-न्द्रराजनन्दनो विष्णुवर्धनो न—

८ व। तत्सूनुर्मंगियुवराज पंचविंशतिम्। तत्पुत्रो जयसिंहस्त्रयो-दश। तदवर—

९ जः कोकिलिप्पण्मासान् । तस्य ज्येष्ठो भ्राता विष्णुवर्धनस्तमुच्चाट्य सप्तत्रिंशतम् । तत्पुत्रो —वि

दूसरा पत्र : पहला भाग

१० जयादित्यभट्टारकोष्टादश । तत्सुतो विष्णुवर्धनष्षट्त्रिंशतम् । नरेन्द्रमृगराजा (ख्यो) मृ—

११ गराज (पराक्रमः ।) विजयादित्य (भूपालः) चत्वारिं(शत्समा)· ॥(२) तत्पुत्रः कलिविष्णुवर्ध—

१२ नो (ध्यर्धवर्षम् । तत्सु)तो गुणगविजयादित्यश्चतुश्चत्वारिंशतम्। तद्भ्रातुर्यौवराज्योन्नतमहि—

१३ (मभृतो) विक्रमादित्यभूपाज्जातश्चालुक्यभीमस्सकलनृपगु (णोत्कृ) ष्टचारित्रपात्रः । दानी

१४ ·······रसकरः सार्वभौमप्रतापो राज्यं कृत्वा प्र (या) तः त्रिदशपतिपदं

१५ (त्रिंशदब्दप्रमा) णं ॥ (३) तत्पुत्रः कलियत्तिगण्डविजयादित्यष्षण्मासान् । तत्सूनुरम्मराजस्स—

१६ (प्त) वर्षाणि । तत्सुतं विजयादित्यं कण्ठिकाक्रमायातपट्टाभिषेकं बालमुच्चाट्य तालराजो राज्यम्मास—

१७ (मे) कं । चालुक्यभीमसूनो विक्रमादित्यस्तं हत्वा एकादशमासान् । विजयादित्यो वेंगीनाथः कलियत्ति—

१८ गण्डनामा धीमा (न् ।) तस्य सतो मेलांबा तज्जश्रीराजभीम-नृपतिरजेयः॥ (४) सत्यत्यागाभिमानाद्यखि—

दूसरा पत्रः दूसरा भाग

१९ लगुणयुतो राजमार्तण्डमाजौ । जित्वांग्रम्मल्लपाख्यं ससुतमधिचलं द्रोहि (णो) प्यन्तकाभो । द्विड्भीमो राष्ट्र

२० कूटप्रबलबलतमस्संहरो द्वादशाब्दं । राज्यं कृत्वागमत्स प्रणिहित (सुयशो) धर्मसन्तानवर्गः॥ (५) वि—

२१ ष्णा पद्मेव शम्भोरिव गिरितनया यस्य देवी सपट्टा। सशुद्धा (हैह) नाम्निजकु (लवि) पये पुण्यरूा (त)—

२२ व्ययगण्या। लोकावातस्सुतोभूद् विजितपरवलोर्वेगिनाथोम्मराजो। राजद्राजाधिराजो (जितरिपु) म—

२३ कुटोद्घृष्टपादारविन्द ॥ (६) वेंगी (राज्याभिषिक्तो) निजरिपु विजयादित्यमुद्यत्समर्थं। जित्वा (नेकाजिरग)—

२४ प्रजितपरवल (कण्ठिकादामकण्ठ।) दायादद्रोहिवर्गानपि सकर-वल क्षत्रि (या) दित्यदे—

२५ वो। ध्वस्तारिध्वान्तराशिर्विलसितकमलस्सप्रतापो विभाति ॥ (७) यत्रिर्मातुश्चिमित्त कृतमिदमखिल विष्टप हि

२६ त्रिमूर्तेरात्मान चात्मनास्मादिह सकलगुणै (राजभी)-मोद्भवद्दो भूत् तेजोराशि प्रजाना पतिरधिकव—

२७ (ल) स्सप्रतापोष्टमूर्तिस्सोयन्देवोम्मराजो जनगुणजनकोन (न्य) राजाप्रचिन्ह ॥ (८) स्वर्याता पूर्व—

तीसरा पत्र पहला भाग

२८ नाथा नलनहुषहरिश्चन्द्ररामादयोपि प्रत्यक्षास्ते यशोभिर्गुणवपुर-चला स्वैरिदानी—

२९ मदृष्टा। यस्योच्चै कीर्तिरा (शिर्भ) गण इव जगत्यद्वितीयो-दयोस्मिन्। राजद्राजाधिराजस्स ज—

३० यति त्रिजयादित्यदेवोम्मराज ॥ (९) गद्यम्। स जगतीपतिरम्म-राजो राजमहेन्द्र भोगीन्द्र सह—

३१ समोगोपद्दासिदीर्घदक्षिणैस्वाहुसान्द्रितविश्वविश्रमरागार । नारायण

३२ इव निरन्तरानन्तभोगास्पद। विधुरिव सुरविराजित। पिता-मह इव कम—

३३ लासनः। गिरिविश इव धराधरमुताराधितः। रत्नाकर इव समस्त—

३४ शरणागतभूभृदाश्रयः। सुवर्णाचल इव सुवर्णोत्तुंगोदयः। हिमाचल

३५ इव सिंहासनोल्लासितचमरीवालव्यजनविराजमानलीलः ॥ स सम—

३६ स्तभुवनाश्रयश्रीविजयादित्यमहाराजाधिराजपरमेश्वरपरम—

तीसरा पत्र : दूसरा भाग

३७ भट्टारकः। वेलनाण्डुविषयनिवासिनो राष्ट्रकूटप्रमुखान् कुटुम्बि-नस्समस्त—

३८ सामन्ता(न्त):पुरमहामात्रपुरोहितामात्यश्रेष्ठिसेनापतिश्रीकरण धर्माध्यक्ष—

३९ द्वादशस्थानाधिपतीन् समाहूयेत्थमाज्ञापयति विदितमस्तु वः। श्रीमानुदपा—

४० दि महान्त्रिणयनकुलसाधु····प्रेव्याख्यो। गोत्रः सिंहासनतो

४१ विदितो नरवाहनश्चलुक्ये(शानाम् ॥ १०) श्रीकरणगुरुर्गुरुरिव विबुधगुरु—

४२ स्स(क)लरा(जसिद्धान्तज्ञः)। नरवाहन इत्यासीन्न्यक्कृतनरवाह-(नः)प्रकाशित—

४३ यशसा ॥(११) यस्याग्रसुतो गुणवान् मेलपराजो गुणप्रधानो दानी। मानी मा—

४४ नवचरितो मानवदेवो जिनेन्द्रपदपद्मालिः ॥(१२) तस्य सती मेण्डांबा सीतेव पति—

४५ व्रता जिनव्रतचरिता। सत्यवती (वि)नयवती सतताहारप्रदायिनी धृतधर्मा ॥ (१३)तज्जौ

चौथा पत्र　पहला भाग

४६ (सु)तौ प्रसिद्धौ बुद्धिपरौ सकलशास्त्रशस्त्रविवेकौ । भीमनरवाह-
नाख्यौ विख्यातौ रा—

४७ मलक्ष्मणाविव लोके ॥(१४) यौ भीमार्जुनसदृशौ बल्युतबलदेव-
वासुदेव(समा)नौ । (न)—

४८ कुलसहदेवतुल्यौ तौ जातौ जैनधर्मनिरतचरित्रौ ॥(१५) श्रीमत्-
चालुक्यभीम(क्षितिपतिकृप)—

४९ या लब्धसामन्तचिन्हौ श्रीद्वारौवँवरष्टौवनपदविलस(च्चा)मरच्छत्र-
(लोरौ ।)

५०　रिकस्थौ शिखिरहपटलच्छायमम्कर्करीकौ जातौ चालुक्य-
(चूलौ)

५१　करिहयौ काहलाद्यभ्युपेतौ ॥(१६)जैनाचार्यो यदीयौ गुरुरखि—

५२ लगुणश्चन्द्रसेनाख्यशिष्यो शास्त्रज्ञो नाथसेनो मुनिनुतजयसेनो
मुनिर्दीक्षितात्मा । सि—

५३ द्धान्तज्ञ कलाज्ञ परसमयपटु सत्पुतोत्कृष्टवृत्तस्सत्पात्र श्रावकाणा
क्षपणकसु(ज)—

५४ नक्षुल्लकार्य्यार्जिकाना ॥(१७) तस्मै ताभ्या राजभीमनरवाहनाभ्या
त्रिजयवाटिकाया

चौथा पत्र　दूसरा भाग

५५ जिनभवनयुगनिर्मितमेतद्धर्मार्थमस्मात्मिस्सर्वकरपरिहार　देव-
भोगी—

५६ कृत्य पेद्दगालिडिपर्रु नाम ग्रामो दत्त । अस्यावधय । पूर्वत
मण्ड्य—

५७ रिपोलगरसुन यिसु कट्टलचेरुवुन नडिमि दूव । आग्नेयत आर-
पर्विंयु जू डुरि—

५८ युं मुय्यल्कुट्ट (न) वूरुव पड्डुव । दक्षिणतः चूंट्टूरि प्रान्त(पति) युत्तरंबुन क्रुण्डि—

५९ विड्डिगुण्ठ । नैऋत्यतः चूंट्टूरियम्मपोटय्यव्वगुडि । (पश्चिमतः) रेटि(प)ड्डमट्टिदरि । वा—

६० यव्यतः वलिवेरिपोलगरुसुन गारलगुण्ठ । उत्तरतः तप्पराल प(ड्डु)व । ई—

६१ शानतः कोडगालिड्डिपतियुं (वलिवेरियुं मु)य्यल्कुट्टुन नड्डुपनि-गुण्ठ ।। तस्य (स्ये)यादलं—

६२ ग्वं सुचिरमुत्तरं (शास)न राजकोक्तं । सत्कीर्तवेंगिपस्य प्रकट-गुणनिधेरम्मराजस्य पूज्यं ।

६३ तत्रेदं शा(स)नं (पालित)जिननिगमं शौर्यमीतान्यनाथव्रातो(च्चे)-मौलिमालामणिकमकरिकामलि—

पाँचवाँ पत्र

६४ कोल्लासितांघ्रेः ।।(१७) अस्योपरि न केनचिद्वाधा कर्तव्या यः करोति स पंचमहापातकसं—

६५-६९ युक्तो भवति । तथा चोक्तं व्यासेन ।। (नित्यके शापात्मक श्लोक)

७० आज्ञप्तिः कटकराजः जयन्ताचा—

७१ र्येण लिखितम् ।।

[इस ताम्रपत्रमें मदनूर तथा कलचुम्बूरु लेखोंके समान पूर्वीय चालुक्यों-की वंशावली कुब्ज विष्णुवर्धनसे प्रारम्भ कर अम्मराज (द्वितीय) विजया-दित्य तक दी गयी है। अम्मराजके पिता चालुक्य भीम (द्वितीय) का एक सामन्त नरवाहन था जो त्रिनयनकुलमें उत्पन्न हुआ था तथा जैनधर्मीय था। उसका पुत्र मेलपराज था। इसकी पत्नी मेण्डांबाको दो पुत्र हुए – राजभीम तथा नरवाहन (द्वितीय)। जैनाचार्य चन्द्रसेनके शिष्य नायसेन

(जयसेनके गुरु) इन दोनोंके गुरु थे। इनने विजयवाटिकामें दो जिनमंदिर बनवाये थे। उनके लिए अम्मराजने वेलनाण्डु प्रदेशका पेद्दगालिडिपर्रु नामक ग्राम दान दिया था।] [ए० इ० २४ पृ० २६८]

१०१

चरुण (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

१ श्री श्रीमत्पर यि राजगुरु—

२ मण्डलाचार्य विथमकरर् अत्रिगोत्र परशुराम श्राचन चामुण्डरनु आ—

३ भठरकर वारणद् साथिनाथस्वामिय माडिसिदर् आवर श्रिय दुणदुचल—

४ दाचार्य मकलु विजय-श्रण वमण मडिदर—

[इस लेखमें आचन चामुण्डर भट्टारक-द्वारा वरुण ग्राममें शान्तिनाथ-मूर्ति अर्पण किये जानेका निर्देश है। यह मूर्ति विजयण्ण और वमण्ण-द्वारा बनायी गयी थी। लेखकी लिपि १०वीं सदीकी प्रतीत होती है।]

[ए० रि० मै० १९४० पृ० १७१]

१०२

मण्णे (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[इस लेखमें देवेन्द्रपण्डित भट्टारकी शिष्या मारब्बेकन्तिके समाधि-मरणका तथा कलिगब्बे कन्ति-द्वारा इस निसिधिकी स्थापनाका उल्लेख है। लिपि १०वी सदीकी है।] [ए० रि० मै० १९१७ पृ० ३९]

१०३

उम्मत्तूर (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[इस लेखमें विमलचन्द्रके शिष्य सोत्तियूरके शासक मारम्मयके पुत्र सिन्दय्यके समाधिमरणका उल्लेख है। लिपि १०वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९१७ पृ० ३९]

१०४

बूवनहल्लि (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख एक जिनमूर्तिके पादपीठपर है। इस मूर्तिकी स्थापना बालचन्द्र सिद्धान्तभटारके शिष्य क(म)लभद्रगुरु-द्वारा की गयी थी। लिपि १०वीं सदीकी है।] [ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३१]

१०५

अंकनाथपुर (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख अंकनाथेश्वर मन्दिरके छतमें लगा है। प्रभाचन्द्र सिद्धान्त-भट्टारकी शिष्या देवियव्वेके समाधिमरणका यह स्मारक है। लिपि १०वीं सदीकी है।] [ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३१]

१०६-१०७

अंकनाथपुर (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[यहांके सुब्रह्मण्यमन्दिरके छतमें दो निसिधि लेख लगे हैं। एकमें दडिगसेट्टि तथा देवरदासय्यकी माता चामकव्वेका उल्लेख है। दूसरेमें

महानायक रेचय्यके पुत्र अय्वसामिका उल्लेख हैं जो चातुर्वर्ण श्रमणसघका सहायक था। लिपि १०वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मैं० १९[illegible] पृ० ३[illegible]]

१०८

होलेनरसीपुर (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख १०वी सदीकी लिपिमें है। इसमें मुनिमुल्लक महेन्द्रकीर्ति समाधिमरणका उल्लेख है।] [ए० रि० मैं० १९[illegible] पृ० ३[illegible]]

१०९

अंकनाथपुर (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख १०वी सदीकी लिपिमें है। इसमें कदम्ब वशीय बासवेके पुत्र राचयके समाधिमरणका उल्लेख है। यह लेख बलदेवने स्थापित किया था।] [ए० रि० मैं० १९१३ पृ० ३२]

११०

कोड्डिहल्लि (माण्डया, मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

१ म–
२ य्य सन्य–
३ सन गेटदु
४ एरड नों–
५ तु मुडिपि–
६ दन् आतन
७ मगलय्य
८ विडक्क कल्लु
९ निक्रमिद्(लु)

[इस निसिधि-लेखमें किसी मय्यके समाधिमरणका निर्देश है। उसकी पुत्री बिडक्कने यह समाधि स्थापित की थी। लेखकी लिपि १०वीं सदीकी प्रतीत होती है।] [ए० रि० मैं० १९४० पृ० १६०]

१११

कोनकोण्डल (अनन्तपुर, आन्ध्र)

१०वीं सदी, कन्नड़

[यह लेख रसासिद्धुलगुट्ट नामक पहाड़ीपर एक पाषाणपर खुदा है। यह श्रीनागसेनदेवका निसिदिलेख है। इसकी लिपि १०वीं सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४५१ पृ० १२६]

११२

मथुरा

१०वीं सदी, संस्कृत–नागरी

[इस लेखमे १०वीं सदीकी लिपिमें मूलसंघके किसी आचार्यका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० ५२७ पृ० ७७]

११३

कीलक्कुडि (जि० मदुरा, मद्रास)

१०वीं सदी, तमिल

समणरमलै पहाड़ीपर जैन मूर्तियोंके उत्तरकी ओर चट्टानपर

[इस लेखमें गुणभद्रदेव तथा चन्द्रप्रभका निर्देश है। लिपिके अनुसार यह लेख १०वीं सदीका होगा।]

[रि० इ० ए० १९५०–५१ क्र० २४२]

११४

वँखर (मन्दसौर, मध्यप्रदेश)

१०वीं सदी, संस्कृत–नागरी

[इस लेखमें नन्दियडसंघके जैन आचार्य शुभकीर्ति तथा विमलकीर्तिका उल्लेख है। लिपि १०वीं सदीकी है।]

[रि० इ० ए० १९५४–५५ क्र० २०३ पृ० ४५]

११५

कमलापुरम् (बेल्लारी, मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख १०वी सदीको लिपिमें है। इसमें गुणचन्द्रमुनि, इन्द्रनन्दिमुनि तथा एक महिलाका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० २२२ पृ० ४८]

११६

काशिपल (बिजनौर, उत्तरप्रदेश)

सवत् १०६(?) = सन् १००५, संस्कृत–नागरी

[यह लेख एक जैन मूर्तिके पादपीठपर है। इसमें भरतका उल्लेख है तथा सवत् १०६ यह तिथि दी है। सम्भवत सवत्का अन्तिम अक लुप्त हुआ है।]

[रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० ४३६ पृ० ७१]

११७

लक्कुण्डि (मैसूर)

शक ९२९ = सन् १००७, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् आहवमल्ल (जो यहाँ सत्याश्रयका उपनाम होना चाहिए) के सामत वाजिकुलके नागदेवके समयका है। इसकी पत्नी अत्तियब्बेने लोक्किगुण्डिमें एक जिनालय बनवाकर उसे कुछ भूमि दान दी थी। यह दान उसके गुरु सूरस्थगण-कौरूरगच्छके अर्हणन्दि पण्डितको दिया गया था। दानकी तिथि फाल्गुन शु० ८, शक ९२९, प्लवग सवत्सर ऐसी दी है। उस समय अत्तियब्बेका पुत्र पटेवल तैल मासवाडि प्रदेशका प्रमुख था।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित]   [सा० इ० इ० ११ पृ० २९]

११८

कोप्पल (रायचूर, मैसूर)

राज्यवर्ष १ = सन् १००८, कन्नड,

[यह लेख चालुक्य राजा विक्रमादित्य ५के राज्यवर्ष १का है। इसमे सिंहनन्दि आचार्यके इंगिनीमरणका तथा उनकी स्मृतिमे कल्याणकीर्ति-द्वारा एक जिनेन्द्र चैत्यालयके निर्माणका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५५–५६ क्र० १९९ पृ० ३७]

११९

उक्काल (जि० उत्तर अर्काट, मद्रास)

सन् १००९, तमिल

पेरुमाल मन्दिरके एक मण्डपकी उत्तरी दीवालपर

[यह लेख चोल राजा राजराजकेसरिवर्मन् (राजराज १) के २४वें वर्षका है। जो ब्राह्मण, वैखानस और जैन चोल, पाण्डल तथा तोण्ड-मण्डलके गांवोंके अधिकारी है वे यदि भूमिकर दो वर्ष तक न दें तो उनकी जमीन जब्त करानेका इसमे आदेश दिया है।]

[इ० म० उत्तर अर्काट २०८]

१२०

वेचारक बोमलापुर (मैसूर)

शक ९३५ = सन् १०१३, कन्नड

१ सकवर्षं ९३५ २ नेय प्रमादीच ३ संवत्सरद आ-
४ पाढ सु दसमि ५ सोमवारदोल् ६ माकब्बेगंतिय
७ नोंदिवद वाचग- ८ वुड परोक्षवि- ९ नयं निसिधिगे-
१० य कल्लनिरि- ११ सिदं

[यह लेख माकब्बेगन्ति नामक महिलाके समाधिमरणका स्मारक है

जो बीचगवुडने स्थापित किया था। तिथि आषाढ शु० १०, सोमवार, शक ९३५, प्रमादी संवत्सर ऐसी दी है।]

[ए० रि० मैं० १९४२ पृ० २०७]

१२१

तोण्डूर (द० अर्काट, मद्रास)

११वीं सदी पूर्वार्ध, तमिल

[यह लेख चोल राजा परकेसरिवर्मन् (सम्भवत राजेन्द्र १) के राज्यवर्ष ३का है। विण्णकोवरैयन् वयिरि मलैयन् नामक शासकद्वारा वज्रसिंग इलपेरुमानडिगल् नामक जैन आचार्यको गुणनेरिमंगलम् अपरनाम वलुवामोलि थारान्दमंगलम् नामक ग्राम तथा तोण्डूर ग्रामके कुछ उद्यान आदि दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३४–३५ क्र० ८३ पृ० १६]

१२२

उदयपुर (राजस्थान)

संवत् १०७६ = सन् १०१९, संस्कृत-नागरी

[उदयपुरके वासुपूज्यमन्दिरकी एक मूर्ति। यह मूर्ति संवत् १०७६ में चाहिल सोडकद्वारा स्थापित की गयी थी ऐसा इस लेखमें कहा है।]

[रि० आ० स० १९३०-३४ पृ० २२६]

१२३

मरोल (मैसूर)

शक ९४६ = सन् १०२४, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्ल (प्रथम) के समय शक ९४६, रक्ताक्षि संवत्सरके उत्तरायण-संक्रमणके अवसरपर लिखा गया था। इसमें

नोलम्बवाडि तथा करिविडि प्रदेशके सामन्त नोलम्बवंशीय घटेयंककार-द्वारा मरवोलल्की वसदिके लिए कुछ भूमि अर्पण किये जानेका उल्लेख है। यह ग्राम उस समय सत्तिग (सत्याश्रय) की पुत्री महादेवीके शासनमें था। जैन आचार्य अनन्तवीर्य, गुणकीर्ति सिद्धान्तभट्टारक तथा उनके शिष्य देवकीर्तिपण्डितका भी इसमें उल्लेख है।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित] [सा० इ० इ० ११ पृ० ५०]

१२४

हैदराबाद म्युज़ियम (आन्ध्र)

शक ९४९ = सन् १०२७, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा जयसिंह २ के राज्यकालका है। इस राजाकी कन्या सोमलदेवी-द्वारा पिरियमोसंगिके वसदिके लिए कुछ दानका इसमें उल्लेख है। तिथि शक ९४९ प्रभव संवत्सर ऐसी दी है।]

[एन्शण्ट इण्डिया १९४९ पृ० ४५]

१२५

होसूर (मैसूर)

शक ९५० = सन् १०२८, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्ल (१) के समय शक ९५०, विभव संवत्सरकी उत्तरायणसंक्रान्तिके दिन पौष शु० १३, रविवारको लिखा गया था। केशवरसका पुत्र दण्डनायक वावणरस तथा उसका बन्धु महासामन्ताधिपति श्रीपादरस इनके शासनका इसमें उल्लेख है। वावणरसकी पत्नी रेवकब्बरसिके अधीन सिन्दरस पोसवूर नगरपर शासन कर रहा था। उस समय आयूचगावुण्डने पोसवूरमें अपनी पत्नी कंचिकब्बेके स्मरणार्थ एक वसदि बनायी और उसे कुछ भूमि तथा एक उद्यान अर्पण किया। आयूचगावुण्डके पुत्र एरकके पुत्र पोलेगने यह लेख स्थापित किया था। ये मोरक कुलमें उत्पन्न हुए थे।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित] [सा० इ० इ० ११ पृ० ५५]

१२६

मस्की (रायचूर, मैसूर)

शक ९५३ = सन् १०३२, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्लके राज्यकालमें फाल्गुन शु० ९, सोमवार, शक ९५३, प्रजापति सवत्सरके दिन लिखा गया था। इसमे देसिगणके जगदेकमल्लजिनालयके लिए राजा-द्वारा कुछ भूमि आदिके दानका उल्लेख है। अष्टोपवासि कनकनन्दिभट्टारके निवेदनपर वह दान दिया गया था। स्थान राजधानि पिरियमोमगि यह था।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० २४७ पृ० ४२]

१२७

कागिनेल्लि (धारवाड, मैसूर)

(शक ९)५४ = सन् १०३२, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा जगदेकमल्लके राज्यमें ५४ (शक ९५४) वर्षमें लिखा गया था। इसमे जिनधर्मके भक्त कामदेवके एक पुत्र तथा आयतवर्माका उल्लेख है। इन्होने एक मन्दिरके लिए कुछ सुवर्ण आदि दान दिया था।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई० २३ पृ० १२०]

१२८

रायबाग (मैसूर)

शक ९६३ = सन् १०४१, कन्नड

[यह लेख आदिनाथमन्दिरके मण्डपमे लगा है। तिथि चैत्र व० १४, शक ९६३, शुक्रवार, विक्रम सवत्सर ऐसी दी है। अन्य विवरण प्राप्त नही है।]

[रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १५४ पृ० २४]

१२९
तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)
११वीं सदी पूर्वार्ध, तमिल

[इस लेखका कुछ भाग दीवालमें दबा है। इसके प्रारम्भमें राजेन्द्र-चोल प्रथमकी ऐतिहासिक प्रशस्ति है। तिरुमणंजेरि निवासी कलिमानन् विजयालयमल्लन्-द्वारा देवमन्दिरमें दीप प्रज्वलित रखनेके लिए ९६ भेड़ें दान दी जानेका इसमें उल्लेख है। यह लेख चन्द्रनाथमन्दिरके वरामदेके बाजूमें खुदा है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०० पृ० ६५]

१३०
हूलि (जि० बेलगांव, म्हैसूर)
शक ९६६ तथा १०६७ = सन् १०४४ तथा ११४५, कन्नड

१–२ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं। जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ (१)

३ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज पर-मेश्वर परमभट्टार-

४ कं सत्याश्रयकुलतिलकं चालुक्याभरणं श्रीमदाहवमल्लदेवर विजयराज्य-

५ मुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमाचंद्रार्कतारं सलुत्तमिरे ॥ तत्पाद-पद्मोपजीवि ॥ मले-

६ दं परगेवरं निर्मूलिसि जसमं निमिर्चि दिग्भित्तिवरं काल्डिय चोलगदि तले पालिसिदं तोंवता-

७ रमं भुजवलदिं ॥ (२) आतन पुत्रं विनयोपेतं पायिम्म-नृपति-गोप्पुत्र सति

८ विख्यातियुते हम्मिकब्बेगे सीतेगे सरि भागेणब्बे ल्च्छलेयोगे-
दर ॥(३) इद्दज

९ नक्के चट्टसमयक्के महाजनमोजनक्केयुत्कृष्टतपोधनगॅयल्दायव-
१० नक्के सकन्यकाल्किगिद्दंगेय्दे नाल्कुसमयक्कनुरागदे बेगविं-
११ तु सतुष्टते ल्च्छियब्बरमिगार् सरियर् सचराचरोर्वियोलु ॥(४)
१२ सकलधरित्रियोल् नेगद वदिजन सले रूपिनेल्गेय प्रकटतेवेत्त दा-
१३ नगुणम कुल्दुनतिय जिनांघ्रिगल्गकुटिरचित्तम पोगलुतिर्पु-
१४ दु कूढिय लिंक्द्कपाल्कन कुलोत्तमागनेयनयियं ल्च्छब्देविय
१५ जग ॥ (५) शरनिधिमेखलाकृतवसुधरयेंब विलासिनीमुखानुरह-
दवोल्विराजि-
१६ सुव बेल्वलनाल्के पोदल्द शोभेगागरमेनि(मि)र्प पूलि तिलका-
कृतियिंदेसेदिर्पुदा पुर सुरपु
१७ रम कुबेरनल्कापुरम नगुगु विलासदिं ॥ (६) अल्लि ॥ सकल-
व्याकरणार्थशा-
१८ स्त्रचयदोलु काव्यगलोलु मद नाटकदोलु वर्णकवित्वदोल्नेगर्द
वेदांतगलोलु
१९ पारमार्थि(क)दोलु लौकि(क)दोलु समस्तकलेयोलु वागीशनिंद
यशोधि-
२० करादर् पोगल्वल्गिगारलवे पेलु सासिर्वर ख्यातिय ॥ (७) स्वस्ति
शकनृपकालातीतसंवत्सर-
२१ शतगलु ९६६ नेय तारणसंवत्सरद पुष्य सुद्ध १० आदिवार-
मुत्तरायण-
२२ सक्रान्तियदु ॥ यजनयाजनाध्ययनाध्यापनदानप्रतिग्रहषट्कर्म-
- निरतर् श्री-
२३ (म)चालुक्यचक्रवर्तिब्रह्मपुरिस्थानपितृपितामहमहिमास्पदरक्षणा-

२४ थंकोविदरुं　विदग्धकविगमकवादिवाग्मित्वरुमतिथियभ्यागत-
विशिष्ट-
२५ जनपूजनप्रियरुं हिरण्यगर्भब्रह्ममुखकमलविनिर्गतऋग्यजु-
२६ स्सामाथर्वणसमस्तवेदवेदांगोपमांगानेकशास्त्राष्टादशस्मृतिपुराण-
२७ काव्यनाटकधर्मागमप्रवाणरुं　सहर्म्मामसंस्थावभृथावगाहन-
पवित्रीकृ-
२८ तगात्ररुं कांचनक(ल)शसितपट्छत्रचामरपंचमहाशब्दघटिकाभेरी-
स्वनि-
२९ नादितरुमाश्रि(तजन)कल्पवृक्षरुमहितकालांतकरुमेकवाक्यरुं
३० शरणागतवज्रपंज(ररुं च)तुस्समयसमुद्धरणरुं श्रीकेशवादित्यदेव-
३१ लब्धवरप्रसादरुमप्प श्रीमन्महाग्रहारं पूलियूरोडेयप्रमु-
३२ ख मासिर्वर्महाजनंगल दिव्यश्रीपादपद्मंगलं (ल)च्छियब्बरसि-
यरु स-
३३ हिरण्यपूर्वकमाराधिसि भूमियं पडेदु बसदियं माडिसि खं-
३४ डस्फु(टि)तर्जीर्णोद्धरणक्के पडुवण पोलदलु शिवेयगेरियाल्मत्तर्व-
३५ सुगेयं मत्तरिंगड्डुचिन्नलेक्कदिंदस्त्रणमं मूरु पणमं तेत्तुवं-
३६ तागि श्रीयापनीयसंघद पुन्नागवृक्षमूलगणद श्रीबालचंद्रभ-
३७ ट्टारकदेवर　कालं कर्चि　बिट्टलु ॥ स्वस्ति　समस्तभुवनाश्रय
श्रीपृथ्वीवल्लभ महा-
३८ राजाधिराज　परमेश्वर　परमभट्टारकं　सत्याश्रयकुलतिलकं चालु-
क्याभरणं
३९ श्रीमत्प्रतापचक्रवर्ति जगदेकमल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्त-
४० राभिवृद्धिप्रवर्धमानचंद्रार्कतारंबरं सलुत्तमिरे । शकव-
४१ र्प १०६७ नेय क्रोधनसंवत्सरदुत्तरायणसंक्रान्तियंदु यमनि-
४२ यमस्वाध्यायध्यानधारणमौनानुष्ठानजपसमाधिशीलसंपन्नरप्प

४३ श्रीमन्महाग्रहार पूलियूरोडेयप्रमुख सासिर्वमहाजनग(ल)
४४ दिव्यश्रीपादपद्मगल पेर्गडे नेमण सहिरण्यपूर्वकमाराधिसि(धा)
४५ (रा)पूर्वक माडिसि कों(डु) तम्म मुत्तव्वे लच्छियव्वरसियरु माडिसिद बस-
४६ दियलिपै ऋषियराहारदाननिमित्तमरिल्याचार्यर रामचन्द्र
४७ देवर काल कचियवर मुत्तशालुव पडुवणपोलद सिरेयगेरियारमत्त-
४८ वंसुगेर्यि पडु(व)ण (मा)गदलु कलशवल्लिगेरिय स्था(न)दोल-गार मत्तर्कय्य
४९ मत्तरिंगड्डविल(लेक्कदिंदर)वणम भूरु पगम तेंसुवतागि बिट्टरु ॥
५० पतिमक्ते धेमा सति पायिम्मरसनप्रमुते सकलजनस्तुते मा-
५१ गियब्बेराणिगे सुत दो (नेम)व्यनौदार्यगुण ॥ (८) जिनदेव तनगाप्तन-
५२ (र्थि)जनताकल्पद्रुम व्यने तम्मय्यननूनदानि कलिदेव साश्रा-
५३ प्रेसर तनगण्ण गुणरत्नभूषणने सद्दिदं नेमगेनदकनवद्याच(रण)-
५४ गे भूवलयदोलु पेल् ॥ (९)

[इस लेखके दो भाग है। पहला भाग चालुक्य सम्राट् आहवमल्ल सोमेश्वर प्रथमके राज्यमें शक ९६६ की उत्तरायण सक्रान्तिके समयका है। इनका सामन्त कालडिय बोलगडि था। इसका पुत्र पायिम्म था जिसने हम्मिकब्बेसे विवाह किया। उसे भागिणब्बे तथा लच्छियब्बे ये दो कन्याएँ हुई। लच्छियब्बेका विवाह कूडि प्रदेशके शासकसे हुआ था। इसने पूलि नगरमें — जहाँ एक हजार धर्मनिष्ठ ब्राह्मण रहते थे — कुछ जमीन खरीद-कर एक जैन मन्दिर बनवाया और उसके लिए यापनीय सघ-पुन्नागवृक्षमूल गणके बालचन्द्रभट्टारकको कुछ दान दिया।

दूसरा भाग चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्ल (द्वितीय) के राज्यमें शक १०६७ की उत्तरायणसक्रान्तिके समयका है। इसमें नेमण नामक

स्थानीय अधिकारीका उल्लेख है जिसने पूलि नगरमें कुछ और जमीन खरीदकर उक्त मन्दिरको दान दी। उस समय रामचन्द्र वहाँके भट्टारक थे। यह नेमण उपर्युक्त लच्छियव्वेका प्रपौत्र था।]

[ए. इं० १८ पृ० १७२]

१३१

मुगद (मैसूर)

शक ९६६ = सन १०४५, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्ल आहवमल्ल (सोमेश्वर १) के समय शक ९६६, पार्थिव संवत्सर, चैत्र शु० ५, रविवारके दिन लिखा गया था। इसमें नाग्गावुण्ड चावुण्ड-द्वारा मुगुन्द ग्राममें स्वनिर्मित सम्यक्त्वरत्नाकर चैत्यालयके लिए कुछ भूमि अर्पण किये जानेका उल्लेख है। चावुण्डके पौत्र महासामन्त मार्तण्डय्य-द्वारा इस मन्दिरको एक नाटकशाला अर्पण किये जानेका भी इसमें उल्लेख है। उस समय पलसिगे तथा कोंकण प्रदेशपर कदम्ब कुलके महामण्डलेश्वर चट्टय्यदेवका शासन चल रहा था। लेखमें कुमुदि गणके जैन आचार्योंकी विस्तृत परम्परा भी बतलायी है।]

[मूल कन्नडमे मुद्रित] [सा० इ० इ० ११ पृ० ६८]

१३२

जोन्नगिरि (कुर्नूल, आन्ध्र)

११ वीं सदी, कन्नड

[इस लेखमे चालुक्य राजा त्रैलोक्यमल्लदेवके समय वेर्गडे सोवरस तथा मल्लिसेट्टिका उल्लेख है। इन्होंने जोन्नगिरिकी बसदिके लिए कुछ भूमि दान दी थी।]

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ६१७ पृ० ६०]

१३३

तिंगळूर (कोइम्बतूर मद्रास)

शक ९६७ = सन् १०४५, तमिल

१ स्वस्तिश्री
२ को नाट्टन् वि-
३ क्किरमशोळ-
४ देवर्कु शे-
५ ल्लानिण्ड-
६ याण्डु ना-
७ र्पदावदु
८ थरत्तुला-
९ ण्देवन्
१० पेरन् आण ना-
११ ण् कणित मा-
१२ णिक्कच्चेट्
१३ टि चन्द्रिरवश-
१४ तियिल् मुक-
१५ मण्डगम्
१६ ण्डुपित्ते-
१७ न् (॥) शकर या
१८ ण्डु ९ १०० (६) (१०) ७ (॥)
१९ शिंगल्ला (न्तक) न्
२० एण् पुदु मुक-
२१ मण्डगम् (॥)

[यह लेख शक ९६७ का है। इस वर्षको नाट्टन् विक्रमचोळ राजाके ४०वें वर्षमें चन्द्रवसतिके मुखमण्डपके निर्माणका इसमें उल्लेख है। यह कार्य अरत्तुलान् देवन्के पौत्र कणित माणिक्क सेट्टि द्वारा किया गया था।]

[ए० इ० ३० पृ० २४३]

१३४

अरसीबीडि (जि० बिजापुर, म्हैसूर)

शक ९६९ = सन् १०४७, कन्नड

१ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज-परमेश्वर प-

२ रमभट्टारक सत्याश्रयकुलतिलक चालुक्याभरण श्रीमत्त्रैलोक्यम-

३ ल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमाचंद्रार्कता-

४ रंबरं सलुत्तमिरे। स्वस्ति श्रीरिनृपमकुटघटितचरणारविंदेयर् गंगास्नान-

५ पवित्रेयर् दीनानाथचिन्तामणिगलेकवाक्यर् गुणद वेडंगियरप्प श्रीमद-

६ क्कादेवि (य) र् गोकागेय कोटेय सुत्तिर्द वीडिनलु विक्रमपुरद गोणदवेडंगिय

७ जिनालयक्के खण्डस्फुटितसुधाकर्मक्कं गन्धधूपदीपक्कं सरुगिगं मूलसंघ-

८ व (र) सेनगणद होगरिय गच्छद नागसेनपण्डितरगं अल्लिर्प ऋपियरगं अज्जिय-

९ गं आहारदानक्कं अज्जियर कप्पडक्कं कडुव भूमि सकवर्ष ९६९ नेय

१० सर्वजित् संवत्सरद चैत्रदमास्ये आदित्यवारदंदिन सूर्यग्र-

११ हणनिमित्तं धारापूर्वकं माडि नगरदनुभवने मुख्यमागि किसु-

१२ काडेप्पत्तर वलिय सर्वनमस्यमागि बिट्ट बाडं गाणद हाल्गॊंडु

१३ विक्रमपुरद योशान्यद देसेयिं तोंटं मत्तरोंडु ऊरिं तेंक मुलवदिन पा-

१४ ल नैरित्यद देसेयिं पण्डितनागदेवंगे सर्वनमस्य मत्तर् पंनेरडु अल्लिं तेंक

१५ परंकार केतोजंगे सर्वनमस्य मत्तरिपंत्तनाल्कु ऊरिं वडग रायगट्टेयिं

१६ मूड परंकार केतोजंगे तोंट मत्तरोंडु अल्लि पडुव कल्कुटिग सूरोजंग स-

१७ र्वनमस्यं मत्तर पंनेरडु तोंट मत्तरोंडु ददिगरसन कय्यलु मालगोण्डु देयगं कोट

१८ भूमि कप्पडिय केरेयिं तेंक मन्नेयवोलदलु सर्वनमस्य मत्तर ५० ॥

१९ ई धर्मम स्वधर्मदिं रक्षिसिदवर् वारणासियलु ओन्दु कोटि कविलेयु-

२० म वेदपारगर्प ब्राह्मणरिगे कोट्ट फ (ल) म पडेवर् ई धर्ममन-लिदव

२१ रा स्थानदोळनितु कविलेयुमननितुं (तु) ब्राह्मणर—

२२ सा ॥ सामा—

[यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्ल (सोमेश्वर प्रथम) के राज्यकालमें शक ९६९ की चैत्र अमावास्याके दिन लिखा गया था। इस समय अक्कादेवी गोकाग किलेके समीप शिविरमें थी। उसने विक्रमपुरके गोणद बेडगि जिनमन्दिरके लिए मूलसंघ सेनगण होगरि गच्छके नागसेन पण्डितको कुछ दान दिया था।]

[ए० इ० १७ पृ० १२१]

१३५

नन्दवाडिगे (मैसूर)

११वीं सदी मध्य, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लदेवके समयका है। उनकी रानी मैललदेवी थी। उनके एक सामन्त भावनगन्धवारणने कई मठ, मन्दिर, तालाब आदि बनवाये थे जो निम्न स्थानोंपर थे – कल्याण, अण्णिगेरे, मुलुगुन्द, (कोल्लु) गे, नन्दापुर, कोहल्लि, मण्डलिगेरे, बेल्गलि, बनवासेपुर, करिविडि, नविले, नन्दवाडिगे, पेरूर। उसने पोन्नुगुन्दका त्रिभुवनतिलक जिनालय, महाश्रीमन्त बसदि, पुरगूरका वीरजिनालय, कुन्दरगेका जिनालय आदिका जीर्णोद्धार किया था। उसके द्वारा दिये गये

कई दानोंका उल्लेख लेखमें किया है। इसका समय उत्तरायण संक्रान्ति कहा है। वर्ष निश्चित नही है।]

[मूल कन्नडमे मुद्रित] [सा० इ० इ० ११ पृ० ९९]

१२६

कल्याण (नासिक, महाराष्ट्र)

११वीं सदी-पूर्वार्ध, संस्कृत-नागरी

[यह ताम्रपत्र परमारवंशीय महाराज भोजके सामन्त यशोवर्मन्-द्वारा दिया गया है। श्वेतपद देशमे स्थित कल्कलेश्वर तीर्थके महीशबुद्धिक स्थानके मुनिसुव्रतमन्दिरके लिए कुछ जमीन, तेलघानियाँ, दूकानें, और १४ द्रम्म दान दिये जानेका इसमे निर्देश है।]

[रि० आ० स० १९२१-२२ पृ० ११८]

१२७

हेव्वैलु (मैसूर)

शक ९७५ = सन् १०५३, कन्नड

१ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वी-
२ वल्लभ महाराजाधिराज परमे-
३ श्वर परमभट्टारक सत्याश्रयकुल-
४ तिलक चालुक्याभरण श्रीमत् त्रैलोक्य-
५ मल्लदेवर विजयराज्यमुत्त-
६ रोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमाचं-
७ द्रार्कतारं सलुत्तमिरे स्वस्ति स-
८ मधिगतपंचमहाशब्द महाम-
९ ण्डलेश्वरं पट्टिपोम्बुर्चपुरवरेश्वरं पद्मा-

१० वतीलब्धवरप्रसाद मृगमदामोद
११ कन्दुकाचार्यं मन्दरधैर्य्यं सुभटमस्तु-
१२ ल्य सान्तरादित्य रिपुकोटिकठोरव रण-
१३ रंगभैरव कीर्तिनारायण सौर्यपा-
१४ रायण रिपुमंडलिकगोत्रगोत्राचलवज्र-
१५ दण्ड विरुदमेरुड महोग्रान्वयनभस्त-
१६ लगमस्तिमालियतुलबलसौर्य-
१७ शालि वन्दिम दोहानन्दीकृतसुन्दरकलाल-
१८ ताकुरनरिमंडलिकपतगदीपाकु-
१९ रं विस्मितत्रिजयविपुलीकृतकृत
२० प्रतिज्ञ विरुदसर्वज्ञ नानाघनेका-
२१ कमालासमलङ्कृतर् श्रीमत्

दूसरी ओर

२२ वीरसान्तरदेवर् सान्तलिगे-
२३ सासिरमुम निष्कण्टकमा-
२४ गि प्रतिपालिसि सुखसंक-
२५ थाविनोददिं राज्य गेय्युत्त-
२६ मिर तत्पादपद्मोपजीवि
२७ स्वस्ति समस्तदुस्तरारा-
२८ तिभकुमस्थलीविदारणदा-
२९ रणकरासिधारासक्तमुक्ता-
३० फलमालालंकार वारनारीम-
३१ णिहारायितभुजादण्डमहि-
३२ तमहावाहिनीमहीधरव-
३३ ज्रदण्ड जिनधर्मप्राकार
३४ निजगोत्रनिस्तार धर्मरत्ना-
३५ कर सुभटारिभीकर पति-
३६ हिताजनेय सौर्यगा-
३७ गेय स्वामिद्रोहदिशाप-
३८ ट्ट वैरिकोटिघरट्ट रण-
३९ रंगक्षेत्रपाल मच्चरिसु-
४० वरल्देयसूल दलदिं
४१ सुचरित्र आयुम मं-
४२ रेव सुकविकोकिलमह-
४३ कारनेकागवीर विलासवि-
४४ द्याधर धैर्यमहीधरन्
४५ उपायनारायण नीतिपा-
४६ रायणं वीरमानगरुड-
४७ नामादिसमस्तप्रशस्तिस-

४८ हित श्रीमन् नकुलरसर्

४९ समररूपरुन्नतर् नकुलर-

५० सन तनयर् जनक्के रा

५१ मन् लक्ष्मीधररेन्दे-

५२ न्दडे चावुण्डराय-

५३ नुं नागवर्मनुं कर-

५४ मेसेदरे ॥ मंगल

तीसरी ओर

५५ वृत्त ॥ केडेयद पे (म्) महामहिमराज-

५६ सुतप्रतिपत्तियेंविवं तडेयदे वीरसान्त-

५७ रमहीपति ता दयेगेय्दु कोट्वोडं त्रि-

५८ डे निजपुत्र नीं वरिसेनिपी नेगल्तेयनेय्दे

५९ कोट्टनेन्दडे दोरेयार्परार् नगुलभूप-

६० नोली वसुधातलाग्रदोलु । परम-

६१ श्राजिननिष्टदैवमेनेपोर् शास्त्राग-

६२ मांभोधिगल् गुरुगल् भाविसे पु-

६३ ष्पसेनमुनिपर श्रत्तिप्रियं वीरसा-

६४ न्तर भूमिपति तन्दे तां पडियरं

६५ श्रीकाटि ताय् पेंपलंकरिसुत्तिल्दरे-

६६ यल्वे ये (ने) नगुलभूपालं महा-

६७ धन्यनो ॥ नगुलरसन चित्तप्रिये

६८ मृगलोचने दण्डनायकोङ्कम्मन

६९ एदुं मन्दिन सासि-

७० वर्कण्डु काप्प-

७१ रक्के इदनलिदं क-

७२ विलेयनलिदं

७३ चित्तारिकेतोजन मगं वहु

७४ गि आयचोजं ई शासनद

७५ गेय्दं

कल्लं

चौथी ओर

७६ पुत्रि गुणान्विते चट्ट-

७७ ब्बरसिगे दोरेयार् दान-

७८ धर्मशीलोन्नतियोल्

७९ सकवर्ष ९७५ नेय दु-

८० भंतिसवत्सर प्रवर्तिसे ८१ वैशाखमासद्कृष्णप
८२ क्षदेकादशि आदित्य ८३ वारद्दु श्रीमन्महा-
८४ मण्डलेश्वर वीरसान्तर ८५ नगुळरसगे पेर्वय-
८६ ल् पन्नेरडर किरुदरे ८७ बिट्टियुम कादु परिहा-
८८ र बिट्टक्केगेड्डु कल्नाडिन्ती ८९ मर्यादयनळिद वा-
९० रणासियोल् कुरुक्षे ९१ त्रदोल् सामिरकविलेयु
९२ पार्वरमनळिद् पातकन- ९३ क्कु। स्वदत्ता परदत्ता वा यो
९४ हरेत वसुधरा षष्टिवर्षसम- ९५ हस्राणि विष्ठाया जायते क्रि-
९६ मि । विप्रकुळावरचद्र ९७ श्रीप्रतिमंय मारसिंग-
९८ तनय विद्वद्विप्र गगननृपति- ९९ योगप्रभु कविराज वल्लभ गो
१०० विन्द १०१ पेर्वयल् पन्नेरड्डु
१०२ पॉन्नुचंनाडोले १०३ मत्तगावे इर्दिगा-
१०४ ल कदगोड मैसेपन्नेर- १०५ डुम नेळ्ळिवयलु पा-
१०६ ळिगार। वीरसिंनु नगुल- १०७ रसनुमय्दिवेत सासिर-
१०८ गद्याण ॥ मगल

[यह लेख एक स्तम्भके चारो बाजुओंपर लिखा है। चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लके अधीन पट्टिपोंबुचके महामण्डलेश्वर वीरसान्तरके समयका यह लेख है। इसके मन्त्रीका नाम नकुलरस था। ये दोनो जैन कहे गये हैं। इनके गुरु पुष्पसेनदेव थे। नगुलरसके पिता पडियर कादि, माता अरेयब्बे तथा पत्नी चट्टरसि थी। इनके दो पुत्र चावुण्डराय और नागवर्म थे। लेखमें वीरसान्तर-द्वारा अक्केगेड्डु ग्राम और पेर्वयल विभागके कुछ करोका उत्पन्न नकुलरसको अर्पित किये जानेका उल्लेख है। इस लेखके पाठकी रचना गोविन्दने की थी जो मारसिंगका पुत्र था और गगराजाओंके समयसे कवियोंमें प्रिय था। लेखको चित्तारि केतोजके पुत्र आयचोजने उकेरा था। लेखनिर्दिष्ट दानकी तिथि वैशाख ब० ११, रविवार, शक

९७५ दुर्मति संवत्सर है (यह अनियमित है क्योंकि शक ९७५ विजय संवत्सर था)।]

[ए० रि० मै० १९३१ पृ० १९०]

१३८

मुलगुन्द (मैसूर)

शक ९७५ = सन् १०५३, कन्नड

१-२ श्रीमद्भक्तिभरानतामरकिरीटानर्घ्यरत्नप्रभाजालालीढपदारविन्द-युगलः कन्दर्पदर्पापहः। त्रैलोक्योदरवर्तिकीर्तिविशदश्चन्द्रप्रभः सुप्रभो भव्यानां निवहं निराकुलमलं पायादपायाज्जिनः ॥ १

३ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परमभट्टारकं सत्या-

४ श्रयकुलतिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत् त्रैलोक्यमल्लदेवर विजय-राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रव-

५ र्द्धमानचन्द्रार्कतारं सलुत्तमिरे। तत्तनयं समधिगतपंचमहाशब्द-महामण्डलेश्वरं वेंगी-

६ पुरवरेश्वरं समरप्रचण्डं कुमरमार्तण्डं परकरिमदनिवारणनम्मन गन्धवारणं परिवारनिधानं

७ दानकानीनं हयवत्सराज रूपमनोजं रिपुनृपतिहृदयसेल्लं भुवनैकमल्लं मण्डलिकशिरो-

८ मणि चालुक्यचूडामणि विद्विष्टसंहारं कटकप्राकारं श्रीमत्-त्रैलोक्यमल्लदेवपादपंकजभ्र-

९ मरं श्रीसोमेश्वरदेवं बेल्वोलमूनूरुं पुलिगेरेमूनूरुमं सुखसंक-थाविनोददिनालुत्तमि-

१० रे तत्पादपद्मोपजीवि ॥ वृत्त। विनयक्काधारभूतं पतिहितचरित-
क्काश्रय सद्विवेकक्के निवास—

११ सपत्तिगे, कुळभवन सन्ततानूनदानक्के निधान मान्तनक्कागर-
मेने नेगलद् सद्वचोभूषण भूरितु (त) (वे-)

१२ लदेवनुघद्विधुविशदयशोव्याप्तदिक्चक्रवाळ ॥२ ईव गुण गुण
पतिहिताचरित चरित परोप (का-)

१३ रायसथार्थमथमघमिज्जिननरवमे तरजमॆंव सद्भावने तम्मोळोन्दि
नेळेवेत्तिरे कीतिगे नोन्तरिन्तु

१४ बेल्देवनुमोल्पनाव्द बलदेवनुमकद शान्तिवमंनु ॥(३) वचन ॥
अन्तु सकलगुणगणोत्तुगर जिनधर्म-

१५ निर्मलर निखिलजनोपकारनिरतरमुदात्तकीर्तिलतानिकेतनरम-
रगलदेवप्रियतनूभवर गोज्जि-

१६ काम्बिकाकृशोदरनिविडनिबद्धपट्टरमागि पोगर्तेवेत्त तरसहोदर-
त्रयदोल् अग्रभवनप्प सन्धिविग्र-

१७ हाधिकारि ॥ वृत्त। जिनपादाबुजभृगनगजनिभ गम्यार्थरत्नाकर
मनुमार्ग विनयार्णव कलिमलप्रध्वस-

१८ क केशिराजन बर्टि नयसेनसूरिपदपद्माराधनारक्तचित्तनुदात्त
नेगल्द विवेक—महाभाग—

१९ दोळ् ॥ ४ आ महानुभाव धर्मप्रभावप्रकटीकृतचित्तनागे ॥
कन्द। सिन्द—कनकलानन्दनकरळ-

२० पनसमसाहसनिलय सिन्दनृपनन्दन लसदिन्दुकरप्रतिमकीर्ति-
कान्ताकान्त ॥ ५ जिनधर्मनिर्मल सत्यनिधा-

२१ ननूनदान—अनन्दिन कचरस पचेपुनिभ मुळ्गुन्दसिन्ददेश-
ललाम ॥ ६ एव पॅपिंग जसक्कमागरमा—

२२ द् कंचरसं तन्न सीवददोलगे धर्मानुरागचित्तं सहिरण्यपूर्वकं कुडे कोण्डु ॥ श्रीमूलसंघवारा-
२३ शौ मणीनामिव सार्चिषां । महापुरुषरत्नानां स्थानं सेनान्वयो- जनि ॥ ७ व । आ चन्द्रकवाटान्वयवरिष्ट-
२४ रजितसेनभट्टारकर् तदन्तेवासिगल् कनकसेनभट्टारकरवर शिष्यर्॥ कन्द । चान्द्रं कातंत्रं जैनेन्द्रं श-
२५ ब्दानुशासनं पाणिनि मत्तैन्द्रं नरेन्द्रसेनमुनीन्द्र'गेकाक्षरं पेरंगिदु मोग्गे ॥ ८ अन्तु जगद्विख्यातराद्र
२६ रवर शिष्यर् ॥ वृत्त । निनगेनॆन्नेनो शाकटायनमुनीशनन्ताने शब्दानुशासनदोल् पाणिनि पाणिनीयदोले चन्द्र' चा-
२७ न्द्रदोल् तज्जिनेन्द्रने जैनेन्द्रदोला कुमारने गडं कौमारदोल् पोल्परेन्तेने पोलर् नयसेनपण्डितरोलन्यर्व्याधि-
२८ वीतोर्वियोल् ॥ ९ इन्तु समस्तशब्दशास्त्रपारावारपारगर् नयसेन पण्डितदेवर पादप्रक्षालनंगे-
२९ य्दु । शकवर्षमोंवय्नूरेल्पत्तय्दनेय विजयसंवत्सरदुत्तरायण- संक्रान्तियंदु तीर्थद व-
३० सदिगाहारदाननिमित्तं निजांविकेयप्प गोज्जिकब्बेगे परोक्षविनयं नगरमहाजनमुं पंचमठस्था-
३१ नमुमरियें नगरंश्वरद् गाडियद कोलोललेदु किरुगेरेय केय्योलगे सर्वबाधापरिहारमा-
३२ गे बिट्ट केय्मत्तर् पन्नेरडु । आ केय्गे गुड्डे ईशान्यदोल् कविलेय कल् आग्नेयदोलादित्यन कल् नैऋ-
३३ त्यदोल् चन्द्रन कल् वायव्यदोल् पद्मावतिय कल् असगगेरेय तॅक सासिर बल्लिय तॅांटवोन्दु ॥ स्वदत्तां—

३४ (परदत्तां वा) यो हरेत वसुन्धरा। षष्टिवर्षसहस्राणि विष्ठाया जायते कृमि ॥५०

[यह लेख चालुक्य सम्राट् सोमेश्वर (प्रथम) त्रैलोक्यमल्लके राज्य-मे शक ९७५ मे लिखा गया था। उस समय वेल्वोल तथा पुलिगेरे प्रदेशपर सम्राट्का पुत्र सोमेश्वर (द्वितीय) शासन कर रहा था। वहाँके सन्धिविग्रहाधिकारी वेल्देव थे। ये अग्गलदेव तथा गोज्जिकव्वेके पुत्र थे। वलदेव तथा शान्तिवर्मा उनके बन्धु थे। वेल्देवकी प्रेरणासे सिन्दकुलके सरदार कंचरसने नयसेन पण्डितदेवको कुछ भूमि दान दी। नयसेनकी गुरु-परम्परा इस प्रकार थी – मूलसंघ-सेनान्वय-चन्द्रकवाट अन्वयके अजितसेन-कनकसेन-नरेन्द्रसेन-नयसेन। नरेन्द्रसेन तथा नयसेन दोनो व्याकरणशास्त्रके विशेषज्ञ थे।

[ए० इ० १६ पृ० ५२]

१३९–१४०

नन्दिबेवूरु (बेल्लारी, मैसूर)

शक ९७६ = सन् १०५४, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा त्रैलोक्यमल्लके समय शक ९७६, उत्तरायण संक्रान्ति, रविवार, जय संवत्सरका है। इसमें नोलम्ब पल्लव पेर्मानडिके राज्यकालमें देसिगगणके अष्टोपवासि भटारको रेच्चूरुके महाजनों-द्वारा भूमि, उद्यान आदिके दानका उल्लेख है। लेखमें जगदेकमल्ल नोलम्ब ब्रह्माधिराजका सामन्तके रूपमें उल्लेख किया है। इस लेखके पीछेकी ओर प्राय ऐसे ही लेखमें अष्टोपवासिमुनिको वेंदूरमें दिये हुए दानका वर्णन है। इसमें वीरणन्दिसिद्धान्तिका भी उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९१८-१९ क्र० २०१ पृ० १६]

१४१

कोगलि (जि० बेल्लारी, मैसूर)

शक ९७७ = सन् १०५५

जैन मन्दिरके आगे एक शेडमें, कन्नड

यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लके राज्यकालका है। इसमें कहा है कि इस मन्दिरका निर्माण गंग राजा दुर्विनीतने किया था। लेखके समय जैन आचार्य इन्द्रकीर्तिने इस मन्दिरको कुछ दान दिया था। इन्द्रकीर्तिका वर्णन इस प्रकार किया है—

श्रीमदरुहच्चरणसरसिरुहभृंग, कोण्डकुन्दान्वयसमूहमुखमंडन, देशीयगण कुमुदवनशरच्चन्द्र, कोकलिपुरेन्द्र, त्रैलोक्यमल्लसदःसरसिकलहंस, कविजनाचार्य, पण्डितमुखाम्बुरुहचण्डमार्तण्ड, सर्वशास्त्रज्ञ, कविकुमुदराज, त्रैलोक्यमल्लेन्द्रकीर्तिहरिमूर्ति]

[इ० ए० ५५, १९२६ पृ० ७४, इ० म० बेल्लारी १९६]

१४२

डम्बल (मैसूर)

शक ९८१ = सन् १०५९, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लदेव (सोमेश्वर १) के समय चैत्र शु० १३, रविवार शक ९८१, विकारि संवत्सरके दिन लिखा गया था। इसमें धर्मवोलल्के नगरजिनालयके लिए वाचय्यसेट्टिके जमात वीरय्यसेट्टि द्वारा कुछ सुवर्णदान दिये जानेका उल्लेख है।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित]

[सा० इ० इ० ११ पृ० ८९]

१४३

मोरब (धारवाड, मैसूर)

शक ९८१ = सन् १०६०, संस्कृत-कन्नड

[यह लेख मार्गशिर शु० २ शक ९८१ विकारि संवत्सरका है। इसमें यापनीय संघके जयकीर्तिदेवके शिष्य नागचन्द्र सिद्धान्तदेवके समाधिमरणका उल्लेख है। उनके शिष्य कनकशक्ति सिद्धान्तदेवने यह निसिधि स्थापित की थी। नागचन्द्रको मन्त्रचूडामणि यह विरुद दिया है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई० २३९ पृ० ५६]

१४४

छब्बि (जि० धारवाड, मैसूर)

शक ९८२ = सन् १०६०, कन्नड

[इस लेखमें सब्बि नगरके चोरजिनालयके आचार्य कनकनन्दिके समाधिमरणका उल्लेख है। इनकी निसिधि भागियब्बे द्वारा स्थापित की गयी। इस लेखकी रचना वज्रने की तथा नाकिगने उसे उत्कीर्ण किया। तिथि वैशाख शु० ५, रविवार शक ९८२ शार्वरी संवत्सर ऐसी थी।]

[रि० सा० ए० १९४१-४२ ई० क्र० १५ पृ० २५६]

१४५

तोललु (मैसूर)

शक ९८३ = सन् १०६२, कन्नड

इस लेखकी पहली ८ पंक्तियाँ घिस गयी है।

९ कम्बुकन्धरे केलेयऽवरिसि चोरगग पोयिसलग

१० पेम्पनवधु जिनयार्क पो-

११ यिमलजनप माडि ॥ श्रीवर्धमानस्वामि-

१२ गल धर्मतीर्थं प्रवर्तिसुवलि गौतमस्वामिगलि भद्रबाहुस्वामि-
गलिवलि
१३ पुष्पदन्तभट्टारकरि'''मेघचन्द्र
१४ '''श्रीमूलसंघ-
१५ द वेलवेय अभयचन्द्रपण्डितगें विनयादित्यहोयिसलदेवर शक-
वर्ष ९८३ शुभकृत्सवत्सरद
१६ उत्तरायणसंक्रमणद दानार्थदसणण धारापूर्वकं कोट्ट अदकें तेरे ह
१७ णवय्दु हणवारमत्तदि देवर चलपिगे यिप्पत्तयरडु सलगेय
धारापूर्वकं माडि
१८ विट्ट दत्ति तोलललहल्लिय मुद्दगोडनु तिप्पगोडनु बुरतंकलु
चिरसुगाम्ब होर-
१९ गेरिय मद्दणभूमि विग्गुड्डेय भूमिय अभयचन्द्रपण्डितरिगे धारापू-
२० र्वकं माडि विट्टरु ई धर्मवन् अवलोव्वनु''''

[इस लेखमें होयसल राजा विनयादित्य-द्वारा शक ९८३ में उत्तरायणसंक्रमणके अवसर पर मूलसंघके पण्डित अभयचन्द्रको कुछ भूमिदान दिये जानेका उल्लेख है। अभयचन्द्रकी पूर्वपरम्परामें गौतमस्वामी, भद्रबाहुस्वामी, पुष्पदन्तभट्टारक तथा मेघचन्द्रका उल्लेख किया है। मुद्दगौड तथा तिप्पगौड द्वारा भी कुछ भूमिदान दी गयी थी। ये दोनों तोललहल्लिके निवासी थे।] [ए० रि० मै० १९२७ पृ० ४३]

१४६

पालियड (गुजरात)

संवत् १११२ = सन् १०६६, संस्कृत—नागरी

१ सिद्धं विक्रम संवत् १११२ चैत्र सुदि १५ अद्येह आकाशिका-
ग्रामावासे समस्त-

२ राजावलीविराजितमहाराजाधिराजश्रीभीमदेव ॥
   वायडाधिष्ठानप्रति—
३ वद्धवो (घो) डशोत्तरग्रामशतान्त पातिसमस्तराजपुरुषान् ब्रा(ह्म)
   णोत्त (रान्) ज-
४ नपदाश्च बोधयत्यस्तु व सविदित यथा अद्य सोमग्रहणपर्व्वणि
   चराचर-
५ गुरु सवज्ञमभ्यर्च्य वायडाधिष्ठानीयवसतिकायै अत्रैव वायडा-
   (धि)ष्ठाने
६ (च) रीक्षेत्रान्तरितया गुड्डुलापालिसत्कनयावणिकसाद्राकभूमि-
   स (बध्य)-
७ मानया क्लसिकाद्वयवापभुवा सहास्यैव साद्राकस्य सत्का
   हलद्वयस्य २
८ भू शासन (ने) नौदकपूर्वमस्माभि प्रदत्तास्याश्च भूमे पूर्वस्या
   दिशि कल्य
९ पालकेमरसिरक क्षेत्र दक्षिणस्यां च राजकीया चरी । पश्चिमा
१० या च वाणिय (ज) कमामलीय क्षेत्रमुत्तरस्यां च पालवाड-
   ग्राममा-
११ ग इति चतुराघाटोपलक्षिता भुवमतामवगम्य एतन्निवासि-
   जनपदै-
१२ र्यथा दीयमानभागभोगकरहिरण्यादि सर्वमाज्ञा(श्रव)णविधेयै—
१३ भूवास्यै वसतिकायै समुपनेतव्य सामान्य चैतत्पुण्यफल
   मत्वास्म-
१४ द्वशजैरन्यैरपि भाविभोक्तृभिरस्मत्प्रदत्तधर्मदायोयमनुमन्तव्य
१५ — १६ नित्य के शापात्मकश्लोक
१६ लिखितमिद कायस्थ-

१७ कांचनसुतवटेश्वरेण। दूतकोत्र महासांधिविग्रहिकश्रीभोगादित्य इ (ति)

१८ श्रीभीमदेवस्य ॥

[इस ताम्रपत्रमें चौलुक्य राजा भीमदेव (प्रथम) द्वारा वायड अधिष्ठानकी एक वसतिका (जिनमन्दिर) के लिए चैत्र शु० १५ संवत् ११११ के दिन कुछ भूमिके दानका उल्लेख है।]

[ए० इं० ३३ पृ० २३५]

१४७

मोटे बेन्नूर (धारवाड, मैसूर)

शक ९८८ = सन् १०६६, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा त्रैलोक्यमल्लके समय शक ९८८, पुष्य शु० ५, सोमवार, पराभव संवत्सरके दिनका है। इसमें महामण्डलेश्वर लक्ष्मरस-द्वारा मूलसंघ-चन्द्रिकावाटवंशके शान्तिनन्दि भट्टारकको भूमि दान दी जानेका उल्लेख है। यह दान बेन्नेवुरमें आय्चिमय्य नायक-द्वारा निर्मित वसदिके लिए था।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई० ११३ पृ० १२९]

१४८

चांदकवटे (विजापूर, मैसूर)

शक ९८९ = सन् १०६७, कन्नड

[इस लेखमें फाल्गुन व० ३ शक ९८९ प्लवंग संवत्सरके दिन सूरस्त गणके माघनन्दि भट्टारककी निसिधिका उल्लेख है। सिन्दिगे निवासी जाकिमब्बेने यह निसिधि स्थापित की थी।]

[रि० सा० इ० १९३६-३७ क्र० ई १४ पृ० १८२]

१४९

मत्तिकट्टि (जि० धारवाड, मैसूर)

शक ९९० = सन् १०६८, कन्नड

[यह लेख टूटा हुआ है। मत्तिकट्ट ग्रामकी कुछ जमीन पेगडे कालिमय्यने मल्लिसेन भट्टारकको दान दी इसका इसमें निर्देश है। (यह नाम *मतिसेन अथवा मल्लिसेन हो सकता है*)। *यह दान* कालिमय्य-द्वारा निर्मित एक जिनालयके लिए दिया था। कालिमय्यको (चालुक्य) सम्राट् त्रैलोक्य (मल्लदेव) का पादपद्मोपजीवी कहा है।]

[रि० सा० ए० १९४४-४५ एफ् ४२]

१५०-१५१

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

सन् १०६८, तमिल

[इस लेखमें चोल वंशके राजा राजकेसरिवर्मन् वीरराजेन्द्रदेवके राज्य वर्ष ५ में तिरुक्कामकोट्टपुरम्के निकट करन्दै ग्रामके जिन मन्दिरके लिए कुछ भूमि ग्रामसभाके तीन सदस्यों-द्वारा दान दिये जानेका उल्लेख है। यहींके दूसरे लेखमें इस मन्दिरमें सततदीप रखनेके लिए कुछ बकरियोंके दानका उल्लेख है। इस लेखमें मन्दिरके देवताका उल्लेख अरुगर् देवर् वीरराजेन्द्रपेरुम्बल्लि आल्वार् ऐसा किया है। यह दान काल्लियूर प्रदेशके परम्बूर ग्रामके तुगिलिकिलान् अरयन् उडैयान्-द्वारा दिया गया था।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १२९-१३०]

१५२

मत्तावार (मैसूर)

शक ९९१ = सन् १०६९, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाछ-

२ नं । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जि-
३ नशासनं ॥
४ स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्द महामण्डलेश्व-
५ रं द्वारावतीपुरवराधीश्वरं यादवकुलां-
६ बरद्युमणि सम्यक्त्वचूडामणि मल-
७ परोलुगण्डाद्यनेकनामावलीविराजितरप्प श्री-
८ मत्त्रै (लो) क्यमल्ल विनयादित्य होय्सल-
९ देवर् गंगवाडितोंभत्तरुसासिरमनाळ्दु
१० सुखदिं पृथ्वीराज्यं गेय्ये सकवर्ष ९९१ ने-
११ य पिंगलसंवत्सरद वैशाख शुद्धत्रयोदशि बृह-
१२ वारदल् पिंदु देवमं होय्सलदेवर् मत्तवुरके
१३ कालं तिर्विवंदु विजयंगेय्दंदु वसदिगे वंदि
१४ देवरं कंडि बेट्टदोळे कल्दरव बिल्लियके माडि-
१५ सिद्दरुरोलगे माडिसिवेंदडे माणिकसेट्टि
१६ यिन्तंदु विन्नपंगेय्दम् देवर् नीवूरोलोंदु
१७ वसदियं माडिसि भूमियं बिट्ट मा-
१८ नमहिमेगलं कोट्टडे वडवव्वर् निर्मद-
१९ ळदर्थक्के प्रमाणुंटे देवरर्थंगं मलेय-
२० रसुगल हडद मत्तमुं समानमदर
२१ माणिकसेट्टिय मातिं मेच्चि नक्कु करवोलितें-
२२ टु यमदियनूरोलगे माडिसि मामियं
२३ माणिकसेट्टि राजगावुण्ड मुद्दगावुण्डरिं वे-
२४ सायिदेन्नूरु (?) मत्तक्के बिडिसि ॥ तेरेयोल् प-
२५ डं नाडलियलि सिद्धायदलिल मत्तनूल नेल वि-
२६ नयायितनू पम्पेल्लतेरेगल मत्तवूर व-
२७ सदिगे बिट्टं ॥ अंतु बिट्टु वसदियवसदलिपक्कव-

२८ मनेगल माडिसि रिपिहरिलयेंदु पेम्परनिट्टु
२९ मनेदेरे माडुवदेरे ऊरट्टिगे तौदे सु-
३० रट्टु कत्रतें सेसे ओमगे मनकरे कूट क-
३१ कन्दि बीरवण कोडतिरण कत्तरिवण श्रडेकलु-
३२ रण हडवलेय हरियराय कुवर बि-
३३ ट्टि कमर विट्टि यित्तोलगागि इल्वु महिमे-
३४ गल्व विनयादित्यहोयसल्देवर् श्राचन्द्रार्क-
३५ तारवर सलगे ॥ इन्ती धर्मदोलायनातु तप्पिद्-
३६ व गगेयलु गगेय कोंदु तिन्द लिंगालि-
३७ प गेयद्निरयानवे कट्टेगल स्थान जागवल्ल
३८ मत्तावुर हलिय गावुण्ड तानित्तुदक्के पे--
३९ न्दे नित्तुददक्के देवगृह
४० वह नानवक—होल्हा-त्रागिपं ॥ ४००००

[यह लेख होयसल वशके राजा विनयादित्यके समय वैशाख शु० १३, वृहस्पतिवार, शक ९९१ पिंगल सवत्सरके दिन लिखा गया था। मत्तवूर ग्रामके लिए एक नहर बनवायी थी तब राजा विनयादित्य वहाँ गये थे। इस ग्रामकी वसदि ग्रामके बाहर एक पहाडीपर थी। उसे देखकर राजाने ग्रामीणोसे पूछा कि ग्राममें वसदि क्यो नही है? इसपर माणिकसेट्टिने कहा कि ग्राममें वसदि बनानेकी हमारी इच्छा है किन्तु हम गरीब है। तब राजाने ग्राममें वसदि बनवाकर नाडलि ग्रामके कुछ करोका उत्पन्न उसे दान दिया। माणिकसेट्टि, राजगावुण्ड तथा मुद्दगावुण्डने भी वसदिके लिए कुछ भूमि दान दी।]

ए० रि० मैं० १९३२ पृ० १७१]

१५३
सोरटूर (मैसूर)
शक ९९३ = सन् १०७१, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्लदेव (सोमेश्वर २) के समय माघ शु० १, रविवार, शक ९९३, विरोधकृत् संवत्सर, उत्तरायणसंक्रान्तिके अवसरपर लिखा गया था (यहाँ माघ स्पष्टतः ग़लत है जो पौष होना चाहिए ।) उक्त समय महाप्रधान सेनाधिपति कडितवेर्गडे दण्डनायक बलदेवय्य-द्वारा सरटवुर ग्राममे स्थित बलदेवजिनालयके लिए कुछ भूमि अर्पण की गई थी । बलदेवय्यके पिता गंग कुलके अग्गलदेव थे, माता गोज्जिकव्वे थीं तथा उसके ज्येष्ठ बन्धुका नाम बेल्देव था । इस दानकी व्यवस्थापिका हुलियव्वाज्जिके मूरस्तगण-चित्रकूटान्वयके सिरिणंदिपण्डितकी शिष्या थी । उक्त मन्दिरको सरटवुरके दो-सौ महाजनोंने भी कुछ भूमि, तेलघानी तथा घर अर्पण किये थे । सिरिणन्दिपण्डितकी गुरुपरम्परा इस प्रकार दी है -चंदणंदि - दावणंदि - सकलचन्द्र - कनकनंदि - सिरिणंदि ।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित] [सा० इ० इ० ११ पृ० १०७]

१५४
गावरवाड (जि० धारवाड, मैसूर)
शक ९९३-९४ = सन् १०७१-७२, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥

२ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रयं श्रीपृथ्वीवल्लभं महाराजाधिराजं परमेश्वर परमभट्टारकं स-

३ त्याश्रयकुलतिलकं चालुक्याभरणं श्रीमद्भुवनैकमल्लदेवर विजय-राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमाचं-

४ द्राकंतार सलुत्तमिरे । तत्पादपद्मोपजोवि समधिगतपचमहाशब्द महामडलेश्वरनुदारमहेश्वर चल्के बलुगड (शौर्यमार्तंड) पतिगे-

५ कद्राड सग्रामगरुड मनुजमान्धात कीर्तिविख्यात गोत्रमाणिक्य विवेकचाणाक्य परनारीसहोदर वीरवृकोदर को-

६ दडपार्थ सौजन्यतीर्थ मडलीककठीरव परचक्रभैरव रायदडगोपाल मल्लेय मडलीकमृगशार्दूल श्रीमद्भुव-

७ नैकमल्लदेवपादपकजभ्रमर श्रीमन्महामडलेश्वर लक्ष्मरसरु बेल्वोलमूनूरम पुलिगेरेमूनूरमन्तेरडस्नूर-

८ म दुष्टनिग्रहशिष्टप्रतिपालनेयिं प्रतिपालिसुत्तमिरे ॥वृ॥ अणुगाल् कार्यद शौर्यदाल् विजयदाल् चालुक्यराज्यक्क कार-

९ णमादाल् तुलिल्दाल्तनवके नेरेदाल् कट्टायदाल् मिक्क मन्नणेयाल् मान्तनदाल् नेगल्तेवडेदाल् विश्रान्तदाल् मेल्दाल् रणदाला-ल्दनेन-

१० चुवावेडेयोल विश्वासदोलु लक्ष्मण ॥ कलितनमिल्ल चागिगे वदान्यते मेय्गलिगिल्ल चागि मेय्गलियेनिपगे शौचगुणमि-

११ ल्ल कर कलि चागि शौचिग निले नुडिवोजेयिल्ल कलि चागि महाशुचिसत्यवादि मडलिकरोलीतनेन्दु पोगलगु बुधमड-

१२ लि लक्ष्मभूपन ॥ कुदुरेय मेले बिल् परसु तोरिगे सूल्गे पिंडि-वाल्मेत्तिद करवालवादिंडुव कर्कडे पारव चक्रमेन्दोडेन्तो-

१३ दरवरेन्तु पायिसुवरेन्तु तलम्बुवरेन्तु निल्परेन्तोदरवरेन्तु लक्ष्मण-नोलान्तु बदुंकुवरन्यभूभुजर् ॥ एने ने-

१४ गल्द लक्ष्मभूपति जनपतिभुवनैकमल्लदेवादेश तनगेमदिरे माडि-सिद [जिनशा-]सनवृद्धिय प्रवर्धनमागलु ॥ आ चैत्याल-

१५ यद् पूर्वावतारमेन्तेने ॥क॥ श्रीवसुधेशन वावं रेवकनिर्मडिय वल्लभं बूतुगनात्मावगतसकलशास्त्रनिलाविश्रुतकीर्ति

१६ गंगमंडलनाथ ॥ वृ ॥ रूडिगे रूडिवेत्तेसेद् वेल्वलदेशमनाल्द गंगपेर्माडिगलिन्द्रमणिणगेरे नालकेरेवट्टेनिसित्त नाड नाडा-

१७ डिगलुंबमेंबिनेगमा पुरदोलु जयदुत्तरंग पेर्माडियिनाय्तु बूतुग-नरेंद्रनिनलिल जि-

१८ नेंद्रमंदिर ॥ वृ ॥ संगतमागे माडि तलवृत्तियनल्लिगे मूडगेरि गुम्मुंगोलनादियागे नेगल्दिट्ट-

१९ गें गावरिवाडमेंब वाडंगल शासनं वेरसु सर्वनमस्यमिवेंदु बिट्टु कोट्टं गुणकीर्तिपंडितगें भक्ति-

२० यिनुत्तमदानशक्तियिं ॥क॥ उदितोदितमेने विमवास्पदमेने भुवन-यकवन्द्यमेने मंचलमागदे गंगा-

२१ न्वयमुल्लिनमिदु सर्वनमस्यवागि नडेयुत्तमिरलु ॥ वृ ॥ परम-श्रीजिनशासनक्के मोदलादा मूलसंघं

२२ निरन्तरमोप्पुत्तिरे नन्दिसंघवेम्मरिंदादन्वयं पेंपुवेत्तिरे सन्दर् वलगारमुख्यगणदोलु गंगान्वयक्कि-

२३ न्तिवर्गुरुगलु तामेने वर्धमानमुनिनाथर् धारिणीचक्रदोलु ॥ श्रीनाथर् जैनमार्गोत्तमरेनिसि तपःख्यातियं

२४ नाल्दिदर् सज्ज्ञानात्मर् वर्धमानप्रवरवर शिष्यर् महावादिगलु विद्यानन्दस्वामिगल् तन्मुनिपतिगनुजर् तार्किका-

२५ र्कामिधानाधीनर् माणिक्यनंदिव्रतिपतिगलवर शासनोदात्त-हस्तरु ॥ तदपत्यर् गुणकीर्तिपंडितर् थवर् तच्छास-

२६ नख्यातिकोविदरा सूरिगलात्मजर् त्रिमलचन्द्रर् तत्पादामोजषट्-
पदर् उद्यद्गुणचद्ररन्तवर शिष्यर नोडिशास्त्रा-

२७ र्थदोलु विदितर गण्डविमुक्तरिन्नमयरन्याचार्यरार्यौत्तमर ॥
वृ ॥ पोले चोल नेलेगेट्ट नन्न कुल-

२८ धर्माचारम बिट्टु बेलवल्देशक्ककडियिट्ट देजगृहसदोहगल
सुट्टु कथयळे पाप बेलेदेत्ते-

२९ नलके धुरदोलु त्रैलोक्यमल्लंगे पदुलेयं कोट्टमुत्र बिसुट्टु निज
वशोच्चिउत्तिय माडिद ॥क॥ श्रीपेर्मा-

३० नडि माडिसिदी परमजिनालयगल पोलेवदिदो पाण्डयचोलर्नव
महापातकनिवुल्नलिद्घोगतिगिलि

३१ द ॥ वृ ॥ बलिकी बेल्वलदेशम पडेद दण्डाधीशसामन्तमण्डलिकर्
धर्मद बट्टेगेट्टु नडेयुत्तिर्दल्लि तज्ज मन-

३२ गोले कालीयगुणेतर कृतयुगाचारान्वित लक्ष्ममडलिक निर्मल-
धर्मरत्तळेय नष्टोद्धारम माडि-

३३ द ॥ ई नेलदोलु नेगल्तेय पोगल्तेय बाल्तेय पुण्यतीर्थ-
सन्तानदोलिन्निबल्लेनिसि सट्टु दक्षिणगंगे सुगम-

३४ द्रानदि तन्नदीतटदाकोप्पुव कक्करगोण्डमेंबधिष्टानदोलुवंशाधिपति
चक्रधर नेलसिर्दं बीडिनोलु ॥

३५ वृ ॥ शककाल गुणलब्धिरन्ध्रगणनाविख्यातमागल् विरोधकृदब्द
बरे चैत्रमासे विपुवत्संक्रान्तियोलु पु-

३६ ण्यतारके पूर्णगिरमासे चक्रधरदत्ताद्रेशदिं देशपालकचूडामणि
धर्मवत्तळेयनत्युरमाडिदिं

३७ माडिद ॥ क ॥ त्रिभुवनचन्द्रमुनींद्ररनभिवंदिसि सक्तियिंदे कालगर्चि जगत्प्रभुवनि वेसदि लक्ष्मणविभु

३८ कोट्टं हस्तधारेयिं शासनम ॥ वृ ॥ एरडनूर वाडदोलगी जिन-गेहवे पूज्यमॆंदक्करसर को-

३९ के विल्दुवियमुंबलमुंबलिदायमादियागेरडस्वत्तु पोन्नस्वणं समकट्टेने माडि शासनं ।

४० बरॆयिसि कोट्टु धर्मगुणमं मेरॆदं नृपमेरु लक्ष्मण ॥ जिननाथा-वाममं वासवरितुनिभमं कष्ट-

४१ कालेयदुर्भावनेयिं चांडालचोलं सुडिसि किडिसे विच्छित्तियागि-र्दुदं नेट्टने नष्टोद्धारमं शाश्वतमतिशय-

४२ मायतॆविनं माडि तच्छासनमाचंद्रार्कतारं निले निलिसिदनॆ धन्यनो लक्ष्मभूपं ॥ अरसगॆ सेसेयेन्द-

४३ रसर काणिकेयेन्दु दायधर्मद तेरॆयेन्दस्वणदिदगलमेन्दरेवीसम-नक्कि कोंदवर् चांडालरु ॥

४४ स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्दमहासामन्त भुजबलोपार्जित-विजयलक्ष्मीकान्तं समस्तारिविजय-

४५ दक्षदक्षिणदोर्दण्डं कत्तलेकुलकमलमार्तण्डं मयूरावतीपुरवराधीश्वरं ज्वालिनीलब्धवरप्रसाद क-

४६ पूरवर्प जिनधर्मनिर्मलं नेरॆकटियंककार नामादिसमस्तप्रशस्ति-सहितं श्रीमन्महासामन्त बे-

४७ ल्वलाधिपति भुजबलकाटरमरु ॥क॥ जगमेल्लं देसॆगॆ कयमुगि-गेम कोट्टरियनोन्दु कागिणियुम-

४८ ना गगनदोलिर्पादित्यं बगेदुदनित्तपने बेल्वलादित्यन बोलु ॥ इन्तेनिसिद बेल्वलादित्य मकवर्ष ९९४ ने

४९ य परिधाविसंवत्सरद पुष्यसुद्ध पंचमि बृहस्पतिवारदंद अण्णि-
गेरेय गगपेर्माडिय बस-

५० दिय दानसालेगल्लिगालव गावरिवाडद तम्म सिवटद मत्तर-
ख्वत्तुमन् अण्डिगेरेयोलु क्रयविक्रय-

५१ दिं यतिलियाचार्यर त्रिभुवनचन्द्रपंडितर काल कर्चि धारापूर्वकं
माडि बिट्ट कोट्टर ॥

५२ स्वस्ति समस्तविनमदमरमकुटतटघटितशोणमाणिक्यमौक्तिक-
मयूखकुंकुमरंगरचनाभ्यर्चि-

५३ तश्रीमदर्हन्परमेश्वरप्रणीतपरमागमविशारदरमनवरतपरमागमो-
पदेशप्रसंगरमप्प श्रीमदु-

५४ दयचन्द्रसैद्धान्तदेवर दिव्यश्रीपादपद्माराधकर श्रीमत्बलात्कारग-
णाबुजसरोवरराजहंसरमप्प श्री-

५५ मत्सकलचन्द्रदेवर श्रीमद्राजधानीवडणमण्णिगेरेय महास्थान
श्रीमद्गगपेर्माडिय बस-

५६ दिगालव ग्रामादि वाडदलु याचार्यर चतुडगावुडमुख्यवागि
हेग्गडे सहित मूवत्तुमनुष्य-

५७ देवपुत्रर्गं कोट्ट वृत्तिय क्रम ॥ चडव्वेय मग हेग्गडे मल्लय्यनु
यादिनाथस्वामिगेयल्लियाचा

५८ रियर्गं बेसकेय्दुव वृत्ति मत्तर् (प)न्नेरडु केतगावुड याचार्यर्गं पाद-
पूजेय कोट्टु

५९ तम्म सेनगणद बसदिगे हुलिगोलद सीमेयिट्टु कुलपल्लदि
पडुवलु मत्तरेंडु यरडण गद्याण

६० नाल्करिंदधिक कोडवर् चाडाल्र ॥ पम्मय केति सेट्टियर साम्यडे
मत्तरेंडु मने वोंडु मोगवाडगे गद्याण ना-

६१ ळ्कु कणविय सेट्टिय बम्मि सेट्टिय साम्यक्के मत्तरॆंटु मने वॊंटु मोगवाडगे गद्याणं नाल्कु कत्ते-

६२ य दारि सेट्टिय साम्यक्के मत्तरॆंटु मने वॊंटु मोगवाडगे गद्याणं नाल्कु हव्वेय देवि सेट्टिय

६३ साम्यक्के मत्तरॆंटु मने वॊंटु मोगवाडगे गद्याणं नाल्कु गोलिय चवुडि सेट्टिय साम्यक्के मत्त-

६४ रॆंटु मने वॊंटु मोगवाडगे गद्याणं नाल्कु रुद्दुलिय संकि सेट्टिय साम्यक्के मत्तरॆंटु मने

६५ वॊंटु मोगवाडगे गद्याणं नाल्कु कंदल मल्लि सेट्टिय साम्यक्कं मत्तरॆंटु मने वॊंटु मोगवाडगे गद्याणं

६६ नाल्कु मरलव्वेय पुत्ररु चण्डि सेट्टिय साम्यक्कं मत्तरॆंटु मने वॊंटु मोगवाडगे गद्याणं नाल्कु माध-

६७ वसेट्टिय साम्यक्के मत्तरॆंटु मने वॊंटु मोगवाडगे गद्याणं नाल्कु

[इसी तरह ८३वीं पंक्ति तक वयूसर वोप्पि सेट्टि, नेमिसेट्टि, गोखर वम्मि सेट्टि, मयिलि सेट्टि, गोखर वोसि सेट्टि, चंदि सेट्टि, एम्मेयर चवुडि सेट्टि, होयूसर चवुडि सेट्टि, केल्लर गोरवि सेट्टि, तालवम्मि सेट्टि, कटवर देवि सेट्टि, मंचल वोसि सेट्टि, वेणिल मल्लि सेट्टि, वेण्णेय नालि सेट्टि, दोड्डर केति सेट्टि, मंजडिय येचि सेट्टि, गडि सेट्टि, मुरियर कलि सेट्टि, वयिसर वसवि सेट्टि, नूति सेट्टि, चिक्कि सेट्टि, इनके बारेमें निर्देश है।]

८३ नाल्कु चिक्कि सेट्टिय साम्यक्कं मत्तरॆंटु मने वॊंटु मोगवाडगे गद्याणं नाल्कु यिन्तो देवपुत्रिकरोलगे याव-

८४ नोर्वनु धर्म्मक्कं याचार्यंगं विरोधियागि राजगामित्वं माडिदन-प्पडे वृत्तिच्छेदसमयवाह्य ॥

८५ स्वस्ति समस्तप्रशस्तिसहितं श्रीमन्महाप्रधानं वसुधैकबान्धवं श्रीरेचिदेवदंडनाथ चदकेरे-

८६ य श्रीकलिदेवस्वामिजिनश्रीपादार्चनगे कर्पूरकुंकुमश्रीगंधसहित यष्टविधार्चनेगं
८७ कोट कयियरकेरेयिं मूडलु मत्तर् पन्नेरडुम याचार्यर दत्तपुत्रिकर मर्वाशाधप-
८८ रिहारवागि प्रतिपालिपर ॥ दक्षिण पेंयाबोलेयुमप्प ग्रामादि वाडक्क श्रीगंगपेर्मांडि-
८९ य बसदिय पुरद मयादेय घले मूवत्तु गेणु हरन बेंगोलल्दगे वृत्ति सल्लदु ॥ वर्धतां जिनशा-
९० सन ॥
९१ गंगासागरयमुनासगमदोलु बाणारसि गयेयेम्बी तीर्थंगलोलारम-कुलद्विजपुंगवगोकुलमनलिदरिन्तिदनलि-
९२ दरु ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुंधरां । षष्टिर्वर्षसहस्राणि विष्टाया जायते कृमि ॥
९३ याचार्यर येक्कटिगनागि बेसकेय्दुव वृत्ति कुरिवर केरे
९४ न्दु ॥ याचायर चवुड गवुडन हेसरिट्टुदक्के मूगवाड रन
९५ लद सोमेश्वलु काट वृत्ति मत्तर बीदु यदु होलगेर ॥

[इस बृहत् शिलालेखके चार भाग हैं। पहले भागमें (पंक्ति १–४३) अण्णिगेरे नगरके गंगपेर्मांडि जिनमन्दिरका वर्णन है। यह मन्दिर रेवकनिर्मडिके पति बूतुगके स्मरणार्थ बेल्वल प्रदेशके शासक गंगपेर्मांडिने बनवाया था तथा उसने उस मूडगेरी, गुम्मुगोल, इट्टगे और गावरिवाड ये चार गाँव दान दिये थे। यह दान मूलसंघ-देसिगण-बलगार गणके गुणकीर्ति पण्डितको दिया गया था। गुणकीर्तिकी गुरुपरम्परा इस प्रकार थी—गंग

१ रेवकनिर्मडि राष्ट्रकूट सम्राट् कृष्ण (तृतीय) की बहन थी जो गंग राजा बूतुगको ब्याही गयी थी। गंग पेर्मांडि इनके पुत्र मारसिंह (तृतीय) (सन् ९६०–७४) अथवा पौत्र राजमल्ल (चतुर्थ) होंगे।

वंशके गुरु वर्धमान – विद्यानन्द स्वामी – उनके गुरुबन्धु तार्किकार्क माणिक्यनन्दि – गुणकीर्ति – विमलचंद्र – गुणचन्द्र – गण्डविमुक्त – उनके गुरुबन्धु अभयनन्दि। कालान्तरसे चोल राजाने बेल्वल प्रदेशपर आक्रमण किया[1] तब इस मन्दिरको नष्ट-भ्रष्ट किया किन्तु शीघ्र ही इस चोल राजाको अपने पापका प्रायश्चित्त करना पड़ा क्योंकि चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्ल सोमेश्वर (प्रथम) द्वारा वह युद्धमे मारा गया।[2] तदनन्तर बेल्वल प्रदेशके कई शासक हुए जिनने इस मन्दिरकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्ल सोमेश्वर (द्वितीय) के समय बेल्वल तथा पुलिगेरे प्रदेशका शासन महामण्डलेश्वर लक्ष्मरसको सौंपा गया। उसने इस मन्दिरका जीर्णोद्धार किया तथा उसके लिए मुनि त्रिभुवनचन्द्रको समुचित दान दिया।[3] इस दानकी अनुज्ञा देते समय सम्राट् सोमेश्वर तुंगभद्रा नदीके तीरपर कक्करगोंडके सेनाशिविरमें थे तथा शक ९९३ वर्ष चल रहा था।

इस शिलालेखके दूसरे भागमें बेल्वलके अगले शासक काटरसका उल्लेख है जो मयूरावती नगरका स्वामी था। तथा ज्वालिनी देवीका उपासक था। इसने उपर्युक्त मन्दिरको शक ९९४ मे कुछ दान दिया। यह दान भी त्रिभुवनचन्द्रको दिया था।

तीसरे भागमें इस मन्दिरके व्यवस्थापक उदयचन्द्रके शिष्य सकलचन्द्रका उल्लेख है। इनने मन्दिरको जमीन जोतनेके लिए मल्लय्य आदि तीस श्रेष्ठियोंको सौंपी थीं।

चौथे भागमे महाप्रधान रेचिदेव-द्वारा वट्टकेरे नगरके जिन तथा कलिदेवकी पूजाके लिए कुछ जमीन दान दिये जानेका उल्लेख है।

---

१. यह राजा चोल राजाधिराज होगा। (सन् १०१८–५२)

२. यह युद्ध सन् १०५२ के आरम्भमें हुआ था।

३. पूर्वोक्त गुरुपरम्परासे त्रिभुवनचन्द्रका सम्बन्ध अगले लेखमें स्पष्ट किया है।

यह शिलालेख अन्तिम रूपसे सन् ११५० के करीब लिखा गया होगा।]

[ए० इ० १५ पृ० ३३७]

१५५
अण्णिगेरि (मैसूर)
शक ९९३–९४ = सन् १०७१–७२, कन्नड

[यह लेख अक्षरश गावरवाड लेखके पहले दो भागो-जैसा ही है— सिर्फ चार श्लोक इसमें अधिक है। यथा— (१) मगलाचरणमें—जगत्‌त्रितयनाथाय नमो जन्मप्रमाथिने। नयप्रमाणवाग्रश्मिध्वस्तध्वान्ताय शान्तये ॥ (२) महामण्डलेश्वर लक्ष्मरसके वर्णनमें—मले यतो (ट्ट) लतुलिद मलेयोल् मार्मलेव मलेपर मग्गिसिद मलेयेलु कोर्पिर्दुमनलेद जलनिधियोलें प्रतापियो लक्ष्म ॥ (३–४) गुणकीर्ति पण्डितकी शिष्य परम्पराके वर्णनमे—कृतकृत्यरभयनन्दिगल तनूजर् सकलचन्द्रसिद्धान्तिकरप्रतिमर् सर्वागमलान्वितगण्डविमुक्तदेवरा मुनिशिष्यर् ॥ एनिसिद गण्डविमुक्तर तनूभवर चरणकरणपदविद्यापावन मन्त्रवाददो त्रिभुवनचन्द्रमुनीन्द्ररल्ते बुधजनवन्द्यर् ॥ इससे अभयनन्दि – सकलचन्द्र – गण्डविमुक्त – त्रिभुवनचन्द्र इस परम्परा का पता चलता है। इस लेखमें गावरवाड लेखके अन्तिम दो भाग नही है। अत प्रतीत होता है कि यह शक ९९४ में ही खुदवाया गया होगा।]

[ए० इ० १५ पृ० ३४७]

१५६
हैदराबाद म्युजियम (आन्ध्र)
स० ११ (२) ८ = सन् १०७२, सस्कृत-नागरी

[इस मूर्तिलेखमें वीतरागकी उपासिका रावदेवी-द्वारा देवागना तथा क्षोणीपतिकी मूर्तियोकी स्थापना किये जानेका उल्लेख है। समय सवत्

११ (२) ८ है। इसका तीसरा अंक कुछ अस्पष्ट है।]

[रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० १५३]

१५७

लक्ष्मेश्वर (मैसूर)

शक ९९६ – सन् १०७४, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्लके समय चैत्र शु० ८, रविवार आनन्द संवत्सर, शक ९९६के दिन लिखा गया था। मणल कुलके महासामन्त जयकेसियरसने पुरिगेरेके पेर्माडिबसदिके दर्शन किये तथा मूलसंघ-बलात्कारगणके गण्डविमुक्त भट्टारकके शिष्य त्रिभुवनचन्द्र पण्डितके निवेदनपर उसे पुरके रूपमें परिवर्तित किया ऐसा इसमे उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० २९ पृ० १६३]

१५८

हनगुन्द (मैसूर)

शक ९९६ = सन् १०७४, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्लदेव सोमेश्वर (२) के समय पौष शु० ५, रविवार, शक ९९६, आनन्द संवत्सर, उत्तरायणसंक्रान्तिके अवसरपर लिखा गया था। इसमें सूरस्तगण-चित्रकूटान्वयके अरुहणंदि-भट्टारकके शिष्य आर्यपण्डितको पोन्नुगुन्दकी अरसर बसदिके लिए कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान श्रीकरण देवणय्य नायक, पेर्गडे नाकिमय्य, पेर्गडे रेवणय्य, करण आयचप्पय्य, तथा पसायित काटिमय्यने सर्व प्रधानोंद्वारा की गयी जिन पूजाके अवसरपर दिया था। उस समय बेल्वल तथा पुलिगेरे प्रदेशोंपर महामण्डलेश्वर संग्रामगरुड लक्ष्मरस का शासन चल रहा था।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित] [सा० इ० इ० ११ पृ० १११]

१५९
सोमापुर (धारवाड, मैसूर)
शक ९९६ = सन् १०७४, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा भुवनैकमल्लके समय शक ९९(६), आनन्द संवत्सर, पुष्य शु० ५, बुधवारका है। इसमें किसी सेट्टिद्वारा एक जैन बसदिको दिये गये दानका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३३–३४ क्र० ई० ७७ पृ० १२६]

१६०
लक्ष्मेश्वर (मिरज, मैसूर)
शक ९९९-१००० = सन् १०७७ ७८, कन्नड

[इस निषिधिलेखमें सूरस्थ गणके श्रीनन्दि पण्डितदेव तथा उनके बन्धु भास्करनन्दि पण्डितदेवके समाधिमरणका उल्लेख है। पुरिकर नगर (लक्ष्मेश्वर) के आनेसेज्जेबसदिमें इन्होंने सल्लेखना ली थी। मृत्युतिथियाँ क्रमशः आषाढ शु० १२, बुधवार, पिंगल संवत्सर, शक ९९९ तथा चैत्र अमावास्या, रविवार, काल्युक्त संवत्सर, शक १००० इस प्रकार दी हैं।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई ६ पृ० १६१]

१६१
अक्कलकोट (सोलापुर, महाराष्ट्र)
चालुक्यविक्रमवर्ष ४ = सन् १०७८, कन्नड

[इस लेखमें एक जैन मठके लिए कुछ उद्यान, भूमि आदिके दानका उल्लेख है। तिथि पुष्य व० २, रविवार, उत्तरायण संक्रान्ति, सिद्धार्थि संवत्सर, चालुक्य विक्रम वर्ष ४ ऐसी दी है। (वस्तुतः उस वर्षका नाम कालयुक्त संवत्सर था।) चालुक्य सम्राट् विक्रमादित्य ६ के समयका यह लेख है।]　　[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ९६ पृ० ३५]

१६२

कोनकोण्डल (अनन्तपुर, आन्ध्र)

चालुक्यविक्रमवर्ष ६ = सन् १०८०, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा त्रिभुवनमल्लके राज्यवर्ष ६, पुष्य व० (६) गुरुवार, दुर्मतिसंवत्सरका है। इस समय महामण्डलेश्वर जोयिमय्यरसकी पत्नी नाविकव्वेने कोण्डकुन्देयतीर्थमें चट्टजिनालयका निर्माण किया तथा उसे कुछ भूमि दान दी थी।]

[रि० सा० ए० १९१५–१६ क्र० ५६५ पृ० ५५]

१६३

अलनावर (धारवाड, मैसूर)

शक १००३ = सन् १०८१, कन्नड

[यह लेख शक १००३ का है। कदम्ब राजा गोवलदेवके समय अलनावरके जैन वसदिके लिए नरसिंगय्य सेट्टि द्वारा कुछ दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२५–२६ क्र० ४७० पृ० ७८]

१६४

वनवासि (मैसूर)

सन् १०८१, कन्नड

[यह लेख कादम्बचक्रवर्ति वीरमके राज्यवर्ष १२, दुर्मति संवत्सरमें कार्तिक कृ० ५, सोमवारके दिन लिखा गया था। इसमें तिप्पिसेट्टि सातय्य की पत्नी भोगवेके समाधिमरणका उल्लेख है। इनके गुरु देसिगण – पुस्तक-गच्छ – कुण्डकुन्दान्वयके सकलचंद्रभट्टारक थे।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० १४३ पृ० १७२]

१६५

लक्ष्मेश्वर (मैसूर)

चालुक्यविक्रमवर्ष ६ = सन् १०८१, कन्नड

१ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छन(।)जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥१॥

२ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परमभट्टारक सत्याश्रयकुलतिलक चालुक्या-

३ भरण श्रीमत्त्रिभुवनमल्लदेव ॥वृत्त॥ धरय वाराशिपर्यन्त-मनवयर्दि दुर्विनीतावनीपालर बेर किंतुं नीरोल् गल्गल्लनेद्दो-

४ डाडि मुन्निन्नु चक्रेश्वरार् निष्कटक माडिदरेने महि निष्कटक माडि चक्रेश्वरत्वं मनन्त पालिसिदननि नल विक्रमादित्यन्देव ॥२॥ अन्तु श्रीम-

५ त्रिभुवनमल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमा-चन्द्रतार सलुत्तमिरे ॥ तदनुज स्वस्ति समस्तभुवनसंस्तूयमान श्रो-

६ कविख्यात पल्लवान्वय श्रीमहीवल्लभ युवराज राजपरमेश्वर वीरमहेश्वर विक्रमाभरण जयलक्ष्मीरमण शरणागतरक्षामणि चालु-

७ क्यचूडामणि कदनत्रिनेत्र क्षत्रियपवित्र मत्तगजराज सहज-मनोज रिपुरायसूरेकारनण्णनङ्कार श्रीमत्त्रैलोक्यमल्ल

८ वीरनोलंब पल्लवपेर्मानडि जयसिंहदेव ॥वृत्त॥ परचक्र-कालचक्र नल्नहुषनृगाद्यादिभूपाळकालोचरित चालुक्य चूडामणि सहजमनोज नतारा-

९ तिभूर्मीश्वरसंवातोत्तमांगाभरणमणिगणज्योतिरुत्तंसभास्वच्चरणं सामान्यनें भूपरोलपगतविट्टिकदंवं नोलंव ॥ ३ वचन ॥ एनिमिद पोगल्तेगं नेगल्तेगं नेलेये-

१० निसि ॥क॥ अरसुगुणंगल मेय्वेत्तिरे पगे मिगदिरे जनानुरागं पिरिदागिरे कीर्तिलतिके निमिरुत्तिरे वीरनोलंवन-वनतारिकदंवं ॥४ व॥ एरडु[मू]नूरुमं वनवासेपनिर्छासिरमु-

११ मं मान्तलिगेमासिरमुमं कंद्दूर् सासिरमुमं सुखसंकथाविनोददिं प्रतिपालिसुत्तमिरे । तत्पादपद्मोपजीवि । समधिगतपंचमहाशब्द महासामन्ताधिपतिं महाप्र-

१२ चण्डदण्डनायकं रिपुमस्तकन्यस्तसायकं साहित्यविद्यांगनाभुजंग सरस्वतीमुखकमलभृंगनाराधितहरचरणस्मरणपरिणतान्तःकरणं । सरस्वतीकर्णाभरणं

१३ श्रीमन्महाप्रधानं मनेवेर्गडे दण्डनायकनेरेयमय्यं ॥कंद॥ सकल-कलाग्रह्यं ब्रह्मकुलार्कं वत्सगोत्ररत्नाकरशीतकरं किरियनें भुवन-प्रकरदोल-

१४ रिमृत्युभूपनेरेगचमूपं ॥ ५ वृ ॥ एलेयोलु सादृश्यमप्पंदेरेगविभुगे त्रिणर्पिगे गुणर्पिंगे तिणर्पिंगले पारावारमिद्राचलमवसुरणि रामनिं कृष्णनिं मंचलम—

१५ क्षिटगंभीरमुमगुरुत्वुयागिलदुवारय्ये वेरोंदले वेरोन्दवि वेरोन्द-निमिपनगमेत्तानुसुंटप्पो ढक्कुं ॥ ६ कंद ॥ परिकिपोडे हस्ति-मशकान्तरमेनिपुदु तन्न

१६ गुणद नेगल्दर गुणदन्तरमेने गुणेपु को मत्सर पंच बुधोक्त एरेग-विभुगे सदुक्तं ॥ ७ सदमलकीर्तिवल्लरि दिशान्तरमं तेरपिल्ल-दन्तु पर्विदुदु पराक्रमं

१७ ममिट्टुद्दु विण्पेपमाणवाद्यमाट्टु चरित शिखापदमनेय्दिट्टु- दाविंन मृनु मत्ते पुट्टिदनेंनिपन्नुदायूतेंरिगनुग्रनिय पोगल्ल् ममर्यरार् ॥ ८

१८ एनिमिल्दो ख्याति विरगानिगे सलुतिरे मन्त बसन्त तदीया- वनिगॆवुदानि पेतुंत्तिरे पुळिगेरेमूनूम्म स्वामिसरतिन पॅप ताल्दि कैकोंपद्नुमत्रि—

१९ मुत्तमॊदार्याद्रि सत्यदि कर्णनुमं मिक्कु सर्वपेंत्तिरलेरगचमूप वलॊडराज्यरभ्रूप ॥ ९ कद ॥ वड्नुननपरिमित गुणास्पदनेंमेद भुवनवुभुक सुरप—

२० तिर्मपदनतुल्भुनजल परमुदतॊम्रकरप्रसूनवाण दोणं ॥१०॥ कलितनदोल् कुरुकुलसकुलमथनन तम्मनतुपमानाकृतियोल् बल्देवन तम्म सुजवल—

२१ दोन् यमभुतन तम्मनेरगन तम्म ॥ ११ ॥ एरंगनडिमॊदलो- ल्तिनृपरेंरगिदोडद्नरियेनेरगद्दिरलॆबोदागेरगिसुगु गुम्रादि गर्लेर- गल् पतिकार्ये—

२२ मरभुरीण दोण ॥ १२ वृत्त ॥ कॆणमुदारदोल् कोरटे सज्जन- वृत्तियोलेग्गु शौचदोल् काणले बारदॆंदोडे पेरर् समनप्परे मार्त्य- लोकदोल् दोणनो

२३ ल्गनाकुसुमबाणनोलिप्टविशिष्टमकुल्ग्राणनोल् अन्नसमव- समानसमस्तकलाप्रवीणनोल् ॥ १३ परमातस्वामीदेवर पशुपति जितविद्विट्कद्व नोल्व

२४ पोरदाल्द तद शुमततुगुणगर्णादि मिक्क निक्क विमास्वचरिता- ल्कारं कल्लविक्के जननि तदीयाग्रज दण्डनार्योक्कारन रुढिवे- त्तिल्दिरकपनेने दोणं जमक्किकॆदा-

२५ णं ॥१४ (इं) कलिकालदोल् विषमकालदोल् उव्वटेयाय्तु धर्म-रत्नाकरनेर्व्विर्न पलवु कालदिर्नोक्षिसलाद्दुदिंतु कोल्पोकुमे धर्म-मेन्दोसेट्टु तन्नन कौतुकमागे मे-

२६ दिर्नीलोकमशेषमोंद् कोरलोल् पोगलल् पडिचंदमप्पिनं ॥१५ कमनीयक्रमविक्रमाव्दततिपट्कं दुर्मतिप्राव्द पुष्यमशुवलं भृगुपष्टियोप्पलवरोल् कूडलु

२७ व्यतीपातमेंब महायोगमुमुत्तरायणमहासंक्रान्तियुं मानवो-त्तमनन्दुज्वलकीर्ति दोणनुरुधर्मत्राणनुत्साहदि ॥१६ कंद॥ परम-जिनसमयरत्ना-

२८ करहिमकरमूलसघसंमवशोभाकरसेनगणनमःस्थल- सरसिजवान्ध-वर सितयशःश्रीधवर ॥१७ वरमुनिपर विनतक्षितिपर निरवद्यर नरेंद्रसेन-

२९ त्रैविद्यर पादप्रक्षालनपुरःसर दिव्यपुरदोली पुरिकरदोल् ॥१८ चांद्रं कातंत्रं जैनेंद्रं शव्दानुशासनं पाणिनि मय्तेंद्रं नरेंद्रसेनमु-

३० नींद्रंगेकाक्षरं पेरंगिवु मोग्गे ॥१९ अवरग्रशिष्यं॥ जिनगेनेंवेनो शाकटायनमुनीशं ताने शव्दानुशासनदोल् पाणिनि पाणिनीय-दोलु चांद्रं चांद्रदोलु तज्जिनेंद्र-

३१ ने जैनेंद्रदोला कुमारने गडं कातंत्रदोल् पोल्परन्तेने पोलर् नयसेनपण्डितरोलन्यर् वाधिवीतोर्वियोल् ॥२० सरसतियं मनोमुददे तालृदिदनेन्ननवन्नेगेय्दनानिरेनवलिकें चिः-

३२ सवतियोल् पुदुवाल्वुदु कष्टमेन्दु निष्ठुरवचनंगलं नुडिदु दिक्करियं परिदेरि कीर्ति तां पुरदिसि दूरिपल् वरतपोनिधियं नयसेनसूरियं ॥२१ अवरग्रशिष्यर् ॥ नतभू-

३३ पेंद्रकिरीटताडितपदांभोजद्वयं नूतनप्रतिमाभारवि नारहार-

इरहासाकाशनीहारविश्रुतकीर्तिप्रमदाननाब्जमुकुर इा बाप्पु सामान्यमे श्रुतवाराशि नेरॆद्र-

३४ मेनमुनिप त्रैविद्यचक्रेश्वर ॥२१ जितविद्विष्टप्रतापान्वितदिनधिक-शौर्यंत्वदाटापदिंदुर्जितमाश्वजैनधर्मापितदृढमतियिं विप्रवशा-वराइर्पतियॆंबॊंदुद्धतेजस्तवदिनतु-

३५ लवलॆंथयॆंदिं त्यागदॊंदुन्नतियिंद सत्यदिंद दिनकरनतिशोभाकर पुण्यपुञ्ज ॥२३ दिनकरनादयदॊल् तममॆनितु तूल्दॊडुवन्ते मिथ्यात्वतम दिनकरनुदयिमे निजकुल-

३६ वनदिं तूल्दॊडि किडुवुदॆं त्रिस्मयम ॥२४ आतनं तनयर् जनविख्यातर् जिनपदपयोजभृङ्गर् विनयान्वितरने नेगल्दर-विलक्ष्मातलदॊल् राजिमय्यनु दूडमनु ॥२५ वृत्त॥

३७ जिनपादाम्भोजभृङ्ग सुजनजनमनोरञ्जन विश्वधात्रीविनुत दिग्द-न्तिदन्ताश्रितविशदयशोभासि शिष्टेष्टकल्पावनिज सत्पात्रदाना-धिकनेनुते मनोरागदिं कूर्तु विद्वज्जनम-

३८ ल्ल बण्णिकुं राजननमलमत्तेजन निच्चनिच्च ॥ २६ मनुमुनि-मार्गनेम जिनपूजेयोलर्तिगनॆंदु दानियॆंदनुपमतेजनॆंदु शुचियॆंदु दयापरनॆंदु निश्चलु मनमो(मे)-

३९ दक्करिं बिडदे बण्णिसुगु जगमॆय्दे कूडे राजननिनतेजन पसुगे गोजननाश्रितकल्पभूजन ॥ २७ तत्प्रियानुजन शौर्यदलव पेल्वडे ॥ कन्दपिन्द

४० धरणीश्वर बॆमसे चौरासीशन बन्दिय पिडिद साहसदिन्दम् मुगेयनिन्दॊर्वीशन कोपदिं पिडिदुददा सेरॆयिट्ट सोमननत्याश्चर्यदिं बन्दिय पिडि

४१ द तानेने शौर्यदोळ्दल्वदॆं सामान्यम दूडन ॥ २८ निजपतिय

तथा नयसेनके शिष्य नरेन्द्रसेन (द्वितीय) को पौष कृष्ण ६, शुक्रवार, उत्तरायणसक्रान्तिके अवसरपर कुछ दान दिया। इसके बाद लेखमें दिनकर, उसके पुत्र राजिमय्य तथा दूडम, दूडमकी पत्नी एचिकब्बे तथा पुत्री हम्मिकब्बे, हम्मिकब्बेका पति अरसय्य तथा पुत्र वैद्य कनप एव कनपके पुत्र इन्दप, ईश्वर, राजि, कलिदेव, आदिनाथ, शान्ति, एव पार्श्वका वर्णन है। सभवत इन लोगोकी प्रार्थनापर दोणने उक्त दान दिया था।]

[ए० इ० १६ पृ० ५८]

१६६

अरसीबीडि (बिजापुर, मैसूर)

चालुक्यविक्रम वर्ष १० = सन् १०८५, कन्नड

[इस लेखकी तिथि आषाढ शु० १, बुधवार, क्रोधन सवत्सर, चालुक्य वर्ष १० ऐसी है। इस समय मुकवेगंडे मतर बर्मणने विक्रमपुर (वर्तमान अरसीबीडि) स्थित गोणद बेडगि जिनालयके ऋषि-अर्जिकाओं-को आहारदान देनेके लिए कुछ करोका उत्पन्न दान दिया था। सिन्द वशके मिन्दरसके पुत्र वर्मदेवरसके अधीन प्रान्तीय शासकके रूपमें मुकवेगंडे नियुक्त था।]

[मूल लेख कन्नडमें मुद्रित]

[सा० इ० इ० ११ पृ० २३९]

१६७

मरुत्तुवक्कुडि (तजोर, मद्रास)

तमिल, सन् १०८६

[यह लेख ऐरावतेश्वर मन्दिरके आगे मण्डपकी दक्षिणी दीवालपर है। त्रिभुवनचक्रवर्ति कुलोत्तुग चोलदेव, जिसने मदुरा जीतकर पाण्ड्य

राजाका शिरच्छेद किया था—के १६वें वर्षमें यह लेख लिखा गया था। इसमे जननाथपुरम्के दो जैन मन्दिर चेदिकुलमाणिक्क पेरुम्वल्लि तथा गंगरुलसुंदर पेरुम्वल्लिका उल्लेख है।]

[इ० म० तंजोर १००३]

१६८

दोणि (धारवाड, मैसूर)

चालुक्यविक्रम वर्ष २० = सन् १०९६, कन्नड

[यह लेख फाल्गुन शु० १३ गुरुवार, चालुक्यविक्रम वर्ष २० के दिन लिखा गया था। सम्राट् त्रिभुवनमल्ल (विक्रमादित्य षष्ठ) के राज्यका यह लेख है। इस समय यापनीय संघ-वृक्षमूल गणके मुनिचन्द्र त्रैविद्य भट्टारकके शिष्य चारुकीर्ति पण्डितको सोविसेट्टि द्वारा एक उद्यान दान दिया गया था।]

[मूल लेख कन्नडमें मुद्रित]

[सा० इ० इ० ११ पृ० १६९]

१६९–१७०

तुम्बदेवनहल्लि (मैसूर)

चालुक्यविक्रम वर्ष २१ = सन् १०९६, कन्नड

१ श्रीमदेरेयंगदेवर असवव्वर(सि)माडिसिद वसदि मंगल महा श्री

२ स्वस्ति समस्तसुरासुरमस्तकमणिमकुटरश्मिरंजितचरणप्रस्तुत-जिनेन्द्रशासन-

३ मस्तु चिरं सकलभव्यचन्द्रजनानां ॥(१) भद्रमस्तु जिनशासनाय संभद्रतां प्रति-

४ विधानहेतवे अन्यवादिमदहस्तिमस्तकस्फाटनाय वटने पटी-यसे ॥(२)

५ जयवर्मं मुददिन्द इस्तु नियत पट्टलिगेय राज्यलीलेयिनाल्-
दुत्तनिर्दि मन-

६ गोलिमि विद्विष्टजक्केयदे भीतियनित्तायमनप्पुवेथ दु चलम
कैकोण्डु लोकप्रमि-

७ द्वियुत माडदनाजगन् निले कदम्बाम्नायविरयाविय ॥(३)
श्रीमत्कदम्बखगलकामा-

८ वनिनाथरोलगे रणकिक्षितिप भीमपराक्रमनेनिसिदनी मह्वियोल्
अरातिनृपजयोद-

९ यदिं ॥(४) आतन मगनमलगुणापेतनतिप्रबलजलद्घनपवन-
नेनिष्पाततय-

१० शोविलासविनूततेगंडेयागि नेगल्द वलि हडुवनृप ॥(५) तत्त-
नेयनतुलवल्नुदूवितरिपु-

११ क्षितिपवुधरवज्र धीरोदातनेने नेगल्दनकुटिलचित्त पोत्चायिनूत-
पूर वृत ॥(६)

१२ अतगे पुट्टि बल्लदरातिमहीभुजरनिरिदु गेल्दमिनोल्पुर्वालल्मे
पोगले तोरिदनात-

१३ नमितकीर्ति भोसल्कण्ण चिण्ण ॥(७) एने नेगल्द चिण्णनृपविग
अनवद्यल्तागि सुगियब्नरसिग

१४ मुर्विनदोमगे पुट्टे पुट्टिद तनेयनतिप्रकटविशदयशनेरेयग अक्कर
नेगल्द नृ-

१५ पस्तनमाल्वरनेवेट्टे मीतियि बन्दु पोगले तन्ननवर पट्टियोडेयन
पेरगिक्कि कादुनिन्दाल्नरन बगेयद्-

१६ आन्तरिसेनेयनोडिसि गेल्दमिनेसकर्दि मिन्तुजग मिगिल्दप्र-
बलावलेपन भुजादण्डनी नन्निमार्तण्डदेव ॥(८)

१७ मलेदिदिरनान्त चोल्किवल्मेत्तदोढान्तुमदिरदेरयगन दोजल-
दल्वनेवोगल्वुदो जक्कलदेवननेयदे

१८ कादुकलिपिद चलमं ॥(९) अन्तु नेगल्देरेगनृपतिगनन्तसुखास्य-
द्येनिप्प येचांबिकेगं कन्तुवेनिप्प
१९ चिण्णं कान्तं पुट्टिदनुदारतेजोनिलय ॥(१०) पुट्टलोडं निन्नये
पेसरिट्टपरी जगद मनुजरेन्द्रोडे पेसरों-
२० दिट्टलमाद्र्डे कोल्गु पट्टलिगेय चिण्णनेम्ब मयरसदिंदं ॥(११)
आतंगे वुट्टिदं विख्यातितशितकीर्-
२१ तिं नेगल्द गण्डतरण्डं भूतलके कल्पवृक्षसमोपेतनेनिप्प दानि
येरेगमहीश ॥ (१२)
२१ स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्द महामण्डलेश्वरं बनवासिपुर-
वराधीश्वरं कादम्ब-
२३ चक्रेश्वरं नुदारमहेश्वरं नुभयवलगण्डं नन्निमार्तंडं तनगिल्लदीवं
कर्गसहादे-
२४ वं मानिनीमनोहर हरचरणशेखरं हरिपादसरसीरुहोत्तंसं
सरस्वतीक-
२५ र्णावतंसं विकलकुलनृपतिहृदयसंतापकरं विवेकविद्याधरं भृगुमता-
२६ चार्यं मन्दरधैर्यं कादम्बकुलकमलविकाशनादित्यं विजातिराजता-
रागणतरुणादि-
२७ त्यं विक्रमप्रक्रमकिशोरकण्ठीरवं कादम्बकण्ठीरवं मागधिकमा-
निनीमदहरिपपु-
२८ लक लाटवधूटीमाललीलातिलकं विरुद्वत्रिनेत्रं हयशालिहोत्रं तूगितु-
२९ त्तिडुव विरुद्वरपेण्डिरगण्डं गण्डतरण्डं अरिविरुद्वरवायोले सुरि-
गेयं किरिपु
३० व दोड्डुकंबडिव गीतप्रगीतं गेयविनोदं निजकुलोत्तुंग श्रीमदेरे-
यंगदे-
३१ व स्थिरं जीयात् ॥ कन्द ॥ गंगेगडलगल नोरेगं तिंगल वेल्-
पिंगमोद्वलडक्किल्वेल्पिं

२२ सगलिसि तीविदत्तेरेयगन जसमखिलभुवनातरदोलु। नटनिट-
 लेक्षणा-
२३ गिन नृगणगण उज्वलकीर्तिपाण्डुरभू कुरलु जडेयागे जगक्क
२४ दवनादरिविन्दत्रिनेत्रनेमगी कोण्टकुन्दान्वयो-
२५ रपञे विख्याते देसिगे गणे रविचन्द्राख्यमै यमनियम
२६ स्वाध्यायपराणेयरप्प माचवेगन्तिय तावरेयकेरय कलग-
२७ ण आडणमण्ण धारापूर्वकं कोट्टर् चालुक्यविक्रमकालद २१ने
 धातुसंवत्सरद कार्तिक न-
२८ न्दीश्वरदष्टमियन्दु मगल्महाश्री स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत
 वसुन्धरा षष्ठिर्वष-
२९ सहस्राणि विष्टायां जायते क्रिमि ॥

[यह लेख स्थानीय जिनमन्दिरके निर्माणके समयका है। यह बसदि एरेयगदेवकी रानी असवब्बरसि द्वारा बनवायी गयी थी। लेखमें एरेयगका वंशवर्णन इस प्रकार दिया है—कदम्ब कुलमें रणकि राजा—तत्पुत्र हदुव—तत्पुत्र बूत—तत्पुत्र चिण्ण—तत्पुत्र एरेयग—तत्पुत्र चिण्ण २—तत्पुत्र एरेयग २। इस मन्दिरके लिए कोण्डकुन्दान्वय देसिग गणके रविचन्द्र सै(द्धान्तदेव)के उपदेशसे माचवेगन्ति द्वारा कुछ भूमि दान दी गयी थी। लेखकी तिथि कार्तिककी नन्दीश्वर-अष्टमी (शुक्ल ८), चालुक्य विक्रम वर्ष २१, धातु संवत्सर इस प्रकार दी है।

इसी मन्दिरकी एक प्रतिमाके पादपीठपर ११वीं सदीकी लिपिमें निम्न वाक्य खुदा है—

बस(दिगे) वासवुरदे विद् ग २ भत्त ५०

अर्थात्—इस बसदिके लिए वासवुर ग्रामके उत्पन्नसे २ गद्याण (मुद्राएँ) और ५० भत्त (चावलके परिमाण) दान दिये गये हैं।]

[ए० रि० मैं० १९३९ पृ० १४५-१५२]

१७१

हुनगुन्द (विजापूर, मैसूर)

कन्नड, ११वीं सदी उत्तरार्ध

[इस लेखमें चालुक्य सम्राट् त्रिभुवनमल्लदेव (विक्रमादित्य षष्ठ) का उल्लेख है। तिथि शक ९....दी है। मूलसंघ—देशीय गण—पुस्तक गच्छ—कुन्दकुन्दान्वयके (इन्द्र)णंदिके शिष्य बाहुबलि आचार्य द्वारा एक जिन-मन्दिर बनवानेका तथा उस मन्दिरके लिए कुछ भूमिदान प्राप्त करनेका इसमें उल्लेख है।]

[मूल लेख कन्नडमें मुद्रित]

[सा० इ० इ० ११ पृ० १४१]

१७२

तोललु (मैसूर)

कन्नड, ११वीं सदी उत्तरार्ध

१ स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर....त्रिभुवनमल्ल तलका-

२ कमाडि बिट्टन्दु ३ नदसुविरि

४-७ (ये पंक्तियाँ घिस गयी हैं)

८ स्वस्तिश्रीमतु तोलल बसदिगेनाडु.... ९........

१० हिरिय मुद्द गनुण्ड....गनुण्ड बिलग

११ बुण्ड बूलुबनड....बुण्ड बूरय्वर् ओक्कल

१२ ....उत्तराण संक्रान्तियन्दु नबिल्ल-

१३ रं नेमिचन्द्रपण्डितर्गे धारापूर्वकं माडि कोट्टरु आ-

१४ नबिल्लशलगे आवनागि-बट्टुकुबवनु....हण

१५ बेन्दु हिडिसिद्दव....हन्नोन्दु

१६ तलेयं नरकदल्लिलिवरु गंगेयतडियल्लि कविले-

१७ य ब्राह्मणर नोय्सिद् फलमन् एय्दुवरु
१८ स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुन्धरा प-
१९ ष्टिर्वषसहस्राणि विष्ठाया जायते क्रिमि ॥

[इस लेखमे तोललके जिनमन्दिरके लिए नेमिचन्द्र पण्डितको नविलूर ग्राम दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान हिरियमुद्दगौण्ड, बिलिगौण्ड तथा अन्य ५२ निवासियो द्वारा दिया गया था। लेखमे प्रारम्भमें त्रिभुवनमल्ल (विक्रमादित्य षष्ठ)के किसी माण्डलिकका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९२७ पृ० ४४]

१७३

तिरुनिडकोण्डै (मद्रास)

तमिल, ११वीं सदी उत्तरार्ध

[*इस लेखके प्रारम्भमें कुलोत्तुग चोल (प्रथम)की ऐतिहासिक* प्रशस्ति है। राजेन्द्रचोलचेदिराजन् द्वारा देवमन्दिरमें दीपके लिए कुछ धान अर्पण किये जानेका इसमें उल्लेख है। उडैयार् मल्लिषेणका उल्लेख है जो स्पष्टत कोई जैन आचार्य थे। लेख चन्द्रनाथ मन्दिरके मुख्य द्वारके पास खुदा है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० २०१ पृ० ६५]

१७४

ऊन (मध्यप्रदेश)

११वीं सदी, सस्कृत-नागरी

[इस स्थानमें कई जैन मन्दिरोके ध्वस्त अवशेष है। इनमें एक मन्दिरके एक छोटे-से लेखमें मालवराज उदयादित्यका उल्लेख है। अत यह मन्दिर ११वी सदीका बना है यह स्पष्ट होता है।]

[रि० आ० स० १९१८-१९ पृ० १७]

१७५

सागरकट्टे (मैसूर)

११वीं सदी, कन्नड

१ श्रीमद्द्राविलसं	२ घद आरुंगला-
३ न्वयद नन्दिगण	४ द शान्तिमु-
५ निगल शिष्यसन्त-	६ ति श्रीवादिरा-
७ जदेवर शिष्यरु	८ श्रीवर्धमानदे-
९ वरु होय्सल-	१० कारालियदलु
११ अग्रगण्यरु स-	१२ न्यसनदि मुडि(पि)
१३ दरवर सध-	१४ मंरु कमलदे-
१५ वरु निसिधियं	१६ निरिसिदर्

[इस लेखमे द्राविल संघ—अरुंगल अन्वय—नन्दिगणके शान्तिमुनिकी परम्पराके वादिराजदेवके शिष्य वर्धमानदेवके समाधिमरणका उल्लेख किया है। वर्धमानदेवके गुरुबन्धु कमलदेवने उनकी यह निसिधि स्थापित की थी। वर्धमानदेवको होयसल राज्यमे प्रमुख कार्यकर्ताका स्थान प्राप्त था। लेखकी लिपि ११वीं सदी की है।]

[ए० रि० मै० १९२९ पृ० १०८]

१७६

वेणगि (जि० बेलगांव, मैसूर)

११वीं सदी, कन्नड

[इस लेखकी लिपि ११वीं सदीकी है। लेखके समय (रट्ट वंशके) कार्तवीर्य (द्वितीय)का शासन कूण्डि ३००० प्रदेश पर था। इसे जिनेन्द्रपादसरोजभृंग तथा सेननसिंग कहा है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ ई० क्र० ८४ पृ० २४७]

१७७-१७८

चिक्कहनसोगे (मैसूर)

कन्नड, ११वीं सदी

[यह लेख आदितीर्थंकरमूर्तिके पादपीठपर है। इसमें हनसोगेके तीर्थ-वसदिकी स्थापना रामचन्द्र-द्वारा की जानेका तथा कालान्तरमें शक, नल, विक्रमादित्य, गंग एवं चंगाल्व राजाओं-द्वारा उसकी सहायताका उल्लेख है। प्रस्तुत लेखके समय नागचन्द्रदेवके शिष्य समयाभरण भानुकीर्ति पण्डितदेवने इस बसदिका जीर्णोद्धार किया था। इसी पादपीठके दूसरे लेखमें जयकीर्ति भट्टारकके शिष्य बाहुबलिदेव द्वारा वसदिके निर्माणका उल्लेख है। इन लेखोंका समय ११वीं सदी प्रतीत होता है। ये आचार्य मूलसंघ देसिगण-पुस्तकगच्छके प्रमुख थे।]

[ए० रि० मै० १९१३ पृ० ५०]

१७९

चिकमगलूर (मैसूर)

कन्नड, ११वीं सदी

१ स्वस्ति श्रीमतु बूचब्बे-
२ गन्तियर सिष्य नेचटिम-
३ ताय निसिधिगेय नि-
४ लि मज बरेद ॥

[यह निषिधि लेख बूचब्बेके समाधिमरणका स्मारक है जो उसके शिष्य नेचनिमतायि-द्वारा स्थापित किया गया था। इसकी लिपि ११वीं सदीकी प्रतीत होती है।]

[ए० रि० मै० १९३२ पृ० १६२]

१८०

कोप्पल (रायचूर, मैसूर)

कन्नड, ११वीं सदी

[यह लेख ११वी सदीकी लिपिमें है। इसमे कोण्डकुन्द अन्वयके मलधारिदेव तथा अन्य आचार्योका वर्णन है। एक गृहस्थ जैनका भी वर्णन है।]

[रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १९८ पृ० ३७]

१८१

मदचिलगम् (वेल्लारी, मैसूर)

कन्नड, ११वीं सदी

[यह लेख ११वी सदीकी लिपिमे है। किसी जैन मन्दिरके लिए दानशाला, उद्यान आदिकी व्यवस्थाका इसमे उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२४-२५ क्र० ३९२ पृ० ५७]

१८२

वेलूर (हासन, मैसूर)

११वीं सदी, कन्नड

१ ····युतं जिनेंद्रप्रगुणि-
२ ····द दर्प····मले महे-
३ ········
४ नेयद्दिवं····नं····
५ पूर्वांकमन् एल्वं····माणद····य
६ महीतलकति मुदद्दि····
७ विलोक वुध वोध····माग्य····

८ न्त दिविजविभवम सन्द मामावि वर्म्मं ॥ पतिहितवृत्तियो-
९ ल्विन् भग्रनिमन् एनल् दिविज पद्म महीपतियोडने
१० कूडि पोक्क चतुर मामावि वर्म्मन आ नेगल्द भूमि-
११ य मुन्नाल्दग सले काश्यप माघ्व देनॅताल्दनोडने सग्गम-
१२ न् आल्द 'य्यन्दु वर्म्मं

[इस लेखमें मामावि वर्म्म नामक व्यक्तिके देहत्यागका वर्णन है। अपने स्वामीकी मृत्युपर खेद व्यक्त करनेके लिए उसने सम्भवत देहत्याग किया था। यह प्रथा होयसल राजाओंके समय रूढ थी। लेखकी लिपि ११वी सदीकी प्रतीत होती है।]

[ए० रि० मै० १९४३ पृ० ५९]

१८३

हट्टण (मैसूर)

१२वीं सदी-प्रारम्भ, कन्नड

[इस लेखमें होयसल राजा बल्लाल १के समय मरियाने दण्डनायक द्वारा एक जिनमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। आचार्य शुभचन्द्रका भी इसमें उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९१८ पृ० ४५]

१८४

चिक्कमगलूर (मैसूर)

शक १०२२ = सन् ११०१, कन्नड

१ सव्वत सकवर्षं १०२२ नेय
२ विक्रमसंवत्सरद फाल्गुन शु (४)
३ सोमवारदन्दु द–त्रिन

४ सनंगरट्टु दिवक्के सुन्दरव(र)सट्
५ मिं मालेयव्वगन्तियप्परो···चि(नें)
६ यमं माडि निसिद्गिय माडि
७ अवर गुड्ड जगमणचारि व-
८ रेद

[यह लेख फाल्गुन शु० ४, सोमवार, शक १०२२ विक्रमसंवत्सरमें लिखा गया था। एक व्यक्तिके (जिसका नाम लुप्त हुआ है) समाधि-मरणके बाद उसके सहाध्यायी मालेयव्वेगन्ति-द्वारा इस निषिधिकी स्थापना का इसमें उल्लेख है। उसके शिष्य जगमणचारिने यह लेख उत्कीर्ण किया था।]

[ए० रि० मैं० १९३२ पृ० १९१]

१८५

टोंक (राजस्थान)

संवत् ११५८ = सन् ११०२, संस्कृत-नागरी

[इस मूर्तिलेखमें आलाक नामक व्यक्तिका उल्लेख है। तिथि वै (शाख) शु० ७, संवत् ११५८ ऐसी दी है।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४७२ पृ० ६९]

१८६

होसूर (जि० बेलगांव, मैसूर)

शक १०३० = सन् ११०८, कन्नड

[इस लेखकी तिथि सोमवार, पौष शु० ५, शक १०३०, सर्वधारि संवत्सर, उत्तरायण संक्रान्ति ऐसी है। (रट्ट वंशके) लक्ष्मीदेव-द्वारा एक बसदिके लिए राजधानी वेणुपुरसे कुछ जमीन दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है। यह बसदि लक्ष्मीदेवने ही बनवायी थी।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ ई० क्र० १५ पृ० २४१]

१८७

मुडिगोण्डम् (मैसूर)

शक १०३ (१)=सन् ११०९, कन्नड

[इस लेखमें मुडिगोण्डचोलपुरके नगरजिनालयको हदिभाड्का एक गाँव दान दिये जानेका उल्लेख है। यहाँकी मुख्य मूर्ति चन्द्रप्रभस्वामीकी थी। तिथि शक १०३ (१)]

[रि० सा० ए० १९१० क्र० १० पृ० ५४]

१८८

अवणनहल्लि (मैसूर)

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, कन्नड

१ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छ-
२ न जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन स्वस्ति
३ श्रीमन्महामण्डलेश्वर त्रिभुवनमल्ल तल-
४ काडुगोण्ड भुजबळवीरगग विष्णुवर्धन होय्स-
५ ळदेवर पिरियरसि चन्तलदेवियरु त्रिभुवनतिल-
६ 　तीर्थद वीरकोंगाल्वजिनालय-
७ द देवर अगभोगक्क रिपियराहारदानक्क म-
८ म्म बप्प पृथ्वीकोंगाल्व देवर वग बल्लियलि बि-
९ ट्ट मन्दगेरेय अतियोलगे कावनहल्लिय तम्म
१० तम्म दुद्दमल्लदेवनु तावु इद्दु श्रीमूलसघ
११ देसिगगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वयद श्रीमेघ
१२ चन्द्रत्रैविद्यदेवर शिष्यर प्रभाचन्द्रसिद्धा (न्तदेव-)
१३ र काल कर्चि धारापूर्वक माडि स(र्वबाधा-)
१४ परिहार माडि बिट्ट दत्ति अ(गल महा-

१५ श्री ॥ इदन् आवन् ओर्व प्रतिपालिसिद
१६ (क) विलेय कोडुं कोलगमं
१७ गंगेय····

[इस लेखमें होयसल राजा विष्णुवर्धनकी रानी चन्तलदेवी-द्वारा तथा उसके बन्धु दुद्दमल्ल-द्वारा वीरकोंगाल्व जिनालयके लिए कावनहल्लि ग्राम दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान मूलसंघ-देसिगगणके मेघचन्द्र-त्रैविद्यदेवके शिष्य प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवको दिया गया था।]

[ए० रि० मै० १९२७ पृ० १०३]

१८९

अंकनाथपुर (मैसूर)

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, कन्नड

[इस लेखमें एक जिनमन्दिरके जीर्णोद्धारके लिए राजा दुद्दमल्ल-द्वारा हेण्णेगडंग नगरसे अय्यवल्लि ग्रामके दानका उल्लेख है। यह दान प्रभाचन्द्रदेवको दिया गया था। लिपि ११वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३३]

१९०

कण्णूर (मैसूर)

चालुक्यवर्ष ३७ = सन् ११११२, कन्नड

[चालुक्यसम्राट् विक्रमादित्य (षष्ठ) के समय चालुक्यविक्रम वर्ष ३७ (सन् ११११२) में कालिदासदण्डनाथ-द्वारा कन्नबुरीके पार्श्वनाथ-बसदिके लिए कुछ भूमि दान दिये जानेका इस लेखमें निर्देश है। मूलसंघ-देशिगण- पुस्तकगच्छके आचार्य वर्धमानमुनिके प्रशिष्य तथा बालचन्द्रव्रतीके शिष्य अर्हणन्दिबेट्टदेवको यह दान दिया गया था।]

[रि० आ० स० १९३०-३४ पृ० २४२]

१९१

जनकलि (बिजापूर, मैसूर)

चालुक्यविक्रमवर्ष ४१ = सन् १११६, कन्नड

[इस लेखमें चालुक्यविक्रमवर्ष ४१ में उत्तरायण संक्रातिके समय एक जैन मन्दिरके जीर्णोद्धारके लिए कुछ दानका उल्लेख है ।]

[रि० मा० ए० १९२६–२७ क्र० ई० १९६ पृ० १७]

१९२

कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

शक १०३७ = सन् १११५, संस्कृत-कन्नड

पहला पत्र

१ स्वस्ति । जयत्याविष्कृत विष्णोर्वाराह क्षोभितार्णव (।) दक्षि-णोन्नतदंष्ट्राग्रविश्रा-

२ न्तभुवन वपु ॥ (१) जयति जगति रूढो राजलक्ष्मीनिवास॰ प्रविजितरिपु–

३ वर्गस्वीकृतोत्कृष्टदुर्ग ( ) सकलसुकृतवासो वीरलक्ष्मीविलासो जनितसुजन॰

४ राग श्रीशिलाहारवंश (॥२) श्रीमत्शिलाहारनरेन्द्रवंशे श्री-कीर्तिकान्ता कमनी॰

५ यरूपा (।) विख्यातशौर्या बहवो नृपेन्द्रा सपालयामासुरिमां धरि-

६ त्रीं (॥३) तद्वंशे नृपतिर्बभूव जतिगो गोमन्थदुर्गाधिपो माम श्रीवनितापतिस्सु-

७ चरितो गगस्य पेर्मानडेस्तस्याभूत्तनय प्रतापनिलय ( ) श्री-नायिमा-

८ को नृपः कर्णाटीकुचकुंकुमांकिततनुर्विद्याधराधीश्वरः (॥४) तस्यात्म-
९ जस्सुपरिवर्धितराज्यलक्ष्मीः प्रादुर्बभूव समुपार्जितपुण्यपुञ्जः (।)
१० चन्द्राह्वयो जगति विश्रुतकीर्तिकान्तत्यागार्णवो बुधनुतो नयनामि-
११ रामः (॥५) तस्यापि पुत्रो जतिगो नरेन्द्रो जातः प्रवीरो गज-यूथनाथः (।) तस्या-
१२ त्मजौ गोंकलगूवलाख्यौ जातावुभौ वैरिकुलाद्रिवज्रौ (॥६) तद्-गोंकलस्य तनुजो रिपुदन्ति-
१३ सिंहः श्रीमारसिंहनृपतिर्मरुवक्कसर्पः (।) प्रादुर्बभूव समरांगणसूत्र-
१४ धारो विख्यातकीर्तिरिह पण्डितपारिजातः (॥७) तस्याग्रसूनुर्जगदेकवीरो वी-
१५ रांगनाबाहुलतावगूढः कीर्तिप्रियो गूवलदेवनामा बभूव भूपाल-
१६ वरो नरेन्द्रः (॥७) तस्यानुजस्सकलमंगलजन्मभूमिरासीन्नृपालतिलको भुवि भोज-
१७ देवः (।) प्रोत्तुंगवीरवनिताश्रयबाहुदंडश्चंडारि-मंडलशिरोगिरिवज्रदंडः (॥९)

दूसरा पत्र : पहला भाग

१८ श्रीमत्कदंबांबरतिग्मरश्मेश्शिरस्सरोजं खलु शान्तरस्य (।) पूजां प्रचक्रे स च चक्रवर्तिश्रीविक्र-
१९ मादित्यनृपेंद्रपादे (॥१०) किं वर्ण्यते जगति वीरतरः प्रसिद्धः कोपात्तु कोंगजनृपोपि-
२० पपात यस्य (।) सूर्यान्वयांबररविस्स च विज्जणोपि चक्रे गृहं सुरपतेर्भुवि य-
२१ स्य कोपात् (॥११) यत्प्रतापप्रदीपेस्मिन् कोक्कलश्शलभायितः (।) पलायिता न गण्यन्ते सोयं

२२ भोजनृपालक (॥१२) वेणुग्रामदवानलो विजयते वैरीभकण्ठीरवो गोविंदप्रलयान्त-

२३ क शिखरिणां वज्र कुरजस्य च (।) भोज स्वीकृतकोंकणो भुजबलात् तद्भिल्लमोद्बन्ध-

२४ कृत् सोय कर्णदिशापटो रिपुकुभृद्दोर्दण्डकण्डूहर (॥१२) तस्यानुजातो गुणराशि-

२५ रासीत् बल्लालदेवो जितवैरिभूप (।) जीमूतवाहान्वयरत्नदीपो गभीर-

२६ मूतिर्भुवि शौर्यशाली (॥१४) अजनि तदनुजातस्तिग्मरश्मि-प्रतापो दिविजयतिवि-

२७ भूतिस्सर्वलक्ष्मीनिवास (।) कृतरिपुमदभंगो राजविद्याप्रसंगो भुवनवि-

२८ नुतमूर्तिर्गण्डरादित्यदेव (॥१५) चक्रे चालुक्यचक्रेशो विक्रमा-दित्यवल्लभ (।) निश्श-

२९ कमल्ल इत्याख्या गण्डरादित्यभूपते (॥१६) धन्यास्ते मान-वास्सर्वे धन्याश्च मृगजात-

३० य (।) स देशस्सफलो यत्र गण्डरादित्यभूपति (॥१७) यत्-खड्गाद्भुतर्तीमघा-

३१ तचक्रिनस्तत्खण्डिदशाधिपो दण्डमल्लनृपा जगाम सदनं ससेव्य-मान सुरै-

३२ स्त्यक्त्वा राष्ट्रमतीवरम्यमतुला लक्ष्मीं भुजोपार्जिता सोय गण्डर-देवम-

३३ ण्डलपतिस्सम्प्रोमते भूतले (॥१८) रत्नानि यत्नेन ददाति तस्मै रत्नाक-

३४ रो मगमयाज्जडात्मा (।) आपूर्य सम्यक् मतत वहित्र सूक्ष्माणि

३५ वासांसि हयाश्च तस्मै (॥१९) किमिह बहुभिरुक्तैरल्पगर्भैर्व-
चोभिर्भुवन-

दूसरा पत्र : दूसरा भाग

३६ विदितवीरः क्रूरसंग्रामघोरः (।) अपरनृपतिकोशं देशमत्यन्तशोभं
यदि स कुपितचित्तः

३७ कारयत्यात्मकीयं (॥२०) समधिगतपंचमहाशब्द महामण्डलेश्वरः
तगरपुरवरा-

३८ धीश्वरः। श्रीशिलाहारनरेंद्रः। जीमूतवाहनान्वयप्रसूतः सुव-
र्णगरुड-

३९ ध्वजः। मरुवक्कशसर्पः। अय्यनसिंहः (।) रिपुमण्डलिकभैरवः
(।) विद्विष्टगजकण्ठी-

४० रवः। गणिकामनोजः। हयवत्सराजः। शौचगांगेयः। सत्यराधेयः।

४१ इडुवरादित्यः रूपनारायणः। कलियुगविक्रमादित्यः। शनिवार-

४२ सिद्धिः। गिरिदुर्गलंघनः श्रीमन्महालक्ष्मीलब्धवरप्रसादादि-
समस्तराजाव-

४३ लीविराजितः श्रीमन्महामण्डलेश्वरः श्रीगण्डरादित्यदेवः श्रीम-
द्वलय-

४४ वाडगिरिरे सुखसंकथाविनोदेन राज्यं कुर्वाणः। सप्तत्रिंशदु-
त्तरसह-

४५ स्रेषु शकवर्षेषु १०३७ अतीतेषु मन्मथसंवत्सरे कार्तिकमासे
शुक्लपक्षे।

४६ अष्टम्यां बुधवारे मिरिंजदेशे। मिरिंजगम्पणमध्ये। अंकुलगे बोप्पे-

४७ यवाड इति ग्रामद्वयं आदगेनामग्रामस्य प्रविष्टं कृत्वा तद्ग्रा-

४८ मारुवण त्यक्त्वा तत्रत्यनागावुण्डा यदि नायकत्वं कुर्वन्ति तेषां
शरी-

४९ रजीवितार्थं सुवर्णं न ददाति यदि नायकस्त नेच्छन्ति स्वेच्छया तिष्ठन्ति त-
५० दा कोदेवण नास्ति । एवमनेन क्रमेण ० श्रीमत्पवित्रेत्र निगुव-
तीसरा पत्र
५१ वशे जात पुमान् होरिमनामधेय (।) कीर्तिप्रिय पुण्यधन प्रसिद्ध श्री-
५२ जैनसधाबुजतिग्मरश्मि (॥२१) तस्यात्मजोभूदिह वीरणाख्यस्त-स्यानुजोभू-
५३ दरिकेसरीति (।) तद्वीरणस्यापि तनूभवोय बभूव कुदातिरिति पसिद्ध (॥२२)
५४ तस्यानुजस्सुपरिपालितवन्धुवर्गं श्रानायिमो जिनमताबुधिच-
५५ द्र एप (।) त्यागान्वितस्सुचरितस्सुजनो बभूव प्रख्यातकीर्ति-रिह धर्मप-
५६ र प्रसिद्ध (॥२३) तस्यापि वीर सुजनोपकारी नोलबनामा तनयो बभूव (।)
५७ श्रीगण्डरादित्यपदाब्जभृगो धर्मान्वितो वैरिमतगसिंह (॥२४) तस्मै
५८ समस्तगुणालंकृताय निगुवकुलकमलमार्तण्डाय । सुवर्णम-
५९ त्स्योरगेंद्रध्वजविराजिताय सम्यक्त्वरत्नाकराय पद्मावतीदेवी-लब्धवर-
६० प्रसादाय नोलबसामन्ताय सर्वनमस्य सर्वबाधापरिहार पुत्र-
६१ पौत्रक्रमाचन्द्रार्कं दत्तवान् ०

[यह ताम्रपत्र चालुक्य सम्राट् विक्रमादित्य (षष्ठ)के माण्डलिक शिलाहार राजा गण्डरादित्यदेव-द्वारा कार्तिक शुक्ल ८, बुधवार, शक १०३७ के दिन दिया गया था। निगुव वंशके सामन्त नोलबको मिरिज

प्रदेशके अंकुलगे तथा वोप्पेयवाड इन दो ग्रामोंका अधिकार अर्पण करनेका उल्लेख इसमे किया है। नोलंवकी वंशावली इस प्रकार थी—होरिम-वीरण-कुंदाति – उसका वन्धु नायिम-नोलंव। नोलंवको सम्यक्त्वरत्नाकर तथा पद्मावतीलब्धवरप्रसाद ये विशेषण दिये है।]

[ए० इं० २७ पृ० १७६]

१९३

होले नरसिपुर (मैसूर)

१२वीं सदी : पूर्वार्ध (सन् १११५), कन्नड़

[इस लेखमे महामण्डलेश्वर वीर कोगाल्वदेव-द्वारा मूलसंघ-देसिगण-के मेघचन्द्र त्रैविद्यके शिष्य प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवके उपदेशसे सत्यवाक्य जिनालयके निर्माणका तथा उसे हेण्णेगडलु ग्राम दान देनेका उल्लेख है। (समय लगभग सन् १११५।)]

[ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३३]

१९४

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

सन् १११५, तमिल

[यह लेख चोल सम्राट् कुलोत्तुंग राजकेसरिवर्मन्के ४५वें वर्षमें लिखा गया था। तिरुप्परम्बूरकी ग्रामसभा-द्वारा तिरुक्काट्टाम्पल्लि आल्वार जिनमन्दिरके लिए कुछ भूमि विक्रय किये जानेका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३५]

१९५

तिरुप्परुत्तिकुण्डम् (चिंगलपेट, मद्रास)

राज्यवर्ष ४६ = सन् १११६, तमिल

[यह लेख राजकेसरिवर्मन् कुलोत्तुंग चोलके ४६वें राज्यवर्षका है।

इसमें तिरुप्परत्तिकुण्ड्रुके ऋषिसमुदायके लिए एक नहर बनवानेके लिए कैतडुप्पूरकी ग्रामसभा-द्वारा कुछ भूमि करमुक्त रूपमें बेची जानेका उल्लेख है। यह लेख त्रिकूटवसदिके छतमे लगा है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ३८२ पृ० ३७]

१९६

पुदुप्पट्टु (चिंगलपेट, मद्रास)

११वीं-१२वीं सदी, तमिल

[स्थानीय जैन मन्दिरके मण्डपके एक स्तम्भपर यह लेख है। अस्पष्ट और अधूरा है। इसमें चोल राजा परकेसरिवर्मनका उल्लेख हुआ है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० ७९ पृ० १२]

१९७

अनमकोंडा स्तम्भ लेख (वरंगलके समीप, आन्ध्र)

चालुक्य विक्रम वर्ष ४२ = सन् १११७, कन्नड़

पूर्वकी ओर

१ श्रीमज्जिनेंद्रपदपद्मम- २ शेषभव्यानव्यात् त्रिलोकनृ-
३ पतींद्रमुनींद्रवंद्य नि- ४ शेषदोषपरिखंडनचंडका-
५ ण्ड रत्नत्रयप्रभवमुद्भव- ६ गुणैकतान॥(१)स्वस्ति समस्त-
७ भुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ- ८ महाराजाधिराजपरमेश्वर-
९ परमभट्टारक सत्याश्रयकु- १० लतिलक चालुक्याभरण श्रीम-
११ त्रिभुवनमल्लदेवर विजयरा- १२ ज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्ध-
१३ मानमाचन्द्रार्कतार सलुत्त- १४ मिरे। तत्पादपद्मोपजीवि समधि
१५ गतपंचमहाशब्द महाम(ड) १६ लेश्वरनन्मकुंडापुरवरेश्वर
१७ परममाहेश्वर पतिहितच- १८ रित विन(य)त्रिभूषण श्रीम-

१९ न्महामण्डलेश्वरं काकतीवेत(भू) २० पालकुलक्रमागतं तदीयरा-
२१ ज्यभरनिरूपितमहामात्यप- २२ दवीविराजमान मानोन्नत प्र-
२३ भुमंत्रोत्साहशक्तित्रयसं- २४ पन्नना(गि)॥घनशौर्याटोप(दिं)
२५ मान्तनद् महियेयिं चारुचारि- २६ त्रदिं(दो)ल्पिन तेल्पिं सत्क-
२७ लदिनो)द्विदाश्चर्य(सौं)- लाकौश-

उत्तरकी ओर

२८ दर्यदिं(थि)निकायप्रार्थितार्थ-
२९ (प्र)द वितरण(वि)ख्यात- ३० (वि)नुतं श्रीकाकतीवेतरसन
नादं धरित्री सचि-
३१ वं वैज दंडाधिनाथ ॥(२)अगणितशौर्य-
३२ दिं नेगल्द काकतिवेतनरेंद्रनं जगं
३३ पोगले चलुक्यचक्रिचरणं सले का-
३४ णिसि तत्प्रसाददिं यगेगोले मल्चिमा-
३५ यिरमनालिसि(दु)दूधयशो- ३६ धिनाथनं पोगलदरारो मंड(लि)
३७ ककाकतिवेतन मंत्रि वैज्जन ॥- ३८ तंगं विकसितकंजातानने या-
(३)आ-
३९ कमव्वेगं जनियिसिदं ख्यातं ४० धरेयोल्दु पेर्गडे वेतं मं-
४१ त्रिजनमकुटचूडारत्न ॥(४) ४२ आतं मां(धा)तरामोपम-
४३ नेनिसिद श्रीकाकतीप्रोलभू- ४४ पख्यातामात्यं विवेकाग्रणि
४५ सकलकलाकोविदं सच्चरित्र- ४६ प्रीतं साहित्यविद्यानिधि बु-
४७ धविबुधोर्वीरुहं सत्यधर्मो- ४८ पेतं स्वग्रामदोल् माढिदनतिसु
४९ ददिं हत्तु देवालयंगलु ॥(६) ५० अतिशयजैनधर्मसमयोचित-
५१ शासनदेवि भारतीसनि शशियिंवव(क्त्र)-
५२ दशनच्छदे शुद्धसुवर्णकुंभसन्नुतत-

५३ नुवर्णपीवरपयोधरि मैल (म या-)

५४ कमाबिकासुततद्माल्यबेतद्द-

५५ दयेश्वरि निश्चल्लक्ष्मि भाविसलु ॥(६)

पश्चिमकी ओर

५६ पद्दिदाल्लितालक बेरेग (म) गो-

५७ पागम पचरत्नदिनागोचितमागे ५८ निमिसि सुरस्त्रीभाग्यसौभाग्य-

५९ सम्म (द्) सौंदर्यमनाय्दु सीवि ६० पदेद कजातसजातभी सु(दती)-

६१ रत्नमनॆंटु मैलमननारार् वण्णिम-६२ लोंकदोल् ॥(७) नुतरूपवति क्ला (व)-

६३ ति रतिरति श्रीसतिघटान्तकी- ६४ र्णासतियॆंदमाल्यबेतन सतिय सति वा-

६५ क्षितियेल्लमेय्दे नुतियिसुगिकुं- ६६ मुदर्दिदंमे नेगल्द रमास्पदे मै- ॥(८)

६७ ल्म भक्तियिंदे माडिमि तन- ६८ यकरमागिरलु बेट्टद (म) गण गम्भुद-

६९ क्दलालयमसद्दियनेमेयलु ॥(९)७० अदकें नित्यपूजेग धूपदीप (नि) वेद्य-

७१ क्क पूजारिगाद्दा (र) वस्त्रादि- ७२ श्रीमत्रिभुवमल्लमडिवभू- गल्ग (पा)-

७३ ल्पुत्रनप्प काकतियपोलरसन रा- ७४ ज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्ध मानमा-

७५ गमग्मकुम्देयलाचन्द्राकॆतार स- ७६ लुत्तमिरे श्रीमच्चालुक्य- विक्रमवर्ष-

७७ द नाल्वत्तेरडेनेय हेमलंबि(सं)- ७८ वत्सर पौष्यबहुल १५ सोमवा-
७९ रदंदिनुत्तरायणसंक्रांतिनिमि- ८० त्तं धारापूर्वकमागि तन्न वल्लभनप्प
८१ वेतन-पेर्गडे तन्न पेसरिंदं माडि- ८२ सिद केरेयेरिय केलगनेरडुं
८३ हासरेगल्लुगल नडुवण गर्दे(य) ८४ मत्तरेरडुं मत्तमाकेरेय प-
८५ डुवण नेल दोणेय तंकलेरेय ८६ मत्तर्नालकुं करंवं मत्ताल-
८७ मं कोट्टु निरिसिदर्लाशासनगंम ॥

दक्षिणकी ओर

८८ मत्तर्मा धर्मक्के तेलटियागे ॥
८९ अ(श्वा) दन्तिसहस्राणि दशको- ९० टी च वाजिनामनन्तं पादसं-
९१ वातमित्येते माधववर्म- ९२ वंशोद्भवरप्प श्रीमन्महा-
९३ मण्डलेश्वरनुग्रवा (डि)- ९४ य मेलरसं तन्ना (लि) के-
९५ योलंगल कूचिकेरे- ९६ येरिय केलगे कालुवेय
९७ मोदल गर्दय मत्तरोन्दा स- ९८ मीपदले करंवं मत्त-
९९ र हत्तुमनित्त ॥ निरुतमि- १०० दनलिदवं सासिरकवि (ले)-
१०१ यनलि (द) पापमं (पो) टुं- १०२ गुमादरदिं रक्षि (सि) दं सा-
१०३ सिरयज्ञद पलमनेयदि १०४ शुम (मं) पडेगु॥ (१०) स्वद-
१०५ त्तां परदत्तां वा यो हरेत १०६ वसुंधरां । षष्टिर्वर्षसहस्रा-
१०७ णि विष्टायां जायते कृमिः ॥ (११) १०८ वहुमिर्वसुधा दत्ता राजभिस्स-
१०९ गरादिभिः । यस्य यस्य य- ११० दा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं ॥ (१२)
१११ अलिङ्क वसदिय कसं गलेव वो- ११२ यपदंगे पाग वोंटु ॥

[यह स्तम्भ चालुक्यविक्रमवर्ष ४२ (सन् १११७) में पौष अमावस्याको उत्तरायण संक्रान्तिके समय स्थापित किया था । उस समय

चालुक्यसम्राट्‌ त्रिभुवनमल्ल विक्रमादित्य (षष्ठ) के माण्डलिक काकतीय बेतका पुत्र पोलरस (प्रोल) सब्बि प्रदेशपर शासन कर रहा था। बेतका महामात्य बैज था। बैजकी पत्नी याकमब्बे थी तथा पुत्र बेत पेगडे था। बेत पेगडे प्रोलका मन्त्री था। इसकी पत्नी मैलम थी। इसने अन्मकुन्द पहाडीपर कदललायदेवीका मन्दिर बनवाया तथा उसे उक्त तिथिको कुछ जमीन दान दी। इसी मन्दिरको उग्रवाडिके मेलरसने जो माधववर्माके कुलमे उत्पन्न हुआ था—भी कुछ जमीन दान दी। कदललायदेवी सम्भवत पद्मावतीका नाम है। इस समय यह मन्दिर ब्राह्मणोके अधिकारमे है तथा वे उसे पद्माक्षी देवी कहकर पूजा करते है।]

[ए० इ० ९ पृ० २५६]

१९८

कोविलगुत्तम्‌ (रामनाड, मद्रास)

सन्‌ १११८, तमिल

[एक भग्न मन्दिरके दक्षिण तथा पश्चिमकी आधारशिलापर यह लेख त्रिभुवनचक्रवर्ति कुलोत्तुंगचोलदेवके ४८वें वर्षका है। कुम्बनूरके २५ जैनोंद्वारा मुक्कुडैयारके लिए एक मण्डप तथा सुवर्ण विमान बनवानेका इसमे निर्देश है। कुम्बनूर गाव वेम्बुवलनाडु प्रदेशके शेंगाट्टिरुक्कै विभागमे था। इसी लेखमे त्रिछत्राधिपति देव तथा एक यक्षीकी तांबेकी मूर्तियोकी स्थापनाका भी उल्लेख है। इस मन्दिरके लिए जमीन और प्याऊके लिए भी दान दिया गया था। इस लेखकी तमिल भाषा साहित्यिक दृष्टिसे बहुत अच्छी है।] [इ० म० रामनाड १७]

१९९

ऐहोले (विजापुर, मैसूर)

चालुक्य विक्रमवर्ष २४ = सन्‌ १११९, कन्नड

[यह लेख त्रिभुवनमल्लदेव विक्रमादित्य षष्ठके समय वैशाख शु० ३,

सोमवार, विकारी संवत्सर, चालुक्य विक्रमवर्ष ४४ के दिन लिखा गया था। इसमें जेमपार्य तथा जातियक्कके पुत्र केशवय्य सेट्टिका उल्लेख है जिसने स्थानीय जिनमन्दिरमें पूर्व और पश्चिमकी ओर बसदियाँ, एक पट्टशाला तथा कूपका निर्माण कराकर लोकपाल-मूर्तियोंकी स्थापना की थी और देवपूजाके लिए कुछ भूमि आदि दान दिया था।]

[मूल लेख कन्नडमें मुद्रित] [सा० इ० इ० ११ पृ० २१९]

२००

कुमारबीडु (मैसूर)

शक १०४४ = सन् ११२२, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं (।) जीयात्

२ त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं (॥) स्वस्ति समधिग (त) पंच-

३ महाशब्द महामण्डलेश्वरं कुलोत्तुंगचोलभुजब-

४ लवीरगंगहोय्सलदेवरु नंगवाडि तोंमट्ट-

५ सासिरमनेकच्छत्रदि तलकाडलिद्दुं सुखसंकताविनो-

६ नोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे शकवर्ष १०४४ ने-

७ य प्लवसंवत्सरद मार्गसिर सुध ५ सोमवार-

८ दंदु महाप्रधान दण्डनायक गंगपय्य-

९ गलु तम्म सोवणदण्डनायकंगे हादरिघागिल-

१० बीडिनलु परोक्षविनयक्के माडिसिद बसदिगे

११ बिट्ट दत्ति मैसेनाड चन्दवनहल्लियुं बीडिद

१२ मूडण कम्माडिय केरेय गद्दे ३० सलगेयुं

१३ आ केरेयिं बटगलु एरिय बेद्दले बेलि २

१४ आ केरेय हडुवण कट्टद केलगे तोंट

१५ ५०० गुलियुं बीडिन २ गाणद एण्णेयुं

१६ सोर्डारिगे सलुवुदु ॥ बसदिगे बिट्टीधर्मम-
१७ नोसदु कर सलिसुतिर्दर्गंवु पुण्य अम्ब-
१८ मदि केडिसिदवर्गलु पसुवु ब्राह्मण-
१९ न कोंद वधे ममनिसुगु ॥ स्वदत्ता पर-
२० दत्ता वा यो हरेत वसुधरा षष्टिर्वर्षस-
२१ हस्राणि विष्टाया जायते क्रिमि ( )

[यह लेख होयसल राजा विष्णुवर्धनके राज्यमें मार्गशिर शु० ५, सोमवार, शक १०६४, प्लव संवत्सरके दिन लिखा गया था। दण्डनायक गंगपय्य-द्वारा सोवणदण्डनायककी स्मृतिमें हादरवागिलु ग्राममें एक जैन मन्दिरकी स्थापनाका तथा उसे दिये गये दानका उल्लेख इस लेखमें किया है।]

[ए० रि० मै० १९३८ पृ० १६६]

२०१

बेलूर (मैसूर)

१२वीं सदी – पूर्वार्ध, कन्नड

१ पुणिसचमूपनेम्बेमेत्र शासनवाचकचक्रवर्तिगिन्तेनिमल्गोड पोगर्तं तनगागिरे पुट्टिद चामराज नाकण कुमरय्यनेम्ब रत्नत्रयमू-
२ तिंगे पुत्रनोप्पिद पुणिसमदण्डनाथनुदितोदितचामचमूपसमन्त (।) नम सिद्धेभ्य (॥)

[यह लेख किसी जैन मन्दिरके स्तम्भपर था। वह स्तम्भ बादमें केशवमन्दिरमें लगाया हुआ पाया गया। इसमें सेनापति पुणिस तथा उसके तीन पुत्र चामराज, नाकण तथा कुमरय्यकी प्रशंसा की है। यह पद्य अन्य लेखोंमें भी पाया गया है। पुणिस राजा विष्णुवर्धनका जैन सेनापति था।]

[ए० रि० मै० १९३४ पृ० ८३]

२०२

अरताल (जि० धारवाड़, मैसूर)

शक १०४५ = सन् ११२३, कन्नड

[यह लेख चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्लके समयका है। उस समय बनवासि तथा पानुंगल प्रदेशोंपर कदम्ब कुलका महामण्डलेश्वर तैलपदेव शासन कर रहा था। मूलसंघक्राणूरगणके कनकचन्द्रके शिष्य गंगर बम्मि-सेट्टिने कोन्तकुलि विभागके प्रमुख नगर पयिट्टणमें एक मन्दिर बनवाया। बम्मिसेट्टि बट्टकेरेका निवासी था। इस लेखकी तिथि पौष अमावास्या, सूर्यग्रहण, रविवार, शक १०४५, शुभकृत् संवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० सा० ए० १९४३–४४ एफ् १]

२०३

हिरेसिंगनगुत्ति (बिजापुर, मैसूर)

११वीं-१२वीं सदी, कन्नड

[इस खण्डित लेखका समय चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्लदेव (विक्रमा-दित्य षष्ठ) के राज्यका है। देसिगगण-पुस्तक गच्छके आचार्य बालचन्द्रका इसमें उल्लेख है। किसी मन्दिरके लिए उन्हे कुछ भूमि अर्पण की गयी थी।]

[मूल लेख कन्नडमें मुद्रित] [सा० इ० इ० ११ पृ० २६२]

२०४

तोगरकुण्ट (अनन्तपुर, आन्ध्र)

११वीं-१२वीं सदी, कन्नड

[यह लेख चालुक्यराजा त्रिभुवनमल्लके समय एक सूर्यग्रहणके अव-सरपर लिखा है। इसमें तोगरकुण्टेके चन्द्रप्रभदेवबसदिके लिए दण्डनायक

कोम्मणार्य-द्वारा कुमारनैत्रपदेवकी पुण्यवृद्धिके लिए कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान मूलसघके पद्मनन्दिदेवके शिष्यको अर्पित किया गया था।]

[रि० सा० ए० १९२५-२६ क्र० ३४४ पृ० ६६]

२०५

उगरगोल (बेलगांव, मैसूर)

११वीं-१२वीं सदी, कन्नड

[यह लेख जिनशासनकी प्रशसासे प्रारम्भ होता है। चालुक्यसम्राट त्रिभुवनमल्लदेवके किसी महाप्रधानका इसमें उल्लेख है। लेख खण्डित है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ ई० क्र० ८२ पृ० २४७]

२०६

सिरसगि (जि० बेलगांव, मैसूर)

१२वीं सदी, कन्नड

[चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्लके समयका यह लेख है। तिथि पौष शु० १३, रविवार, उत्तरायण सक्रान्ति ऐसी है। ऋषिशृगीके छह गावुण्डोंका इसमें उल्लेख है। बाचि गावुण्ड तथा अन्य व्यक्तियों-द्वारा किसी बसदिको जमीन आदिके दानका उल्लेख है। गण्डवि (मुक्त) सिद्धान्तदेव, अत्तिमब्बे, देवरस, तथा कल्दिवसेट्टिका भी उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ ई० क्र० ७६ पृ० २८६]

२०७

हूलि (जि० बेलगाव, मैसूर)

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, सस्कृत-कन्नड

१ (श्रीमत्परमगभी)रस्याद्वादामोघलाञ्छन। जीयात् त्रैलोक्य-

नाथस्य शासनं जिनशासनं ॥(१) श्रीवीरनाथस्य गणेश्वरोभूत् सुधर्मनामा प्रविधूत····

२ यापनीये सं(घे) पुनस्तत्र च चारुमार्गे ॥(२) कण्डूरविख्यातगणे बभूवुः पुरा मुनींद्रा बहवो महा····

३ ···देवसिंहो मुनीश्वरो बाहुबली बभूव ॥(३) जयतु शुभचंद्रदेवः कण्डूर्‌गणपुंडरीकवनमार्तंडश्चंडत्रिदंड····

४ ····पारगो बुधविनुतः ॥(४) नुतयापनीयसंघप्रतीतकण्डूर्‌गणाब्धि-चंद्रनरेंद्रो क्षितिवलयं पोगल्विंनमुंनतिवेत्तर् मौनि (द्रे-

५ वदिव्यमुनींद्र) रु ॥(५) श्रीमाघनंदिव्रतिनाथमोडे कामारिमोमो (र) गर्वेनतेयं। नत्रावनीपालकचिद्दकीर्ति सि(द्धां)त त(र्क्का) र्णवपूर्णचं(द्रं) ॥(६)

६ (स्वस्ति। समस्तभुव) नाश्रयं श्रीपृथ्वीवल्लभं महाराजाधि-राज परमेश्वरं परमभट्टारकं सत्याश्रयकुलतिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत्त्रिभुवनमल्ल-

७ (देवर विजय) राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमाचंद्रार्कतारं-बरं सलुत्तमिरे। क्षितिगेल्लं तन्न तेजं तोलगि बेलगे तन्नाज्ञे चोला (वनी)-

८ ····लु नतिसुत्तिरे सले तन्नापुं लोकक्के कल्पक्षितिजातं कूडे पण्तंतिरे कलियुगदोलु प्रसिद्धं राघवादिक्षितिपालानीकरोलु पा····

९ ···(विक्र)मादित्यदेव ॥(७) जलधिपरीतभूतलवधूटिगे कुंतलदेशदिं ननंगोलिसुत्तिर्दु नोप्पडमे कोंकदंगनदस्के चिरपूगल तेरदंते रंजि····

१० ····ह मौक्तिकावल्लिय पोदल्दु हारद चोल्पुिंदु नोपंद पूलि लीलेयिं ॥(८) मत्तं। पोंगलसंगलिदेलेव देवगृहंगलिनोप्पुवेत्त वारंग-नेयकल्····

११　पोद) लूद वेदगळे मूर्तिगोंडुदेनिपददलोप्पुत्र विप्ररिंदे ग्रामगळ चक्रवर्तियेसेदिदुंदु नोपेंडे पूलि कोलेयिं ॥(९) मत्तमल्लिय विप्र महिमेये (न्तेंदोडे)।

१२　पोंठनेनिप श्रीकृष्णदेव सविस्तरदि तन्न सहस्रमप्प पेसर रूपा- *गिरलु माडि साक्षरवेदाक्षरजीवमन्नचयम तीनिट्ट पुरुमहापुर*

१३　(एसेदर्) सासिर्वरिंतुर्वियोलु ॥(१०) उपमातीतमनिप्प पेंपु गुणमौदार्यं चल साहस जपहोम नियम महोन्नतिकसत्य शौचमा

१४　शास्त्रादोदवि श्रीकेशवादित्यदेवपादाम्बोजवरप्रसादरसेदर् सासिर्वरिंतुर्वियोलु ॥(११) हरि किलेनेलेयिं चलिसिद हरिवदवेट्टि

१५　करेंदु निरानरिपुदु सासिर्वरचित्तदे चलितवचन ॥(१२) स्वस्त्यनवरतविनमदम (र) राजत्किरीटकोटिताडितजिनेंद्रचरणारविंदम—

१६　(चल) दुत्तरग। वीरविद्विष्टमहरणप्रतापक्रातिरेय। गगगांगेय। चपलवैरिवाहिनीसहनमप्रतापलंकेश्वर। कोलाकपु(रवराधीश्वर।)

१७　(एतें) दोडे। मंडलिकजगदल मार्कोंडर जवनाथिजनके कल्पमहीन गडर तीर्थ सितगर गड मार्वोल भैरव पिट्टनृप ॥(१३) मत्त

१८　पुट्टिदरोप्पे पेर्मनृप विज्जमहीपति कीर्तिभूपनु जेट्टिग सोमनु नेगर्द (दद्) मेल्लदवियुमते रूपिनिंधिट्टलवागि

१९　॥(१४) लिक्कक्दरिभुभुजर तवे कोंडु गूर्जराष्ट्र जयसिंहदेव धरणीश्वरन निजराज्यलक्ष्मियोलु पट्टु

२०　पोगलुतिपुंदु विज्जलभूमिपालन ॥(१५) मत्तं। रवरनिर्मडि कन्हरदेवसेनक्कनते भूनुते सिरिया (देवि)

२१ ····॥(१६)····डु दल्तायवनेयेंडु विज्जलनृपं चउवीसतीर्थरकल्
मुददिं माडिसि कल्वेसं समेसि····

२२ ····दिं बिट्ट—वेल्वलदोलितोप्पिप्प पेर्गुम्मियं ॥(१७) हरलार-
वाडकंसि····

२३ ····चालुक्यचक्रवर्ति पेर्माडिरायन् कय्योल्····

२४ ····माडिसिद माणिक्यतीर्थ····

[यह लेख चालुक्यसम्राट् विक्रमादित्य (षष्ठ) के राज्यकालका है। इसमें प्रथम सुधर्म गणधरकी परंपरामें यापनीय संघ – कण्डूर् गणके बाहुबली, शुभचंद्र, मौनिदेव तथा माघनंदि इन आचार्योंका उल्लेख है। इनका परस्पर सम्बन्ध स्पष्ट नहीं है। अनन्तर एक पूलि नगरके पिट्ट नृपका उल्लेख है जो गंगवंशमें उत्पन्न हुआ था। इसके चार पुत्र थे – पेर्म, विज्जल, कीर्ति, गोर्म – तथा एक कन्या थी – मैललदेवी। विज्जलके सम्बन्धमें गूर्जराष्ट्रके जयसिंहका उल्लेख किया है किन्तु इसका ठीक अर्थ स्पष्ट नहीं क्योंकि यहांके कई अक्षर घिस गये हैं। इसी तरह कृष्णराजकी बहिन रेवकनिर्मडिकी एक श्लोकमें सिरियादेवीसे तुलना की है उसका पूर्वापर सम्बन्ध भी स्पष्ट नहीं है। अनन्तर कहा है कि विज्जलने एक जैन मन्दिर बनवाया तथा उसे पेर्गुमि ग्राम दान दिया। लेखके अन्तिम भागमें माणिक्यतीर्थका उल्लेख है। इसका सम्बन्ध भी स्पष्ट नहीं है।]

[ए० इं० १८ पृ० २०१]

२०८

बेलवत्ति (धारवाड, मैसूर)

१२वीं सदी - पूर्वार्ध, कन्नड

[इस लेखमें सवणूरके बम्मिसेट्टि-द्वारा एक ब्रह्मजिनालयके निर्माणका उल्लेख है। इस जिनालयके लिए बम्मिसेट्टिने बेलवत्तिके ३०० महाजनों-

को कई दान दिये थे। इस स्थानके कुछ आचार्योंके नाम भी लेखमें दिये हैं। तिथि आषाढ शु० प्रतिपदा, सोमवार, उत्तरायणसंक्रान्ति, शोभकृत संवत्सर ऐसी दी है। उस समयके चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्लदेवके राज्य-का उल्लेख किया है।]

[रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० २१६]

२०९

बैल हॉगल (बेलगाँव, मैसूर)

११वीं - १२वीं सदी, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा त्रिभुवनमल्लदेवके समयका है। शक वर्षके अंक अस्पष्ट हुए हैं। इसमें रट्टवंशीय महासामन्त अंक, शांतियक्क तथा कूण्डि प्रदेशका उल्लेख है। अनन्तर यापनीयसंघ- मैलाप अन्वय-कारेय-गणके मुल्लभट्टारक तथा जिनदेवसूरिका उल्लेख है। यह सम्भवतः किसी जिनमन्दिरको दिये गये दानका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५१-५२ क्र० ३३ पृ० १२]

२१०

गोलिहल्लि (जि० बेलगाँव)

सिद्धेश्वरमन्दिरके समीप शिलापर

१२वीं सदी, कन्नड

[मैललदेवी तथा जयकेशिन्के पुत्र वीर पेमाडि तथा विजयादित्यके शासनका इस लेखमें निर्देश है। अगडिय मल्लिसेट्टि-द्वारा किरुसपगाडिमें बनवाये गये जैन मन्दिरके लिए भूमिदान देनेका इसमें उल्लेख है। मूलसंघ, बलात्कारगणके नेमिचन्द्र भट्टारकके शिष्य वासुपूज्य भट्टारकको यह दान दिया गया। वासुपूज्यकी गुरुपरम्परा कुछ विस्तारसे दी है। लेखके समय फाल्गुन शु० १५, गुरुवार, मन्मथ संवत्सर था तथा चालुक्य भूलोकमल्ल सम्राट् थे।] [रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० १५]

२११

वरांग (मैसूर)

१२वीं सदी-मध्य, कन्नड

[यह लेख आलुप राजा कुलशेखरके समयका है। इसमे माघवचन्द्र, प्रभाचन्द्र, तथा श्रीचन्द्र इन आचार्योंका उल्लेख किया गया है।]

[रि० आ० स० १९२८-२९ पृ० १२७]

२१२

दडग (माडया, मैसूर)

१२वीं सदी – पूर्वार्ध, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं (।) जी-

२ यात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं (॥)

३ कुलरत्नाकरदोलु कौस्तुभादिगल वोलु पलरुं लोकोपकारपरिणतर् एकीकृ-

४ तसकलराजगुणरु····सकलजनोक्ति यादवकुलदोलु पुलि पाये

५ सलेयिं पुलियं पोय् सल येने पोय्दुदरिं पोय्सणवेसरवनिंद वाद्दुद-

६ लिंलदे····नयं प्रद्दारण····नना····युरर्ि जग-

७ नयनिसि पोरेदं विनयादित्यं समस्तभुवनस्तुत्यं आतंगतिमहिम-

८ नमाख्यातकीर्ति सन्मूर्तिमनोजात मर्दितरिपुनृपजातं तनुजात-नादन् एरेयंग-

९ नृपं ॥ च····धर्मार्थकामसिद्धिवोल् अवनीवल्लभर् आतन तन-

१० यर् बल्लालं विट्टिदेवन् उदयादित्यं ॥ नृपर्- तनयरोलं तां भाविसे म····

११ ष्यमनागियु सद्गुणसद्भावदिन् उत्तमनाद त्रिभुवचिमचद्भूत-
निष्णु त्रि-
१२ ष्णुमहीश । स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्द महामंडले-
१३ श्वर द्वारावतीपुरवराधीश्वर यादवकुलाम्बरद्युमणि स-
१४ म्यक्त्वचूडामणि मलपरोळुगण्ड गण्डभेरुण्ड शशकपुरनिवास
१५ वासन्तिकादेवीलब्धवरप्रसाद दानसन्मानसंपादितविप्रग्रामोद
१६ नामादिसमस्तप्रशस्ति सहित तलकाडु कोंगु नंगलि गंगवाडि नो-
१७ णम्बवाडि बनवासे हानुगल्लु गोंड भुजबलवीरगंग प्रताप
१८ होय्सळदेवर् पृथ्वीराज्यं गेय्युत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीविगळप्प ॥
भीम अ-
१९ र्जुनरंकुशरी मालुकेयनल् अते पुट्टिये मेरवर श्रीमन्सरियाने
२० यु उद्दामगुण भरतराजदण्डाधिपरु ॥ करिगति सिंहमध्य कल-
२१ मस्तनि दीरसजपुण्यबोधि मित्ररचिरत्नाक्षि वल्लिसुखि वेण्यहि
२२ गेहविलासलक्ष्मि भासुरे सुमनोविमाने गुणारत्नयशोहारि की-
२३ र्तिगोपति स्थिरसत्व जक्कियक्कनेने पोल्वर् आर् अमलकान्ति
तनुज ॥
२४ वल्लेशनर्थीशं चरितार्थं नेगल्द तन्दे मारायर् ॥ तत्तरसजित-
देव्यर्मेन्दि
२५ हरियब्बेयन्तेरदे मोन्न कान्तेयरोल् ॥ श्रीमूलसंघ कुन्दकुन्दान्व-
२६ य काणूरगण तिंत्रिणीगच्छद जनलिगेय मुनिभद्रसिद्धान्तदेवर
शिष्य
२७ माघचन्द्रसिद्धान्तदेवर्गे श्रीमन्महाप्रधान दण्डनायक मरिया-
२८ नेयु श्रीमन्महाप्रधान दण्डनायक भरतिमय्यंगळु हडिग-
२९ नकेरय पंचबसदियोळगे बाहुबलिकूटम धारापूर्व-
३० क माडि कोट्टर मरियानेसमुद्रद ग्यलुम

२१ मलेहल्लिय मुंदण किरुकेरेयं अल्लिय होलगुत्त-
२२ गेयुं कोडियहल्लिय मुंदण किरुकेरेयं आवेदलेय
२३ हिरियकेरेय केलगण अडकेय तोटमुं ॥ अन्तु सर्वाय सुद्धवागि देशियगणद वसदि ४ क्कं काणूरगणद व-
२४ सदि वोन्दक्कं अन्तु पंच वसदिगे समानवागे इल्लि हुट्टि-
२५ द माचिगोंडनु कसवगोंडनु ॥
२६ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुंधरा षष्टिवर्ष सह-
२७ स्राणि विष्टायां जायते क्रिमि

[इस लेखमे होयसल राजा विष्णुवर्धनके महाप्रधान दण्डनायक मरियाने तथा भरतिमय्य-द्वारा दडिगनकेरे स्थानकी पाँच वसतियोंमे बाहुवलि-कूट नामक वसतिका दान तथा कुछ भूमिके दानका निर्देश है। यह दान काणूरगण-तित्रिणिगच्छके मुनिभद्र सिद्धान्तदेवके शिष्य मेघचन्द्रदेवको दिया गया था।] [ए० रि० मै० १९४० पृ० १५६]

२१३

कम्बदहल्लि (मैसूर)

१२वीं सदी–पूर्वार्ध (सन् ११३०), कन्नड

१ (द्रोह)घरट्ट दण्डनायक गंगराजन मग वोप्पदेवरिगे रूवारि
२ द्रोहघरट्टाचारि कन्नेवसदियं माडिद ॥ मंगल महाश्री

[यह लेख स्थानीय शान्तीश्वर वसदिके भग्नावशेषोंमे है। यह वसदि दण्डनायक गंगराजके पुत्र वोप्पदेवके लिए द्रोहघरट्टाचारि नामक शिल्पकारने बनवायी ऐसा लेखमे कहा गया है। यह कन्नेवसदि अर्थात् निर्माता-द्वारा बनवायी पहली वसदि थी। अतः इसका समय लगभग सन् ११३० है क्योंकि वोप्प-द्वारा सन् ११३३ मे हलेबिडमें निर्मित आदीश्वरवसदि विद्यमान है।]

(ए० रि० मै० १९३९ पृ० १९३]

२१४

सालूर (मैसूर)

सन् ११३०, कन्नड

१ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छन जीयात् त्रैलोक्य-
२ (नाथस्य शासन जिन) शासन ॥ स्वस्ति समस्तभुवना-
३ (म)हाराजाधिराज परमेश्वर पर
४ (मभट्टा)रकसत्याश्रयकुलतिलक चालुक्याभरण
५ श्रीम(त्त्रिभुवनमल्ल)देवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृ-
६ (द्धिप्रवर्धमान) माचन्द्रार्कतार सलुत्तमिरे । समधिगतपंचम-
७ (हाशब्द महाम)डलेश्वर बनवासिपुरवराधीश्वर त्रिभुवनमल्ल-
८ (समव चतुराशीतिनग)राधिष्ठित(लाटलोचन)चतुर्भुज
९ श्रीजयन्तीमधुकेश्वरदेवलब्धवरप्रसाद नामादि-
१० समस्तप्रशस्तिसहित श्रीमन्महामण्डलेश्वर मयू-
११ रवर्मदेव तत्पादपद्मोपजीवि श्रीमन्महामण्डलेश्वर
१२ मगर कारगरसर् सान्तलिगेसासिरमुम दुष्टनि-
१३ ग्रहशिष्टप्रतिपालनदिनालुत्तिरे ॥ श्रीमूलसंघको-
१४ (ण्ड) कुन्दान्वय काणूर्गणद मेष(पा)षाणगच्छद श्रीप्रभाच-
१५ न्द्रसिद्धान्तदेवर शिष्य कुलचन्द्रप(ण्डित)देवर गुड्ड(म)-
१६ द्रायिसेट्टि श्रीमदनादियग्रहार सालियूर साभिर्व-
१७ र ब्रह्मजिनालयद बसदिय निवेद्यक्के भूलोकवर्षद
१८ ५ नेय साधारणसंवत्सरद पुष्य सुद्ध ३ सोमवारद् उत्त

[यह लेख चालुक्यसम्राट् भूलोकमल्लके ५वें वर्षमें पौष शु० ३ सोमवारको लिखा गया था। उस समय कदम्बवंशीय मण्डलेश्वर मयूरवर्मा-के शासनान्तर्गत सान्तलिगे प्रदेशपर मगर कारगरसर् शासन कर रहा था। उक्त तिथिको सालियूर अग्रहारमें स्थित ब्रह्मजिनालय बसदिको भद्र-

रायिसेट्टिने कुछ दान दिया था। मूलसंघ-काणूरगण-मेषपाषाणगच्छके प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेवके शिष्य कुलचन्द्रपण्डित भद्ररायि सेट्टिके गुरु थे।]

[ए० रि० मै० १९३० पृ० २४५]

२१५

तिरुप्परुत्तिकुण्डम् (चिंगलपेट, मद्रास)

राज्यवर्ष १३ तथा १७ = सन् ११३१ तथा ११३५, तमिल

[यह लेख चोल राजा परकेसरिवर्मन् विक्रमचोलके राज्यवर्ष १३का है। इसमें विलयारकी ग्रामसभा-द्वारा त्रैलोक्यनाथजिनमन्दिरके लिए कुछ भूमि करमुक्त रूपमें वेची जानेका उल्लेख है। इसीके बाद इसी राजाके १७वें वर्षमें तिरुप्परुत्तिकुण्डकी कुछ भूमि आरम्बनन्दिको वेची जानेका भी उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ३८१ पृ० ३७]

२१६

लक्ष्मेश्वर (मैसूर)

सन् ११३२, कन्नड

[इस लेखमें गोग्गियवसदिके इन्द्रकीर्ति पण्डितका उल्लेख है। उन्होंने तथा पेर्गडे मल्लियण्ण आदिने वसदिकी भूमिमें घर आदि बनवानेके कुछ नियम बनाये थे। हेमदेव-द्वारा वसदिके पुजारीको कुछ भूमि दान दी जानेका भी उल्लेख है। तिथि ज्येष्ठ पूर्णिमा, परिधावि संवत्सर, भूलोक-वर्ष (चालुक्यसम्राट् भूलोकमल्लका राज्यवर्ष) ७, बुधवार इस प्रकार दी है।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ४८ पृ० १६४]

२१७

बहुरीबंद (जि० जबलपुर, मध्यप्रदेश)

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, संस्कृत-नागरी

स्वस्ति बदि ९ सोमे श्रीमद्गयाकर्णदेवविजयराज्ये राष्ट्रकूटकुलोद्भवमहासामताधिपतिश्रीमद्गोल्हणदेवस्य प्रवर्धमानस्य ॥ श्रीमद्गोल्हापूर्वाम्नाये वेल्लप्रभाटिकायामुरुकृताम्नाये तर्कतार्किकचूडामणिश्रीमन्माधवनंदिनानुगृहीत साधुश्रीसर्वधर तस्य पुत्र महाभोज धर्मदानाध्ययनरत । तेनेद कारित रम्य शातिनाथस्य मदिर ॥ स्वलाघमसज्ञकसूत्रधार श्रेष्ठिनामा वितान च महास्वेन निर्मितमतिसुदर ॥ श्रीचद्रकराचार्याम्नायदेसीगणान्वये समस्तविद्याविनयानदितविद्वज्जना प्रतिष्ठाचार्यश्रीमत्सुभद्राश्चिर जयतु ॥

[यह लेख कलचुरि राजा गयाकर्णके सामन्त राष्ट्रकूट गोल्हणदेवके राज्यकालमें लिखा गया है। वेल्लप्रभाटिका गांवमें गोल्लापूर्व जातिका महाभोज नामक श्रावक था जो माधवनन्दिके शिष्य सर्वधरका पुत्र था। उसने शान्तिनाथका एक सुन्दर मन्दिर बनवाया। इस मन्दिरकी प्रतिष्ठा चन्द्रकराचार्याम्नाय-देशीगणके आचार्य सुभद्रके हाथों हुई थी।]

[इन्स्क्रिप्शन्स ऑफ दि कलचुरि-चेदि एरा पृ० ३०९]

२१८

आदिनाथमन्दिर, नाडलाई (जि० देसूरी, राजस्थान)

संवत् ११८९ = सन् ११३३, संस्कृत-नागरी

१ ओं ॥ संवत् ११८९ माघसुदि पचम्यां श्रीचाहमानान्वय श्री-
महाराजाधिराज (रायपा) ल

२ देव तस्य पुत्रो रुद्रपालश्चमृतपा (लौ) ताभ्यां माता श्रीराज्ञी मा (न) लदेवी तया (नदू) ल (डा) गिका-

३ यां सतां परजतीनां (रा)ज कुलपल (म) ध्यात् पलिकाद्वयं वाण (कं) प्रति धर्माय प्रदत्त । भं० वागमि-

४ त्रप्रमुखसमस्तग्रामीणक । रा० तिमदा वि० मिरिया वणिक पोसरि । लक्ष्मण एते स्ना ।

५ खिं कृत्वा दत्तं । लोपकस्य यद्‌ पापं गोहत्यासहस्रेण । ब्रह्म-हत्यासतेन च । तेन

६ पापेन लिप्यते सः ॥ श्री ॥

[यह लेख संवत् ११८९ में चाहमान राजा रायपालके राज्यमे लिखा गया था। इसके दो पुत्र थे—रुद्रपाल तथा अमृतपाल। इनकी माता मानलदेवीने नदूलडागिका आनेवाले यतियोंके लिए कुछ दान दिया था।]

[ए० इं० ११ पृ० ३४]

२१६

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

सन् ११३४, तमिल

[यह लेख परकेसरिवर्मन् विक्रम चोल राजाके १६वें वर्षमें लिखा गया था। इसमें वैगाशि मासमें उत्सवोंके अवसरपर अरुमोलिदेव (अर्हत्) तथा नित्यकल्याण देवकी पालकी-यात्राकी व्यवस्थाके लिए मलैयन् मल्लन् अर्थात् विक्रमचोलमल्लन-द्वारा कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३१० पृ० ६६]

२२०

शेरगढ़ (कोटा, राजस्थान)

संवत् ११९१=सन् ११३५, संस्कृत-नागरी

१ माहिल्लमायान्तिमा—स्य तिलके सूर्याश्रमे प (त्त) ने । श्रीपालो गुणपालकश्च विपु

२ ले खण्डि (लग्रा) ले कुले सूय (या) चन्द्रमसाविवाम्बरतले प्राप्तौ क्रमान्माल्वे ॥१॥ श्रीपालादिह देवपालतनयो दानेन चिन्तामणि( ) शा-

३ (न्ते श्री) गुणपालठक्कुरसुताद् रूपेण कामोपमात् । पूर्नामर्थ-जनेल्हुकप्रभृतय पुत्राश्च येग्रा नव तैं सर्वैरपि कोशवर्धनत-

४ ले रत्नत्रय कारित( ) ॥२॥ वर्षे रुद्रशतैर्गतैं शुभतमैरकानत-त्याधिकैर्वैशाख(खे) धवले द्वितीयदिवसे देवान् प्रतिष्ठा-

५ पितान् । वन्दन्त नतदेवपालतनया माहूसधान्नादय पूर्णी-शान्तिसुतश्च नेमिभरतो श्रीशान्तिसकुन्थ्वरान् ।

६ ।३॥ दादिसूत्रधारोत्पन्न शिलाश्रीसूत्रधारिणा । शान्तिकुन्थ्वरना-मानो जयन्तु घटिता जिना ॥४॥ देवपालसु-

७ तेल्हुक गोष्ठिजीसलल्लुक मौक हरिश्चन्द्रादि गागासुपुत्र ( ) श्रल्क ॥५॥ संवत् ११९१ वैसाप सुदि २ (म)-

८ गलदिने प्रतिष्ठा कारापिता ॥

[यह लेख वैशाख शु० २, मगलवार, सवत ११९१ का है । इस समय खण्डिल्लवाल कुलके शान्तिके पुत्रोने रत्नत्रय अर्थात् शान्ति, कुन्थु तथा अर इन तीन तीर्थकरोकी मूर्तिया स्थापित की थी । इनका निर्माण सूत्रधार दादिके पुत्र शिलाश्रीने किया था ।]

[ए० इ० ३१ पृ० ८३]

२२१

कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

शक १०५८ = सन् ११३५ कन्नड़

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ (१) स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्द महाम-

२ ण्डलेश्वरं । तगरपुरवराधीश्वरं श्रीशिलाहारनरेंद्रं । जीमूत-वाहनान्वयप्रसूतं । सुवर्णगरुडध्वजं मरुवोक्कसपं । अय्यन

३ सिंगं । रिपुमण्डलिकभैरवं । विद्विष्टगजकण्ठीरवं । इडुवरादित्यं । रूवनारायणं । कलियुगविक्रमादित्यं । शनिवारसिद्धि गिरिदु-

४ र्गलघनं । श्रीमहालक्ष्मीदेवीलब्धवरप्रसादादिसमस्तराजावली-विराजितरप्प श्रीमन्महामण्डलेश्वरं गण्डरादित्यदेवरु वल-वाडद ने-

५ लेवीडिनल् सुखसंकथाविनोददिं राज्यंगेय्युत्तमिरे । तत्पादपद्मोप-जीवि समधिगतपंचमहाशब्द महासामन्तं । विजयल-

६ क्ष्मीकान्तं । रिपुसामन्तसीमन्तिनीसीमन्तभंगं । वीरवरांगना-प्रियभुजंगं । वैरिसामन्तमेघविघटनसमीरणं । नागलदेविय गन्धवा-

७ रणं विद्विष्टसामन्तविलयकालं । सामन्तगण्डगोपालं । दायादसा-मन्ततारासुरकुमारं । सामन्तकेदारं । तोण्टसामन्त-पुण्डरीक-

८ षण्डप्रचण्डमदवेदण्डं । गण्डरादित्यदेवदक्षदक्षिणभुजादण्डं । याचकजनमनोभिलषितचिन्तामणि । सामन्तशिरोमणि । जिन-चरणसरसिरु-

९ त्मधुकर सम्यक्त्वरत्नाकरमाहारामयभैषज्यशास्त्रदानविनोद पद्मावतीदेवीलब्धवरप्रसाद । नामादिसमस्तप्रशस्तिसहित श्रीमन्महा ।

१० सामन्त । निंबदेवरसर । कवडेगोल्लद वलिय सन्नेय मुद्गोंडेयल् माडिसिद वसदिय पार्श्वनाथदेवरष्टविधार्चनक्कमा वसदिय जीर्णोद्धारक्क-

११ मल्लिष्प ऋषियराहारदानक्कं । स्वस्ति । समस्तभुवनविख्यात-पंचशतवीरशासनलब्धानेकगुणगणालंकृत सत्यशौचाचारचारु-चारित्रनयविनय-

१२ विज्ञान वीरबल्लञ्जधर्मप्रतिपालन विशुद्ध गुड्डध्वजविराजमानाभून-साहसोत्तुंग कीर्त्यङ्गनालिंगित निजभुजोपार्जितविजयलक्ष्मी-निवासवक्षस्थलरुं

१३ भुवनपराक्रमोन्नत वासुदेवखण्डलीमूलभद्रयशोध्वजर । भगवती-लब्धवरप्रसादरुं । तावु काडि सोल्दरुं । मल्लक्कमारिगलु परस्त्रीपर

१४ धनवर्जितरु चतुष्पष्टिकलेगलोल् प्रवीणरप्पुदरिं । ब्रह्मनवर । चक्रमुल्लुदरिं नारायणनवर । दृष्टियोल् सोडि कोल्लुदरिं । कालाग्निरुद्रनवर । को-

१५ न्दरनरसि ध'ल्लुदरिं । परशुरामनवर । तुल्दु कोल्लुदरिं । मदान्धगन्धविन्दुरद्वर । गिरिदुर्गस मरेवोक्कर तेगेदु कोल्वे-डेयोल् सिंहदवरु ।

१६ पातालम पोक्कर कोल्वेडेयोल् वासुगियन्तर । आकाशदोल्दिर्द्दर कोल्वेडेयाल् गरुडनवर । पेंपिनल् पृथ्वियवर । बिण्पिनल् कुलगि-

१७ रियवर । गुण्पिनल् महासमुद्रद्वर । उद्योगदल् रामनवर ।

पराक्रमदोल् पार्थनवरं । शौचदोल् गांगेयनवरं । साहसदोल् भीमनव-

१८ रं । धर्मदोल् धर्मपुत्रनवरं । ज्ञानदल् महदेवनवरं । भोगदलिं-द्रनवरं । त्यागदल् कर्णनवरं । तेजदलादित्यनवरं । अहिच्छत्र-मेनिसुवय्यवोलेपुरप-

१९ रमेश्वररुमप्पय्नूर्वर्स्वामिगलु गवरेयरं । गात्रियरं । सेट्टियरं । सेट्टिगुत्तरं । गामण्डरं । गामण्डस्वामिगलुं । वीर

२० रं । वीरवणिगरं । कोल्लापुरद बिल्पाणसेट्टियुं । गोविन्दसेट्टियुं । कोमर अण्णमय्यनुं । मिरिंजिय बिन्नसेट्टियुं । बाप्पिसे-

२१ ट्टियुं । गण्डरादित्यदेवर राजश्रेष्ठि वेसपय्यसेट्टियरं । आ मण्ड-लेश्वरन चोडिन बम्मिसेट्टियुं । कूंडिपट्टनदादित्यगृह-

२२ द सासनिगं हेग्गडे रावसेट्टियुं । चौधोरे बोप्पिसेट्टियुं । तोरं-बगेय प्रभु कल्लपय्यसेट्टियुं । मयिसिगेय काजगारं चौधो-

२३ रे गोरविसेट्टियुं । बलेयवट्टणद शान्तिसेट्टियुं । अय्यवोलेयय्-नूर्वर सिंगं हालियसेट्टियुं । कवडेगोल्लद प्रभु खप्परय्यना-

२४ दियागि समस्तदेशं नेरेदु । शकवर्षद सासिरदय्वत्तेंटनेय राक्षससंवत्सरद कार्तिकबहुल पंचमि सोमवारदंदु श्रीमूलसंघ-

२५ देसीयगण-पुस्तकगच्छद कोल्लापुरद श्रीरूपनारायणबसदिया-चार्यरप्प श्रीश्रुतकीर्तित्रैविद्यदेवर् काल्लं कर्चि । धारापू-

२६ र्वकमागि कोट्टायमेन्तेंदोडे अडके हेरिगे अय्वत्तु । जवलक्किर्पत्तु हम्मरकरय्दु । एले हेरिगे नूरु । तलेबोरेगय्वत्तु । हम्मरकिर्प-

२७ त्तय्दु । तुप्पमेण्णेयेंबिवु कोटक्के मोलगे सिद्दिगेगरवाणं संगटि-गोमाणं दूमिगवसरक्कमक्कमालेगं होगे हणं । हत्ति मलवेग-

२८ यूवलं । मण्डिय करसेय मलवेगरदु वीसिगे । जवलक्के पलं

पत्तु। ल्करॊक्कलल्लि आर निगल्गॆ मणॆनिविगॆ मरवियॆंविद्दॊ-
न्दवर्कॆ। वर्षक्क म-

२९　चवोन्दक्कु। अल्लवरिसिन शुण्डि वॆल्तॆलिक्क वज्रे मठमुस्तॆयॆविद्दु मोडलागि तूगि मान्त्र मण्डगल्गॆ हॆरिगयूवल जवल्क्किप्पल हम-

३०　क्कॊप्पल जीरगॆ मॆल्मु सामवियॆविद्दु हॆरिगॊम्मान अवलक्क-ग्वन हमरक्के सोल्लगॆ। उप्पु मोदलागि इदिॆंदु प्यान-

३१　गल्ग भडिगॆ कोलगबॊंदु हॆरिगॆ मानवॆरडु तलॆवोरिगॊमॆन बान्दु कायॆविद्दु मडिगॆ हत्तु तलॆवारिगॆ नाल्क्क्कु। भण्डिगॆ दण्डिगॆ बॊंदु।

३२　मेवेयरडु हूदॆयरडक दण्डिगॆ बॊंदु मेवॆयरडु हूविन हेडलिगॆगॆ माल्ले बोन्दु कुंबररिग हसरक्के मडक बोन्दु॥ इन्तीया-

३३　यमनल्लिपातने वाणराशिकुरुक्षेत्रादिगलोल् पचमहापातकम माडिद फलमक्कु॥

[इस लेखका सारांश द्वितीय भागमें क्र० ३०२ में दिया है किन्तु उस समय मूल लेख प्रकाशित नही हुआ था। यह लेख शिलाहार वंशके महामण्डलेश्वर गण्डरादित्यके समय शक १०५८ में लिखा गया था। इस-का सामन्त निम्बदेव था जिसने तोण्डमण्डलके युद्धमें शूरता प्रदर्शित की थी। निम्बदेवने कवडेगोल्ल नगरमें एक जिनमन्दिर बनवाया था। इस-के बाद वीरबल्ज लोगोंके संघका विस्तृत वर्णन है। उसके प्रतिनिधियोंने कोल्हापुरके रूपनारायण जिनमन्दिरके व्यवस्थापक मूलसंघ-देशीय गणके श्रुतकीर्ति त्रैविद्यको कवडेगोल्ल जिनमन्दिरके लिए उक्त तिथिको कुछ करों-का उत्पन्न दान दिया।]

[ए० इ० १९ पृ० ३०]

२२२

कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

१२वीं सदी-पूर्वार्ध कन्नड

महालक्ष्मी मन्दिरमें छतके खम्भोंपर

[यह लेख शिलाहार राजा गण्डरादित्यके समयका है। इनके सामन्त निम्बने एक चैत्यालय बनवाया था। नाकिराजको कन्या कर्णदेवीका भी उल्लेख है जो एक रानी थी। कोण्डकुन्दान्वयके माघनन्दि आचार्यका भी उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० ३५१]

२२३

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

सन् ११३७, तमिल

[यह लेख कुलोत्तुंग चोलदेव (द्वितीय) के राज्यवर्ष ४ मे लिखा गया था। आलप्पिरन्दान् मोगन् उपनाम कुलोत्तुंगशोलकाडवरायन्-द्वारा कच्चिनायनार् (चन्द्रप्रभ) की पूजाके लिये जननाथमंगलम् गाँवके उत्पन्न-से ४२० कलम् (नापका प्रकार) चांवल अर्पण किये जानेका इसमे उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३११ पृ० ६६]

२२४

गणपवरम् (गुण्टूर, आन्ध्र)

११वीं-१२वीं सदी, तेलुगु

[यह लेख श्रावण शु० ३ का है – शकवर्षके अंक लुप्त हुए है। कुलोत्तुग राजेन्द्रके पुण्यवृद्धिके लिए अक्कसाल कामोजु-द्वारा कुछ दान दिये जानेका इसमे उल्लेख है। अन्तमे चन्द्रप्रभजिनालयका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९१५-१६ पृ० ४३ क्र० ४५८]

२२५-२२७

तिरक्कोल (उ० अर्काट, मद्रास)

११वीं—१२वीं सदी, तमिल

[इस लेखमें तण्डपुरम्की पल्लि (जैनवसति) के लिए एरणन्दि उपनाम नरतोंग पल्लवरैयन्-द्वारा कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। यह ग्राम पोन्नूरनाडुमें सम्मिलित था। यहींके एक अन्य लेखमें शेम्बियन् शेम्बोत्तिलाडणार्-द्वारा कनकवीर शित्तडिगलको कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। यह चोल राजा परकेसरिवर्मन्के १२वें वर्षका लेख है। तीसरा लेख स्थानीय वर्धमानमन्दिरके दो स्तम्भोंपर है। ये स्तम्भ अरमोलिदेव-पुरम्के इदैयारन् आटकोण्डान् मावीरन्-द्वारा स्थापित हुए थे।]

[रि० मा० ए० १९१५-१६ क्र० २७६—२८० पृ०९१]

२२८-२३०

चिक्कहल्लि (मैसूर)

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, कन्नड

[यहाँ तीन लेख हैं। एक जिनमूर्तिके पादपीठपर मूलसंघ देसियगणके-कुक्कुटासन-मलधारिदेव के शिष्य शुभचन्द्र सिद्धान्तिदेवके शिष्य दण्डनायक गंगपय्यका नामोल्लेख है। एक दूसरे मूर्तिके पादपीठपर मूलसंघ-देसिगणके दिनकरजिनालयमें हेग्गडे मल्लिमय्य-द्वारा मूर्तिस्थापनाका उल्लेख है। इस मन्दिरके द्वारके लेखमें इस मन्दिरकी स्थापनाका वर्ष सन् ११३८ दिया है।]

[ए० रि० मैं० १९११ पृ० ४४]

२३१

नाडलाई (जि० देसूरी, राजस्थान)

संवत् ११९५ = सन् ११३९, संस्कृत-नागरी

१ ओं नमः सर्वज्ञाय ॥ संवत ११

२ ९५ आसउज वदि १५ कुजे।
३ अद्येह श्रीन (ड्ड) लडर (गि) कायां महा-
४ राजाधिराजश्रीराय (पा) लदेवे। विज -
५ यी राज्यं कुर्वतीत्येतस्मिन् काले
६ श्रीमदजिततीर्थः श्री (ने)मिनाथदेव-
७ स्य दीपधूपनैवे(द्य)पुष्पपूजाद्यर्थे गू -
८ हिलान्वय: राउ० ऊधरणसूनु
९ ना मोक्तारि ठ० राजदेवेन स्वपु-
१० ण्यार्थे स्वीयादानमध्यात् मार्ग[ग]
११ च्छतानामागतानां वृषमानांशेके (पु)
१२ यदाभाव्यं भवति तन्मध्यात् विं(श)
१३ तिमा भागः चंद्रार्कं यावत् देवस्य
१४ प्रदत्तः ॥ अस्मद्वंशीयेनान्येन वा
१५ केनापि परिपंथा न करणीया
१६ अस्मद्दत्तं न केनापि लोप(नी)यं ॥
१७ स्वहस्ते परहस्ते वा यः कोपि लोप -
१८ यिष्यति तस्याहं करे लग्नो
१९ न लोप्यं मम शासनमिदं। लि०-
२० (पां)सिलेन ॥ स्वहस्तोयं साभि -
२१ ज्ञानपूर्वकं राउ० रा(ज)देवे-
२२ न मतु दत्तं ॥ अत्राहं साक्षि-(णा)-
२३ ज्योतिषिक (दूदू)पासूनुना गूगि-
२४ ना। तथा पला० पाला०। पृथि
२५ वा १ मांगु(ला) ॥ देपसा। रा
२६ पसा ॥ मंगलं महा (श्रीः) ॥

[उक्त लेख संवत् ११९५ में चाहमान राजा रायपालके राज्यमें लिखा गया था। इसमें नदूलडागिकाके नेमिनाथमंदिरके लिए ठा० राजदत्त द्वारा कुछ दान दिये जानेका निर्देश है]

[ए० इ० ११ पृ० ३६]

२३२

नाडलाई, (जि देसूरी, राजस्थान)

संवत् १२०० = सन् ११४४, संस्कृत-नागरी

१ श्री संव(त्) । १२०० ज्येष्ट (सु)दि ५ गुरौ श्रीमहाराजाधिराज-श्रीरायपालदेवराज्ये—द्राम –
२ समये रथयात्राया आगतेन रा० राजदेवेन आत्म-पाइलामध्यात् (सर्जसाउतपुत्र) विंसो–
३ पको दत्त । आत्मीयघाणकतैल(ल)मध्यात् । मातानिमित्त पलिकाद्वय । पली २ दत्त ॥ स-
४ हाजनसमीप । जनपदसमक्षाय । धर्माय निमित्त विंसोपको १ पलिकाद्वय दत्त ॥ गोह –
५ *स्थानां सहस्रेण ब्रह्महत्याशतेन च। स्त्रीहत्याभ्रूणहत्या च उतु पाप तेन पापेन लिप्यते स ॥*

[यह लेख संवत् १२०० में राजा रायपालके राज्यमें लिखा गया था। यात्राके लिए आये हुए रा० राजदत्त-द्वारा कुछ दान दिये जानेका इसमें निर्देश है।]

[ए० इ० ११ पृ० ४१]

२३३

कम्बदहल्लि (मैसूर)

सन् ११४५, कन्नड

[इस लेखमें होयसल राजा नरसिंहके दो दण्डनायक मरियाने तथा

भरतिमय्य-द्वारा शान्तीश्वरवसदिके लिए मोदलियहल्लि ग्रामके दानका उल्लेख है। यह दान क्रोधनसंवत्सरका है। तदनुसार सन् ११४५ का यह लेख है। ये दण्डनायक आचार्य गण्डविमुक्तदेवके शिष्य थे।]

[ए० रि० मै० १९१५ पृ० ५१]

२३४

बालेहल्लि (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष ८ = सन् ११४५, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्लदेवके राज्यवर्ष ८, क्रोधन संवत्सरमे फाल्गुन शु० १, रविवारके दिन उत्कीर्ण किया गया था। बम्मिसेट्टिने बाळियहल्लिमे पार्श्वनाथमन्दिरका निर्माण किया तथा उसकी रक्षाके लिए देसिगण, पुस्तकगच्छ, (कोण्डकुन्द) अन्वयके मलधारिदेवको कुछ दान दिया ऐसा इसमें उल्लेख है। मन्दिरको दिये गये कुछ अन्य दानोका भी इसमे उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० १७६ पृ० २२]

२३५

नाडलाई (जि० देसूरी, राजस्थान)

संवत् १२०२ = सन् ११४६, संस्कृत-नागरी

१ ओं ॥ संवत् १२०२ आसोज वदि ५ शुक्रे श्रीमहाराजाधिराज-श्रीरायपालदेवराज्ये प्रवर्त(माने)

२ श्रीनदूलडागिकायां रा० राजदेवठकुरेण प्रव(र्त)मानेन श्रीमहावीरचैत्ये साधुत-

३ पोधननि(म्प्रार्थं) श्रीअभिनवपुरीय बदार्यां अ(त्रे)पु म(म)स्तवणजारकेपु देसी मिलित्वा वृ –

४ (प) म (म) रिन जनु पाइलाल्गमान वतु वीस प्रति रूआ २ किराडउआ गाड प्रति रू १ वग –

५ जारके धर्माय प्रदत्त ॥ लोरकम्य जनु पाप गोहत्यासहस्रेण ब्रह्महत्यासतेन पापेन लिप्यते स ॥

[यह लेख संवत् १२०२ में चाहमान राजा रायपालके राज्यमें लिखा गया था। इसमें नड्डलडागिकाके महावीर मन्दिरमें आये हुए साधुओं-के लिए ठ० रायदेव-द्वारा कुछ दान दिये जानेका निर्देश है।]

[ए० इ० ११ पृ० ४२]

२३६

कुण्टन होसहिल्ल (जि० धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष १० = सन् ११४८, कन्नड

बसवण्ण मन्दिरके समीप शिलापर

[यह लेख खराब हुआ है। चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्लके समय दसवें वर्ष, प्रभव संवत्सरमें यह लिखा गया था। नागिसेट्टि-द्वारा किसी जैन देवताको कुछ जमीन दान दिये जानेका इसमें निर्देश है। कदम्ब-वंशीय तैल मण्डलेश तथा आचलदेवीका भी इसमें उल्लेख है।]

(रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० ६८)

२३७

नीरलगि (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष १० = सन् ११४८, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा जगदेकमल्लके राज्यवर्ष १० में पुष्य शु० १३, गुरुवार, उत्तरायण संक्रान्तिके दिनका है। इसमें नेरिलगेके नाल्प्रभु मल्लगावुण्ड-द्वारा स्वनिर्मित मल्लिनाथ-जिनालयके लिए कुछ भूमि मूलसंघ-

सूरस्थ गण-चित्रकूट गच्छके हरिणन्दिदेवको अर्पित की जानेका उल्लेख है। मल्लगावुण्ड चतुर्थज्ञातिका व्यक्ति था।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई० ६१ पृ० १२४]

२३८

करगुदरि (जि० धारवाड, मैसूर)

सन् ११४८, कन्नड

[यह लेख पौष शुक्ल १, सोमवार, प्रभव संवत्सर, के दिन लिखा गया था। महावड्डव्यवहारि कल्लिसेट्टि-द्वारा करेगुदुरेमे विजयपार्श्वजिनेन्द्र मन्दिर बनवाया गया उसे कुछ जमीन दान देनेका इसमे निर्देश है। यह दान सूरस्थ गण, चित्रकूट अन्वयके वासुपूज्यके शिष्य हरिणन्दिके शिष्य नागचन्द्र भट्टारकको दिया गया था। उस समय महाप्रचण्डदण्डनायक सोवरसका शासन हानुंगल ५०० के प्रदेशपर चल रहा था तथा उसके एक भागपर मण्डलेश कदम्बवंशीय तैलका अधिकार था। इस समय चालुक्य प्रतापचक्रवर्ती जगदेकमल्ल सम्राट् थे।]

[रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० ६७]

२३९

हुलगूर (जि० धारवाड, मैसूर)

१२वीं सदी – मध्य, कन्नड

[यह लेख अधूरा है। चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्लके समय पुरिगेरे तथा बेलवोल प्रदेशोपर महाप्रचण्डदण्डनायक बाचणरस शासन कर रहा था। इसका सामन्त मणलेर कुलका जयकेशी था जो पुरिगेरेके राष्ट्रकूट पदका अधिकारी था। इसके समयकी एक जैन श्राविका नीलिकव्वेका इस लेखमे निर्देश है।]

(रि० सा० ए० १९४४-४५ एफ् ३२)

२४०

शृंगेरी (मैसूर)

शक १०७१ = सन् ११५०, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघला-
२ छन जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन
३ स्वस्ति श्री(म)तु सकवरुषगलु १०७१ ने प्रमोदू-
४ तसंवत्सरद वयिसाखमासद शुद्ध सप्तमि
५ स दन्दु श्रीकाणूरगण मूलसंघ
६ पुस्तकगच्छद हरिय
७ मगल

[यह लेख पार्श्वनाथबसदिके मुखमण्डपके एक पाषाणपर है। वैशाख शु० ७, शक १०७१, प्रमोदूत संवत्सर इस तिथिका तथा मूलसंघ-काणूर-गण-पुस्तकगच्छका इसमें उल्लेख है। लेख अस्पष्ट होनेसे इसका उद्देश आदि विवरण ज्ञात नहीं हो सकता।]

[ए० रि० मै० १९२८ पृ० ११२]

२४१

अरसीबीडि (विजापूर, मैसूर)

चालुक्यविक्रम वर्ष ७६ = सन् ११५१, कन्नड

[इस लेखमें चालुक्य राजा त्रैलोक्यमल्लदेवके सामन्त वीरचाउण्डरस तथा उसकी पत्नी देमलदेवी-द्वारा पौष व० ७, बुधवार, चालुक्य विक्रम वर्ष ७(६)के दिन मूलसंघ देशियगणके आचार्य नयकीर्ति सिद्धान्तदेवके शिष्य नेमिचन्द्र पण्डितदेवको कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई ३३ पृ० ४३]

२४२-२४३

छतरपुर (मध्यप्रदेश)

सं० १२०८ = सन् ११५१, संस्कृत-नागरी

[ये दो लेख लखनऊ म्युजियमकी दो मूर्तियोंके पादपीठोंपर हैं। ये मूर्तिया छतरपुरसे प्राप्त हुई थी। सुविधिनाथ तथा नेमिनाथकी इन मूर्तियोकी स्थापनातिथि आषाढ शु० ५, गुरुवार, सं० १२०८ थी ऐसा लेखमे कहा है।]

[मे० आ० स० ११ (१९२२) पृ० १४]

२४४

स्टेट म्युजियम, भरतपुर (राजस्थान)

सं० ११०९ = सन् १०५२, संस्कृत-नागरी

[इस लेखमे ज्येष्ठ शु० (?) रविवार, संवत् ११०९ के दिन पार्श्वनाथमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। लेख मूर्तिके पादपीठपर उत्कीर्ण किया है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० १६३ पृ० २१]

२४५

शेडबाल (बेलगांव, मैसूर)

शक १०७५ = सन् ११५३, कन्नड

[यह लेख बसवण्णमन्दिरमे लगा हुआ है। इसमे सेणिग कोत्तलि-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरके लिए कुछ करोंके उत्पन्नके दानका उल्लेख किया है। तिथि चैत्र शु० ५, रविवार, श्रीमुख संवत्सर शक १०७८ ऐसी दी है। किन्तु तिथि आदिकी गणनानुसार यह शक १०७५ का लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १८७ पृ० ३६]

२४६

बेलूर (मैसूर)

शक १०७४ = सन् ११५२, कन्नड

१ निर्दोषशास्त्रवाराशिपारगं । श्रीवर्धमानस्वामिगल धर्मतीर्थ प्र–
२ मत्तिद भद्रबाहुभट्टारकरिंद । भूतबलिपुष्पदन्तस्वामिगलिंद । एकसन्धि-
सु(मतिगलिंद अ)–
३ कलंकदेवरिं । वक्रग्रीवाचार्यरिं । वज्रनंदिभट्टारकरिंद
सिंहण(न्दि कनक-)
४ सेन वादिराजदेवरिं । श्रीविजयदेवरिं । शान्तिदेवरिं पुष्प-
सेन(देवरिं ।)
५ अजितसेनपण्डितदेवरिं । कुमारसेनदेवरिं । मल्लिषेण मलधा-
रि(देव)रिं(द)
६ (श्रु)तकीर्ति श्रीपाल वरगाणिश्रीपाल विन्ददवादिमदविदराल ॥
तमगे –
७ (अ)मर्दिंति धरंगन्दु नम्म सुगदाल् परतर्कवाराशिविभ्रमनापां
८ स्त कोलाडिसितु पेञ्जिनेमक श्रीपाल्योगीन्द्र ॥ आवन
सिंपयमो
९ (ग)वनप्रवचोविन्यास निसगविजयविलास । कश्चिद् वाद-
विनोदकोविद
१० दरु कश्चन कथनादि गमको वाग्मी पर कश्चन । पाडित्य
मुचतुर्विधेपि निपुण श्रीपालदेव पुनस्तर्कव्याकरणागम-
११ प्रवणधीरत्रैविद्यविद्यानिधि । अवर सधर्मर् । वर्णाघातद
सूचितमार्गदिन्धामल्लभ मालुंडियरकामगंगवरेंडे-
१२ रल्के निरर्गलमादत्तनन्तर्वीर्यव्रतियोल् ॥ आ श्रीपालत्रैविद्यदेवर
शिष्यर् ॥ श्रीमत्त्रैविद्यविद्यापतिपदकमलारा-

१३ धनालब्धबुद्धिः सिद्धांतांभोनिधानप्रविसरदमृतास्वादपुष्टप्रमोदः। दीक्षाशिक्षासुरक्षाक्रमकृतिनिपु-
१४ णः सन्ततं भव्यसेव्यः सोयं दाक्षिण्यमूर्तिर्जगति विजयते वासुपूज्यव्रतींद्रः ॥ सत्यशौचकरुणागुणोत्करैरस्य-
१५ क्तलोभमदमानरोपणैः। शुद्धवृत्तियुतबोधदर्शनैर्वादिराज मुनिराज राजसे ॥ श्रीपालत्रैविद्यश्रीपादप-
१६ मान्तरंगमंगतभृंगं श्रीपरिपूर्ण होय्सलभूपालकमंत्रि माचदण्डा-धीशं॥ जिननाथं पोरेद नृपालतिलक श्री-
१७ विष्णु (भूपा)लकं जनकं सं एरेयंगवेग्गडे जगद्विख्याते राजव्वे ताय् तनगीन्नम्मडिदण्डनायकने तां माचं महामंत्रि
१८ येन्देनला माचिणदण्डनाथने वलं धन्यं पेरं धन्यने ॥ सुरगुरु-मंत्रक्रमदोल् धुरदोल् सिंहप्रतापनप्र-
१९ तिमतेजं सुरतरु वितरणगुणदिं नरसिंहमहीशमंत्रि माचचमूपं ॥ स्वस्ति समस्तप्रशस्तिसहितं श्री-
२० मन्महाप्रधानं माचियणदण्डनायकं तनगे व्रवगुरुगलुं श्रुतगुरु-गलुमेनिसिद परवादिमल्ल-
२१ वादीभसिंह महामण्डलाचार्य श्रीपालत्रैविद्यदेवर् माडिसि-दादिदेवर बसदिय केलसद कोरतेगं देवर्
२२ अष्टविधार्चनेग ऋषियराहारदानक्कवागि शकवर्ष १०७६ नेय श्रीमुखसंवत्सरदुत्तरायणसंक्रमण-
२३ दंदु महादानंगलं माडु तिर्प समयदोले माचिणदण्डनायकं विन्नपं गेय्यल् होय्सलश्रीनारसिं-
२४ हदेवर् कब्बुणाड नागरहालं सर्वबाधापरिहारवागियादिदेवर्गे धारापूर्वकं माडि कोट्ट दत्तिय-
२५ तु देवदानवाद नागरहाल चतुःसीमेयप्पुदु मूडलु कल्ल दोणे संचरिचल्ल। आग्नेयदल्लु कडबदको

२६ ल्द द्वारयणि मागद्वारि बन्द् हेब्बट्टे। तेंकत् जाम्बद्हल्ल रिन्
डडुवलु कन्लिरहरल। नेरूत्यदल् हुलियक-

२७ रेगल हडुवलु हुलियद्दल। वायव्यदल् मूल्द हिरियकणि।
बडगल् मागडेगे डाड हडारियव-

२८ डगण मोरडि। ईशान्यदोल् कोडियाळल्लि तेकलु नड वल्लु।
इता चतु साम बेरसु नागरहाल बल्लजिना (ल)य-

२९ क्क भरतमस्यजागि पडिसलिसुववरों गगेय तडियल् मायिर
कविलय कोडु कोलगुम होद्मलु कट्टिसि चतु-

३० गुत्तरायणसक्रमणग्रहणव्यतीपातदु दान माडिद फल्वी
धर्मम कि-

३१ यदा कविलेयुमना ब्राह्मणरमना तिथिवारदलु-

३२ मम प्रतिपालिसुत्तुदु॥ स्वदत्ता परदत्ता वा या हरत

३३ जायते क्रिमि॥ मगल महा श्री श्री पालित

३४ जालोल विशदयशोलील गुणसेनपडित बुधनि

३५ पुरदर गुणसेनपडित

[यह लेख केशवमन्दिरके छतमें लगा पाया गया। इसमे पहले वर्द्ध-
मानस्वामी (महावीर) से प्रारम्भ कर कई आचार्योकी परम्परामे श्रीपाल
त्रैविद्यदेवका वर्णन किया है। इनके द्वारा निर्मित आदिदेवकी वसदिके
लिए होयसल राजा नरसिंहके सेनापति मानियगने नागरहाल ग्राम दान
दिया था। दानकी तिथि शक १०५६ की उत्तरायणसक्रान्ति थी। लेखमें
श्रीपाल त्रैविद्यके गुरुबन्धु अनन्तवीर्य तथा शिष्य वासुपूज्य एव वादिराज-
का भी वर्णन है। अन्तमें गुणसेन पण्डितका भी उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९३८ पृ० १०२]

२४७

बलगेरि (बेलगाँव, मैसूर)

शक १०७८ = सन् ११५६, कन्नड

[इस लेखमें चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लके राज्यकालमें कलचुरि वंशके बिज्जल (द्वितीय) तकके सामन्तोंकी वंशावली दी है। बिज्जलके बन्धु मैलुगि तथा उसकी पत्नी लक्ष्मादेवीका शासन बेलवल ३०० प्रदेशपर चल रहा था उस समय राजाके मन्त्री कालिदास चमूपने पार्श्वनाथतीर्थ-की यात्रा कर एक मन्दिर बनवाया तथा उसके लिए कुछ दान दिया। इसकी तिथि पुष्य शु० (१२), धातु संवत्सर, शक, १०७८, उत्तरायण-संक्रान्ति ऐसी दी है।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १७५ पृ० ३५]

२४८

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

सन् ११५६, तमिल

[यह लेख चोल सम्राट् राजराजदेवके १०वें वर्षमें लिखा गया था। इस मन्दिरमें सन्ध्यासमय दीप प्रज्वलित रखनेके लिए मन्दिर-अधिकारी-द्वारा ३०० काशु स्वीकार किये जानेका इसमें निर्देश है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १४१]

२४९–२५०

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

सन् ११५६-५७, तमिल

[इस लेखमें जयंगोण्डशोलमण्डलम् प्रदेशके ऊन्दकाडु ग्रामके एक वेल्लाल-द्वारा करन्दैस्थित जिनमन्दिरमें दीप प्रज्वलित रखनेके लिए कुछ

गायें दान दी जानेका उल्लेख है। यह चोल सम्राट् राजराजदेवके १०वें वर्षमें दिया गया था। राजराजदेवके ११वें वर्षका एक लेख यहीं है। इसमें पर्नैयूर्नाडु प्रदेशके अम्मोलिदेवपुरम स्थानके नगरत्तार् लोगों-द्वारा तिरुप्परम्बूरके जिनमन्दिरमें प्रवोधन समारोहके अवसरपर दिये गये दीप-दानोंका विवरण दिया है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३१-१३२]

२५१

करडकल (रायचूर, मैसूर)

शक १०८१ = सन् ११५९, कन्नड

[यह लेख कलचुर्य राजा त्रिभुवनैकवीर बिज्जलके राज्यकालमें आषाढ, दक्षिणायन संक्रांति, शक १०८१, प्रमाथि संवत्सर, गुरुवारके दिन लिखा गया था। इसमें एक सेनापति तथा पचलदवीका उल्लेख है तथा मूलसंघ देसिगण-पुस्तकगच्छके किसी आचार्यको दान दिये जानेका उल्लेख है। इस समय यह लेख वीरभद्रमन्दिरमें लगा है।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० २३८ पृ० ८१]

२५२

केरेसन्ते (कडूर, मैसूर)

१२वीं सदी (सन् ११५०), कन्नड

१ बहुधान्यसंवत्सरद माघ सु १५ रलु
२ श्रीमत् प्रतापचक्रवर्ति होयसण श्री
३ वीर नारसिंहदेवरसर अङकेय पा-
४ रिसन्वन मग चिक्कमल्लण्णगे केरेयमधे-
५ य द्रविलसंघद आदिनाथदेवर पार्श्वदेवर
६ बसदिगलिगे आ केरेयसथेय हिर्यकेरेय

७ केलगुलंतह त्थलवृत्तिय तोट गद्दे बेद्दलु म-
८ ने आ देवरुगलिगुलंतह समस्ततेजस्वा-
९ स्यवनु श्री श्रीवीरनारसिंहदेवरमरु आ सल-
१० णणगे दानवागि धारापूर्वकं माडि आचंद्रार्क-
११ तारंबर सल्वंतागि कोट्टरु मंगल महा श्री श्री

[इस लेखमे होयसल राजा नरसिंह-द्वारा केरेयनथे स्थित द्रविलसंघकी आदिनाथ-पार्श्वनाथ वसदिके लिए चिक्कमल्लणणको कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है। लिपि १२वी सदीकी है तदनुसार यह लेख बहुधान्य संवत्सर = सन् ११५९ का होगा। तब नरसिंह प्रथमका राज्य चल रहा था। इस समय यह लेख जनार्दनमन्दिरमे लगा है।]

[ए० रि० मै० १९४५ पृ० ११२]

२५३

हुलियार (मैसूर)

१२वीं सदी-मध्य, कन्नड

[इस लेखमे होयसल राजा नरसिंह १ के समय चान्द्रायण देवके शिष्य सामन्त गोवकी पत्नी श्रीयादेवी-द्वारा एक जिनमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। इस समय यह पादपीठ विष्णुमूर्तिके लिए उपयोगमे लाया जाता है।]

[ए० रि० मै० १९१८ पृ० ४५]

२५४

हरिद्वार (उत्तरप्रदेश)

सं० १२१६ = सन ११५९, संस्कृत-नागरी

[यह लेख पीतलकी चौबीसी-मूर्तिके पीठपर है। इसमे मूर्तिकी स्थापनातिथि आषाढ ९, सं० १२१६ दी है। मूर्ति इस समय लखनऊ म्युजियममे है।]

[मे० आ० स० ११ (१९२२) पृ० १५]

२७५

शृगेरी (मैसूर)

शक १०८२ = सन् ११६०, कन्नड

१ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छन (।)
२ जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन (॥)
३ स्वस्ति श्रीमत् सकवर्षं द १०८२
४ विक्रमसवत्सरद कुम्भ शु-
५ द्ध दशमि बृहवारद-दु श्रीमन्निडुगोड
६ विजयनारायण शान्तिसेट्टिय पुत्र बा-
७ सिसट्टियर अक्क सिरियवेसेट्टियर म-
८ गलु नागवेसेट्टियर मगलु सिरिय-
९ ऐसेट्टिनिग हेम्माडिसेट्टिग सुपुत्रन-
१० प्प मारिसेट्टिगे परोक्षविनयक्के मा-
११ डिसिद बसदिगे बिट्ट दत्ति केरेय केल्ग-
१२ ण हिरिय गद्देय बसदिय बडगण होम-
१३ यु मडियु हाल्येयु नडुवण हुदुविन होरद
१४ मण्णु कण्डग सुल्लिगोड अरगण्डुग मण्णु
१५　　बणजमु नानदेसियु बिट्टय
१६　　मल्वेगे हाग हज हात्तिय मल
१७　　ले मेळसिन मारक्क हागमु
१८ मत्त पोत्तोज्वलुप्पु हेरिगय्वत्तेले अरिसिनद मल्वेगे बीसक्के बिट्ट
　　तपिदडे तप्पिदवनु गगेय-
१९ लु साइर कविलेय कोण्ड पातक

[यह लेख पार्श्वनाथमन्दिरके सभागृहमें है। इसकी तिथि शक

१०८२, विक्रमसंवत्सर, कुम्भ मास शु० १० गुरुवार ऐसी है। इस दिन इस मन्दिरके लिए कुछ भूमि तथा व्यापारियों-द्वारा कुछ करोंका उत्पन्न दान दिया गया था। यह मन्दिर हेम्माडिसेट्टिकी पत्नी सिरियव्वेके पुत्र मारिसेट्टिकी स्मृतिमें बनवाया गया था। मन्दिरके गर्भगृहकी पार्श्वनाथ-मूर्तिके पादपीठपर इसी समयकी लिपिमें निम्न वाक्य खुदा है—श्रीमत्-पारिसनाथाय नमः।]

[ए० रि० मै० १९३३ पृ० १२२, १२५]

२५६

बाबानगर (विजापूर, मैसूर)

शक १०८३ = सन् ११६१, कन्नड

[यह लेख कलचुर्य राजा बिज्जणदेवके समय शक १०८३, विक्रम संवत्सरका है। इसमें मूलसंघ-देसिगणके गंगलिवेडके आचार्य माणिक्य-भट्टारकका तथा मैलुगि नामक शासकका उल्लेख है। इसने कन्नडिगेके जैन बसदिको कुछ दान दिया था।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ पृ० १३० क्र० ई १२०]

२५७

गुत्तल (धारवाड, मैसूर)

शक १०(८४) = सन् ११६२, कन्नड

[यह लेख गुत्त वंशके महामण्डलेश्वर विक्रमादित्यरसके समय पौष शु० १५, सोमवार, शक १०(८४) का है। इसमें केतिसेट्टि-द्वारा निर्मित पार्श्वदेवमन्दिरके लिए राजा-द्वारा भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है। पुस्तकगच्छके मल्धारिदेव तथा सोमेश्वरपण्डितदेवका भी उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई ५१ पृ० ९६]

२५८

हालुगुड्डे (मैसूर)

शक १०८४ = सन् ११६२, कन्नड

१ नमस्तुंगशिरश्चुम्बिचन्द्रचामरचारवे । त्रैलोक्यनगरारम्भमूलस्त म्भाय शम्भवे ॥ स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्द

२ अदायमहामण्डलेश्वरनुत्तरमधुराधीश्वर पट्टिपोम्बुच्चपुरवरेश्वर पद्मावतीलब्धवरप्रसाद मृगमदामोद सन्तत-

३ सकलजनस्तुत्य नीतिशास्त्र-विदग्धसर्वज्ञ-नामादिप्रशस्तिसहित श्रीमन्महामण्डलेश्वर प्रतापभुजबल

४ शान्तरदेवर् शान्तलिंगेसासिरम सुखसकथाविनोददिं राज्य गेय्युत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि समधिगतपंच-

५ महाशब्द महाप्रचण्डकुमार वेदण्डपचानन रिपुकुमारतारक- षडानन अरसकगाल विजयलक्ष्मीलोल श्रीमत्-

६ होसगुन्दद बीररसर मलुसान्तलिंगेयुम अग्रहारमुम सुखदिं- नालुत्तमिर शकवर्षं १०८४ नेय चित्रभानुसंवत्सरद

७ वैशाख सुद्ध १० बड्डवारदन्दु कटद दण्डु अलिय बम्मणेयनु पाण्ड्यरमनुम्मलिगारनु समस्तसाधन वेरसि बूरलु बिट्टु

८ बत्ति बहलि नेलिरडेयलु जिनपादशेखर सन्धिविग्रहि माचि- राजन ॥ क० तल्पारिनायकंग एलेयल् बोप्पेयव्वे नायकित्ति

९ मग भूवलयदोल् अधिक पुट्टिद कलिगल मुख्यतिलक गोग्गि- मण्डरदत्र । रूपिनालु कामसत्रिभ रूपिनोला नरतनूज अभिमन्यु

१० ता बेप जन्काबेडेयोलु मार्पडे कलि गोग्गि कल्पवृक्ष जगदोल् धुरदोल् अरातिभुभुजरनन्तघटिदरसकगाल वीर

११ नल्लरेरिं नेमस गाग्गणन्तिरिवहि विर्द बीरर नोरनेत्तरिं नेणन रणदद दिण्डेगल्लगलिं सयकर पुन विक्रम कलिग

१२ ना जगदेकवीरन । अणियरमोड्डिदङ्गणद वीररनान्तिसुतिर्प विल्ल वल्लणिय तुरंग साधनमनान्तिरिवल्लि महामयं

१३ (ने)णमय खण्ड दिण्डि नोरेनेत्तर कार्पुरमन्टु नोर्पोडेनणकमो गोग्गियान्तिरिद विक्रममाहवरंगभूमियो (ल्)

१४ कलहदोलान्त वीरचतुरंगवलगलनान्तु गोग्गि तोल्वालघटिन्दे तूल्दिरिये विदरिमेनेय लोहिताम्बुविं पलवु सिरंगल....

१५ रल्द वोलोप्पिरे वीररट्टेगल् तोलतोलगेन्दु तल्तिरिव सम्भ्रम संगररंगभूलियोल्

१६ ....णमय लोहितवारि नेरुद केसरुगल कुणिवट्टेगल् एन्दडिदेन-णकमो विक्रमद

१७ ....वागलोन्दु तिरर्विं विडुवागलु नूरु परिये सायिरवरियं नेडुवल्लि कोटियेने पोडवियोल....

१८ ....रु ॥ तरिमन्दोड्डिदरातिय मरुवक्रमनान्तु गोग्गि यिरियल् धुरदोलु परिदलेयोलु मह....

१९ ....दलव ॥ नायकतन मुम्बरिसिद नायकरिदिरागि गोग्गियोलु तागुडदुं मायकदिनेच्चु तू....

२० ....देवरदेन पेलुवे ॥ मार्मलेदोड्डिदन्यनृपसैन्यपयोधिगे वीरभूभुजं नूर्मडि वाडवानल

२१ ....नोर्पुदुं कूर्मनखाग्रमेम्बुरिय नालगेगल् विडेयट्टिवेवेदुं मुम्म-लियायतु वैरिव....

२२ ...कृताग्रनो ॥ धुरदोलरिसेनेयं निर्भरमिरियल् गोग्गि वैरिवि-क्रान्तमरल् भरदिन्....तनुवनुचा

२३ ....दोला सिन्धुसुतनं पोल्तं ॥ सन्ततमोड्डि निन्दरिवलाल्गल-नान्तिरिवल्लि वैरिविक्रान्तसरालिनल् तनुवनुचा

२४ ....ग्रदोल् ॥ मन्तनसूनुवेन्तु सरमेयेयोलोप्पिदनन्ते गोग्गि विक्रान्तमनासेवट्टु सरलोट्टिदनाह...

२५ योल् ॥ सगरदोलिरिद् धीरमे श्रगारममक्केवत्त गोग्गिय तम्मुत्मगदोल् इद्दुर्यद निर्लिपागनेयर्

२६ (अ)मरावतिय ॥ अन्तु तलप्रहारिनायकन मग गोग्गिय नायक कटकमनान्तिरिदु तुमुल

२७ समान्तरननिमिद् श्रीवल्लभन्दनप्रपुत्र प्रतापभुनबल मान्तर-मेनिमिद् तैल्पदेवर् बिदियम्मरसन पुत्र श्रीमतु

२८ र तम्मरसर हेमरलु (?) गोट्टनेन्द्दु (?) हाळुगुड्डेय त्रिमोगा-भ्यन्तरसिद्धियागि कल्लु नट्ट कारण्य गेय्दु कोट्ट होस

२९ वंर मने वडि (?) इविन कैयोल्गे हाद वैय मक्कि (?) सहितमागि कोट्टर् ॥ मगल महा श्री श्री

[यह लेख वैशाख शु० १०, बुधवार, शक १०८४, चित्रभानु सवत्सरके दिन लिखा गया था। पट्टिपोम्बुच्चके सान्तरवशीय राजा श्रीवल्लभदेवके पुत्र तैलपदेव-द्वारा हाळुगुड्डे ग्राम दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है। तलप्रहारि नायकके पुत्र सेनापति गोग्गिकी पाण्डयरमके विरुद्ध लडते हुए मृत्यु हुई थी। गोग्गिके कुटुम्बियोंको यह ग्राम दान दिया गया था। लेखमें तैलपदेवको पद्मावतालब्धवरप्रसाद यह विशेषण दिया है तथा गोग्गिको जिनपादशेखर कहा है। तैल्पदेवके अधीन मेलु-सातलिगे प्रदेशके शासक बीररसका भी उल्लेख किया गया है।]

[ए० रि० मैं० १९२३ पृ० ७४]

२५१

एकसम्बि (बेलगांव, मैसूर)

शक १०८७ = सन ११६५, कन्नड

[यह लेख शिलाहार राजा गण्डरादित्यके पुत्र विजयादित्यके समय-का है। रट्टवशीय कत्तम (कार्तवीर्य) का सेवक मारगौड था। इसकी

वंशपरम्परा इस प्रकार दी है – मारगौड – आचगौड – होल्लिगौड – जिन्नण, कालण तथा मट्टुवण। इनमें जिन्नण गण्डरादित्यका सेनापति था तथा काल्लण विजयादित्यका। कालणकी पत्नी लच्छले थी तथा उसे तीन पुत्र थे – जिन्नण, आचण तथा रामण। कालणने एक्कसम्बुगेमें नेमिनाथबसदि बनवायी तथा उसके लिए यापनीय संघ – पुन्नागवृक्षमूलगणके महामण्डलाचार्य विजयकीर्तिको कुछ भूमि दान दी। विजयकीर्तिकी गुरु-परम्परा यह थी – मुनिचन्द्र-विजयकीर्ति-कुमारकीर्ति त्रैविद्य-विजयकीर्ति (प्रस्तुत)। इस मन्दिरकी कीर्ति सुनकर राजा कार्तवीर्यने भी इसके दर्शन किये तथा फाल्गुन शु० १३ शक १०८७ को विजयकीर्तिको कुछ भूमि दान दी।]

[ए० रि० मै० १९१६ पृ० ४८]

२६०

मन्तगि (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष १० = सन् ११६५, कन्नड

[यह लेख कलचुर्य राजा बिज्जणदेवके राज्यवर्ष १०, पार्थिव संवत्सरमें (?) मासके शु० ५, गुरुवारके दिन लिखा गया था। पान्थिपुर (वर्तमान हनगल) के कलिदेवसेट्टि-द्वारा चतुर्विंशति तीर्थकरमूर्तिकी प्रतिष्ठा तथा मन्दिरके निर्माणका इसमें उल्लेख है। इसके लिए नागचन्द्र भट्टारकको कुछ दान दिया गया था। हानुंगल नगर तथा कलिदेवसेट्टिकी विस्तृत प्रशंसा की है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २०७ पृ० २५]

२६१

अरसीबीडि (विजापूर, मैसूर)

राज्यवर्ष १२ = सन् ११६७, कन्नड

[इस लेखमें कलचुर्य राजा भुजबलमल्लके राज्यवर्ष १२, सर्वजित

संवत्सरमें पुष्य शु० १४, सोमवारके दिन सिन्द कुलके विट्टरसके पुत्र हालरस द्वारा गुणवेटगिय वसदिके लिए कुछ करोंके उत्पन्न दान देनेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई ४० पृ० ८६]

२६२

नदिहरलहल्लि (धारवाड, मैसूर)

शक १०९० = सन् ११६८, कन्नड

[इस लेखमे कलचुर्य राजा बिज्जणदेवके समय शक १०९०, सर्वधारि संवत्सर, चैत्र पूर्णिमा, सोमवारके दिन जैन साधु-साध्वियोंके आहारदानके लिए कुछ भूमि दान दी जानेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० ई ५८ पृ० १५२]

२६३

हलसगि (विजापूर, मैसूर)

शक १०९० = सन् ११६८, कन्नड

[इस लेखमें शक १०९० में चन्द्रग्रहणके समय वीरजिनालयके लिए कुछ भूमिदानका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३७-३८, क्र० ई० ७५ पृ० २०१]

२६४

हिरेमन्नूर (धारवाड, मैसूर)

शक १०९१ = सन् ११७०, कन्नड

[यह लेख पुष्य शु० ५, गुरुवार, शक १०९१ विरोधि संवत्सरका है। इसमें सिन्द कुलके महामण्डलेश्वर चावुण्डरस-द्वारा हिरियमणियूरके जैनशालाके अधिष्ठायक दामवोवकी प्रार्थनापर कुछ भूमिके दानका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२७-२८ क्र० ई ४ पृ० २०]

२६५

बिजोलिया (राजस्थान)

संवत् १२२६ = सन् ११७०, संस्कृत-नागरी

१ सिद्धम् ॥ ॐ नमो वीतरागाय । चिद्रूपं सहजोदितं निरवधि ज्ञानैकनिष्ठापितं नित्योन्मीलितमुल्लसत्परकलं स्यात्कारविस्फारितं । सुव्यक्तं परमाद्भुतं शिवसुखानन्दास्पदं शास्वतं नौमि स्तौमि जपामि यामि शरण तज्ज्योतिरात्मो(त्थि)तं ॥ .॥ नास्तं गतः कुग्रहमग्रहो न नो तीव्रतेजा…

२ …नैव सुदुष्टदेहोऽपूर्वो रविस्तात् स मुदे वृषो वः ॥२॥ [स] भूयाच्छ्रीशांतिः शुभविभवभंगोभवभृतां विभोर्यस्याभाति स्फुरितनखरोचि. करयुगं । विनम्राणामेषामखिलकृतिनां मंगलमयीं स्थिरीकर्तुं लक्ष्मीमुपरचितरज्जुं व्रजमिव ॥३॥ नासाश्वासेन येन प्रबलबलभृता पूरितः पांचजन्यः

३ …वरदलमलि(नीपाद)पद्माग्रदेशैः । हस्तांगुष्टेन शांर्गं धनुरतुलबलं कृष्टमारोप्य विष्णोरंगुल्यां दोलितोयं हलभृद्वनितं तस्य नेमेस्तनोमि ॥४॥ प्रांशुप्राकारकांतात्रिदशपरिवृढव्यूहरुद्धावकाशां वाचालां केतुकोटि(क्व)णदनणुमणीकिंकिणीभिः समंतात् । यस्य व्याख्यानभूमीमहह किमिदमित्याकुलाः कौतुकेन प्रेक्षंते प्राणभाजः

४ (स भुवि) विजयतां तीर्थकृत् पार्श्वनाथः ॥ ५ ॥ वर्धतां वर्धमानस्य वर्धमानमहोदयः । वर्धतां वर्धमानस्य वर्धमान(महो)दयः ॥६॥ सारदां सारदां स्तौमि सारदानविसारदां । भारतीं भारतीं भक्तभुक्तिमुक्तिविशारदां ॥७॥ निःप्रत्यूहमुपास्महे जिनपतीनन्यानपि स्वामिनः श्रीनाभेयपुरःसरान् परकृपापीयूषपाथोनिधीन् । ये ज्योतिःपरमागमाज-

५ तया मुक्तामालाभा(श्रि)ता श्रीमन्मुक्तिनितम्बिनीस्तनतटे हारश्रियं बिभ्रति ॥८॥ सत्यानां हृदयाभिरामरमति सद्म-(म्म)स्थिति क्ष्मान्मलनसगति शुभनति नित्ता(ना)धा-द्रते । जीवानामुपकारकारणरति श्रेय श्रिया सम्मृति देयान्ते भवभूति शिव(म)नि जैने चतुर्विंशति ॥ ९ ॥ श्रीचाहमानक्षितिराजवंश पौर्वाप्यपूर्वा न जडाद्भवन्द्व । भिन्नं न चा

६ (गो न च) रध्रयुक्तो नो नि फल सायुतो नतो नो ॥१०॥ लावण्यनिर्मलमहाऽवलितागयष्टिश्चोच्चलच्चतुचिरय परिधानश्री-(श्री । उत्तु)गपर्वतपयोधरभारभुग्ना शाकम्भरानति जनीव ततोपि विष्णो ॥११॥ विप्र श्रीवत्सगोत्रेभूदहिच्छत्रपुरे पुरा । सामन्तोनतसामन्त पूर्णतल्लो नृपस्तत ॥१२॥ तस्माच्छ्री-जयराजविग्रहनृपौ श्रीचन्द्रगोपेन्द्रकौ तस्माद्(ल)भगूवको शशि-

७ नृपो गूवाकमचन्दनौ । श्रीमद्वप्पयराजविंध्यनृपती श्रीसिंह-राड्विग्रहौ । श्रीमद्दुर्लभगुदुवाक्पतिनृपा श्रीवीर्यरामोऽनुज ॥१३॥ (चामुंडो) वनिपोऽतिदव राणकवर श्रीसिंघटो दुस-लस्तभ्राताथ ततोपि वीसलनृप श्रीराजदेवीप्रिय । पृथ्वीराज-नृपोथ तत्तनुभवो रासल्लदेवीविभुस्तत्पुत्रो जयदेव इत्यवनिप सोमल्लदेवीपति ॥१४॥ इत्या वच्चिगसिंघलाभिधयसोराजादि-वीरत्रय ।

८ क्षिप्र क्रूरकृतानवक्त्रकुहरे श्रीमार्गदुहान्वित । श्रीमत्सा(ल्ह)ण-दण्डनायकवर सग्रामरंगागणे जीवन्नेव नियन्त्रित करभके येन (जि)मात् ॥१५॥ अण्णाराजोस्य सूनुर्हृतहृदयहरि मत्त-वाशिष्टसीमो गार्भार्यदायवर्य समभवद(चि)रात्स्वमध्यो न दीन । तच्चित्र ज न जाड्यस्थितिरवृत महापक्षहतुर्न मध्या न श्रीमुक्तो न दोषाकररचितरतिर्न द्विजिह्वाधिमव्य ॥१६॥

९ यद्गार्ज्यं कुशवारणं प्रतिकृतं राजांकुशेन स्वयं येनात्रैव तु चित्रमेतत पुनर्मन्यामहे तं प्रति । तच्चित्रं प्रतिभासते सुकृतिना निर्वाणनारायणन्यक्काराचरणेन भंगकरणं श्रीदेवराजं प्रति ॥१७॥ कुवलयविकासकर्त्ता विग्रहराजोजनि (स्तु) नो चित्रं । तत्तनयस्त-च्चित्रं य(त्) जडक्षीणमकलंकः ॥१८॥ मादानत्वं चक्रे मादान-ण्डैः परस्य मादानः । यस्य दृधत्करवालः करतलाकलितः

१० करतलाकलितः ॥१९॥ कृतांतपथसज्जोभूत् सज्जनो सज्जनो भुवः । येकृतं कुंतपालोगा(द्यत) ये कुं(त)पालकः ॥२०॥ जावालिपुरं ज्वाला(पु)रं कृता पल्लिकापि पल्लीव । नड्डल-तुल्यं रोपान्नड्डूल येन शौर्येण ॥२१॥ प्रतोल्यां च वलभ्यां च येन विश्रामितं यशः । ढिल्लिकाग्रहणश्रांतमाशिकालाभलंभितं ॥२२॥ तज्ज्येष्ठभ्रातृपुत्रोऽभूत् पृथ्वीराजः पृथूपमः । तस्माद्-जितहेमांगो हेमपर्वतदानतः ॥२३॥ अतिधर्मरतेना-

११ पि पार्श्वनाथस्वयंभुवे । दत्तं मोराझरीग्रामं भुक्तिमुक्तिश्च हेतुना ॥२४॥ स्वर्णादिदाननिवहैर्दशभिर्महद्भिस्तोलानरैर्नगर-दानचयैश्च विप्राः । येनार्चिताश्चतुरभूपतिवस्तुपालमाक्रम्य चात्मनसिद्धिकरी गृहीतः ॥२५॥ सोमेश्वराल्लब्धराज्यस्ततः सोमेस्वरो नृपः । सोमेस्वरनतो यस्माज्जनः सोमेस्वरोभवत् ॥२६॥ प्रतापलंकेस्वर इत्यभिख्यां यः प्राप्तवान् प्रौढपृथुप्रतापः । यस्याभिमुख्ये वरवैरिमुख्याः केचिन्मृता केचिदभिद्रुताश्च ॥२७॥ येन श्रा-

१२ पार्श्वनाथाय रेवातीरे स्वयंभुवे । सासने रेवणाग्रामं दत्तं स्वर्गाय कांक्षया ॥२८॥ छ ॥ अथ कारापकवंशानुक्रमः ॥ तीर्थे श्रीनेमि-नाथस्य राज्ये नारायणस्य च । अंभं धिमथनादेवचक्रिभिर्वल-शालिभिः ॥२९॥ निर्गतः प्रवरो वंशो देववृंदैः समाश्रितः । श्रीमालपत्तने स्थाने स्थापितः शतमन्युना ॥३०॥ श्रीमालशैलप्र-

वरावचूल पूर्वोक्तसत्वगुर सुगृत ।श्राग्याटवशीस्ति श्रभूव तस्मिन् मुक्तापमो वैश्रवणाभिधान ॥३१॥ तडागपत्तने यन कारित

१३ जिनमंदिर । (तीत्रा) श्राना यशस्तचमस्त्र स्थिरता गत ॥३२॥ याचोकाच्छ्रमुचिम्रमाणि व्याघ्रेरकादौ जिनमंदिराणि । कीतिद्रुमारामसमृद्धिहृताविभाति कदा इव यान्यमदा ॥३३॥ कल्लोल्मामलितर्कानिसुधासमुद्र मद्बुद्धिश्रधुरवभूधरणे ध(रश) । पाकारस्रणप्रगुणातराक्ष्मा श्रीचच्चुलक्यतनय पद्भूत् ॥३४॥ शुभकरस्तस्य सुतोनिष्ट शिष्टेभहिप्दै परिकायकार्ति । श्राजामटोसून तदगनन्मा यदगनन्मा खलु पुण्यराशि ॥३५॥ मंदिर वर्ध

१४ मानस्य श्रीनाराणकसस्थित । भाति यत्कारित स्वीयपुण्यस्कधमिवोज्वल ॥३६॥ च्चारश्चतुराचारा पुत्रा पात्र शुभश्रिय । अमुष्यामुष्यधर्माणाप्रभूवुभाययोर्द्वयो ॥३७॥ एकस्या द्वावजायेता श्रीमडाम्बटपश्र्वो । अपरस्या (मुनी जातौ श्रामल) क्ष्मटडसत्रा ॥३८॥ पाकाणा नरवरे वीरवेश्मकारणपाटव । प्रकटित स्वीयवित्तेन धातुनेव महातल ॥३९॥ पुत्रौ पवित्रा गुणरत्नपात्रौ विशुद्धगात्रौ ममशालमर्यौ । वभूवतुर्ल्क्ष्मटकस्य जैत्रौ मुनींदुरामेंद्रभिधौ प्रशस्तौ ॥४०॥

१५ षट्त्रडागमबद्धसौहृदभरा षड्नीतरक्षेश्वरा षड्भद्प्रियवश्यता परिका षट्कर्मवत्कृतादरा । षट्खटावनिर्कातिपालनपरा षाड्गुण्यचिंताकरा षड्दृष्टरचुनमास्करा समभन षट् देशलस्यात्मजा ॥४१॥ श्रेष्ठी दुधकनाथक प्रथमक श्रामोसलो वागडिदेवस्पर्शं इतोपि मोयकनर श्रीराहको नामत एते तु कमतो जिनन्त्त्रयुगाभानैकभुगोपमा मान्या राजशतैवदान्यमनयो राजति जबूल्मवा ॥४२॥ इत्यं श्रीवर्धमानस्याजयमोविभूषण कारित यैर्महामार्गवि

१६ सानमिव नाकिनां ॥४३॥ तेषामंतः श्रियः पात्रं (सीय)कः श्रेष्ठिभूषणं। मंडलकरमहादुर्गं भूषयामास भूतिना ॥४४॥ यो न्यायांकुरसेचनैकजलदः कीर्तेर्निधानं परं सौजन्यांबुजिनीविकासनरविः पापाद्रिभेदे पविः। कारुण्यामृतवारिधेर्विलसनेराकाशशांकोपमो नित्यं साधुजनोपकारकरणव्यापारबद्धादरः ॥४५॥ येनाकारि जितारिनेमिभवनं देवाद्रिशृंगोद्धुरं चंचत्कांचनचारुदंडकलशश्रेणीप्रभाभास्वरं। खेलत्-खेचरसुन्दरीभ्रमभरं संजद् ध्वजोर्द्धाजनैर्धत्तेष्टापदशैलशृंगजिनभृत्प्रासादसम्बद्धश्रियं ॥४६॥ श्रीसीयकस्य भार्ये द्वे

१७ सौनागश्रीमामटाभिधे। आद्यायास्तु त्रयः पुत्राः द्वितीयायाः सुतद्वयं ॥४७॥ पंचाचारपरायणात्ममतयः पंचांगमंत्रोज्वलाः पचज्ञानविचारणासुचतुराः पंचेन्द्रियार्थोज्जयाः। श्रीमत्पंचगुरुप्रणाममनसः पंचाणुशुद्धव्रताः पंचैते तनया गृही(तवि)नयाः श्रीसीयकश्रेष्ठिनः ॥४८॥ आद्यः श्रीनागदेवोऽभल्लोलाकश्चोज्वलस्तथा। महीधरो देवधरो द्वावेतावन्यमातृजौ ॥४९॥ उज्वलस्यांगजन्मानौ श्रीमद्दुर्लभलक्ष्मणौ। अमृतांभुवनोद्भासियशौ दुर्लभलक्ष्मणौ ॥५०॥ गांभीर्यं जलधेः स्थिरत्वमचलात्तेज-

१८ स्विता भास्वतः सौम्यं चंद्रमसः शुचित्वममरस्रोतस्विनीतः परं। एकैकं परिगृह्य विश्वविदितो यो वेधसा सादरं मन्ये बीजकृते कृतः सुकृतिना सल्लोलकश्रेष्ठिनः ॥५१॥ अथागमन्मं (दिरमे) पकीर्तेः श्रीवि(ध्यव)ल्लीं धनधान्यवल्लीं। तत्रालु(लोके त्वमितल्पनुसः) कंचिन्नरेशं पुरतः स्थितं सः ॥५२॥ उवाच कस्त्वं किमिहाभ्युपेतः कुतः स तं प्राह फणीश्वरोहं। पातालमूलात्तव देशनाय (श्री) पार्श्वनाथः स्वयमेष्यतीह ॥५३॥ प्रातस्तेन समुत्थाय न किंचन विवेचितं। स्वप्नस्यांतर्मनोभावा यतो वातादिदूषिताः ॥५४॥ लोला-

१९ क(स्य) प्रियास्तिस्रो बभूवुर्मनस प्रिया । ललिता कमलश्रीश्च लक्ष्मीर्लक्ष्मीसनाभय ॥५५॥ तत स मत्ता ललिता बभापे गत्वा प्रिया तस्य निशि प्रसुप्ता । शृणुष्व भद्रे धरणोहमहि श्री (पार्श्वनाथ खलु द)र्शयामि ॥५६॥ तथा स चोक्तो (यत्त्व न हि) सत्यमेतत् । श्रीपार्श्वनाथस्य समुद्धृतिं स प्रासादमर्चां च करिष्यतीह ॥५७॥ गत्वा पुनर्लोल्किमवमूचे भो भक्त शक्त्यानुगतातिरिक्त । दवे धने धर्मविधौ जिनोष्टौ श्री-रेवतीतारमिहाप पार्श्वं ॥५८॥ समुद्धरन कुरु धर्मकार्यं त्व कारय श्राजिनचै-

२० त्यगेह । येनाप्स्यसि श्रीकुलकीर्तिपुत्रपौत्रोरुसतान-सुखादिवृद्धिं ॥५९॥ त(दत्र नो) मास्य वनमिह निवासो जिनपतेस्त एते प्रावाण शठकमठमुक्ता गगनत । सदारा(म) (शश्वत्स्म) दुपचयत कुदसरितोस्तदत्रैतन् स्थान (नि)गम प्रायपरम ॥६०॥ अत्रास्त्युत्तममुत्तमाद्रिसिखर साधिष्ठमत्योच्छ्रित तीर्थं श्रीवर-लाङ्कात्र परम देवोतिमुक्ताभिध । सत्यश्चात्र घटेश्वर सुरनतो देव कुमारेश्वर सौभाग्येश्वरदक्षिणेश्वरसुरौ मार्कंड-रिच्छेश्वरौ ॥६१॥ सत्योंवरश्वरो देवो महामध्येश्वरावपि कुटि-

२१ लेश कर्करशो यत्रास्ति कपिलेश्वर ॥६२॥ महाकाल-महा का(लम)रथेश्वरसज्ञका श्रीत्रिपुष्करता प्राप्ता(सति) त्रिभुवना-चिता ॥६३॥ कीर्तिनाथश्च (केदार) मिस्वामिन । सगमेश पुटीशश्च मुग्धेश्वरवटेश्वरा ॥६४॥ नित्यप्रमोदितो देवो सिद्धेश्वर-गयेश्वरा । (गगाभेदश्च) सोमेश गगानाथत्रिपुरातका ॥६५॥ सस्नार्ना कोटिलिगाना यत्रास्ति कुटिला नदी । स्वर्णजालेश्वरो देव सम कपिलधारया ॥६६॥ नाल्पमृत्युर्न वा रोगा न दुर्भिक्षमवर्पण । यत्र देवप्रभावेन कलि-

२२ पकप्रधर्पण ॥६७॥ षण्मासे जायते यत्र शिवलिंग स्वयभुव ।

तत्र कोटीश्वरे तीर्थे का श्लाघा क्रियते मया ॥६८॥ इत्येवं… कृत्वावतारक्रियां। कर्ता पार्श्वजिनेश्वरोत्र कृपया सोथाद्य वासः पतेः शक्तेर्वैक्रियिकः श्रियस्त्रिभुवनप्राणिप्रबोधं प्रभुः ॥६९॥ इत्या-कर्ण्य वचो विभाव्य मनसा तस्योरगस्वामिनः स प्रातः प्रतिबुध्य पार्श्वमभितः क्षोणीं विदार्य क्षणात्। तावत्तत्र विभुं ददर्श सहसा निःप्राकृताकारिणं कुंडाभ्यर्णत एव धाम दधतं स्वायंभुवं श्रीश्रितं ॥७०॥

२३ नासीद्यत्र जिनेन्द्रपादनमनं नो धर्मकर्मार्जनं (न स्नानं) न विलेपनं न च तपो ध्यानं न दानार्चनं। नो वा सन्मुनिदर्शनं (न)…॥७१॥ तत्कुंडमध्यादथ निर्जगाम श्रीसीयकस्यागमनेन पद्मा। श्रीक्षेत्रपालस्तदथांबिका च (श्रीज्वा)लिनी श्रीधरणोर-गेंद्रः ॥७२॥ यदावतारमकार्षीदत्र पार्श्वजिनेश्वरः। तदा नागह्रदे यक्षगिरिस्तंभः पपात सः ॥७३॥ यक्षोपि दत्तवान् स्वप्नं लक्ष्मणब्रह्मचारिणः। तत्राहमपि यास्यामि यत्र पार्श्वविभुर्मम ॥७४॥ रेवतीकुण्ड-

२४ नीरेण या नारी स्नानमाचरेत्। सा पुत्रं भर्तृसौभाग्यं (लक्ष्मीं च) लभते स्थिरं ॥७५॥ ब्राह्मणः क्षत्रियो वापि वैश्यो वा शूद्र एव वा। रेवतीस्नानकर्ता यः स प्राप्नोत्युत्तमां गतिं ॥७६॥ धनं धान्यं धरां धाम धैर्यं धौरेयतां धियं। धराधिपतिसन्मानं लक्ष्मीं चाप्नोति पुष्कलां ॥७७॥ तीर्थाश्चर्यमिदं जनेन विदितं यद्गीयते सांप्रतं कुष्टप्रेतपिशाच-कुज्वररुजाहीनांगगंडापहं, संन्यासं च चकार निर्गतभयं वृकसृगालीद्वयं काली नाकमवाप देवकलया किं किं न संपद्यते ॥७८॥ श्लाघ्यं जन्म कृतं धनं च सफलं नीता प्रसिद्धिं मतिः।

२५ सद्धर्मोपि च दर्शितस्तनुरुहस्वप्नोर्पितः मत्यतां म…रदृष्टिदूपित-मनाः सदृष्टिमार्गे कृता जै(नै)…ना श्रीलोलकश्रेष्ठिनः ॥७९॥

किं मेरो शृंगमेतत् किमुत हिमगिरेः कूटकोटिप्रगाढं किं वा
कैलासकूटं किमथ सुरपतेः स्वर्विमानं विभानं । इत्थं यत्तर्क्यते
स्म प्रतिदिनममरमर्त्यराजोत्करैर्वा मन्ये श्रीलोलकस्य त्रिभुवन-
भरणादुच्छ्रितः कीर्तिपुंजः ॥८०॥ पवनधुतपताकापाणिनो भव्य-
मुख्या पटुपटहनिनादादाह्वयत्येष जैनः । कलिकलुषमथोच्चैर्दूर-
मुत्सारयेद्वा त्रिभुवनाव

२६ (मुला) मान्नृत्यतीवाकाशेय ॥८१॥ (काश्चित् स्था) नकमाधर नि
दधते काश्चिच्च गातोत्सवं काश्चिद् बिभ्रति तालकं सुललितं
कुर्वंति नृत्यं च काः । काश्चिद् वाद्यमुपानयंति निभृतं वीणास्वरं
काश्चन यत्रोच्चैर्ध्वजकिंकिणीयुवतयः कथा मुदे नामवन् ॥८२॥
यः सद्वृत्तयुतः सुदीसिकलितस्त्यागादिदोषोज्झितश्चिताग्यात-
पदार्थदानचतुरश्चिंतामणेः सोदरः । सोभूच्छ्रीजिनचन्द्रसूरिसुगुरु-
स्तत्पादपंकेरुहे यो भृंगायत एव लोलकवरस्तीर्थं चकारैष सः
॥८३॥ स्वस्या सरितस्तटे तरुवरा यत्राह्वयते भृश

२७ शाखाबाहुलतोत्करैन (रसु) रान् पुस्कोकिलाना रुतैः । मत्पुष्पो-
च्चयपत्रमत्फलचयैरानि(र्मले)र्वारिभिर्भो भोभ्यर्चयताभिषेकयत
वा श्रीपार्श्वनाथं विभुं ॥८४॥ यावत्पुष्करतीर्थमैक्षनकुरं यावच्च
गगांचलं यावत्तारकचन्द्रभास्करकरा यावच्च दिक्कुंजराः । याव-
च्छ्रीजिनचन्द्रशासनमदं यावन्म(है) न्द्रं पदं तावत्तिष्ठतु तत्
प्रशस्तिसहितं जैनं स्थिरं मंदिरं ॥८५॥ पूर्वतो रेवतीसिंधुर्देव-
स्यापि पुरः तथा । दक्षिणस्यां मठस्थानमुदीच्यां कुण्डमुत्तमं
॥८६॥ दक्षिणोत्तरतो वाटी नानावृक्षैरलंकृता । कारितं

२८ लोलिकेनैतत् सप्तायतनसंयुतं ॥८७॥ श्रीमन्मा(थु) रसंघेभूद्
गुणभद्रो महामुनिः । कृता प्रशस्तिरेषा च कवि (क)ठ (वि)
भूषणा ॥८८॥ नैगमान्वयकायस्थछीतगस्य च सूनुना । लिखिता
केशवेनेदं मुक्ताफलमिवोज्वला ॥ ८९ ॥ हरसिगसूत्रधाराय

तत्पुत्रो पाल्हणो भुवि । तदंगजेमाहडेनापि निर्मापितं जिनमंदिरं ॥६०॥ नानिगः पुत्रगोविंदपाल्हणसुतदेल्हणौ । उत्कीर्णा प्रशस्तिरेषा च कीर्तिस्तम्भं प्रतिष्ठितं ॥६१॥ प्रसिद्धिमगमद्देवः काले विक्रमभास्वत: पड्विंशे द्वादशशते फाल्गुने कृष्णपक्षके ॥६२॥

२९ (तृ)तीयायां तिथौ वारे गुरुस्तारे च हस्तके । धृतिनामनि योगे च करणे तैतिले तथा ॥६३॥ (सं) वत् १२२६ फाल्गुन वदि ३ कांत्रारेवणाग्रामयोरंतराले गुहिलपुत्र रा० दाधरमहं वणसीहाभ्यां दत्त क्षेत्र डोहली १ खदुंवराग्रामवास्तव्य गौडसोनिगवासुदेवाभ्यां दत्त डोहलिका १ आंतरीप्रतिगणके रायताग्रामीय महंतमलींवडिपोपलिभ्यां दत्त क्षेत्र डोहलिका लवुवोझोलिग्राम संगुहिलपुत्र राव्याहरूमहंतममाहवा--

३० (भ्यां द) त्त क्षे (त्र) डोहलिका १ वहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिर्भरतादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फलं ॥छ॥

[इस लेखका निर्देश जै० शि० सं० के तृतीय भाग मे क्र० ३७४ पर हुआ है किन्तु उस समय इसे श्वेताम्बर लेख समझकर मूल पाठ नही दिया गया था। इसमें पहले २८ श्लोकोंमे सांभरके चौहान राजाओंकी वंशावली चाहुमानसे सोमेश्वर तक दी है। इसमे कुल ३१ राजाओंके नाम है। इनमे अन्तिम दो राजाओंने इस स्थानके पार्श्वनाथ मन्दिरको दो गांव दान दिये थे—पृथ्वीराज (द्वितीय) ने मोराझरी गांव और सोमेश्वरने रेवणा गांव दिया था। तदनन्तर इस मन्दिरके निर्माताकी वंशावली विस्तारसे ५१वे श्लोक तक दी है जो इस प्रकार है –

प्राग्वाटवंशीय वैश्रवण (इसने तटागपत्तन, व्याघ्रेरक आदि स्थानोंमे मन्दिर वनवाये) – उसका पुत्र चच्चुल – उसका पुत्र शुभंकर—उसका पुत्र जासट (इसने नाराणक स्थानमें वर्धमान मन्दिर वनवाया)—उसको दो स्त्रियोंसे दो दो पुत्र हुए – आम्वट, पद्मट, लक्ष्मट तथा देसल (इनने

नरवर नगरमें वीरजिनमन्दिर बनवाया) – लक्ष्मटके पुत्र मुनीन्दु तथा रामेन्दु – देमलके पुत्र दुद्धक, मोसल, वीगडि, देवस्पर्श, सीयक तथा गहक – सीयकने मण्डलक्र दुर्ग विभूषित किया और नेमिनाथ मन्दिर बनवाया – उसकी स्त्रियां नागश्री तथा मामटा – नागश्रीके पुत्र नागदेव, लोलक तथा उज्वल – मामटाके पुत्र महीधर तथा देवधर – उज्वलके दो पुत्र दुर्लभ तथा लक्ष्मण। इनमें सीयकके पुत्र लोलकने यह मन्दिर बनवाया। मन्दिरके निर्माणका वर्णन ८७वें श्लोक तक किया है। कहा है कि लोलक तथा उसकी पत्नियां ललिता, कमलश्री और लक्ष्मी विध्यवल्ली नगरमें थे उस समय धरणेन्द्रने स्वप्नमें लोलाक श्रेष्ठीको इस मन्दिरके निर्माणका आदेश दिया। तदनुसार जमीन खोदते हुए एक पार्श्वनाथमूर्ति मिली और उसके लिए लोलकने यह मन्दिर बनवाया। इस स्थानको वरलाइका तीर्थ कहकर यहाके कई शिवमन्दिरोंका माहात्म्य भी इस लेखमें दिया है। यहाके रेवतीकुण्डमें स्नान करनेसे कोढ आदि रोग दूर होनेका भी वर्णन है। लोलाकके गुरु जिनचन्द्रसूरि थे। इस लेखकी रचना माथुर सघके महामुनि गुणभद्रने की। इसे केशवने शिलापर लिखा और गोविन्द तथा देल्हणने उत्कीर्ण किया। यह कार्य फाल्गुन कृ० ३ सवत् १२२६ को सम्पन्न हुआ। अन्तमें इस मन्दिरको दानरूपमें प्राप्त कुछ जमीनोंका विवरण दिया है।]

(ए० इ० २६ पृ० १०२)

२६६

इन्दोर म्युजियम (मध्यप्रदेश)

सवत् १२२७ = सन् ११७१, सस्कृत-नागरी

[इस लेखमें शख चिह्न है जिससे प्रतीत होता है कि यह नेमिनाथकी मूर्तिका पादपीठ होगा। इसमें देशीगणके गुणचन्द्र, श्रीकीर्ति, रत्नचन्द्र तथा भावचन्द्रका उल्लेख है और गुर्जर जातिके वीन नामक व्यक्तिका भी उल्लेख है। समय सवत् १२२ (७)।]

[रि० इ० ए० क्र० (१९५०-५१) १६१]

२६७

नदिहरलहल्लि (धारवाड, मैसूर)

शक १०९(४) = सन् ११७२, कन्नड

[यह लेख कलचुर्य राजा रायमुरारि सोविदेवके समय श्रावण शु० (?) गुरुवार, शक १०९ (५), नन्दन संवत्सरका है। इसमे उल्लेख है कि दण्डनायक महेश्वरदेवके अधीन कर संग्रह करनेवाले अधिकारियोंने गोट्टगडि स्थित नागगावुण्डकी बसदिके लिए कुछ करोंका उत्पन्न दान दिया। उस समय वनवासि प्रदेशपर कासिमय्य दण्डनायकका शासन चल रहा था।]

[रि० सा० ए० १९३४–३५ क्र० ई० ५९ पृ० १५२]

२६८

बोगाडि (मांड्या, मैसूर)

शक १०९५ = सन् ११७३, कन्नड

१ श्रीमत् पार्थिवकुलचंद्र यदुवंशवार्धिवर्धनचंद्रं भीमभुजं ललना-जनकामाभिरामन् बल्लालं ॥ दिग्गिभंगलु मदविह्वलंगल मल्लुंकलु कूर्मनिन्तोमेंयुं भोगमीयं भुजगाधिपं बहुमुखं सारल्कु यार् संग-मेन्दुगुणोदग्रसमग्रलक्ष्मलसद्दोर्दण्डदोल् संतोषं मिगे भूकामिनि यिर्दल् श्रापदुलर्दि बल्लालभूपालन ॥ आ नृपनगण्यपुण्यं मानसरूपादुदेविनं भुवनजनं मानोन्नतकनकाचलन् आनतरक्षैक-दक्षरत्ननिधानं ॥ महांगमन्त्रकमनीयालंवितसुरराजपूज्यचरणा-क्यन् एनलु सचितकीर्तिपराक्रमप्रभावनन् पुनिसि

२ माचिराजं नेगल्दं ॥ तनुविं कामन(न)र्थिगीव गुणदिं कल्पाद्रियं हेमाचलमं चारुचरित्रदिंदुदधियं गांभीर्यदिं स्थैर्यदिं कनकाद्रीन्द्र-

मनिद्रन विमवर्दि गेल्दि^ना माचिराजनन् आर्मण्णि (सत्पर्र्
ई) विश्वमरामागदोलु ॥ आ विभु माचिराजन मात्र बल्लय्यन्
अरयन् ई धरॆगेल्ल काव गुणन्निन् आदन् अदाव गुणगणदिन्
आतन् पॊगेयप्पन ॥ अधिगमसम्यग्दृष्टियन् अधिगतसकलाग-
मार्थन कविबुधमागधर्दीनजैनजनतानिधिय पोगल्लुके बल्लर्
आर बल्लय्यन विरिदवन् ईयलु बल्ल सरणॆंदडे कर्णादिद कायलु
बल्ल पुरपातरम बल्ल परिकिपडन्तल्ते

३ ल नाद बल्ल ॥ परकान्ताक्षजालकबके पर दाराद्दरलक्के
पाननगात्तुगस्तनद्वन्द्वसुदरमगक्के परागनाभुजलतासश्लेषणको-
डिस निस्त आ बलदेव निढ परिहृतपरदार दीनाधनाथ
विदितविशदकीर्तिविश्रुतोन्नारमूर्ति स जयतु बलदेव श्रीजिने-
न्द्रांघ्रिसेव ॥ अन्ता बल्लालमहीकानन वरमन्त्रिवल्लभ बल्लय्य
सन्ततजिनपूजनेगागन्तुकम मो(ग)वडिय बसदिगॆ विट ॥

नीचेकी ओर

४ ह्रोरवार ओल्वाह भगर्दरे कालबोबनहल्लिय यिनितर मत्तु
मनेमुक नेरे मलवत्तियमुक विनित ॥ ॥ वनपालम मुक्क-
वनित मनुमार्ग मदनमूर्ति विभु बल्लय्य मनमोसदु भोगवमदि-
योलु जिनपूजॆगॆ मत्तियिदिदा

५ दिदिन्निदनेरदे काव पुरपगायु जयश्री द कायदे काव्य
पापिगे वारणासियोल् एक्कोटिमुनीन्द्रर कनिलेय वेदाध्यर
कोन्दुदोंदयश पार्डुगुमॆंदु मारिदपुदोशैलाक्षर धात्रियोल् ॥ विप
न विपमित्याहु देव–

६ स्व विपमुच्यते विपमेकाकिन हन्ति देवस्व पुत्रपौत्रक ॥
स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुधरा षष्टिवर्षसहस्राणि
विष्टाया जायते क्रिमि ॥ मगल

७ सामान्योयं धर्मसेतुर्नृपाणां काले-काले पालनीयो भवद्भिः
सर्वानेतान् भाविनः पार्थिवेन्द्रान् भूयो-भूयो याचते रामचंद्रः ॥
स्वस्ति श्रीमन्महामंडलेश्वरं त्रिभुवनमल्ल वीरगंग बल्लालदेवरु
दोरसमुद्रदल्लु सुखसंकथाविनोददिं राज्यं गेयुत्त विरलु तत्पाद-
पद्मोपजीवि महाप्रधान सर्वाधिकारि हेग्गडे वल्लय्य शककालं
मासिरद् तोंभत्तैदनेय विजयसंवत्सरद कार्तिक शुद्ध पंचमि
सोमवारदंदु कालवोवनहल्लिसहितवागि बोगवदियल्लुल समस्त-
सुंकवं श्रीकरणजिनालयद श्रीपार्श्वदेवर् अष्टविधार्चनेगेंदु
श्रीमदकलंकदेव(सिंहा-)
८ हासनस्थितरप्प श्रीपद्मप्रभस्वामिगलगे धारापूर्वकं माडि कोट्टरु

(इस लेखमे होयसल राजा बल्लालके महाप्रधान हेग्गडे वल्लय्य-द्वारा भोगवदिके पार्श्वजिनालयके लिए अकलंकदेवकी परम्पराके पद्मप्रभ स्वामी-को कुछ करोंका उत्पन्न दान दिये जानेका निर्देश है। यह दान कार्तिक शु० ५, शक १०९५, विजयसंवत्सर,के दिन दिया गया था। हेग्गडे वल्लय्य महाप्रधान माचिराजका माव (ससुर या चाचा था)

[ए० रि० मै० १९४० पृ० १५०]

२६६

सोगि (जि० वेल्लारी, मैसूर)

१२वीं सदी, कन्नड (बीरप्पके घरके आगे एक शिलाखण्डपर)

[इस लेखमे होयसल राजा विष्णुवर्धन वीरबल्लाल-द्वारा कार्तिक कृ० ५, गुरुवारको किसी जैन संस्थाको भूमिदान दिये जानेका निर्देश है।]

[इ० म० वेल्लारी २३७]

२७०

चिक्करुद्दन्दिगोल (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष ८ = सन् ११७५, कन्नड

[इस लेखमें कलचुर्य राजा सोविदेवके राज्यवर्ष 'जयसंवत्सरमें शान्ति-जिनालयको दिये गये दानका वर्णन है। इस लेखकी रचना 'अनुपमत्रि-कालिदास' हितिन सेनबोव-द्वारा की गयी थी।]

[रि० सा० ए० १९२६–२७ क्र० ई० १५० पृ० १२]

२७१

कलसापुर (कडूर, मैसूर)

शक १०९८ = सन् ११७६, कन्नड

१ (घिस गयी है)

२ कैवल्यबोधेन्दिराधाम षोडशतत्व(तीर्थ)कर्तृ त्रिमलज्ञानाहित सत्सुखाराम माल्के विनेयसन्ततिगे नित्य शान्ति-

३ तीर्थेश्वर ॥ (१) श्री स्वस्ति होयिसलवशाय प्रतापार्जितकीर्तये। यदुवंशनृपान मूर्द्ध-

४ ते ॥ (२) तदन्वयावतारमेन्तेन्दोडे ॥ सरसीजोदरनाभिपद्मजनज तत्पुत्रतन्तत्रियत्रिरहोद्भूतबु-

५ ध पुरूरवने तज्ञ तत्तनूजायुरायुरपत्य नहुष ययातिमहिप तत्पत्मन्न नरेश्वरजा-

६ त। यदु तत्कुल सलनृप लोकोत्तम पुट्टिद। (३) यादवरोळे होयिसलवेम्बराट्टुदु सलनिन्दे हुलि-

७ य सळेयुण्डिगेयाट्टुदु चिह्न वरमन्ताट्टुदु सले शशकपुरद वासन्तिकेर्ग ॥ (४) सलनृपर्ग च-

८ लियिं यदुकुलदोल् पलम्बरोगेदर् अवरन्वयदोल् । बलवद्-विरोधिकुलिशं जनियिसिदनेसेयेवि-

९ नयादित्यं ॥ (५) वनमार्गानुगतं जगत्प्रणुतमित्रं मण्डलाग्र-प्रतापनियुक्तं रिपुभूपसन्तम-

१० समेदं सज्जनं···नसन्तोपकरं स्वबन्धुजनचक्राह्लादकं पुट्टिदं विनयादित्यनृपाल-

११ कं यदुकुलोत्तुगोदयाद्रीन्द्रदिं ॥ (६) विनयादित्यनृपालन कुल-वधुवेनिसि सिरियोल्-

१२ वाणियोलं तनगे केलेयोलन्दु बुधजनवेने केलियब्बरसि सरसिजाननेयेसेदल् ॥ (७) सति केलियब्बरसिगमा-

१३ विनयादित्यनृपतिगं पुट्टिदमुद्धतवैरिदर्पदलनोद्यतमयनयशौर्य-शालियेरेयंगनृपं ॥ (८)

१४ विनयादित्यावनिपालन सुतनेरेयंगं सगर्वित भू···निरव्ये धर्मदीक्षागुरुविनतमहीभृत्समू-

१५ हैकरक्षावनधिप्रियं समस्ताश्रितनटनटीसिन्धमू कलनिव निजतं-सत्यवाणिमुखमणि मा-

१६ पुरनिर्मलाबोधसुतं हिमरुचियन्ते सेवादरवियं लतियं सरसिजमं मनोरमकुसुमंगलं कद-

१७ नयं मदनं विदियागि ताने तोयदमृतदिनेयदं निर्मिसिदनेन्नदे केलदेयं····भूरमणन कान्तेयं पेरत-

१८ नेन्नदिर् एचलदेविराणियं ॥ (९) अन्तेरेयंगमहीशन कान्तेगे जनियिसिदरेसेव बल्लालमहीकान्तं विष्णुमहिपननन्तगुणं

१९ नृपलकामनुदयादित्यं । (१०) अवरोधद्रुमनागियुं बुधनिकाय-स्तूयमानि श्री···विशेषोन्नतियिन्दमु –

२० त्तमनेनिप्पं सचरिताद्रि वगगाजलधौतनिर्मलकुलदप्तारिदर्पापहं भुव···विभवं···ग –

२१ श्रीविष्णुभूपालक ॥ (११) जनियिसिद विष्णुमहीशन ल
विदनुपम नरसिंहावनिप नतरिपुभूपाल-निकायल्ला -
२२ टतटविघटितचरण देवनृसिंहन प्रियमहिषीपट्टदाल्ते पट्टमहि-
षिये द्चलदेवी लसल्लतांगि
२३ राजीवदलाक्षि पल्लवनिभाधर पाटलकण्ठि कोकिलारावे राजीव-
नेल य। यनेय ताल्दिदल् ॥ (१२) कालनिभप्रत -
२४ जनरसिंहमहीपतिग मदमलाल्लसयानेकम्बुनिभकन्धर यचल-
देविग श्रीललनेशन्तानेने पुट्टिदनूर्जित -
२५ पुण्यमूर्ति वल्लालनृपाल समदवेरिमहीभुजदर्पभजन ॥ (१३)
का वाद्धिधरावनितेय चातुर्यदि नाडी (?)
२६ निरमणि रमणाशकुलम धायोल्ायशनुल्त्यागदि वन्दिवृन्द-
मनित्यानतसत्यदिं चरितदि सन्ततमु तन्नोल् क्रमदिं निश्चल -
२७ मपूर्व तलेद बल्लालभूपालक ॥ (१४) निजपादानत दित-
लक्ष्मीवल्लभ - ला मूर्ति विबुधाराध्य
२८ जगन्नेत्र नीरजमित्र स दे कान्तनेनिप प्रतापदेव समस्त-
जगद्व यपदारविन्द रारा नल ॥ (१५) पुरहू (त)
२९ ख्यातभोग शिखिनिभजनतेज यमावार्यशौर्य नरवाहातोप वायु-
सत्र धनाधीश्वरस -
३० धर महेशप्रकटितमहिम लोकपालप्रभावान्तरनाद दिग्वधूमण्डन-
विशदयश वीरबल्लालदेव ॥ (१६) भृगुगेनि वसराज
३१ इयदिनिमसमारूढप्रौढियिन्द मगदस वेपदिन्द द्विजपति क
सत्वगुण प्रभूति
३२ राघवन् इनतनय त्यागदि वादिभूपाल नडिदतप्रतिमनेनिसिद
वीरवल्लालदेव ॥ (१७) स्वस्ति समधिगतपच -
३३ महाशब्दमण्डलेश्वर द्वारावती पुरवराधीश्वर यादवकुलाम्बर-
द्युमणि सम्यक्त्वचूडामणि तलकाडुकोंगुणिब -

३४ नवामिवुच्चंगिहानुंगलगोण्ड भुजवलवीरगंगनसहायशूर निश्शं-
कप्रताप होय्सलवीरवल्लालदेवरसर् द्वारसमु –
३५ द्रदोल् सुखदि राज्यं गेयुतिरे तत्पादपद्मोपजीविगल् एनिसिद
श्रीमन्महावड्डव्यवहारि कवडेमय्यं नति
३६ दवर गुरुकुलान्वय क्रमम-तेन्दोडे ॥ विमलश्रीजैनधर्मक्कमल-
तोऽविनन्तोप्पुगुं मूलसंघं कमनीयं
३७ कोण्डकुन्दान्वयमं वरगणं देशि··· गच्छ···क्रमदि तत्त···वर्ध···
गेसेये श्रीवधूटीरम –
३८ ण देवेन्द्रसैद्धान्तिक मुनियेसेदं महोत्साहधामं ॥ (१८) तच्छिष्यं
नाडे विश्रुतगुण वृषनन्दि मुनि कायो –
३९ त्सर्गगोण्डुपवासदिन्द···चतुर्मुखाख्येयनाल्दम् । (१९) अवरग्र-
शिष्यरोल्श्रन्तदि द्विजराजिकुमतवादमददर्पद –
४० नावर्तिकीर्तिचूक्षनुं श्रीगोपनन्दिपण्डितदेवर् ॥ (२०) जिनसमय-
यशश्चन्द्रं जिनागमाम्भोनिधिप्रवर्धनचन्द्रं जिनमुनिकु –
४१ वलयचन्द्रं जिनचन्द्रं विबुधनिकरराकाचन्द्रं ॥ (२१) निरवद्-
यबोधदर्शनचरणयुतर् माघनन्दिसैद्धान्तिकदेवरशि –
४२ ष्यरार् शमान्वितनिरुपमधर्मेन्द्र रत्ननन्दिमुनीन्द्रर् ॥ (२२)
तत्सधर्मर···संहिताद्यखिलागमार्थनिपुणव्याख्यानसंशुद्धि –
४३ यि···रु सैद्धान्तिकतत्वनिर्णयवचोविन्यासदिं श्रुतिसम्बद्ध···
नयनार्थशास्त्रभरतालंकारसाहित्यदिंरूढानूह
४४ बालचन्द्रमुनियं विद्याधर···(२३) चक्रे श्रीमूलसंघ···पद्माकर-
राजहंसो····निपुणप्रवरावतंसः जीया –
४५ ज्जिनेन्द्रसमयार्णवपूर्णचन्द्रः···बुधाः । (२४) यन्तेनिसिद
श्री···हलाचार्यर गुड्डं देदी –
४६ ऊनयान्वयवारिधिचन्द्रमनुं···ग् अर्हन्त्य···चरितनुं वरजैनसमय-
कुमुदेन्दु····अन्यायार्जितधनम –

४७ नेयदे कउडेमय्यन् अणुवन्तय्यम् ॥ (२५) वरसुगुणसमन्वित कउडेमय्य तन पूज्ययश सद्गुणि केतिसट्टियुमदात्त —

४८ अणयरेचिसेट्टिगमन्ता पूणुमसट्टिगमिलासस्तु य देकव्वेग प्रियपुत्र प्रभु बाम मम्पूर्णमत्योदय

४९ अनुपम सेट्टि यदा कान्ते अनूनशौय निधि

५० नामादि अपूर्व जनरिनुत जक्किमट्टिय वनिते सु —

५१ हामे निय तळेदल् ॥ (२७) अवरात्मीयोद्भवपुण्याद्य

५२ निखिळगुणवकास्थान बमन पुण्य कुलवधु देक-

५३ ठितोदात्तलक्ष्मीनिवास ॥ (२८) नीतिलता दानधमपयो-

५४ धिचन्द्रम राहिमनु वंदशनकल्पभूज निरो-

५५ तनुजोत्तत गिसेट्टिय ॥ (२९) स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर भुजबलवीरगंगनसहायशूर नि शक्रम-

५६ ताप होय्सळदेवरसर शकवर्ष १०४८ नय दुर्मुखिसंवत्सरद उत्तरायणसंक्रमणदोल् अमरदानव-

५७ माडुवल्लि श्रीमन्महावड्डव्यवहारि कवडमय्यन देविसेट्टिय ता माडिसिद श्रीवीरबल्लाळजिनाल-

५८ यद् यक्ंआहारदानक्क खण्डस्फुटितजीर्णोद्धारक्कमेन्दु विजय गेय्यळवर

५९ गणद तंद श्रीमन्महामण्डलाचार्य बालचन्द्रसिद्धान्त-देवरों धारा-

६० पूर्वक माकचन्द्र होसनाडोलगण कोरटिकेरयनदर कालवा-ळ्ळिगको-

६१ ळनादि नाचहळ्ळि मडवद मरियहळ्ळियोळगाद हळ्ळियाल सीमासम्बन्धमन्तेन्दोड मू-

६२ वनाल प्पदु - रि - बकय हळेयिलेय मोरडि तेंकलारडिगे नैरित्य-

६३ ····यद्दोल् वायव्यदोल् नेरिलकेरेयोलगण माविनमर····देवर अरगल्लो···

६४ ····वड्मु नगर मुन्ता वायव्य····

६५ ···लाल निगुल तेलुंग कर्नाडिग देश मुख्यमाद सु-

६६ ···द्रद नेरपुलिय चिकहल्लिय केतलदेविय गडिय वाचलेश्वरदे सम-

६७ स्तनख···श्रीशान्तिनाथदेवर····कर कैंकर्यक्के बिट्टायमेन्तेन्दोडे होयसल नाडाल

६८ ····त्ति हेरिंगे हागवेरडु कत्तेय हेरिंगे हाग ओन्डु कुदुरे

६९ ····कर्पूरपट्टनूलण्ड-क्के हणवोन्डु श्रीगन्धद मालवेगे

७० ····हणनय्व···वडिय मलवेगे हण नाल्कु येत्तिन मलवेगे हण वोण्

७१ ····हसुवेगे हाग वोन्डु पडसालेय गडिगे वरिसके हण वोन्डु आविडिव····

७२ ····रल देविय गडिगे वरिसवक्के हाग वोन्डु निच्च सेडिवत्त दवसद हेरिगे मान वोन्डु

७३ ····मेलसु दड हेरिंगे मान वोन्डु····गणदोल् धारेयेर

७४ ····गेय तडियोल् शतसहस्त्रब्राह्मणर्गलंकारसमन्वित शतसहस्र-कविलेगलं

७५ ···क्षेत्रदोलनिवर् ब्राह्मणरुमननितुकविलेगलं कोन्द महापताक-नक्कु परिपालिपु

७६ ···गन्ते वर····निनिरे धरेगे शिलाशासनाक्षरावलियेसेगुं ॥ स्वदत्तां

७७ ····हरेत वसुन्धरां षष्टिवर्षसहस्राणि विष्टायां जायते क्रिमिः ॥ सामान्योयं धर्मसे –

७८ ळनीयो भवद्भि । सर्वानतान् भाविन पार्थिवेन्द्रान् भूयो-
भूयो याचते राम –

७९ य स्थळद् चतुस्सीमेय निवेशनमेन्ते डोडे मूडलु हिरिय
राजवीडि मोदल्

८० य घट्टेयलु पश्चिमके नीलविप्पत्तु वड्डगण मोदलोल
तेंकलु अ

[यह विस्तृत लेख दुर्मुखि संवत्सर, शक १०९८ में लिखा गया था। इसके प्रारम्भमें होयसल वंशके राजाओंका कुलवर्णन वीरबल्लालदेव (द्वितीय) तक किया है। इनके समय देविसेट्टि नामक धनिकने वीरबल्लालजिनालय नामक मन्दिर बनवाया। मूलसंघ-देसिगण कोण्डकुन्दान्वयके आचार्य बालचन्द्रकी प्रेरणासे यह कार्य हुआ। इस मन्दिरके लिए राजा वीरबल्लाल-ने कुछ गाव तथा कुछ करोंका उत्पन्न अर्पण किया था। बालचन्द्रकी गुरुपरम्परा देवेन्द्र सैद्धान्तिक – वृषभनन्दि-चतुर्मुख-गोपनन्दि-जिनचन्द्र-माघनन्दि रत्ननन्दि-उनके गुरुबन्धु बालचन्द्र इस प्रकार दी है।]

[ए० रि० मै० १९२३ पृ० ३९]

२७२

कुचंगि (तुकूर, मैसूर)

१२वीं सदी (सन् ११८०) कन्नड

[यह लेख एक जिनमूर्तिके पादपीठपर है। इसकी स्थापना मूलसंघ-देसीगण-पनसोगे शाखाके नयकीर्तिसिद्धान्त चक्रवर्तिके शिष्य अध्यात्मि बालचन्द्रके उपदेशसे बम्मिसेट्टिके पुत्र केसरिसेट्टिने केरूरमें की थी। (समय लगभग ११८० ई०)।]

[ए० रि० मै० १९१६ पृ० ८३]

२७३

पाटशीवरम् (अनन्तपुर, आन्ध्र)

शक ११०७ = सन् ११८५, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा वीर सोमेश्वरके समय शक ११०७ विश्वावसु संवत्सरका है। इसमे राजाके सामन्त भोगदेव चोल महाराजाका तथा वीरणन्दिसिद्धान्तचक्रवर्ति और उनके शिष्य पद्मप्रभमलधारिदेवका उल्लेख है। [रि० सा० ए० १९१७-१८ क्र० २८ पृ० ७२]

२७४

लक्कुण्डि (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष ४ = सन् ११८५, कन्नड

[यह लेख त्रिभुवनमल्ल वीरसोमेश्वरके राज्यवर्ष ४, विश्वावसु संवत्सरमे पुष्य शु० २ बुधवारका है। इसमे कुछ सेट्टियों द्वारा अष्टविधार्चनके लिए नोम्पियबसदिको कुछ दान देनेका उल्लेख है। कुछ शिल्पकारो द्वारा शान्तिनाथदेवको दिये हुए दानोंका भी उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई० ५५ पृ० ५]

२७५-२७६

कुमट (उत्तर कनडा, मैसूर)

१२वीं सदी, कन्नड

[यह लेख कदम्ब राजा वीर कावदेवरसके राज्यकालमे चैत्र व० १, मंगलवार, श्रीमुख संवत्सरके दिन लिखा गया था। चन्द्रकीर्ति भट्टारकके शिष्य तथा वर्धमानसेट्टिके पुत्र सातिसेट्टिके समाधिमरणका इसमे उल्लेख है। यहीके एक अन्य लेखमे एक सेट्टिके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २३८-२४० पृ० २७]

२७७-२७८

बम्बई (महाराष्ट्र)

१२वीं सदी, कन्नड

[यह लेख मायखळाके जैन मन्दिरमें है। कदम्ब राजा कामदेवके राज्यवर्ष ४४, ईश्वर संवत्सरमें भाद्रपद शु० १२, सोमवारके दिन नागय्य-के समाधिमरणका इसमें उल्लेख है। यहींके एक अन्य समाधिलेखमें दी हुई तिथि इस प्रकार है — भाद्रपद शु० ७, सोमवार विक्रम संवत्सर।]

[रि० इ० ए० १९५३ ५४ क्र० १९९-२०० पृ० ३७]

२७९

नागपुर म्युजियम (महाराष्ट्र)

संवत् १२४५ = सन् ११८८, संस्कृत-नागरी

[यह लेख एक मूर्तिके ऊपर है। माणिकसेनदेव, वीरसेनदेव तथा वाजसेन (?) देवका इसमें उल्लेख है जो सम्भवत जैन आचार्य थे। तिथि संवत् १२४५ दी है।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० २६७ पृ० ५०]

२८०

बिलिगिरि रंगनबेट्ट (मैसूर)

शक १११२ = सन् ११९०, कन्नड

१ शुभमस्तु श्रीमत्परमगंभी　　२ रस्याद्वादामोघलाञ्छन जी-

३ यात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन　　४ जिनशासन स्वस्ति श्रीप्र-

५ तापचक्रवर्ति होयिसल श्रीवी-　　६ रबल्लाळदेवरसर पृथुविरा-

७ ज्य गेय्युत्तिरलु सकवरुष　　८ १११२ साधारण संवत्सर वै-

९ शाक सुद्ध पंचमि निद　　१०

[यह लेख रंगनवेट्टके समीप जंगलमें श्रवणनअरे नामक पाषाणपर खुदा है। होयसल राजा वीरवल्लाल (द्वितीय) के राज्यमे वैशाख शु० ५, गुरुवार, शक ११११, साधारण संवत्सरके दिन यह लिखा गया था। लेख टूटा होनेसे इसका उद्देश ज्ञात नही हो सकता। किन्तु प्रारम्भमें जिनशासनकी प्रशंसा है अतः यह किसी जैन व्यक्तिका निसिधिलेख या किसी जैन मन्दिरको दिये गये दानका उल्लेख प्रतीत होता है।]

[ए० रि० मै० १९३८ पृ० १९३]

२८१

होसनगर (मैसूर)

शक १११२ = सन् ११९०, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं
२ जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं
३ स्वस्ति श्रीवल्लालदेवरसर-
४ ...
५ ज्यं उत्तरोत्तराभिवृद्धिमिरलु सक वरुष
६ १११२ एरडनेय सर्वधारिसंवत्सरद
७ ज्येष्ठ सुध एकादशि वड्डवारदलु गु-
८ णसंपन्नरप्प पुष्पसेनदेवर गुड्डि श्री-
९ मतु सर्वाधिकारि बम्माचारिय हेण्डति ह-
१० व्वक्कनु सुरलोकप्राप्तेयादलु

[इस लेखकी तिथि ज्येष्ठ शु० ११, शनिवार, शक १११२, सर्वधारि संवत्सर है (यह तिथि अनियमित है क्योकि शक १११२ साधारण संवत्सर था)। उक्त समय होयसल राजा वल्लाल (द्वितीय) का राज्य था। सर्वाधिकारी बम्माचारिकी पत्नी हव्वक्काके समाधिमरणका इस लेखमें निर्देश है। इनके गुरु पुष्पसेनदेव थे।]

[ए० रि० मै० १९३१ पृ० १७२]

२८२

सोमपुर (मैसूर)

शक १११४ = सन् ११९२, कन्नड

१ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छन जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन ॥ (१) जयति सकलविद्यादेवता —

२ रत्नपीठं हृदयमनुपलेप यस्य दीर्घं स देव (।) जयति तदनु शास्त्र तस्य यत् सर्वमिथ्यासमयतिमिरघातिज्योतिरेकं नराणा (॥२)

३ द्रामदिं सळनेम्बनाग पुलिय पोयदा सल पोय्सळ धीग

४ पॅळ्म्वर राज्य गेयुत्तिपिन । (३) विनयप्रतापमेम्बी जननाथो- चितचरित्रयुगदिं जगम जननयनवेनिसि नेगळ्द विनया-

५ दित्य समस्तभुवनस्तुत्य । (४) आतगतिमहिम हिमसेतुसमा-

६ *ख्यातकीर्ति सन्मुनिमनोजात मदिलरिपुनृपजात ननुरातनोदने-* रेयगनृप । (५) वलिन्द्रवर्गापतिसम्पादितधर्मार्थ-

७ कामसिद्धिवोल्वनीवल्लभातन तनयर् ब्ब्लाल विट्टिग्रसुदया- दित्य । (६) भूवरसुगळोळ् ता माविस मध्यमनदागियु

८ नृपगुणपद्मावदिनुत्तमनाद माविमवद्भूतजिष्णु विष्णुनृपाल । (७) सल्य साधिसि मागदनॆ तल्बन कार्चीपुर कायत् —

९ र् मलेनाडा तुलुनाडु नीलगिरियी कोलाल्माकोंगु नन्गलिन्तु- च्चगि विराटराजनगर चन्दूरिवेल्ल दुर्वारगोवेलदि

१० ळॆ ळेयि साध्यमादुवेगेयार् विष्णुभमापालनोल् । (८) येन- लाल्द चूडामणि हारमनें

११ किन्नरस्वरशिर प्रासुग फणि गुणमणि

१२ सम्यक्तचूडामणि आ विष्णुवर्धनग यनिसिद लक्ष्मादेविगमुद्- भविमिदर्नॊ भूविश्रुत नरसिंहनाहव-

१३ सिंहं ॥ (९) पडेमातेम्बन्तु कण्डंगम्तजलधि तां गर्वदिं गण्ड- वातं नुडिवातंगेननेम्बै प्रलयसमयदोळ् मेरेयं मीरि वर्पा कडलन्-

१४ नं कालन्ननं मुलिद कुलिकनन्नं युगान्ताग्नियन्नं सिडिलन्नं सिंगदन्नं पुरहरनुरिगण्णनन्नर्ना नारसिंहं । (१०) रिपुसर्पद्दर्प- दावानलव्रहलशि-

१५ खाजालकालाम्बुवाहं रिपुभूपालप्रदीपप्रकरपटुतरस्फारझंझासमीरं रिपुनागानीकतार्क्ष्यं रिपुनृपलिनी-

१६ षण्डवेतण्डरूपं रिपुभूभृद्भूरिवज्रं रिपुनृपमदमातंगसिंहं नृसिंहं ॥ (११)····पोगल्द तीव्रप्रताप····गिदु पोगल्दुदं मा--

१७ ण्डोडं शत्रुगात्रप्रगलद्रक्तप्रवाहप्रबलगुरुध्वानमुं शत्रुभूभृद्भूरि- सन्दोहदाहप्रचुरचिटिचिटिध्वानमुं निविक-

१८ वर्प पोगलुत्तिर्कु नृसिंहप्रवल भुजवलाटोपमं धात्रिगेल्लं ॥ (१२) आ त्रिभुविन पट्टमहादेविगे सद्गुणचरित्रदिन्दं सीतादेविगे मि-

१९ गिलादेचलदेविगे वल्लालदेवनुदयंगेय्दं ॥ (१३) कलिकाल- क्षत्रपुत्रप्रवलतरदुराचारसन्दोहदिन्दं-पोले पोर्दल् पेसि वेसत्तलव-

२० लिद महाकान्तेयं रक्षिसल्का जलजाक्षं ताने वन्दिन्तवतरिसि- दवोल् वीरवल्लालदेवं कुलजात्याचारसारं नृपवरनुदयंगेय्द-

२१ नाश्चर्यशौर्यं ॥ (१४) विनयश्रीनिधियं विवेकनिधियं व्रह्मण्यनं पूर्णपुण्यननुदामयशोधियं जितजगत्प्रत्यर्थियं सर्वसज्ज-

२२ नसंस्तुत्यननुद्भवद्वितरणश्रीविक्रमादित्यनं मनुजेशर् मलेराज- राजननदें वल्लालनं पोल्वरें । (१५) उरिगण्नि वेन्द चण्डा त्रिपुर-

२३ सुरिद्वोल् चुर्चुरिल्दालगार्ग····रि दन्दर धगिल धन्धग धग चेटे चेल्चेल्चिटिलगट्टु पोर्देम्बरवं कैगण्मे दिक्पालकर् अलवलिय-

२४ ल् वीरबल्लालनिं (दिं) दुरिदिसुच्चगियोडे रिपुनृपति पेल-
लुण्टे ॥ (१६ रणरगागणशूद्रक नडेदोडिम्नुच्चगि सुर्चलिस
२५ तन्क्षणदि नोडे विराटराजपुर वोसुत्तायनु सुद्धन्न मेनुगरायेरा-
नमान्नक नेरेदृरिदेन्दन्दु वल्लालदोंगुणार वाण्णिमलण
२६ वल्लवरदारी भूरिभूचक्रदोल् ॥ (१७) त्रिलयाद्रि येनिप मनुण-
बलन निचयाविल मकरानुलवा यदुकुलपरिनलग
२७ तवायनु वन्दु ॥ (१८) कन्दनदप्पारिवत रूडे इयखुर-
दिन्दा गेल्गिसगद या दोल् मुम्पण पेणन वेत्ति-
२८ भूतालि पुण्यराशीकृतविपुलतल वीरवल्लालदेव ॥ (१६)
२६ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ राजाधिराजपरमेश्वर
परममट्टारक द्वारावतीपुरवराधीश्वर वासन्तिकाल्वीलब्ध-
३० वरप्रसाद रिपुमण्मर्दनविनोद यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्व-
चूडामणि शत्रुक्षत्रिय-
३१ मानमर्दन वीररिपुदपशर्पङ्गसानिल श्रीमन्नीयें पराक्रमैक-
प्रभाव । निरुमात-
३२ कयंप्रताप नयविनयदवभाव । सकलजनसत्याशीर्वाद । सुदुगर-
समरकलिमस-
३३ वत रिपुविजितादित्यप्रताप । सप्ताग विलास सरस्वती
स्तम्बेरम राज-
३४ कण्ठीरव । पाण्डयकुल दण्ड । पल्लवकुलयशोविपिनदावानल ।
सिंहलमरालकुरंगकुलपलायनकार-
३५ ण कठोरनिजविजयदोर्दण्ड । सकलरिपुनृपकुल इत्यादि-
नामादि-
३६ समस्तप्रशस्तिसहित श्रीमन्सार्वभौम सग्रामराम मिल्लमदिरा-
पट घरिगोपट्ट मलेराजराज मलेपरोल् गण्ड

३७ तलकाडु-गंगवाडि-नोलम्बवाडि-बनवासे - पानुंगल्-हुलिगेरे-हल-
सिगे-बेल्वल-तलवलि-तलियूरगोण्ड भुजबलवीरगं-

३८ गनेकांगवीर सनिवारसिद्धि गिरिदुर्गमल्ल चलदंकरामनसहाय-
शूर निश्शंकप्रतापचक्रवर्ति श्रीवीरवल्लालदेवनसंख्यातनिजचतु-
रंगबलं

३९ बेरसु सेवुणबलमेल्लमं वीरविलासमनेय्द पट्टमानदिं तोल्दुलदुलिये।
सेवुणबलजलधि-बडबानलनेकांगदिं सप्तांगगला—

४० आज्यमनलवडिसि राष्ट्रकण्टकर निर्मूलमं माडि कल्याणपर्यन्त-
मागि सुखसंकथाविनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे

४१ तद्राज्यपूज्यमप्प राजधानि दोरसमुद्रदोलु श्रीमद्वादीभसिंह
तार्किकचक्रवर्ति श्रीपालत्रैविद्यदेवरसमवर गुड्डगल् मा-

४२ रिसेट्टियुं कणिणसेट्टियुं भरतिसेट्टियुमिन्तो नाल्वरं नानादेसियुं
नगरमु श्रीमदभिनवशान्तिनाथदेवर भव्यजिनालयमेनि-

४३ प नगरजिनालयमं माडिसिद राजसेट्टियन्वयमुमाचार्यवलियु-
मेन्तेन्दोडे(।)श्रीमद्द्रमिलसंघेस्मिन् नन्दिसंघोस्त्य-

४४ रुंगलः(।)अन्वयो भाति निश्शेषशास्त्रवाराशिपारगैः(॥)श्रीवर्ध-
मानस्वामिगल धर्मतीर्थं प्रवर्तिसुवल्लि गौतमस्वामिगलिं भद्रबा-

४५ हुस्वामिगलिं भूतबलिपुष्पदन्तस्वामिगलिं ··· सुमतिभटारकरिन-
कलंकदेवरिन्दं वक्रग्रीवाचार्यरिं वज्रनन्दिगलिं सिंहनन्दिगलिं
परवादिमल्लरिं

४६ श्रीपालदेवरिं श्रीहेमसेनरिं दयापालमुनीन्द्ररिं श्रीविजयदेवरिं
शान्तिदेवरिं पुष्पसेनदेवरिं चक्र-

४७ वर्ति श्रीवादिराजदेवरिं श्रीअनन्तदेवरिं शब्दब्रह्मस्वामिदेवरिं
अजितसेनपण्डितदेवरिं मल्लिषेणमलधारिस्वामिगलिं

४८ श्रीपालत्रैविद्य गद्यपद्यवचोविन्यासं निसर्ग विजयविलासं। तद-
नन्तरं श्रीमत्त्रैविद्यविद्यापति-पद्दक्रम-

४९ लाराधनालब्धबुद्धि सिद्धान्ताम्भोनिधान सूतास्वाद दीक्षा-
शिक्षासुरक्षा कवाक्पतिनिपुण सन्तत अध्यमेय सोय
५० दाक्षिण्यमुनिजगति विजयतेवासुपूज्यमनीन्द्र (॥) तदनन्तर
सुरराजेन्द्रमदेभदन्तचयदाल दिग्गासि मन्दिरदाल् म-
५१ गंकराल वि ल्तमो हिमाद्रिवृदगल्लोल् धरण न्द्रोद्धकिरीटकूट-
तलद्दाल् वाग्वि यन्दरिसल् श्रीमुनि वज्र-
५२ नन्दिय गर्भारोदार वल्मित ज-
५३ गल कोडिनोल् पोदल्दमट्टु मन्दरमनेयर्द यशोल्तेय मुनि
वज्रनन्दिय
५४ द्गडल्वरगलि वज्रनन्दिव्रतिया । ततम-
५५ मयदोल् कुमारनन्दु समस्तप्रभुगाधुण्डगलि नाड कायु प्रताप-
चक्रवर्ति वीरबल्लाल
५६ देवन काणल्वेडि बन्दिर्दलि अभिनवश्रीशान्तिनाथदेव ममष्ट-
विधार्चनेयुम पूजेयुम ऋपियराहारदानमुम
५७ कण्डु पिरिदु सन्तम माडि देवर श्रीकार्यक्क नाडगौण्डुगल्
तम्मोलैकमत्यवागि प्रतापचक्र-
५८ वर्ति वीरबल्लालदेव वन्दु शान्तिदेवराष्ट-विधार्चनेग खण्डस्फु-
टितजीर्णोद्धारक्क ऋपियराहारदानक्कवागि
५९ शकवर्ष ११२४ नेय विरोधिकृत्सवत्सरद उत्तरायणसंक्रमण-
दन्दु वज्रनन्दिसैद्धान्त-देवरिगे धारापूर्वक नाड मैसेनाड
६० गुम्मनवृत्तियोलु मुचण्डिय कडलहल्लिय कडलहल्लिय ईशा-
न्यद नीरना-
६१ ड मन्तेनाडा गण्णिनाड नडदु येलुवल्द सीमय नट्ट कल्लु
अल्लि गुरविनगुण्डिये मरनितालेयमो --
६२ रडि मोरडि चचरिवल्लद सडि कडलेयहल्लिय आग्नेयदलुरिद-
वाल्किय छविरल्लिय गुम्मनवृत्तिय ना-

६३ गव····य मोरडि चंचरिवल्लं मत्तवी कडलेयहल्लिय नैऋत्यद बलरेय कणि--

६४ यकल्लु····खडेय····कोलवूर् वल्लं मत्तिय मरन····गल्लुतट्टु मत्तवी कल्लेयहल्लिय वायव्य–

६५ द तोरेनाड हल्लियवीडिन त्रिसन्धियोलु····कर्गल्लमोरडि अल्लि चंचरिवल्लं तेन्तट्टु वटवृक्ष अ

६६ ल्लिं मत्तवी कडलेयहल्लिय ईशान्य गुम्मनवृत्तिय त्रिसन्धिय नड्डगणेय कूडित्तु इन्तिदु सीमाक्रम। मंगल महाश्री

६७ भूमिदानात् परं दानं····।। स्वदत्तां परदत्तां वा यो

६८ हरेत वसुन्धरां षष्टिर्वर्षसहस्राणि विष्टायां जायते क्रिमि:

[इस लेखके प्रारम्भमें होयसल राजाओंकी वंशावली वीरबल्लाल (द्वितीय) तक दी है। वीरबल्लालने मैसेनाड प्रदेशके दो ग्राम-मुच्छण्डि तथा कडलेहल्लि अभिनवशान्तिनाथमन्दिरको अर्पण किये थे। इस दानकी तिथि शक १११४ की उत्तरायणसंक्रान्ति थी। यह मन्दिर कई नाडुगौण्डोंने तथा सेट्टियोंने मिलकर बनाया था। मन्दिरके कार्यका निरीक्षण कर युवराजके प्रसन्न होनेपर राजाने यह दान दिया था। वासुपूज्य व्रतीन्द्रके शिष्य वज्रनन्दि सिद्धान्तदेव इस मन्दिरके प्रमुख थे। इनकी गुरुपरम्परामें द्रमिलसंघ-नन्दिसंघ-अरुंगलान्वयके निम्नलिखित आचार्योंके नाम दिये हैं- गौतम, भद्रबाहु, भूतबलि, पुष्पदन्त, सुमति, अकलंक, वक्रग्रीव, वज्रनन्दि, सिंहनन्दि, परवादिमल्ल, श्रीपाल, हेमसेन, दयापाल, श्रीविजय, शान्तिदेव, पुष्पसेन, वादिराज, शान्तदेव, शब्दब्रह्म, अजितसेन, मल्लिषेण, श्रीपाल (द्वितीय)। श्रीपाल त्रैविद्यके शिष्य वासुपूज्यव्रतीन्द्र ही वज्रनन्दिके गुरु थे। वर्तमान समयमे यह लेख सोमपुरके निकट नंजदेवरगुड्ड नामक पहाड़ीपर है। वहाँके मन्दिरका रूपान्तर शिवमन्दिरमे हो गया है।]

[ए० रि० मैं० १९२६ पृ० ४७]

२८३

इगलेश्वर (विजापूर, मैसूर)

शक ११९७ = सन् ११९५, कन्नड

[इस लेखमें तीर्थ चन्द्रप्रभदेवकी शिष्या पेण्डर वाचि मुत्तवेके समाधिमरणका उल्लेख है। शक १११७ का उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३०-३१ क्र० ई १४ पृ० ८५]

२८४

ताडपत्री (जि० अनतपुर, आन्ध्र)

शक ११२० = सन् ११९८, कन्नड

रामेश्वर मन्दिरके प्राकारके उत्तर पश्चिम कोनेपर

[इस लेखमें सोमिदेव तथा काचेलादेवीके पुत्र उदयादित्यका उल्लेख है जो जैन था और तार्टिपर ताडपत्रीमें रहता था।]

[इ० म० अनंतपुर २०३]

२८५

वेलगामि (मैसूर)

सन् ११९९, कन्नड

[इस लेखमें होयसल राजा वीरबल्लालके समय सन् ११९९ में महाप्रधान मल्लियण दण्डनायकके अधीन हेग्गडे मिरियण्ण-द्वारा मल्लिका-मोदशान्तिनाथजिनालयके लिए आचार्य पद्मनन्दिको कुछ करोंका उत्पन्न दान दिये जानेका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९११ पृ० ४६]

२८६

कान्तराजपुर (मैसूर)

१२वीं सदी, कन्नड

१ श्रीमतपरमगंभीरस्याद्वादामोघ-
२ लांछनं (।) जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शा-
३ सनं जिनशासनं ॥
४ स्वस्ति श्रीमन्महाप्रतापचक्रवर्ति गण्डभेरुण्ड मलपरोल्
५ गण्ड शनिवारसिद्धि गिरिदुर्गमल्ल चलदंकराम होयसळवी-
६ रवल्लालदेवरु सुखसंकथाविनोददिं पृ(थ्वी) राज्य गेयुतु-
७ तमिरे ॥ ततुश्रीपादसेवकरु कव्वहिनवृत्तिय अधिष्टा-
८ यकरु महापसायतरु परमविश्वासिगल् सामिसन्-
९ तोषकरु सेवुणकटक सूरेकाररुं शरणागतवज्रपंजर-
१० रुमप्प वेहूरसीतद सुग्गियनहल्लिय अरकेरेय वो-
११ केयनायक होनहल्ल मादियनायक कलियनायक
१२ वाचिहल्लिय वोकयनायक वेल्लूर माचयनायक मोनू-
१३ गलाचार्य केसवेयनायक चलुवन माचयनाय-
१४ क अरसयनायक वरजियन माचयनायक मसणेय-
१५ नायक कोलेयादिनायक वचन मारेयनायक कोलेयत-
१६ न माचयनायक वलेयन मारेयनायक हलवनाय-
१७ कन वचेयनायक वोम्मेर रुयिदालद वंयक कसविय-
१८ नायक हेग्गडेनायक मैलेयनायक मारदेव वालना-

१९ यरु काचिनायक पम्मणनायक माचियनाय (क)
२० मावुकनायक चिन्नयनायक मादियनायक बडचर बिज्ज-
२१ पनायक वडुगेयनायक मनियमनायक हे-
२२ माडिनायक हरियणनायक पूसयनाय-
२३ क जक्केयनायक मैलयनायक बैजयणनायक मा-
२४ केयनाय (क) बमय नायकेयनायक गुडेयनायक
२५ मारतमनायक मल्लेयनायक हरियबूर माचगाड सि-
२६ गगौड सोमगौड बद्दियगौडन मादिगाड उत्तगौड बयचिगौड
२७ मारगौड मादिगौड अजिगौड इलुवाडिगडद कुडय कें-
२८ चगौड मकरनायकर नायक मल्लिगौड वसिय-इल्लिय वा-
२९ हुबलिसेट्टि पारिससेट्टि जिजेसट्टि अवर पुत्रर बलुगौड ब-
३० सवगौड माचेय मरतय मादय आलय माचयडक्त-
३१ गौडन मारय पायय चिक्कम्म त्रिविरोट्टिय मग आलगौ-
३२ ड चिक्कगौड सामगौड चिण्णयगाड मारगौड कमडगौड श्रीमन्महा(म)ण्-
३३ डलाचार्यर राजगुरगलु नयकीर्तिसिद्धान्तदेवर शिष्यर नेमि-
३४ चन्द्रपण्डितदेवर बाल्चन्द्रदेवरु नयकीर्तिदेवरगुड्डु-
३५ गलु बाहुबलिसेट्टि पारिससेट्टि माडिसिद एक्कोटिजिनालय-
३६ द पद्मप्रभदेवर अष्टविधार्चनगे बूर मुन्दे आरिय मार-
३७ यनायक कट्टिसिद करे आ कोलेरिय गद्दे आ मूडलु सुत्तलु नट्ट
३८ बेद्दलेय हिरियकरय मोदलेरि-
३९ गदेय श्रीमुरगमवस्मरद बयि

४० बोम्म नातिबेय सा····सेनबोव सामन्त····

४१ पूर्वकं माडि बिट्ट दत्ति यिधर्मवं प्रतिपालिसिद् गंगे

४२ ·······

[यह लेख होयसल राजा वीरवल्लालदेवके राज्यकालमें वैशाख, श्रीमुखसंवत्सरमे लिखा गया था। बाहुवलिसेट्टि तथा पारिससेट्टि-द्वारा निर्मित एककोटि जिनालयके पद्मप्रभदेवकी पूजाके लिए अरेय मारेयनायक-द्वारा एक तालाव तथा अन्य कई नायकों, गौडों तथा सेट्टियों-द्वारा जमीन दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है। इनमें नयकीर्तिसिद्धान्तदेवके शिष्य नेमिचन्द्र तथा वालचन्द्र पण्डित भी सम्मिलित थे।]

[ए०रि० मै० १९२७ पृ० ४५]

२८७

वेरावल (सौराष्ट्र, गुजरात)

१२वीं सदी, अन्तिम चरण संस्कृत-नागरी

१ ····त्वचम्प्रति नित्यमद्यापि वारिधौ ॥ १ भूयादभीष्टसंसिद्ध्यै मु-

२ ····पाटकाख्यं पत्तनं तद्विराजते ॥ ३ मन्ये वेधा विधायैतद्दिधित्सुः पुनरीदृश-

३ ···रैन्द्रैर्नयमंत्रजैर्यत्र लक्ष्मीः स्थिरीकृता ॥५ तन्निःशेषमहीपाल-मौलिघृष्टांहि····

४ ····सो नृपः। तेनोत्खातासुहृन्मूलो मूलराजः स उच्यते ॥७ एकैकाधिकभूपालाः स्म --

५ ···जिमजखुराहतं। अतुच्छमुच्छलत्सूर्यपर्वभ्रममजीजनत् ॥९ पौरुषेण प्रतापेन पुण्येन--

६ रन्यूनविक्रम ।श्रीभीमभूपतिस्तेषा राज्य प्राज्य करोत्यय ॥११ मालाक्षराण्यनक्षाणा यो बभज स--

७ न्नन्दिसघे गणेश्वरा । बभूवु कुदकुदाद्या साक्षात्कृत जगत्त्रया ॥१३ येषामाकाशगामित्व स्या--

८ तपचक्रमुज्वल । रचयित्वाथ जल्पति येऽन्यन्नियमपूर्वक ॥१५ कालेऽस्मिन् भारते क्षेत्रे जाता--

९ राणास्तत्त्ववत्मनि तेषा चारित्रिणा वशे भूरय सूरयोऽभवन् ॥१७ सद्वेषा अपि निर्द्वेषा, सकला अक-

१० भात्वस्यारोह तत् । श्रीकार्ति प्राप्य सत्कार्ति सूरि सूरिगुण तत ॥१६ यदीय देशनावारि सम्यग्वि

११ कश्चिन्नकूटाञ्चचाल स । श्रीमन्नेमिजिनाधीशतीर्थयात्रानिमित्तत ॥२१ श्रणहिल्लपुर रम्यमाजगाम

१२ नींद्राय ददौ नृप । बिन्दु मदलाचाय सत्त्र समुखासन ॥२२ ॥२३ श्रामूलवसतिकाख्य जिनभवन तत्र

१३ सन्नर्यैत्र यतीश्वर । उच्यतेऽजितचद्रा यस्ततोभूम गणीश्वर ॥२५ चारुकीर्तियश कीर्ता ध-

१४ मुर्णो यो रत्नत्रयवानपि । यथावद् विदितार्थोभूत् क्षेमकीर्ति-स्ततो गणी ॥२७ उदात रम रुसज्ज्योति

१५ लेपि वासिते हेमसूरिणा । वसप्रावरणाय-

१६ कीर्तिर्यत्कीतिनर्तकीव नरिनर्ति । त्रिभुवनरगे वासुकिनूपुरशशि-तिलकनेपथ्या ॥३१ तं

१७ नि ॥ ३२ समुद्धृतममुच्छ्लशीर्णजीर्णजिनालय । य कृतारमनिर्वाहसमुत्साहशिरोमं (णि ॥३३)

१८ ····च यैरवगण्यते ॥३४ वादिना यत्सदर्दृंदनखचंद्रेषु विंबिताः। कुर्वंत विगतश्रीकाः कलंक-

१९ ····दं तीर्थभूतमनादिकं ॥३६ सीतायाः स्थापना यत्र सोमेशः पक्षपातकृत्। त्रामत्रैलोक्य-

२० तदुद्धृतं तेन जातोद्धारमनेकशः ॥३८ चैत्यमिदं ध्वजमिषतो निजभुजमुद्धृत्य सक--

२१ ····षतो मंडलगणिझलितकीर्तिसत्कीर्तिः। चतुरधिकविंशतिलस-द्ध्वजपटपट्टहस्तकं-

२२ ····मेतद्दीयमद्गोष्ठिकानामपि गल्लकानां ॥४१ यस्य स्नानपयो-नुलिप्तमखिलं कुष्टं दर्नो-

२३ चंद्रप्रभः स प्रभुस्तीरे पश्चिमसागरस्य जयताद् दिग्वाससां शासनं ॥४२ जिनपतिगृह-

२४ चार्यवर्यो व्रतविनयसमेतः शिष्यवर्गैश्च सार्द्धं ॥४३ श्रीमद्विक्रम-भूपस्य वर्षाणां द्वाद (श)-

२५ कर्कीर्तिलघुबंधुः। चक्रे प्रशस्ति मनघा (मतिदिव्यां) प्रवरकीर्ति-रिमां ॥४५ सं १२····

[यह लेख टूटा है तथा उसका आधा भाग मिल नही सका है। गुजरातके चौलुक्य राजा भीमदेव (द्वितीय) के समय बारहवीं सदीके अन्तिम चरणमे यह उत्कीर्ण किया गया है। पश्चिम समुद्रके तीरपर चन्द्रप्रभ तीर्थंकरका पुरातन मन्दिर था। यहाँकी मूर्तिके गन्धोदकसे कुष्ठरोग दूर होता था। इस मन्दिरके जीर्णोद्धारका इस लेखमे वर्णन है। आचार्य कुन्दकुन्दकी परम्परामे नन्दिसंघमे श्रीकीर्ति मुनि हुए। ये चित्रकूटसे नेमि-तीर्थंकरके तीर्थ (गिरनार) की यात्राके लिए जाते हुए गुजरातकी राजधानी अणहिल्लपुरमें आये। वहाँ राजाने उनका सत्कार कर उन्हें

मण्डलाचार्य यह बिरुद दिया। इस नगरके मूलबसतिका नामक जिन-मन्दिरका भी यहा उल्लेख है। अनन्तर क्रमश अजितचन्द्र, चारुकीर्ति यश कीर्ति, तथा क्षेमकीर्ति इन मुनियोका नामोल्लेख है। किन्तु इनका परस्पर सम्बन्ध स्पष्ट नही है। इसी तरह आगे मण्डलगणि ललितकीर्तिका उल्लेख है जिनने सम्भवत यह जीर्णोद्धार कार्य कराया था। इस लेख की रचना प्रवरकीर्तिने की थी। इसका ८२वाँ पद्य मदनकीर्तिकृत शासन-चतुस्त्रिंशिकामे लिया गया है।]

[ए० इ० ३३ पृ० ११७]

२८८

कुमारबीडु (मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

१ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाछन जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन (॥) जयति स-

२ कलविद्या (देवतार नपाठ हृदयमनुपलेप यस्य दीर्घं स देव) जयति तदनु शास्त्र तस्य यस्म (वमिथ्या)

३ समय (तिमिरहारि ज्योतिरक नराणा) स्वस्ति समधिगतपच-महाशब्द महामण्डलेश्वर द्वारावतीपु-

४ रवराधीश्वर यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्वचूडामणि मलेराजराज मलपरोलुगण्डाद्यनेक-

५ नामावलीसमलकृतरप्प श्रीमत् त्रिभुवनमल्ल तलकाडु कोङ्गुनगिलेगगवाडिनोलम्बवाडिबनवासि (मुडे बरबण्णगोयिल्ल)

[यह लेख किसी जैन सैनिककी मृत्युका स्मारक है। होयसल वशके किसी राजाके विरुद प्रारम्भमें दिये है। किन्तु राजाका नाम तथा सैनिकके नामादिका विवरण नही मिलता क्योकि लेख अधूरा है।]

[ए० रि० मै० १९३८ पृ० १६८]

२८९

ग्राम (हासन, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[इस लेखमे किसी होयसल राजाके सेवक पेर्गडे वासुदेवके पुत्र जिनभक्त उदयादित्यका वर्णन है। इसने सूरस्थगणके चन्द्रनन्दि गुरुके उपदेशसे वासुदेवजिनवसतिका निर्माण किया था। यह लेख इस समय केशवमन्दिरमे लगा है।]

[ए० रि० मै० १९१७ पृ० ४४]

२९०

ग्राम (हासन, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[इस लेखमे शान्तिग्रामके होन्निसेट्टि तथा अन्य भव्यो-द्वारा देसियगण-इंगलेश्वर शाखाके हरि····आचार्यके उपदेशसे सुमतिभट्टारकको मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। लिपि १२वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९१७ पृ० ६०]

२९१

कुप्पट्टूर (मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[यह लेख पार्श्वनाथमूर्तिके पादपीठपर है। मूलसंघकाणूरगण-तिन्त्रिणीक गच्छके पर्वतमुनिका इसमें उल्लेख है। लिपि १२वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९११ पृ० ४०]

२९२

माविनकेरे (कडूर, मैसूर)

संस्कृत-कन्नड, १२वीं सदी

१ श्रीमूलसंघपनसोगवलीप्रसिद्धदेशीयविदितपु-
२ स्तकचारगच्छे । थ कुण्डकुंदमुनिव-
३ शल्लामभूल्ललितकीर्तिमहा-
४ मुनींद्र ॥ तत्पादयुगलाभोजशेखरी-
५ भूतमस्तक जिनदत्तान्वय स्वामी योभूत
६ नन्दन ॥ स्वस्तिश्रीशकवत्परे
७ पृथ्वीपति मो-
८ य श्रीकलशा-
९ र्यचारुनगरे श्रीच-
१० द्रनाथप्रभो( )प्रि(प्री)-
११ त्या साधयद्रुम्म-
१२ वेन महता बिंब-
१३ प्रतिष्ठापित ॥ श्रा
१४ श्रीदेवच-
१५ द्रदेवर गे
१६ यि ओदु

[यह लेख स्थानीय बसदिके चन्द्रनाथमूर्तिके समीप है । मूलसंघ-देशीयगण-पनसोगा शाखाके ललितकीर्ति मुनिके शिष्य देवचन्द्र-द्वारा यह मूर्ति स्थापित की गयी थी । जिनदत्तके वंशके किसी राजाका इसमें उल्लेख है । शकवर्षके अंक लुप्त हुए हैं । लिपि १२वीं सदीकी है ।]

[ए० रि० मै० १९४६ पृ० ३६]

२९३-२९४

निट्टूर (मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[यह लेख शान्तीश्वरबसदिके द्वारपर है । मालवेके पुत्र मलेय-द्वारा यहाँके मूर्तियोंके निर्माणका इसमें उल्लेख है । लिपि १२वीं सदीकी है । यहाँके एक अन्य लेखमें शिवनहसेट्टिकी निषिधिका उल्लेख है ।]

[ए० रि० मै० १९१९ पृ० ५१]

२९५

कोनकोण्डल (अनन्तपुर, आन्ध्र)

कन्नड, १२वीं सदी

[यह लेख रसासिद्धुलगुट्ट नामक पहाड़ीपर एक पाषाणपर खुदा है। इसमे गुम्मिसेटिके पुत्र ब्रमदेवका उल्लेख किया है। लिपि १२वीं सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४५७ पृ० १२६]

२९६

हूलि (जि० बेलगांव, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[इस लेखकी लिपि १२वीं सदीकी है। नेमिचन्द्र सिद्धान्त-चक्रवर्तीके शिष्य नविलूरुके गोवरिय कलिगावुण्ड, तावरे महादेविशट्टि आदिके द्वारा इस दरवाज़ेके बनवाये जानेका इसमे उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ ई क्र० २४ पृ० २४२]

२९७

गोरूर (हासन, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[इस लेखमे मलवसेट्टि, कटकद चम्मिसेट्टि तथा केसिसेट्टि इन तीन व्यक्तियों-द्वारा गोरवूर ग्रामकी वसदिके लिए पाँच खंडुग भूमि दान दिये जानेका वर्णन है। मल्लियक्का नामक स्त्रीकी भी प्रशंसा की है। लेखकी लिपि १२वीं सदीकी है। इसका बहुत-सा भाग घिसनेसे नष्ट हो गया है।]

(मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित)

[ए० रि० मै० १९४३ पृ० ७४]

२९८-३००

मनोली (जि० बेलगांव, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[इस लेखकी लिपि १२वी सदीकी है। यापनीय संघके आचार्य मुनिवल्लिके मुनिचन्द्रदेवको समाधि कुल्लेय्वेतगावुडकी पुत्री गंगेके-द्वारा स्थापित की गयी थी। ये मुनिचन्द्र सिरियादेवी-द्वारा स्थापित बसदिके आचार्य थे।

इसी समयके दूसरे लेखमें मुनिचन्द्रके शिष्य पाल्यकी(ति) देवके समाधिमरणका उल्लेख है। तिथि आश्विन कृ० ५, शुक्रवार, साधा(रण) संवत्सर, ऐसी है।

यहाके तीसरे लेखमें इसी परम्पराके एक और आचार्यके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ ई० क्र० ६३-६५ पृ० २४५]

३०१

कीलक्कुडि (जि० मदुरा, मद्रास)

कन्नड, १२वीं सदी

समणरमलै पहाडीपर पाषाणके दीपस्तम्भके समीप

[इस लेखमें आरियदेव, बेलगुलके मूलसंघके बालचन्द्र देव, नेमिदेव, अजितसेनदेव तथा गोवर्धनदेवका निर्देश है। लिपिके अनुसार यह १२वीं सदीका लेख होगा।]

[रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० २६४]

३०२

वेहार (नरसिंहगढ़, मध्यप्रदेश)

प्राकृत-नागरी, १२वीं सदी

१ ……अं घणोमम्मं सुंदरं

२ सि…………………

३ । तिहुअणतिलअं सो-

४ री- शावडस्स अमराल-

५ अं रम्मं ॥ श्रीआण-

६ देवेन गाथा वि-

७ रचिता

[यह लेख सोलखंभ नामक उध्वस्त जैन मन्दिरमें एक स्तम्भपर है। इसमें श्री आणदेव-द्वारा लिखित एक गाथा है जो किसी तिहुअणतिलअ (त्रिभुवनतिलक) मन्दिर तथा उसके स्थापक शावडके बारेमें है। इसी स्तम्भपर कुछ अन्य व्यक्तियोंके नाम भी खुदे हैं। गाथाकी लिपि १२वीं सदीकी है।]

[रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० १७४]

३०३

सवणूर (धारवाड, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[यह निसिधि लेख मलधारि आचार्यके समाधिमरणका स्मारक है। तिथि शुचि व० ८, सोमवार, विश्वावसु संवत्सर ऐसी दी है। लिपि १२वीं सदीकी है।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ५९ पृ० ३३]

३०४

अग्गिनभावि (धारवाड, मैसूर)

[यह लेख वर्धमानमूर्तिके पादपीठपर है। बहुत अस्पष्ट हुआ है। लिपि १२वीं सदीकी है।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ७० पृ० ३४]

३०५-६

मण्डूर (धारवाड, मैसूर)

[यहाँ १२वीं सदीकी लिपिमें दो लेख हैं जो जैनोंसे सम्बन्धित प्रतीत होते हैं।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ९४ ९५ पृ० ३६]

३०७

सालिग्राम (मैसूर)

कन्नड १२वीं सदी

[यह लेख अनन्तनाथकी मूर्तिके पीठपर है। मूलसंघ-बलात्कारगणके माघनन्दि सिद्धान्तचक्रवर्तिके शिष्य शम्भुदेवकी पत्नी बोम्मव्वे-द्वारा अनन्त व्रतकी समाप्तिपर यह मूर्ति स्थापित की गयी थी। लिपि १२वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३६]

३०८

गोरूर (हासन, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

१ ओं श्रीमत् परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छन(।)जीयात् त्रैलोक्य-
नाथस्य शासनं जिनशासन(॥)

२ ओं मेलेनिसिपुंदी मलेगे धात्रियोलं किसुवल्लियन्तद पालिसि संततं सुखदिन् इर्पिनेगं सिरि
३ पुट्टे पुट्टिदं हेरियवासेवेग्गडेगवातन वलभे निजिकब्बेगं लोलेयोल् एंदे वणिणपुट्टु पे-
४ गंडे सत्यमनं जगज्जनं ॥ स्थिरने वाप्पमराद्रियिंदधिकगंभीरने वाप्पु सागरदिंदग्गलद-
५ न्तु दानियें सुरोर्वीजके मारण्डलं सुरराजंगेणेयेण्दे कीर्तिपुट्टु केंकोण्डक्करिं संततं
६ धरेयेल्लं सले सत्यवेगंडेयोल् ओदार्यमं सोर्यमं ॥ कोट्टपेनेंदोड् ईश्वरन कोट्ट वर

दूसरा

७ सरणेंट्टु वंदरं नेट्टने····डे वज्रि····पूण्डु कोडिट्ट विरो····
८ तरिवन् एन्दोडे ताने कृतान्त····यि···पेगंडे···
९ आतन मावं सकल मही····जवल्लि····वेनिसि नेगल्वं भूतल
१० दोलगेसेयं कच्छवेगंडेय····णपु····य विण्पु
११ नाडे केसरिय पोडर्पु····मनो····यनि
१२ सिर्द वीरनोल् अदेंट्टु करं नलि····तरिपुट्टु क···ले पलरं निरन्तरं

तीसरा भाग

१३ एने नेगल्द कच्छवेगंडेगनुपम कुल···गे धोरे
१४ यलु विनुत····तं वगे
१५ रेनिप्पर··· मणिय-
१६ न्तवरीवंरीतन यं···सन्तत जस····
१७ यल् अखिल भूमण्डलदे····ख्यातंगे सले नेगल्द गंगेनं गोरिगं वेम्म
१८ ····नो दोरेयेनिप्पर् भूतलदोलु···यं ॥···गव्यंतंवरि-
१९ य समर समयदोल····वस···मन पोललितर····आ विसुविन

२० कुरवधु ता भूविनुत श्रीग नेलेयेनिप्प गनेयर् पलर पॅण्डिनिरॅनेगॅ वर्पर

२१ योलु ॥ आतन किरिय पॅण्डति रतिय पोल्वलु सुपिर्यति-चरियोल् अतियन्वे

२२ मॊल्वल्गनिधि तत यशोवल्लरिय मतिहोमर् अदेनु बॅण्णपर् वाचवेय ॥ अवरीवंर गु-

२३ (रु)गल् अवर् भुवनजनाराध्यरखिलगुणगणनिलयर् कडि वर नयकीर्ति-

२४ देवसिद्धान्तेशर ॥ आ महानुभावनधॉगियरवसान कालदोलु ॥ बोधिसुत जिनपदम वा-

२५ व सिद्धपदमन् अक्षय पदम विनुत मुनिपदम वाचवे वेग्गडि-तियर् सुरगतिय

२६ परम जिनेश्वर पदपकन्हमनानंददि नेनेयुतागलु पिरिदॉदु भक्तियॅ

२७ तिय सावियक्कन् एय्दिदल् आगलु ॥ अवर परोक्षदोल् आद सविनयदि केल

२८ यिन्ति कवल भुवनजन्तरियॆ निरिमिदल् अविचलमप्पन्तु चन्द्रतारवरं ॥

[इस लेखमें किसुवल्लि ग्रामके शासक सत्यवेग्गडेका उल्लेख है। यह हेरियसामेवेग्गडे तथा उनकी पत्नी निजिकव्वेका पुत्र था। इस सत्य-वेग्गडेकी पत्नी वाचवे थी। वह कच्चवेग्गडेकी पुत्री थी। इसके गुरु नयकीर्ति सिद्धान्तदेव थे। लेखमें वाचवेके देहत्यागका उल्लेख है जो सम्भवत सत्यवेग्गडेकी मृत्युके कारण किया गया था। लेखकी लिपि १२वीं सदीकी प्रतीत होती है।]

[ए० रि० मैं० १९४२ पृ० ७१]

३०९

हलेबीड (मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

१ स्वस्ति श्रीमन्नयकीर्तिसिद्धांतचंद्रयतिदेवर्गे कवडेयर जकव्वेयरु माडिसि कोट्ट पट्टशालेय शान्तिनाथदेवर अष्टविधार्च(ने)गं खंडस्फुटितजीर्णोद्धारक्कं....

२ शिष्यरु सुरभिकुमुदचंद्रापरनामधेयरप्प नेमिचंद्रपंडितदेवरु जीवंगल् हिरियकेरेय बोलवगट्ट दोलगरेय हुणसेय....

३ ल्लगे मूरु गंगवुरद उत्तमवागि ? मूनूरु बेद्लेयं सर्वबाध-परिहारवागि चंद्रार्कतारंबरं सल्वंतागि कोट्टरु ई धर्मवं अवर शिष्यसंतानगलु नडेसुवरु

[यह लेख १२वीं सदीकी लिपिमे है । कवडेयर जकव्वे-द्वारा निर्मित पट्टशालाके शान्तिनाथदेवकी पूजा आदिके लिए कुछ भूमि बोलवगट्ट तालाबके समीप और गंगवुर ग्रामके समीप दान दी गयी ऐसा इसमे निर्देश है। यह दान सुरभिकुमुदचन्द्र अपरनाम नेमिचन्द्र पण्डितदेवने दिया था। जकव्वेके गुरु नयकीर्ति सिद्धान्तचन्द्र थे ।]

[ए० रि० मै० १९३७ पृ० १८५]

३१०

अथनी (बेलगांव, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[इस लेखमे बम्मण-द्वारा देसिगण-इंगलेश्वरबलिके सामन्तण बसदिसे सम्बद्ध रत्नत्रयमन्दिरके जीर्णोद्धारका उल्लेख है । लिपि १२वीं सदीकी है ।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १७३ पृ० ३४]

३११

मरसे (मैसूर)

संस्कृत–कन्नड, १२वीं सदी

१ श्रीमद्द्रविलसंघेस्मिन् नन्दिसंघेस्त्यरुंगल अ-
२ न्वयो भाति योशेषशास्त्रवा-
३ राशिपारगै

[यह लेख एक खेतमें मिली पार्श्वनाथमूर्तिके पादपीठपर है। इसमें द्रविलसंघ-नन्दिसंघके अन्तर्गत अरुंगल अन्वयकी प्रशंसा है। यह श्लोक अन्य कई लेखोंमें पाया जाता है। लेखकी लिपि १२वीं सदीकी है। मुनिके बारेमें अन्य कुछ विवरण नहीं दिया है।]

[ए० रि० मै० १९२९ पृ० १०६]

३१२

मावलि (मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वा(दा)-
२ मोघलांछन जीयात् त्रैलोक्य-
३ नाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ श्री (मू)-
४ लसंग कुण्डकुन्दान्वयद
५ काणूर्गण माधवचन्द्रदेव(र गु)-
६ ड्डि नागव्वे गोरवेय मगलु म(मा)-
७ धियिंधियिंद मुडिपि स्वर्ग-
८ स्तेयादलु मंगल महा
९ श्री श्री

[इस निसिधिलेखमें मूलसंघ-कुण्डकुन्दान्वय-काणूर गणके माधवचन्द्र-देवकी शिष्या तथा गोकवेकी कन्या नागव्वेके समाधिमरणका उल्लेख है। लेखकी लिपि १२वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९४१ पृ० १९२]

३१३

हम्पी (वेल्लारी, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[यह लेख एक भग्न स्तम्भपर १२वी सदीकी लिपिमें है। इसमें गोल्लाचार्य, उनके शिष्य गुणचन्द्र तथा उनके शिष्य इन्द्रनन्दि, नन्दिमुनि तथा कन्तिका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० ३३५ पृ० ५०]

३१४

कलकत्ता (नाहर म्यूजियम)

कन्नड, १२वीं सदी

१ देमायपगलाणन्तियनोंपि निमित्त-

२ वागि माडिसिद प्रतिष्ठे

[यह लेख पीतलकी चौबीस तीर्थकरमूर्तिके पिछले भागपर खुदा है। यह मूर्ति देमायप्प नामक व्यक्तिने अनन्तव्रतकी समाप्तिके समय स्थापित की थी। लिपि १२वीं सदीकी है। लिपिसे पता चलता है कि इसका निर्माण कर्नाटकमें हुआ था।]

[ए० रि० मै० १९४१ पृ० २५०]

३१५

रूगि (बिजापूर, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[यह लेख किसी जैन आचार्यके समाधिमरणका स्मारक है। लिपि १२वीं सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९३६-३७ क्र० ई० ७९ पृ० १८८]

३१६

शेरगढ (कोटा, राजस्थान)

संस्कृत-नागरी, १०वीं सदी

[इस लेखमे आचार्य वीरसेन तथा सागरसेन पण्डितका उल्लेख है। लिपि १२वी सदीकी है।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ४३१ पृ० ७०]

३१७

रायबाग (बेलगाव, मैसूर)

कन्नड, शक ११२४ = सन् १२०१

[यह लेख रट्ट वंशके कार्तवीर्य ४ के समयका है। इस राजाने वैशाख पूर्णिमा, शक ११२४, शुक्रवारको एक जिनमन्दिरके लिए कूण्डि ३००० प्रदेशका चिचलि ग्राम दान दिया था।]

[रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १५१ पृ० ३३]

३१८

बेलगाँव (क्रमांक १ ब्रिटिश म्यूजियम)

कन्नड, शक ११२७ = सन् १२०४

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनम् । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥ नमो वीतरागाय शान्तये ॥

२ श्रीजिनसमयनवांबुधि राजिसुतिर्कमथनोर्जितामृतरत्न-श्रीजननगृहं सत्वदयाजीवनमपरिमितगभीरमपारं ॥ नवमौक्तिकहारं

३ श्रीयुवतिगिदेनिसिर्द कृष्णनृपवंशजपार्थिवचयदोल् सेनरसं भुवनतुतं मिसुपनेसेव नायकमणिवोल् ॥ वरकूं-

४ डिमडलाधीश्वरनेनिपा सेनविभुगे सुतनादं दुर्धरवैरिभूप-भीकरपराक्रमं कार्तवीर्यननुपमशौर्यं ॥ आ विभुगादल् सति पद्मा-

५ वति जिनसमयवृद्धिकरणापरपद्मावति बुधाभिमतपद्मावति वज्रा-युधंगे पौलोमिय वोल् ॥ अवरिर्वरगं पुट्टिदनवनीश्वरमौ-

६ लिमंडनं लक्ष्मनृपं परिमलमुक्ताफलमोसेव वाधिगं ताम्रपर्णिगं पुट्टुववोल् ॥ एनेवं लक्ष्मिदेवक्षितिभुजन भुजाटोपमं विद्विषद्धा-त्रीनाथर् संजे-

७ गेपं भटपदहतियिंदाद केंदूलियेंदालीनाअध्वानमं तांनयनुरग-खुरोद्घोपसंदंजि नानास्थानस्थायित्वमं केल्पडेयदे विट्टो-

८ डुत्तमिर्दपरिन्नुं ॥ अपराधिगलने नोल्पुदु नृपालकरदंडनीति वाप्पु वनाज्ञाधिपनागे लक्ष्मभूविभुवपराधं दंडमेंबि-विल्लें कृतियो ॥

९ अमृतांभोराशियोल् पुट्टिद सिरियिनणं बय्नु धात्रं स्वमायाक्रमदिं देरोर्वलं निर्मिसि चपलेयना कृष्णनोल् कूडि मत्ता विस-

१० कोंडद्माग्र्येय सुस्थिरयनोसेदु कोट्ट महोभूविकायोत्तमनर्णो
ल्दिमिदेवगेने मिगे तलेदल् चन्द्रिकादेवि चेल्व ॥ प्रणुतश्रीनिधि
चंद्रिका-

११ सतिय शीलप्रातम कूडे धारिणियोल् वर्णिमलाल्मातपर
लक्ष्मीर्वोशन क्षत्रियामणिय शौलद मच्चिमल् फणिपन पूण्डे-

१२ ते ता तन्न कयगुणम कडुदरिंदव पोगलल्कार्प विश्वजिह्वालियिं ॥
नरपतिलद्मिदवमति चन्लश्वि निजोद्घहस्तदि धरगमयल्के

१३ सक्रमणदोल् कुडे काचनम बेरल्गलोल् बेसेद हमकालिकेय कर्प-
सेदिपुदु बाहुकल्पवल्लरिय तलप्रत्रालद नलम-

१४ सवर्कल्सिदं तुविवोल् ॥ श्रीवसुदेननलेल्व लक्ष्मनृपगवनिद्य-
देवकीदेविवोलोप्पुवा विनुतचदलदेविगमादरात्मनर् भूवलय-

१५ प्रवद्वलकेशवरेंदने कातवीर्यधात्रीवरमल्लिकार्जुनकुमारकरूनित-
शौर्यशालिगल् ॥ दृढशौर्य कार्तवीर्यं तल-

१६ रं वल्युत दिग्जयक्कन्यधात्रीपतिगल् बेल्चितु नीर पुगलवर शरो-
शोण्णदिं वत्ति विलोद्गतमोत्युत्कर्षवृत्तिप्रसरणनिमरद्ध-

१७ मंतोयोर्मिर्यि विस्तृतमागल् हानियु वृद्धियुमदु निजमर्मोधिगेंत-
र्विमूदर् ॥ ई कमल यवानिचयमी क-

१८ रिमकुम्भी विलासिनीलोकमिवेम्मगा नत्रिय कालेगदोल् वयला-
जियोल् पुराणीकद युद्धदोल् पिडिदर्गितिवनी कलिकार्तवीर्यनेंदा-

१९ कुलमागि नोडुदुदु वन्धनशालेयोल् इर्दरिभजम् ॥ श्रीरट्टवशमेंब
सुमेरुवनाश्रयिसि कल्पकुजमनमेनलें राराजि-

२० पुदुदो विवुधाधार श्रीमत्कुल प्रमोदनिवास ॥ श्रा महनीय
कुलक्कं शिरोमणि भव्याव्जक्के तेजोमणि रक्षामणि बुधवितति गे

२१ चिंतामणि बेल्पगेनल्के रंजिपनुदयं ॥ ललितगुणौवं लक्ष्मीनिलयं संश्रितमधुव्रतं तलेद्दं निर्मलमप्पुदयसरोवरदोल् उदयमं पुरुप-पुंडरीकं बी-

२२ चं ॥ प्रकटश्रीनिधि बीचणं कुलगृहं शीलक्के लीलाश्रयं सुकृतक्कुद्भवमंदिरं सिरिगे सेवास्थानकं सद्गुणक्के कलाभ्यासपदं सरस्वतिगे संचारालयं

२३ धर्मकार्यकलापक्कभिवृद्धिगेहममलाचारक्केनल् रंजिपं ॥ बीचंगे सुकवि संस्तुतवाचंगादर् सुतर् जिनेंद्रमतश्रीलोचनसंनिभरात्महिता-

२४ चारपर् नेगल्द पेर्मणनुमप्पणनुं ॥ पापापहारिजिनपश्रीपदभक्तं सुपात्रसंकुलदानव्यापारगमितदिननेनिपी पेर्मंगे पेर्मणं तवर्मनेयादं ॥

२५ स्थिरपद्मोदयमंबुजक्के कमलं पद्माकरक्कंबुजाकरमुद्यानवनक्के पूर्णफलिताराम पुरक्कोप्पुवंतिरं लोकोत्तमकार्तवीर्यनृपराज्य-

२६ गोप्पुवं सद्गुणाभरणं श्रीकरणाग्रगण्यनेनिसिर्द्दप्पं जगं बाप्पेनल् ॥ अनवद्योक्ति विनूतवाणिगुपदेशं चागमस्वप्नभूजनिकायकतिविस्म-

२७ यस्थितिकरं जैनक्रमांभोजपूजनमेंद्रध्वजविभ्रमश्रुतिलसत्संवादियें-दंद्दनिंद्यनयश्रीकरणाप्पणंगे दोरेयारी धात्रियो-

२८ क् धार्मिकर् ॥ अचलितगुणनिलयं चतुरचतुर्मुखनेनिसुवप्पण वल्लभे सुप्रचुरविवेकास्पदचारुचरिते वागदेवियेंब पेसरिंदेसेवल् ॥ वरवा-

२९ गदेविगमप्पणप्रभुगमादर् नंदनर् श्रीजिनेश्वरमार्गप्रतिभासकप्रविलसद्रत्नत्रयंगल् विनेयर पूर्वार्जितपुण्यदिंदे निरुतं मेयवेत्त-वेंवंते-

२० सुस्थिरलक्ष्मीपतिश्रीचर्वजवळदेवर् सज्जनानंदकर् ॥ प्रणुतोद्यत्-
पात्रदान व्रतगुणचरित सज्जिनावासनिर्मापणश्रा मोर्वी-

२१ शराज्याभ्युदयनयचय तम्मोलेपुत्तिरल् धारिणियोल विख्याति-
वेत्तिर्दरे मोर्गयिपरा गडरादित्यमेनाप्रणा निंच कार्तवीर्यक्षि-

२२ तिपतिसचिवोत्तमनी श्रीचिराज ॥ सुजनाकर्षणमात्मवल्लभ-
वशीकार सुहृन्मोहन कुजनोच्चाटनमन्यमत्रिचयमानस्तभन
दुर्णयव-

२३ जविद्वेषणमेंबिवागे निजमत्रागगलिं रजिप विजयश्रीनिधि-
कार्तवीर्यसचिव लक्ष्मीचण श्रीचण ॥ परवधुगनुमतिय जैनरोय-
लागदु परप्र-

२४ वर्तनेयोल् जैनरोलधिक श्रीच तदरिनृपभुजविजयलक्ष्मिय
पतिगीत ॥ हृदयाह्लादकनादनुविगिवनोर्व सर्वमपद्गुणास्पद-
श्रीचानुजर्वजण वि-

२५ भूतयोल् धर्मात्मन मूर्तियोल् मदन चागदोल् दाधवतनूज
जैनपूजाभिषेकदोलिंद्र नयदाल् नृहस्पति रणोद्यत्क्रीडेयोल
रावच ॥ विद्रि-

२६ नजिनागमावुनिचिवर्धनदोल् भिजवशवारिजाभ्युदयविधानदोल्
त्रुधमनोभिमतार्पणदोल् कलकमिलद हिमरोचि तापहृतियिल्लद
भानुविभू-

२७ दवृत्तियिल्लिद सुरभूरुह धरेयोलप्पसुत बलदेवनोप्पुव ॥ स्वस्ति
भमधिगतपचमहाशब्दमहामण्डलेश्वर कार्तवीर्यदेव निजानु

२८ जयुवराजकुमारवीरमल्लिकार्जुनदेव बेरसु वेणुग्रामस्कन्धावारदोल्
साम्राज्यसुखमनुभविसुत्तमात्मीयधीकरणाग्र-

२९ गण्यनुमखिलमत्रिजनवरेण्यनुमप्प श्रीचिराज माडिसिद

रद जिनालयद श्रीशान्तिनाथदेवर नित्यपूजाभिषेकं मोदलाद धर्मकार्यनिमित्त-

४० मागि तज्जिनालयाचार्यश्रीशुभचंद्रभट्टारकदेवर्गे शकवर्षद ११२७ नेय रक्ताक्षिसंवत्सरद पुष्यसुद्धबिदिगे बड्डवारदोल् आद संक्रमण-

४१ समयदोल् नाल्छासिर्वं महाजनंगल् महितमागि धारापूर्वकं माडि वेणुग्रामेयोल् कोट्ट स्थलवृत्ति अदर तेंक देसेय बजेय खारिगेयिं प-

४२ डुवल् कोडगेय्य इप्पत्तनाल्कनेय हत्तियल्लि इरिसिल्गट्टे सहितं मत्तरय्दु ॥ आ वेणुग्रामेयल्लि हिरिय मूडगेरिय पडुवण बरियो-

४३ ल् तुग्गियर तोकणन मनेयिं बडगल् मनेयोंदु । पडुवगेरिय पडुवण हरियोल् मनेयोंदु । पडुवण गवनियल्लि मनेयोंदु । माल बसदियिं मूडण-

४४ कपिलेश्वरदेवर धवलारद कट्टिदिरोल्मने मूरु । आनेयकेरेगे होद बट्टेयिं बडगल् हूदोंट आ वेणुग्रामद कोलिं मत्तरेरडु कम्मविन्नूरेल्पत्तारु । कर्णबुरिगे-

४५ यालरिं पडुवण हेर्गेरेयिं पडुवल् केय्मत्तर् हंनेरडु । पडुवण हट्टियल्लि तेंकगेरियोल् अयगव्यगलदिप्पत्तोंदु कयर्नालद मनेयोंदु ॥ मत्तं स्वस्त्य-

४६ नेकगुणगणालंकृतसत्यशौचाचारनयविनयसंपन्नरुमाश्रितजन- प्रसन्नरुं मवपट्टिपुरप्रतिष्ठितजिनमुनिजनोपदिष्टगुरुशास्त्र क्रमप-

४७ रिपालितर्चारवर्णजुधर्मरुं समाचरितपुण्यकर्मरुं । पद्मावतीदेवी- लब्धवरप्रसादरुं विहितसकलजनाह्लादरुं । न्यायोपार्जनव्यवहार- प्रशस्तरुं

४८ मल्लुकिर्‌इद्दस्तरमप्प समयचक्रवर्ति जयपति सेट्टि मुख्यमागि वेणुग्रामद स्थलद समस्तमुम्मुरिदण्डगलु कूडिमूसासिरद पट्टणिग मादकाडु-

४९ मयलालादेसिमुम्मुरिदण्डगलु परशुराम नायक पोम्मण नायक अम्मुगि नायक प्रमुखरप्प समस्तवलाल्व्यवहारिगलु पडप नायक कों-

५० ड नबि सेट्टि पोरयच सेट्टि मोदलादेरुला मलेयालव्यवहारिगलु मसमा वेणुग्रामद स्थलद चिन्नगेयिकदवर दूसिगर मुख्यमागुल्दि परदर । तेल्लिगर । दिंक-

५१ सालिगरमितिवरल्ल नेरेदा शान्तिनाथदेवर वसदिगे बिट्टायवेत्तं- दोडे वडगणि वद कुदुरेगे नेल्मेट्टु हागवोडु । तॅक्ल् नडेवबकॅ सुक हागवोंडु । मलेयालर

५२ कुदुरेगे हागवोंडु । थरव्रत्तयदेत्तु कोनगलोलेन पेरिल्गेड सर्वाबाध- परिहार । चिन्नगेयिकद चीरक्के दूसिगवसरक्के । इत्तिवसरक्के । मणिगारवसरक्के । गधवण-

५३ वसरक्के गधवणिगरगडिगे । अक्कसालेगमटक्के बेरवेरे वरिसदर वरिसदेरे हिरिय हागवोंडु । होरगणि वद सीरेय कडगेगे नीमवोंडु । होरगणि वद गधवणक्के । क्षमडके । आ म-

५४ ड गद्याण तूकवट्टु । इत्तिय मडिगे तार मूरु आ पेरिंगे काणियोंडु । मत्तद मडिगे मत्तवोंदल्ल आ पेरिंगे मत्तगोमान । अकणथ मत्त मारिददा मत्तमोवल्ल । मत्त-

५५ वसरदगडिगे मत्त निच्चसोल्लगे । अकिरमरक्के श्रकियद । मेलसिण हरिंगे मेटसोमान आ जयक्के अरेयान । इगिन पेट्टिगेगे इगु गद्याण तूकवार श्रवलश्ररिसिनद जवलक्के आ म-

५६ गडं पलवरद्दु आ हेरिंगे अल्लश्चरिसिनं पलं हत्तु । गाणक्के निच्चत्त्वेण्णेयद्दं । श्रडकेय हेरिंगे अडकेयिप्पत्तरद्दु श्रा जवलक्के श्रडके हंनेरड्डु । एलेय हेरिंगेले नूरु हो

५७ रंगेलेयय्वत्तु । तेंगिन काय हेरिंगा कायोंदु । ओलेय हेरिंगे ओलेय सूडेरडु आ होरेंगे सूडोंदु । होरगणि बन्द बेल्लद मंडिगे बेल्लदच्चु हदिनय्दु आ

५८ होरेंगे अच्चोंदु । बालेय हेरिंगा कायारु आ होरेंगे काय्मूरु । नेल्लिय काय हेरिंगा काय्वल्लवोंदु । कर्विन हगरक्के ओंदु कर्वु । बलहद हेरिं-

५९ गे बलहवोर्पलं मत्तमा शान्तिनाथदेवर बसदिगे श्रीकार्तवीर्य-देवं कोट्ट अंगडि बडगगेरिय बडगण हरिय पडुवण कडेयोल् राजवीथियिं मूडल् नाल्कु ॥

६० बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः, यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं ॥ अपि गंगादितीर्थेषु हन्तुर्गामथवा द्विजं निष्कृतिः स्यान्न देवस्व-

६१ ब्रह्मस्वहरणे नृणां ॥ ओदर्विदी धात्रियेल्लं मिगे पोगले चिरं वर्तिसुत्तिर्के नित्याभ्युदयश्रीकार्तवीर्यक्षितिपविपुलसाम्राज्य-सन्तानमुर्वीविदि-

६२ तश्रीवीचिराजप्रथितविमलशान्तीशरावासधर्मं सदलंकारस्फुटार्था-न्वितपदकविकन्दर्पसुव्यक्तसूक्तं ॥ दोषव्यतीतमर्थविशेषमिदेने पेल्दनोल्दु शासनमं पीयू-

६३ षसमसूक्ति भातुर्मापाकविचक्रवर्ति कविकन्दर्पं ॥ श्रीमन्माधवचंद्र-त्रैविद्यचक्रवर्तिवाक्सुधारसनाभ्युदितनित्यसाहित्यकमलवनमरालं बालचंद्रदेवं पेल्द शासनं

[इस लेखका सारांश जै० शि० सं० भा० ३ में क्रमांक ४५३ में आ गया है। किन्तु उस समय मूल लेख प्राप्त नहीं हुआ था। पाठकोंकी सुविधाके लिए सारांशकी मुख्य बातें यहाँ दोहरायी जाती हैं। इस लेखमें रट्ट वंशके राजा कार्तवीर्य (चतुर्थ) तथा उनके बन्धु मल्लिकार्जुनका एवं उनके मन्त्री बीचणका उनके पूर्वजोंसहित परिचय दिया है। बीचणने बेलगांवमें रट्टजिनालय स्थापित किया था। इस मन्दिरके प्रधान भट्टारक शुभचन्द्रको शक ११२७, रक्ताक्षी संवत्सरमें द्वितीय पौष शुक्ल २ को बेलगांवकी कुछ जमीन तथा कुछ करोंका उत्पन्न दान दिया गया था। इस शिलालेखके पाठकी रचना माघनन्द्र त्रैविद्यके शिष्य बालचन्द्र कविकंदर्प-ने की थी।]

[ए० इ० १३ पृ० १५]

३१९

बेलगांव (क्रमांक २) (ब्रिटिश म्यूजियम)

शक ११२७ = सन् १२०४, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं। जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ नमो वीतरागाय शान्तये ॥

२ श्रीजिनसमयनवाबुधि राजिसुतिकंमथनूर्जितामृतरत्नश्रीजननगृह सत्वदयाजीवनमपरिमितगंभीरम-

३ पार ॥ जम्बूद्वीपद भरतदोल्बुजभवसासृष्टि कुंडिमहीचक्र वर्गे-गोलिपुदु सकलजनाविकघनसुकृ-

४ तफलविलासनिवास ॥ श्रीराष्ट्रकूटवंशसरोरुहवनराजहंसनाद-नावर विस्तारियशोनिधि सेनमहीरमण

५ सम्भूतामलोभयपक्ष ॥ सिरिय निजानुजेयनादरदिं शशियिंचु राजनाद नृप धरियिसि सिक्कता सेनराजनो-

६ ल् सेणसि राजनेनिपवनावं ॥ स्थिरतेयनुत्तंगतेयं धरिथिसिदा सेननृपवरोदयद्रोल् भासुरतेजोनिधि पद्मामिराम-

७ नेने कार्तवीर्यरविथुदयिसिदं ॥ विनतारिपुप्रतिविंबालि नितांतं कार्तवीर्यपदनखदोल् चेल्वेनिक्कुं पूर्वपदाश्रि-

८ तरनलिदु तन्मंत्रकृतिगे पडेदप्पुववोल् ॥ स्थितिकारिणि विमल-गुणान्विते पद्मलदेवि कार्तवीर्यधरित्रीपतिदयिते तां त्रिव-

९ र्गोन्नतिसाधिकेयपरनीतिविधेवोलेसेवल् ॥ जनियिसिदं समस्त-गुणसंकुलसंस्तुतलक्ष्मभूमिपं जननुतकार्तवीर्य-

१० विभुगं सतिपद्मलदेविगं सुतं जनियिपवोल् जयन्तनमरप्रभुगं शचिगं मयूरवाहनभवंगवद्रिजेगमंगमव हरिगं

११ रमाख्येग ॥ वनितेयरं मरुल्चुव समाकृतियि सुमनोभिवृद्धियं जनियिप शीलदिं कुवलयक्के विकासमनीव मयमेयिं जन-

१२ नयनक्के कामनो वसन्तनो चंद्रमनो दिटक्के पेळने विभु लक्ष्मी-देवनेसेवं कविसंकुलकल्पमहं ॥ विजितरिपुराजराजात्म-

१३ जे चंद्रलदेवि लक्ष्मनृपसतियेसेवल् विजितवटसर्पमदे विश्वजन-स्तुतचारुचरितेयेने धारिणियोल् ॥ अवरिर्वगं कलिकार्तवी-

१४ र्यनुं मल्लिकार्जुननुमादर् प्रोद्भवसाम्राज्यरामाधिपयुवराज-कुमाररात्मजर् वनतेजर् ॥ जनमेल्लं पेच्चे चल्लं

१५ पेगेवलरद सेल्लं जयश्रीगे नल्लं मनुमार्गं सन्निवर्ग तनगेसेये निसर्गं गृहीतारिदुर्गं सनयालापं

१६ सुरूपं नेगल्दनतिदिलीपं जितारातिभूपं वनशौर्यं क्षत्रवर्यं सुरकुजसदृशौदार्यनो कार्तवीर्यं ॥

१७ श्रीमत्कुलाब्धिवर्धनसोमनेनिप्पुदयविभुविनात्मजनत्युदामयशो-निधि वीचं भूमहितं सौम्यवृत्तियं तलेदेसेवं ॥ वीचं-

१८ गे सुकविसंस्तुतवाचंगादर् सुतर् जिनेंद्रमतश्रीलोचनसंनिभरात्म-हिताचरणर् नेगल्द पेर्मणनुमप्पणनुं ॥ तनगं

१९ ब्रह्मगमुधचनुरते तनग वार्धिग गुणपु चाग तनग कर्णगमत्युन्नति सरि तनग मेरग भूप्रियत्व तनग चन्द्रगमर्हन्मतर-

२० चि तनग वारिषेणगमेंतनिश मव्याळि वणिगप्पुदु गुणियेंनि-मिदप्पण प्रीतियिंद ॥ श्रीकरणाग्रणिगप्पगाकलितल्स-

२१ चरित्रे दयितेयलकाराकीर्णे विनुते वरवणाकृति वाग्देविगुचित-नामदिनेसेवल् ॥ घनलक्ष्मीपतिपाहुग नेगल्द कु-

२२ लोदेविग धर्मनदनभीमार्जुनराद्वोल् तनुजरादर् विश्रुतर् कार्तवीर्यनृपश्रीकरणाग्रणगमेसेवो वागदविग मारशी-

२३ यंनिधानर् विभुवीचवैजभल्ळदेवर् निनितारानिगल ॥ अनुपम-विद्येगुद्धविनय मिरिगेोप्पुव चागदेल्गे जौवनके विनिर्मला-

२४ चरणमायुगे विस्तृतकीर्ति वाग्प्रवलंनगे कलोक्ति तनेसकदिं मले मडनमागे वर्तिप जनपतिकार्तवीर्यसचिवैकशिरो-

२५ मणि बीचनुर्वियोल् ॥ इदु ता श्रीकरणप्पसाप्रसुतमत्पुण्यप्रभा-जालमिन्तिदु रट्टक्षितिपालभाग्रिय रमाम्भेरावलोकाग्रु-

२६ मन्तिदु दल् धार्मिकचक्रवर्तिय दयादुग्धाब्धिवीचिसमभ्युदय तानेने बीचिराजन यश पर्विन्तु भूलोकम ॥ विनुतनिज-

२७ प्रमुगालोचनदोल् नयशास्त्रदृष्टि दुर्धरसमावनियोल् निशित-जयास्त्र विनोददोल् नर्मसचिवनेनिप बैन ॥ मरदिं तन नो-

२८ डिद तरुणीजनवेरेद वदिभृद मत्तोवंरनोक्षिसदेरेयदेनल् सुरूपन-नतिशयवितरण बरदेव ॥ श्रीकार्तवीयनृपति-

२९ श्रीकरणाधिपन बीचणन गुरुकुलदोल् लोकोत्तरसुचारित्रविवेकर् मलधारिदेवमुनिपर् नेगल्दर् ॥ आ मुनिमुख्यर् शिष्यर् भूमीश्वर-

३० वद्यरमळतरसिद्धान्तश्रीमुखतिलकर् प्रथितोद्दामगुणर् नेगल्द नेमिचन्द्रमुनीन्द्रर् ॥ निरुपमतपोनिधानर् धरणीश्वरजालमौ-

३१ लिलालितपदरेंदुरुमुददिं कीर्तिपुदुवरें विभुशुभचंद्रदेवभट्टारकरं ॥ स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्दमहामंड-
३२ लेश्वरं कार्तवीर्यदेवं निजानुजयुवराजकुमारवीरमल्लिकार्जुनदेवं वेरसु वेणुग्रामस्कंधावारदोल् साम्राज्यसुखमनु-
३३ भविसुत्तमात्मीयश्रीकरणाग्रगण्यनुमगण्यपुण्यनुमप्प बीचिराजं माडिसिद रट्टजिनालयद श्रीशान्तिनाथदेवर अंगभोग-
३४ रंगभोगनित्याभिषेकार्चनतद्रावासखंडस्फुटितजीर्णोद्धरणाहारादि-दाननिमित्तं श्रीमूलसंघकोंडकुंदान्वयदेशीयगणपु-
३५ स्तकगच्छहनसोगप्रतिबद्धतज्जिनालयाचार्यश्रीशुभचंद्रभट्टारकदेवर्गं शकवर्षद ११२७ नेय रक्ताक्षिसंवत्सरद पु-
३६ ष्यशुद्धविदिगे वड्डवारदोलाद संक्रमणसमयदोल् कुंडिमूमासिर-दोलगण कोरवल्लिगंपदण उंबरवाणियेंब ग्रा-
३७ ममं सर्वाबाधपरिहारमष्टभोगतेजस्वाम्यसहितं निधिनिक्षेप-जलपाषाणरामादिसमन्वितं सर्वनमस्यं माडि स्वकीयसा-
३८ म्राज्यसंतानयशोभिवृद्ध्यर्थमागि धारापूर्वकमतिप्रीतियं कोट्टनदर्के सीमे ऐशानियकोणोल् नरवल मोनेय-
३९ ल्लि नट्ट कल्लल्लि तंक मोगदे मूडण दिक्किनोल् नट्ट कल्ललिं मुंते नट्ट कल्ललिं मुंडे नगरकेरेयाल्लि मुंटे आग्नेयियकोणोल् मू-
४० लवल्लिवेलगोड मुग्गुड्डेयल्लि नट्ट कल्ललिं पडुव मोगदे तेंकण दिक्किनोल् बम्मणवाढकट्टकवाडद मुग्गुड्डेय इंगुणिगेरे-
४१ य केलगे नट्ट कल्ललिं मुंडे कुनिकिल्गल्ललि नट्ट कल्ललिं मुंटे निरुतियकोणोल् कट्टकवाडकरवसेय मुग्गुड्डेयल्लि नट्ट कल्ललिं वडग मो-
४२ गदे पडुवण दिक्किनोल् मेलुगुंडिय करवसेय मुग्गुड्डेयल्लि नट्ट कल्ललिं मुंडे केंदरिय मोक्किनोल् नट्ट कल्ललिं मुंते वायुविन-

४३ कोणोल् मेल्गुडिय नाविदिगेय मुगुड्डेय गोयूटे गट्टिनोळि नट्ट कल्ळ्ळि मूड मोगदे बडगण दिक्किनोल् सुण्णद कोडिय मेगणा-ट्टुगल्ल

४४ ळ्ळि मुडे सिदिकेंबेट्टद पडुवण मोनेयल्लि नट्ट कल्ळ्ळि मुतं हेरहिनकोडिय कल्लुगुन्निकेय मेल् नट्ट कल्ळ्ळि मुदे मालद मेल् नट्ट कल् ॥

४५ मत्त नाडोल् कोट्ट स्यल्वृत्ति कब्बूर कारवळ्ळि मूडवळ्ळियोळ्गरि मूडल् बेल्कब्बेय केय्यि तेंकल् केय्कम्मवेंडु नूर आकनूरा-

४६ ल् मदि गावुदन मनेयिं पडुवलरगय्यगलदिप्पत्तोंदु कयूनीलद मनेयोंदु ॥ कुळियवालिगेयोळ्गरिंगांशान्य-

४७ दळ्ळि कॅनेश्वरदेवर केय्यि मूडल् कूडिय कोळ मत्तरोंदु बसदियिं तेंकल् इच्छिकेय्यगलदिपंत्तोंदु कयूनीलद मनेयोंदु ॥

४८ हरिगन्वेयाळ्ळरोळ्गरि पडुवल् हिंगळ्ळेय बट्टेयिं बडगला कोल मत्तरोंदु बडगण केरियल्लि इच्छिकेय्यगलदिपंत्तु

४९ कयूनीलद मनेयोंदु ॥ चच्चळ्ळियल्लि मूडण प्रमुमान्यदोलगे बोच्चुळगेरेयिं मूडल् मुद्दुगोडेय बट्टेयिं तेंकल् हारव-

५० गोल मत्तर् मूवत्तु मेट्टिगुच्च नागगन मनेयिं बडगल् इच्छिके-य्यगलदिपंत्तु कयूनीळद मनेयोंदु ॥ बेलगलेय हळ्ळि हन्दिगुं-

५१ तियोळ्गरि मूडणोत्तिं पडुवल् कम्म नाल्नूरवत्तु ॥ उच्चुगावेय हळ्ळि निट्टूरोळ्गरि नैऋत्यदोल् महाजनगल् कोट्ट-

५२ गोडगेय अप्पेय मावन्तनुवळ्ळियल्लि कोट केय सांभ कडेय केरेयिं बडगल् डुलगन गुत्तियिं मूडल् सावन्तन कोडगे-

५३ यिय तेंकल् सेलुमराळ पडुवल् नट्ट कल् मूडगेरियल्लि दनगर मनेय स्यळदोल् हदिना (ल्कु) गय्यहुवने सुतरडु गोदिगे॥

कण्णगावेया-

५४ लूरिं नैर्ऋत्यदल्लि एलेदोंटं हाल्वगोल मत्तरोंदु कम्मवेल्नूरल्वत्तेंदु तेंकणिं वंद मुगुलिय हल्लवदकें तेंकण हेले प-

५५ डुवला हल्लं वडगलूलंबयाविय तोंटं। मूडल् मूलस्थानदेवर तोंटं। आग्नेयकोणोरूल नडुवण देवालयद तोंटं। आ ए-

५६ लेय तोटदिं तेंकला हल्लदिं मूडल् हूदोंटं कम्मं नाल्नूरु ॥ ई सामेगलोलेल्ल नट्ट कल्गल् ॥ ओसेदा शासनमार्गदिं नृपरदार् पालिप्परी

५७ धर्ममं निसदं तत्सुकृतात्मरात्मवलमित्रप्रेयसीगोत्रपुत्रसमृद्ध-रव्दोलोंदि विश्वधरेयं निष्कंटकं माडि संतोसदिं राज्यमनप्पु-केय्दु पडेव-

५८ दीर्घायुमं श्रीयुमं ॥ एनिसुं लोभदे शासनक्रममनावों मीरिदं तद्दुरात्मनसेव्याचरणान्वितं पलिगे पैशून्यकके पापक्के भाजन-नल्पा-

५९ यु रुजाविलं रिपुहृतात्मोर्वीतलं दुर्व्वलं धनदुःखास्पदनागलुं नरकदोलोल् काडुगुं मूडुगुं ॥ सामान्योयं धर्मसे-

६० तुर्नृपाणां काले काले पालनीयो भवद्भिः। सर्वानेतान् भाविनः पार्थिवेंद्रान् भूयो भूयो याचते रामभद्रः ॥ स्वदत्तां परदत्तां

६१ वा यो हरेत वसुन्धरां षष्टिं वर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ॥ प्रहतारिव्रजकातवीर्यसचिवं श्रीवीचिराजं यशोमहि-

६२ तं पेलिमेनल्के शासनमनोल्पिं बालचंद्रं गुणाग्रहि विद्वज्जन-संमतस्फुटपदार्थालंक्रियासंकुलावहमप्पन्तिरे पेल्दनिन्तु कवि-कन्दर्पं बुधाधीश्वरं ॥

[इस लेखका सारांश जै० शि० सं० भाग ३ में क्रमांक ४५४ में दिया है। किन्तु उस समय मूल लेख प्राप्त नहीं हो सका था। यह लेख भी पहले लेखके ही दिन अर्थात् पौष शुक्ल २ शक ११२७ को लिखा गया

था। इसमें भी रट्ट वशके राजा कार्तवीर्य (चतुर्थ) तथा उनके मन्त्री बीचणका उनके पूर्वजोंके साथ परिचय दिया है। बेलगांवमें बीचणके द्वारा स्थापित रट्टजिनालयके अधिष्ठाता शुभचन्द्र भट्टारक थे। ये मूलसघ-कोण्डकुन्दान्वय देसीयगण पुस्तकगच्छके मलधारिदेवके शिष्य नेमिचन्द्रके शिष्य थे। इन्हे कूण्डि प्रदेशके कोरवल्लि विभागका उम्बरवाणि ग्राम दान दिया गया था।]

[ए० इ० १३ पृ० ७७]

३२०

बालूर (धारवाड, मैसूर)

कन्नड, राज्यवर्ष १६=सन् १२०५

[इस लेखमें होयसल राजा वीरबल्लाल २ के समय राज्यवर्ष १६, क्रोधन सवत्सरमें आषाढ व० ३ बुधवारके दिन मेघचन्द्रभट्टारकके शिष्य कसप गावुण्डकी इस निसिधिकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २१९]

३२१

बालूर (धारवाड, मैसूर)

कन्नड, १३वीं सदी

[यह निसिधिलेख बहुत घिस गया है। 'श्रीवीतराग' इतने अक्षर पढे जा सकते हैं।]

[रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २१४]

३२२

बेलगामे (मैसूर)

कन्नड, सन् १२०६

१ स्वस्ति श्रीमत् वीरबल्लालदेववर्षद १६ नेय क्षयसंव-
२ त्सरद भाद्रपद ब ११ बृहस्पतिवारदन्दु कमलसेन-
३ देवर गुड्डि जकौव्वे समाधिविधियिं मुडिपि सुगति-
४ य प्राप्तेयादलु ॥ श्रीवीतरागाय नमो

[इस लेखमे होयसल राजा वीरबल्लालके १६वें वर्ष क्षयसंवत्सरके भाद्रपद कृष्णपक्षमे ११ को कमलसेनकी शिष्या जकौव्वेके समाधिमरणका उल्लेख है ।]

३२३

हंचि (मैसूर)

सन् १२०७, कन्नड

[यह लेख सन् १२०७ का है । होयसल राजा वीरबल्लालके राज्यमे नागरखण्ड प्रदेशके बान्धवनगरमे कदम्बवंशीय सामन्त बोप्पके पुत्र ब्रह्मका शासन चल रहा था । उस समय सावन्त मुद्दने मागुण्डिमें एक बसदि बनवायी तथा उसे कुछ भूमि दान दी । यह दान मूलसंघ-काणूर गण-तिंत्रिणीक गच्छके अनन्तकीर्ति भट्टारकको दिया गया था । उनकी गुरुपरम्परा इस प्रकार है – गोवर्धन सैद्धान्ति-मेघनन्दि सैद्धान्ति-दिवाकर सिद्धान्तदेव-पद्मनन्दि सैद्धान्त – मुनिचन्द्र सैद्धान्त – भानुकीर्ति सैद्धान्त – अनन्तकीर्ति भट्टारक । मुद्दकी प्रशंसा विस्तारसे की है तथा उसे रेचचमूपतिके समान कोप्पण तीर्थका रक्षक कहा है ।]

[ए. रि. मै. १९११ पृ० ४६]

३२४

आनन्दमगलम् (चिंगलपेट, मद्रास)

राज्यवर्ष ३८ = सन १२१६, तमिल

[इस लेखमे विर्णयाभशूर कुरवडिगलके शिष्य वर्धमानपेरियडिगल्-द्वारा जिनगिरिपल्लिमें एक श्रावकको आहारदान देनेके लिए ५ कलजु (सुवर्णमुद्रा) अर्पण करनेका उल्लेख है। यह लेख चोल राजा (कुलोत्तुग३) मदिरैकोण्ड परकेसरिवमन्के ३८वें वर्षका है।]

[रि सा ए १९२२–२३ क्र ४३० पृ २५]

३२५

मनगुन्दि (धारवाड-मैसूर)

शक ११३८ ४० = सन् १२१६–१८, कन्नड

[यह लेख कदम्ब राजा जयकेशि तथा वज्रदेवके समय चैत्र व ७, शक ११३८ तथा कार्तिक शु ८, शक ११४० इन तिथियोका है। इसमे मणिगुन्दिके जिनालयके जीर्णोद्धारके लिए कई भव्य पुरुषो-द्वारा दान दिये जानेका उल्लेख है तथा वहाँके जैन आचार्योकी नामावली दी है।]

[रि सा ए १९२५–२६ क्र ४३९ पृ ७५]

३२६

कंदगल (बिजापूर, मैसूर)

राज्यवर्ष (२) १ = सन् १२२०, कन्नड

[यह लेख यादव राजा सिंहणदेवके राज्यवर्ष (२) १, विक्रम सवत्सर ज्येष्ठ अमावास्याका है। इसमें मूलसघ-काणूरगणके सकलचन्द्र भट्टारककी शिष्या नागसिरियक्वे-द्वारा निर्मित पार्श्वनाथ बसदिके लिए भूमि आदिके दानका उल्लेख है।]

[रि सा ए. १९२८-२९ क्र ई ५० पृ ४५]

३२७

हलेबीड (मैसूर)

शक ११५७ = सन् १२३६, संस्कृत-कन्नड

१ श्रीमद्देवासुरार्हीन्द्रपूजितश्चांगजन्मजिद् देवः श्री-
२ वीरतीर्थेशः पायाद् भव्यजनव्रजान् ॥ (१) श्रीमल्लोकैकविख्या-
३ तमूलसंघो विराजते कोण्डकुन्दान्वयस्तत्र देशीयाख्यगणा-
४ ग्रणीः ॥ (२) आवीरनन्दिसिद्धान्तचक्रवर्त्यनुजो महान् श्रीमद्वा-
५ हुवली नाम मुनिः सिद्धान्तपारगः ॥ (३) सकलज्ञ-प्रतिपादितोमयनया-
६ भिज्ञानसंपन्नको मदनोद्यद्द्वदावतोयदविभुः सद्धर्मरक्षामणिः दलिता-
७ ष्टादशसत्पदार्थनिपुणः षड्द्रव्यवेदी जयत्यखिलोर्वीनुतचारु वाहुबलिसिद्धान्तीश्वरः-
८ सन्मुनिः ॥ (४) तस्याग्रशिष्योखिलशब्दशास्त्रपारंगमः स्वात्मसुखानुवर्ती । स्याद्वादविद्याकुश-
९ लो विभाति कामाम्बुजेन्दुः सकलेन्दुयोगी ॥ (५) अर्हणंदिमुनीन्द्राणां चारित्रं विस्मयावहं ।
१० तेषां प्रणयिनी वाणी तस्यास्तन्मुनयः प्रियाः ॥ (६) जल्पवितण्डकथासु च शब्दाग-
११ मजिनमुखोत्थपरमागमयोश्छिद्रं यच्चित्तं स त्रैविद्यारव्योर्हणन्दि-
१२ मुनिः ॥ (७) एष श्रुतगुरुर्यस्य सकलेन्दुमहाव्रतः । तस्य विद्यामहाप्रौढिर्मा-
१३ दृशैर्वर्ण्यते कथं ॥ (८) इत्थंभूतो यमीशो वरजिनमुनिसद्वृन्दमध्ये विराजत् षड्विंशत्यधि-

१४ तोरूर्जितचरितपर सप्ततत्त्वप्रवेदी । प्रायश्चित्तादिषट्कद्विगुणित-सुतपाश्रय-

१५ वर्यप्रसिद्धो द्वात्रिंशदमागसद्भावभयुतसकलेन्दुयतीन्द्रो विभाति ॥ (९) एवं कतिपय-

१६ काले प्रवर्तिते ग्रामनगरखेडेषु तत्रत्यामव्योत्पलविकाशयन् सकलचन्द्रमु-

१७ निरायाति (॥ १०) सत्पाण्ड्यदेशमध्यस्थितबिळिचाग्रामचैत्य-गृहमासाद्य ज्ञात्वा स्वान्त्य

१८ त्रिदिनादनशनविधिना त्रिविष्टप सम्प्राप्त ॥ (११) सप्तासबाणे-न्दुशशिप्रमाब्दशकाब्दगे म-

१९ न्मथवत्सरे च सत्फाल्गुने शुद्धतृतीयकेन्दुवारेगमत् श्रीसकलेन्दु-देव ॥ (१२) अरह नम

२० श्रीमद्वीरणन्दिसिद्धान्तचक्रवर्तिगल सधमरप्प बाहुबलिसिद्धान्ति-देवर दीक्षा-

२१ गुरुगल् श्रीमदर्हणन्दित्रैविद्यदेवर् श्रुतगुरुगलुमप्प श्रीस-

२२ कलचन्द्रभट्टारकदेवर्गे श्रीमद्राजधानि दोरसमुद्रद समस्तभव्य-

२३ नगरगल् परोक्षविनयार्थवागि माडिसिद नगरमहाश्रीश्री

[यह निसिधिलेख राजधानी दोरसमुद्रके नागरिकोंने सकलचन्द्र भट्टारकके समाधिमरणकी स्मृतिमें स्थापित किया था। वीरनन्दि सिद्धान्तचक्रवर्तीके गुरुबन्धु बाहुबलि सिद्धान्तीसे दीक्षा लेकर अर्हणन्दि मुनीन्द्रके पास सकलचन्द्रने शास्त्राध्ययन किया था। उनकी मृत्यु पाण्ड्य देशके बिळिचा ग्राममें फाल्गुन शु० ३, सोमवार शक ११५७ मन्मथ संवत्सरके दिन हुई थी। वे मूलसंघ-कोण्डकुन्दान्वयदेशीयगणके आचार्य थे।]

[ए० रि० मै० १९२९ पृ० ७८]

३२८
हूविनसिगलि (धारवाड, मैसूर)
शक ११ (६) ७ = सन् १२४५, कन्नड

[यह लेख यादव राजा सिंघणदेवके समय चैत्र शु० ५ रविवार, विरोधकृत् संवत्सर, शक ११(६)७ के दिन लिखा गया है। इसमें एक श्राविका-द्वारा सिग्गलि ग्राममे चैत्यालय बनवानेका उल्लेख है। इस बसदिके शान्तिनाथदेवके लिए महाप्रधान सर्वाधिकारि प्रभाकरदेवने तथा पुलिगेरेके मन्नेय एवं आठ हिट्टुओने कुछ भूमि दान दी थी।]

[रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २९६]

३२९
कलकेरि (विजापुर, मैसूर)
शक ११६७ = सन् १२४५, कन्नड

[इस लेखमें यादव राजा सिंघणदेवके समय भाद्रपद शु० ४ रविवार शक ११६७ क्रोधि संवत्सरके दिन महाप्रधान मल्ल, बाच तथा पायिसेट्टि-द्वारा निर्मित अनन्ततीर्थकरमन्दिरके लिए कलुकेरेके महाजनों-द्वारा भूमि आदि दान देनेका उल्लेख है। यह मन्दिर कमलसेन मुनिके उपदेशसे बनवाया गया था।]

[रि० सा० ए० १९३६-३७ क्र० ई ५३ पृ० १८६]

३३०
लक्ष्मेश्वर (मैसूर)
शक ११६९ = सन् १२४७, कन्नड

[यह लेख यादव राजा सिंहणके समय ज्येष्ठ अमावास्या, शक ११६९, प्लवंग संवत्सरके दिन लिखा गया है। इसमें महाप्रधान बीचिराजकी कन्या राजलदेवी-द्वारा पुरिकरनगरके श्रीविजयजिनालयके लिए कुछ भूमि तथा द्रव्य दान दिये जानेका उल्लेख है। इनके गुरु पद्मसेन मुनि थे।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ९ पृ० १६१]

३३१-३३२

शिंगिकुलम् (तिन्नेवेली मद्रास)

सन् १२५३, तमिल

[ये दो लेख भगवती मन्दिरके दीवारोंपर खुदे हैं। पहलेकी तिथि मारवमन् सुन्दर पाण्ड्यदेव (द्वितीय) के राज्यवर्ष १५ का ३६०वां दिन यह दी है तथा दूसरेकी तिथि कोणेरिणमैकोण्डानके राज्यवर्ष १५ का ३८८वाँ दिन यह दी है। पहलेमें जो राजाज्ञा है उसीका पालन होनेका वर्णन दूसरे लेखमे है। इस आज्ञाके अनुसार राजमन्त्री अण्णन् तमिलप्पलवरैयाकी प्रार्थनापर राजा द्वारा स्थानीय जिनमन्दिरकी भूमिको करमुक्त किया गया था। यह भूमि पुगलोकरनायनरलूरनिवासी मदिसागरन् आदिभट्टारकन्-द्वारा मन्दिरको अर्पित की गयी थी। मन्दिरका नाम न्यायपरिपालपेरुम्बल्लि तथा उसमे स्थित जिनमूर्तिका नाम एणक्कुनरलनायकर् था। मन्दिर जिस पहाडीपर था उसको जिनगिरिमलै यह नाम दिया गया था। वर्तमान समयमें इस मन्दिरकी जिनमूर्ति गौतम ऋषिके नामसे पूजी जाती है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० २६९-७० पृ० १०५]

३३३

सहेट महेट (उत्तरप्रदेश)

संवत् ११७७ = सन् १२५५, संस्कृत-नागरी

[तीन चरणपादुकाओंके एक पट्टपर यह लेख है। इसके मध्यमे संवत् ११७७ ऐसा निर्माणकालका उल्लेख है। लेखका अन्त 'प्रणमति नित्य' इन अक्षरोंमे हुआ है। अत यह जैन लेख प्रतीत होता है।]

[रि० आ० स० १९१०-११ पृ० १८]

३३४

विजापूर (मैसूर)

शक ११७९ = सन् १२५७, कन्नड

[यह लेख करीमुद्दीनकी मसजिदमे पाया गया। यह मसजिद एक जैन मन्दिरके स्थानपर बनवायी गयी थी। इस मन्दिरके आचार्य करसिदेवके लिए यादव राजा कन्हरदेवके समय शक ११७९ मे कुछ भूमि दान दिये जानेका इस लेखमे निर्देश है।]

[रि० आ० स० १९३०-३४ पृ० २२४]

३३५

बस्तिहल्लि (मैसूर)

सन् १२५७, कन्नड

[यह मूर्तिलेख होयसल राजा नरसिंहके समय सन् १२५७ का है। इस समय श्रीकरणद मधुकण्णके पुत्र विजयण्ण तथा दोरसमुद्रके अन्य जैनोंने मूलसंघ-देसिगण हनसोगे शाखाके शान्तिनाथ मन्दिरका निर्माण किया था। इस मन्दिरके लिए हीरगुण्डे नामक ग्राम नयकीर्ति सिद्धान्तचक्रवर्तिको अर्पित किया गया था।]

[ए० रि० मै० १९११ पृ० ४९]

३३६

कलकेरि (विजापूर, मैसूर)

राज्यवर्ष ४ = सन् १२६०, कन्नड

[यह लेख यादव राजा कन्नरदेवके राज्यवर्ष ४ साधारण संवत्सरमें लिखा गया था। इसमें अनन्ततीर्थकरमन्दिरके लिए रंगरस-द्वारा-पुत्र प्राप्तिके उपलक्ष्यमें कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। करसंग्राहक सर्वदेव नायक-द्वारा भी इस समय कुछ दान दिया गया था।]

[रि० सा० ए० १९३६-३७ क्र० ई० ५४ पृ० १८९]

३३७

नेगलूर (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष (६) = सन् १२६२, कन्नड

[यह लेख यादव राजा कन्धरदेवके राज्यवर्ष (६) विरोधी संवत्सरमें भाद्रपद शु० १४, गुरुवारको लिखा गया था। इसमें कुलचन्द्रभट्टारकके शिष्य सकलचन्द्र भट्टारकके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३२–३३ क्र० ई० १६२ पृ० १०७]

३३८

बालूर (धारवाड, मैसूर)

शक ११८४ = सन् १२६२, कन्नड

[इस निसिधि लेखमें कहा गया है कि संबूरके कावय्यकी माता चेकव्वाने यह निसिधि स्थापित की। लेखकी तिथि पौष शु० ११, सोमवार, शक ११८४, दुमति संवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० इ० ए० १९४५–४६ क्र० २१८]

३३९

बालूर (धारवाड, मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

[इस लेखमें यादव राजा कन्धरदेवके राज्यकालमें नल संवत्सरके पौष मासमें गुरुवारके दिन इस निसिधिके स्थापित किये जानेका उल्लेख है। लेख बहुत घिस गया है।]

[रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २१७]

३४०-३४१

हत्तिमत्तूर (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष ५ तथा ९ = सन् १२६५ तथा १२६९, कन्नड

[ये दो लेख हैं। पहला लेख यादव राजा महादेवके राज्यवर्ष ५ में कार्तिक व० १३, बुधवार, क्रोधन संवत्सरके दिन सेवयर जक्कयकी पत्नी मादवेके समाधिमरणका स्मारक है। दूसरेमें महादेवके राज्यवर्ष ९ में हत्तियमत्तूरकी वसदिके आचार्यके समाधिमरणका उल्लेख है। (न) न्दिभट्टारकदेवका भी उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई० ६८-६९ पृ० ९८]

३४२

हलेबीड (मैसूर)

सन् १२९५, कन्नड

[यह लेख होयसल राजा नरसिंह ३ के समय सन् १२६५ का है। इस वर्षमें राजा-द्वारा त्रिकूट रत्नत्रय शान्तिनाथ जिनालयके लिए माघनन्दि सैद्धान्तिको कल्लनगेरे ग्राम दान दिया गया था। माघनन्दिकी गुरुपरम्परा इस प्रकार है – मूलसंघ – नन्दिसंघ-बलात्कारगणके वर्धमानमुनि-जो होयसल राजाओंके गुरु थे, श्रीधर त्रैविद्य-पद्मनन्दि त्रैविद्य-वासुपूज्य सैद्धान्ति-शुभचन्द्र-भट्टारक-अभयनन्दिभट्टारक – अरुहणंदि सिद्धान्ति, देवचन्द्र, अष्टोपवासि कनकचन्द्र, नयकीर्ति, मासोपवासि रविचन्द्र, हरियनन्दि, श्रुतकीर्ति त्रैविद्य, वीरनन्दिसिद्धान्ति, गण्डविमुक्त, नेमिचन्द्रभट्टारक, गुणचन्द्र, जिनचन्द्र, वर्धमान, श्रीधर, वासुपूज्य, विद्यानन्द स्वामि, कटकोपाध्याय श्रुतकीर्ति, वादिविश्वासघातक मलेयालपाण्ड्यदेव, नेमिचन्द्र, मध्याह्नकल्पवृक्ष वासुपूज्य। श्रीधरदेव-वासुपूज्य – उदयेन्दु – कुमुदेन्दु – माघनन्दि। माघनन्दिके चार

ग्रन्थोंका उल्लेख किया है – सिद्धान्तसार, श्रावकाचारसार, पदार्थसार तथा शास्त्रसार समुच्चय । इनके शिष्य कुमुदचन्द्र पण्डित थे । अन्तमें इस दानके सहायकके रूपमें महाप्रधान सोमेय दण्डनायकका उल्लेख किया है ।]

[ए० रि० मै० १९११ पृ० ४८]

३४३

अण्णिगेरि (धारवाड, मैसूर)

शक ११८९ = सन् १२६७, कन्नड

[इस लेखमें चैत्र व० ४, मंगलवार, शक ११८९, प्रभव संवत्सरके दिन मूलसंघ-कोण्डकुन्दान्वयके सोमदेवाचार्यकी शिष्या आकलपे अव्वेके समाधिमरणका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई २०४ पृ० ५३]

३४४

सगूर (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष ९ = सन् १२६९, कन्नड

[इस लेखमें यादव राजा महादेवके राज्यवर्ष ९, विभव संवत्सरमें नन्दिभट्टारकके शिष्य नयकीर्ति भट्टारकके शिष्य नालप्रभु गगर सावन्त सोवके समाधिमरणका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९३२–३३ क्र० ई १६८ पृ० १०७]

३४५

हुलिकेरे (मैसूर)

सन् १२७१, कन्नड

१ स्वस्ति प्रजोत्पत्तिसंवत्सरद चैत्र सु १ मि ददु श्रीमत् प्रतापवीर होयसळ श्रीवीरनारसिं

२ वाडुनं सोमेयदण्णायकरु मेय्दुन बाचेयदण्णायकरु हॊंकुंदद वसदि जीर्णवा.......

३ दण्णायकरुं जीर्णोद्धारवं माडिसिके – य निडिसिदरु

[इस लेखमें होयसल राजा नरसिंहके शासनकालमें चैत्र शु. १, गुरुवार, प्रजोत्पत्ति संवत्सर, के दिन हॊंकुंदकी वसदिके जीर्णोद्धारका उल्लेख है। यह कार्य सोमेय दण्डनायकके बहनोई बाचेय दण्डनायक-द्वारा किया गया था। लिपि १३वीं सदीकी है। संवत्सर नामानुसार यह वर्ष सन् १२७१ होगा जब नरसिंह तृतीयका राज्य चल रहा था।)

[ए० रि० मै १९३७. पृ० १८७]

३४६

मुलगुन्द (धारवाड, मैसूर)

शक ११९७ = सन् ११७५, कन्नड

[यह लेख वैशाख व. १ (३), गुरुवार, शक ११९७ युव संवत्सरका है तथा पार्श्वनाथवसदिके भीतरी दीवालमें लगा है। इसमें सरटूरके तिलकरसके मन्त्री देवण्णके पुत्र अमृतैयके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२६–२७ क्र० ई ९१ पृ० ८]

३४७

अमरापुरम् (अनन्तपुर, आन्ध्र)

शक १२०० = सन् १२७८, कन्नड

[यह लेख निडुगल्लुके महामण्डलेश्वर इरुगोण चोल महाराजके समय आषाढ शु० ५ सोमवार शक १२००, ईश्वर संवत्सरका है। इसमें मूलसंघ-देशियगणके त्रिभुवनकीर्ति राउलके शिष्य बाल्लेन्दु मलधारिदेवके उपदेशसे संगयन बोम्मिसेट्टि तथा मेलव्वेके पुत्र मल्लिसेट्टि-द्वारा

तैलगेरेके प्रसनपार्श्वदेवके लिए २००० वृक्षोंके उद्यानके दानका वर्णन है। इस मन्दिरका उपाध्याय जैन ब्राह्मण चल्लपिल्ले था जो पाण्ड्यप्रदेशके मुवलाक्नाथनल्लूरका निवासी था।]

[रि० सा० ए० १९१६–१७ क्र० ४० पृ० ७४]

३४८

इन्दौर म्युजियम (मध्यप्रदेश)

संस्कृत-नागरी, सं० १३३४=सन् १२७८

[इस लेखमें पण्डिताचार्य रत्नकीर्ति-द्वारा एक मूर्ति सं० १३३४ में स्थापित किये जानेका उल्लेख है।

[रि० इ० ए० १९५०–५१ क्रं० १२३]

३४९

पटा (उत्तरप्रदेश)

संवत् १३३५=सन् १२७८, संस्कृत-नागरी

[मूलसंघके गोलल्तक कुलके कुछ साधुओं-द्वारा संवत् १३३५ में तीन मूर्तियाँ स्थापित की गयी थीं ऐसा इस लेखमें वर्णन है।]

[रि० आ० स० १९२३–२४ पृ० ९२]

३५०

कडकोल (धारवाड, मैसूर)

शक १२०१=सन् १२८०, कन्नड

[इस लेखमें मूलसंघके पद्मसेन भट्टारकके शिष्य सावन्त मिरियम गौडकी पत्नी चण्डिगौडिके समाधिमरणका तथा कई गौडों-द्वारा एक बसदिको दान दिये जानेका उल्लेख है। तिथि भाद्रपद शु० ६, सोमवार, शक १२०१, प्रमाथि संवत्सर ऐसी है।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई ५१ पृ० १२३]

३५१

सण्णमल्लीपुर (मैसूर)

शक १२०७ = सन् १२८५, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीप्रतापचक्रवर्ति २ होय्सल वीर नरसिं-
३ हदेवरसरु पृथिवि- ४ राज्यं गेयुतिरलु
५ शक वरिष १२०७ नेय ६ सुभक्रितुसंवत्सरद फाल्गु-
७ ण....हे- ८ ग्गडे....
९ ...गरवेद्दलु १० ....ल्वुं
११ ...मतरु.... १२ ....हि आतन तम्म....आल-
१३ ....कोडगे....आळ १४ ....ल्दु होलवेरडु अन्तु
१५ ....तिद्ने....सा- १६ यिर मत्तरु....विट्ट
१७ ....सिद सासन ॥ १८ ....दक्षिण तगड्डूरलि
१९ .... २० (ता) यूर गुळियपुर
२१ ...यण्ण अल २२ ....नागगावुड ॥ वीतराग

[यह लेख होयसल राजा नरसिंह ३ के समय शक १२०७ के फाल्गुनमें लिखा गया था। किसी हेग्गडे-द्वारा नागगावुडको तगडूर, तायूर तथा गुलियपुर ग्रामकी कुछ भूमि करमुक्त दी जानेका इसमें वर्णन है। अन्तमें वीतराग यह मुद्रा है इससे दानदाता जैन प्रतीत होते है।]

[ए० रि० मै० १९३० पृ० १८४]

३५२-३५३
ताडकोड (धारवाड, मैसूर)
राज्यवर्ष १४ = सन् १२८५, कन्नड

[यह लेख यादव राजा रामचन्द्रके राज्यवर्ष १४, चित्रभानु संवत्सर-का है। इस समय कन्नरदेवकी रानीकी आज्ञासे सर्वाधिकारी मायदेवने एक जिनमन्दिर बनवाया था। यहीके अन्य लेखमें चन्द्रनाथको नमस्कार कर बालचन्द्रके शिष्य श्रीवासुपूज्यका उल्लेख किया है।]

[रि० सा० ए० १९२५-२६ क्र० ४४४-४४५ पृ० ७६]

३५४
कलकेरी (मैसूर)
राज्यवर्ष १८ = सन् १२८९, कन्नड

[यह लेख यादव राजा रामदेवके राज्यवर्ष १८ में पौष शु० ८, बुधवार, (सर्व)धारि संवत्सरके दिन लिखा गया था। इसमें नागेयिसेट्टि और मादब्बेके पुत्र मादेय्यके समाधिमरणका उल्लेख है। इनके गुरु समन्त-भद्रदेव थे।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ७२ पृ० १६७]

३५५
डम्बल (जि० धारवाड, मैसूर)
शक १२११ = सन् १२९०, कन्नड

[यह लेख रामदेव (यादव) के समयका है। धर्मवोललके महानाडु-के १६ प्रतिनिधि तथा नाडुके ८ प्रतिनिधि एवं साल्ववीर चवुण्डके छोटे बन्धु सप्तरस द्वारा नगर जिनालयके लिए कुछ करोंका उत्पन्न दान देनेका इसमें उल्लेख है। इसी मन्दिरको अय्वत्तोक्कलु तथा उगुरु ३००-द्वारा कुछ तेल वगैरहका दान भी दिया गया था। तिथि पौष शु० २, रविवार, शक १२११, सवधारी संवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० सा० ए० १९४४-४५ क्र० एफ् ६३]

३५६
पोन्नूर (उ० अर्काट, मद्रास)
राज्यवर्ष ७ = सन् १२९०, तमिल

[यह लेख स्थानीय जैन मन्दिरमे है। मारवर्मन् विक्रमपाण्डयके राज्यवर्ष ७ में विडालपर्रुके नाट्टवर् (ग्रामप्रमुखों)-द्वारा आदिनाथके पल्लिविलागम्में रहनेवाले लोगोंसे प्राप्त करोंका उत्पन्न इस जिनमन्दिरमें पूजा आदिके लिए अर्पण किए जानेका इसमे उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ४१५ पृ० ४०]

३५७
हुमच (मैसूर)
शक १२१७ = सन् १२९५, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछ-
२ नं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशास-
३ नं स्वस्ति श्रीमतु सकवर्ष १२१७ नेय मनु-
४ मथसंवत्सरद चैत्र सु पाडिव बृहस्प-
५ तिवारदंदु श्रीमत्सिद्धान्तयोगीं-
६ द्रपादपंकजभ्रमर बम्मगवुड म-
७ हापुरुषो···गतो सिद्धिं समाधिना।
८ नमनाण्णं···गुणसेनमुनिश्वरं
९ ···द्राविडान्वय
१० मौलिना

[इस निसिधिलेखमें श्रीमत् सिद्धान्त योगीन्द्रके शिष्य बम्मगवुडके समाधिमरणका उल्लेख है जो चैत्र शु० १, बृहस्पतिवार, शक १२१७ मन्मथसंवत्सरके दिन हुआ था। लेखके अन्तमें द्राविड अन्वयके गुणसेन मुनीश्वरका नाम भी आता है।]

[ए० रि० मै० १९३४ पृ० १७७]

३५८

लक्ष्मेश्वर (मैसूर)

शक १२१७ = सन् १२९५, संस्कृत-कन्नड

[इस लेखमे पुरिकरके शान्तिनाथ मन्दिरके लिए सोमय-द्वारा कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है। तिथि भाद्रपद शु० ५, सोमवार, शक १२१७ ऐसी दी है।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई २८ पृ० १६३]

३५९

मश्वेर मसलवाड (बेल्लारी, मैसूर)

शक १२१९ = सन् १२९७, कन्नड

[यह लेख यादव राजा रामचन्द्रदेवके समय मार्गशिर शु० ५ गुरुवार शक १२१९ हेमलम्बि संवत्सरका है। इसमें महामण्डलेश्वर भैरवदेवरस-द्वारा मूलसंघ देसिगणके नेमिचन्द्रराउलके शिष्य विनयचन्द्रदेवको भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान मोसलेवाडके जिनमन्दिरके लिए था जिसका जीर्णोद्धार महामण्डलेश्वर सालेवेय तिरुमदेव राणेयके मन्त्री सावन्त पण्डितके पुत्र केशव पण्डित द्वारा किया गया था।]

[रि० सा० ए० १९१८-१९ क्र० २५६ पृ० २२]

३६०

कोगलि (बेल्लारी, मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

[इस लेखमें होयसल राजा प्रतापचक्रवर्ति रामनाथदेव-द्वारा युव संवत्सरमें कोगलिके चेन्नपार्श्वजिनमन्दिरके लिए सुवर्णदान देनेका उल्लेख है।]

[इ० म० बेल्लारी १९२]

३६१-३६७

चिप्पगिरि (जि० वेल्लारी, मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

[ये छह लेख हैं । मूलसंघ-देशीयगण-कोण्डकुन्दान्वय-पोस्तकगच्छके केशणंदि भटारके शिष्योंके समाधिमरणका इनमें उल्लेख है । इन शिष्योंके नाम हैं—गोपरस, तथा उसकी पत्नी हालीवे, मादलदेवी, तिप्पयकी पत्नी जाकवे, नागलदेवी, मूलिग तिप्पय, वैतलेय बोम्मिसेट्टि तथा उसकी पत्नी बीमवे । लिपिके अनुसार ये लेख १३वीं सदीके प्रतीत होते हैं । इसी समयके एक और लेखमें माधवचंद्र भट्टारकदेवके शिष्य परिसयके समाधिमरणका उल्लेख है ।]

(रि० सा० ए० १९४४-४५ ई ६३-७२)

३६८

अदरगुंचि (जि० धारवाड, मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

[यह लेख लिपिपर-से १३वीं सदीका प्रतीत होता है । यापनीय संघ-काडूरगणकी एक वसदिके लिए दी हुई जमीनकी सीमा बतलानेवाला यह पत्थर है । यह वसदि उच्छंगि नगरमें थी । यह दान अदिर्गुण्टेके गौण्ड और स्थानिकों-द्वारा दिया गया था ।]

(रि० सा० ए० १९४१-४२ ई० क्र० ३ पृ० २५५)

३६९

बसवपट्टण (हासन, मैसूर)

१३वीं सदी कन्नड

१ श्रीमूलसंघ देसियगण पोस्तकगच्छ

२ कोंडकुंदान्वयद इंगलेश्वरद ब-

३ लिय श्रीश्रुतकीर्तिदेवर गुड्डुगलु
४ कोंग नाड श्रीकरणद कावण्णगल मक्क-
५ लु नाकण्ण होनण्णगलु माडिसिद श्री-
६ नेमिनाथस्वामिगल प्रतिमे मग-
७ ल महा श्री श्री श्री

[इस लेखमे श्रीकरणद कावण्णके पुत्र नाकण्ण तथा होनण्ण-द्वारा, जो कोंगु प्रदेशके निवासी थे, नेमिनाथकी इस मूर्तिके स्थापित किये जानेका उल्लेख है। ये दोनों मूलसंघ-देसियगण-पुस्तकगच्छकी इंगलेश्वरबलिक आचार्य श्रुतकीर्तिके शिष्य थे। लेखकी लिपि १२वीं या १३वीं सदीकी प्रतीत होती है।]

(ए० रि० मैं० १९४४ पृ० ४२)

३७०

रत्नापुरि (मैसूर)

१२वीं-१३वीं सदी, कन्नड

[यह दो पंक्तियोंका लेख एक मूर्तिके पाद-पीठपर है जिसमें किसी-भट्टारकदेव-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापनाका निर्देश है। लिपि १२वीं या १३-वीं सदीकी प्रतीत होती है।]

[मूल कन्नड लिपिमें मुद्रित]　　[ए० रि० मैं० १९४४ पृ० ७०]

३७१

बेलगोल (माड्या, मैसूर)

१२वीं-१३वीं सदी, कन्नड

[इस छोटे-से मूर्ति-लेखमें द्रविल संघ-नन्दिसंघ-अरुंगल अन्वयके कुछ व्यक्तियों-द्वारा इस पार्श्वनाथ मूर्तिकी स्थापनाका निर्देश है। लिपि १२वीं या १३वीं सदीकी प्रतीत होती है।]

[मूल कन्नड लिपिमें मुद्रित]　　[ए० रि० मैं० १९४४ पृ० ५७]

३७२
विदिरूर (शिमोगा, मैसूर)
१२वीं सदी, कन्नड

१ श्री मैणदान्वयद देसियगणद नागर एक्कगूडिय सु-
२ भचंद्र देवरु माडिसिद वसदिगे ॥ श्रीजिनपद-
३ पंकजविराजितमधुकरन् एनिप्प मल्लि कोट्टं
४ पूजितवेने तीर्थंकरभ्राजित प्रतिकृतिय-
५ नुचित कडितले गोत्रं ॥

[इस लेखमें विदिरूर ग्रामके वसदिमे मल्लि नामक व्यक्ति-द्वारा इस चौवीसी मूर्तिके अर्पण किये जानेका वर्णन है । यह वसदि देसियगण-मैण-दान्वय-कडितले गोत्रके सुभचन्द्रदेव-द्वारा बनवायी गयी थी । लेखकी लिपि १३वीं सदीकी है ।]

[ए० रि० मै० १९४३ पृ० ११४]

३७३
होंगनूर (मैसूर)
१३वीं सदी, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीमूलसंघ श्रीक्राण्वद श्रीसकलचंद्रभट्टा-
२ रकदेव सिष्यरु माधवचंद्रदेवर गुड्डुगलु
३ उभयनानादेसिगलु माडिसिद होंगनूर शा-
४ न्तिनाथदेवर जोगवट्टिगेय वसदि मंगल महा

[यह लेख एक शान्तिनाथ मूर्तिके पादपीठपर है जो वर्तमानमें लक्ष्मी-देवी मन्दिरके एक चबूतरेमें लगी है । इसमें होंगनूरकी वसदिका निर्माण सकलचन्द्रके शिष्य माधवचन्द्रके शिष्यों-द्वारा किये जानेका उल्लेख है । ये मूलसंघ-क्राण्व (क्राणूर गण) के अन्तर्गत थे । लिपि १३वीं सदी-की है ।]

[ए० रि० मै० १९४२ पृ० १२६]

३७४
तचनन्दी (मैसूर)
१३वीं सदी, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीमूलसंघ सूर- २ स्तगण चित्रकूटान्वयद
३ प्रतिबद्ध

[यह छोटा-सा लेख एक खण्डित जिनमूर्तिके पादपीठपर है। मूल संघ-सूरस्तगण चित्रकूटान्वयके किसी व्यक्ति द्वारा यह मूर्ति स्थापित की गयी थी। लिपि १३वी सदीकी है।]

[ए० रि० मैं० १९४२ पृ० १८५]

३७५
वरुण (मैसूर)
१३वीं सदी, संस्कृत-कन्नड

१ श्रीमद् द्रविल- २ संगस्य नन्दिस
३ घे ह्यरुगले श्र- ४ न्वयेऽशेषशास्त्र-
५ ज्ञ श्रीपाल ६ मुनिराश्रित
७ तच्छिष्यो विदुषा ८ श्रेष्ठ पद्मप्रभ-
९ मुनीश्वर तस्य १० पुत्र तपोसी-
११ धर्मसेनमहा १२ मुनि ॥ साय
१३ शुद्ध( ) स्वभावस्तो- १४ शाह्य (न)स्परिग्रहा-
१५ त् यक्तो जिनपदाग्रे १६ त्रिदिवं गतवान् बुध-
१७

[इस लेखमें द्रविलसंघ-नन्दिसंघ-अरुंगल अन्वयके आचार्य श्रीपालके प्रशिष्य तथा पद्मप्रभके शिष्य धर्मसेनके समाधिमरणका उल्लेख है। लेखकी लिपि १३वीं सदीकी प्रतीत होती है।]

[ए० रि० मैं० १९४० पृ० १७२]

३७६

केलगेरे (मांड्या, मैसूर)

१३वीं सदी-उत्तरार्ध, कन्नड

पश्चिमकी ओर

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादा-
२ मोघलांछनं (।) जीयात् त्रैलोक्य-
३ नाथस्य शासनं जिनशासनं ।
४ भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां
५ शासनायाघनाशिने । कुतीर्थ-
६ ध्वान्तसंघातप्रभिन्नघनभान-
७ वे । स्वस्ति समधिगतपंचमहाश-
८ ब्द महामंडलेश्वरं द्वारावतीपु-
९ रवराधीश्वरं यादवकुलांबर-
१० द्युमणि सम्यक्त्वचूडामणि मलपरो-
११ लुगण्ड नामादिसमालंकृतरप्प
१२ श्रीविनयादित्यपोय्सलन् एरेयं-
१३ ग विट्टिदेव नारसिंह वल्लाल नारसि-

दक्षिणकी ओर

१४ घ-द्व तस्य पुत्रं नारसि-
१५ हरप्परु दोरसमुद्रदोलु पृथ्वीराज्यं गेयु-
१६ त्तमिरलु स्वस्ति श्रीमूलसंघ बलात्कारं
१७ ···वदोल् अनेकाचार्यरु न-
१८ ····प्रवर्तिसल् अवरोलु वर्धमानभट्टा-
१९ रकर श्रीधराचार्यरु देवनन्दित्रैवि-

२० यरु वासुपूज्यसिद्धान्तदेवरु शुभचन्द्र-
२१ भट्टारकरु अभयनन्दिभट्टारकरु अर्हन-
२२ न्दिसिद्धांतिगलु देवच(न्द्र) सिद्धांतिगलु अष्टोप-
२३ वासि कनकचन्द्रदेवरु नयकीर्ति चान्द्रा-
२४ यणदेवरु मासोपवास रविचन्द्रसिद्धा-
२५ न्तिगलु हरियनन्दिसिद्धान्तिगलु श्रुत-
२६ कीर्तित्रैविद्यदेवर वीरणंदिसिद्धान्तदे-
२७ वरु गण्डविमुक्त नेमिचन्द्रभट्टारकदेव

पूर्वकी ओर

२८ (वर्ध)मानमुनीन्द्ररु श्रीधराचार्यर वा-
२९ सुपूज्यत्रैविद्यदेवरु उदयचन्द्रसिद्धा-
३० न्तदेवर कुमुदचन्द्रभट्टारकदेवर मा
३१ माघनन्दिसिद्धान्तचक्रवर्तिगल श्रीपादप-
३२ द्मगल्गे होय्सळभुजबल श्रीवीरनारसिंहदेवरस-
३३ रु दोरसमुद्रद त्रिकूटरत्नत्रयद श्रीशान्तिनाथ
३४ देवर अ(ग)भोग रगभोग आहारदान मुन्ताद
३५ समस्तधर्मकार्यक्का
३६ चिक्कनेयनहळि
३७　व येनुल्लथा अष्टमो-
३८ ग तेजस्वाम्यसहितवागि माघन-
३९ दिसिद्धान्तचक्रवर्तिगल श्रीपाद-
४० पद्मगल्गे धारापूर्वक माडि
४१ कोट्टरु स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत
४२ वसुंधरां

[इस लेखके प्रारम्भमें होयसल वंशके राजाओंकी परम्परा नरसिंह (तृतीय) तक दी है। नरसिंहने राजधानी स्थित शान्तिनाथ जिनालयके लिए चिककन्नेयनहल्लि ग्राम दान दिया। यह दान मूलसंघ-बलात्कारगणके कुमुदचन्द्र भट्टारकके शिष्य माघनन्दि सिद्धान्तचक्रवर्तीको दिया गया था। लेखमे कुमुदचन्द्रके पूर्ववर्ती १९ आचार्योंके नाम भी उल्लिखित हैं।]

[ए० रि० मै० १९४० पृ० १६४]

३७७-३७८

मूगूर (मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

(अ) १ श्री मूलसंघ देसियगण पुस्त २ कगच्छ कोंडकुंदान्वयक

····हगेरे-

३ यतीर्थद प्रतिबद्ध भरतपण्डितरिगे ४ जविकयब्बेय मगलु····

(ब) १ मूलसंघ देसिगण पुस्तकगच्छ कोंडकुंदान्वय इंगणेश्वर सं(ब)द श्रीभानुकीर्तिपं-

२ डितदेवर शिष्यरप्प कान····नंदिदेवर गुड्डुगलप्प मूगूर समस्त

३ गावुण्डुगलु····कोडेयर बसदिय जीर्णोद्धारणवमा

४ डि····मिदरु मंगलमहाश्री

[ये दो लेख मूगूरकी आदिनाथबसदि तथा पार्श्वनाथबसदिके मूर्तियों-के पादपीठोंपर है। पहलेमे मूलसंघ-देसियगणके कन्हगेरे तीर्थसे सम्बद्ध भरत पण्डितके लिए जविकयब्बेकी कन्या (नाम लुप्त)-द्वारा कुछ दान दिए जानेका उल्लेख है। लेख अधूरा होनेसे विवरण स्पष्ट नहीं हो सकता। दूसरेमे मूल संघ-देसिगण-इंगणेश्वर संघके भानुकीर्ति पण्डितके शिष्य —नन्दिके शिष्य गावुण्डों द्वारा मूगूरकी कोडेयरबसदिके जीर्णोद्धारका उल्लेख है। लेखोंकी लिपि १३वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९३८ पृ० १८२-८३]

३७९

हलेबीड (मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

१ जिननाल्मोयिंपुष्टद्रव्य निजगुरु नयकीर्तिव्रतीश ललसद्भुवि-
२ नुत तानुक्किसेट्टिप्रभु पितृ तनगेकव्वे तायेन्दोडिन्तीवन-
३ घिव्यावृतधात्रीतलदोल् अर्दे पुण्योद्भववातदोल् कूडि नितान्-
४ त नामिसेट्टि स्फुटविशदयशोलक्ष्मिय ताने पेत्त ॥
५ अनन्तात व्यवहारदि मन्न विक्रमात्रा ।त
६ ल्देव मान्यात दो
७ कोण्डु स्वान्त विश्रुत ना
८ मिसेट्टि दिवदोल् कैवल्यम ताल्दिद

[इस लेखमें उक्किसेट्टि और एकव्वेके पुत्र नामिसेट्टिके समाधिमरण-का उल्लेख है। नामिसेट्टिके गुरु नयकीर्ति व्रतीश थे। लेखकी लिपि १३वी सदीकी प्रतीत होती है। पंक्ति ५ के अस्पष्ट भागमें सम्भवत वीरबल्लाल (द्वितीय) के राज्यका और तिथिका उल्लेख था।]

[ए० रि० मैं० १९२९ पृ० ७८]

३८०

तिरुनिडकोण्डै (मद्रास)

१३वीं सदी, तमिल

[इस लेखमें कहा गया है कि कुलोत्तुंग चोल राजा-द्वारा कनकच्चि-गिरि अप्पर् देवको अर्पित नल्लूर यह एक धार्मिक स्थान है। यह लेख चन्द्रनाथ मन्दिरके बराण्डेमें लगा है तथा १३वीं सदीकी लिपिमें है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० २९९ पृ० ६५]

३८१

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

१३वीं सदी, तमिल

[यह लेख चन्द्रनाथ मूर्तिके पादपीठपर खुदा है। इस मूर्तिको–जिसे कच्चिनायक्कर कहा है – स्थापना आलप्पिरन्दान् मोगन् कच्चियरायर-द्वारा की गयी ऐसा लेखमें कहा है। लिपि १३वी सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३१९ पृ० ६७]

३८२

कोट्टगेरे (मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

[इस लेखमें देसियगण-इंगलेश्वर बलिके हेरगु निवासी आचार्य हरिचन्द्रके शिष्य माघनन्दि-द्वारा एक शान्तिनाथ मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। लिपि १३वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९१९ पृ० ३३]

३८३

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

१३वीं सदी, तमिल

[यह लेख यहांकी पहाड़ीपर चढ़नेके लिए बनी सीढ़ियोंके पास है। इन सीढ़ियोंका निर्माण गुणवीरदेवन् पण्डितदेवन्ने किया ऐसा लेखमें कहा है। लिपि १३वी सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३१६ पृ० ६७]

३८४

हुकेरी (जि० बेलगांव, मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

[यह लेख टूटा है। यापनीय संघके किसी गणके नैकीर्ति आचार्यका इसमें उल्लेख है। लिपि १२वीं सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९४२-४३ ई ६ पृ० २६१]

३८५-३८६

हले हुब्बलि (जि० धारवाड, मैसूर)

१२वीं १३वीं सदी, कन्नड

[यहांके अनन्तनाथ बसदिमें दो लेख हैं। एक ब्रह्मदेवकी मूर्तिपर है। इसकी लिपि १२वीं सदीकी है। सेटि महादेवी-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापनाका इसमें निर्देश है। दूसरा एक जिनमूर्तिपर है। इसकी लिपि १३वीं सदीकी है। इसमें यापनीय संघके (क)डूर गणका उल्लेख है।

[रि० सा० ए० १९४१-४२ ई० ३३-३४]

३८७

मोटे बेन्नूर (धारवाड, मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

[यह लेख १३वीं सदीकी लिपिमें है। तिथि चैत्र शु० १०, गुरुवार, सौम्य संवत्सर ऐसी दी है। इसमें जिनचन्द्रदेवके शिष्य बोम्मिसेट्टिके पुत्र बाचिसेट्टिके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई १०८ पृ० १२९]

३८८-३८९

वनवासि (उत्तर कनडा, मैसूर)

१२वीं-१३वीं सदी, कन्नड

[यहाँ दो मूर्तिलेख हैं जो १२वीं-१३वीं सदीकी लिपिमें हैं किन्तु अस्पष्ट हैं। एकमें मूलसंघके किसी आचार्यका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २४३-४४ पृ० २८]

३९०

विजापूर (मैसूर)

शक १२३२ = सन् १३१०, कन्नड

[इस मूर्तिलेखमें मूलसंघ-निगमान्वयके कृष्णदेव-द्वारा शक १२३२, साधारण संवत्सरमें इस मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई० १६४ पृ० १३४]

३९१

बेल्गामे (मैसूर)

सन् १३१९, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीमतु यादवचक्रवर्ति भुजबलवी''''बल्लाल''''

२ पंद ९ नेय सिद्धार्थिसंवत्सरद आषाढ़ शु''''

३ वार व्यतीपात संक्रान्ति शुभदिनद''''

४ (श्री)मद् राजधानिपट्टणं बलिग्रामेय हिरियब-

५ सदिय मल्लिकामोदशान्तिनाथदेवर अष्ट-

६ विधार्च(न)गे श्रीमनु महाप्रधानं सेनाधिपति मल्लि-

७ यणद्ण्डनायकर नागरखण्ड जिड्डुलिगेयन्तेर-

८ डेप्पतुम दुष्टनिग्र(ह) शिष्टप्रतिपालन माडुत्त

९ सु(खस)कथाविनोददिं राज्य गेय्युत्तमिरे पट्टणद अधि-

१० कारि हेग्गडे मिरियण्ण तन्नतरालिकेय मूलेत्रतंमु-

११ ख्यवागि हंजुकडधिकारि चावुण्डरायनु सोमय्य-

१२ नु मल्लेयदे कोप(?)त्रिसदधिकारि मालवेगाडे इन्तिनि-

१३ वर ततम्म सुकम येत्तिप्पत्तक्क सर्वबाधा-

१४ परिहारवागि सिरियण्ण आचार्य

१५ पद्मनन्दिदेवर काल कचि धारापूर्वक माडि कोट्टर ई धर्म-

१६ म प्रतिपालिसिदगे वारणासिकुरुक्षेत्रदल्लि साविर

१७ कविलेयं वेदपालरप्प ब्राह्मणरों कोट्ट फल-

१८ मक्कु

[यह लेख होयसल राजा वीरबल्लालके राज्यवर्ष ९, सिद्धार्थिसवत्सर-में आषाढ शुक्लपक्षमें सक्रान्तिके दिन लिखा गया था। राजधानि बल्लि-ग्रामेके मल्लिकामोदशान्तिनाथदेवकी पूजाके लिए पद्मनदि आचार्यको कुछ करोंका उत्पन्न दान दिये जानेका इसमें निर्देश है। यह दान हेग्गडे मिरियण्ण, चावुण्डराय, सोमय्य और माल्वेगडे इन चार अधिकारियोंने दिया था। इस समय नागरखण्ड और जिड्डुलिगे प्रदेशपर महाप्रधान सेनापति मल्लियणका शासन चल रहा था। बल्लाल द्वितीय अथवा बल्लाल तृतीय इन दोनोंके ९वें वर्षमें सिद्धार्थि सवत्सर नहीं था। अतः अनुमान किया गया है कि यह बल्लाल (तृतीय) के २९वें वर्षके सिद्धार्थि सवत्सरका उल्लेख होगा। तदनुसार सन् १३१९ यह इस लेखका वर्ष होगा।]

[ए० रि० मै० १९२९ पृ० १२८]

३९२

कुमठ (उत्तर कनडा, मैसूर)

शक १२६६=सन् १३४४, कन्नड

[इस लेखमें मूलसंघ, देसियगणके विशालकीर्ति राउलके अग्रशिष्य नागचन्द्रदेवके समाधिमरणका उल्लेख है। तिथि श्रावण व० ११, रविवार, शक १२६६, सुभानु संवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २३९ पृ० २७]

३९३

रायदुर्ग (वेल्लारी, मैसूर)

शक १२७७=सन् १३५५, कन्नड-संस्कृत

तालुक आॉफ़िसमें रखी हुई मूर्तिके पादपीठ पर

[विजयनगरके राजा हरिहरके समय शक १२७७, मन्मथ संवत्सरमें यह लेख लिखा गया। कुन्दकुन्दान्वय, सरस्वतीगच्छ, बलात्कारगण, मूलसंघके अमरकीर्ति आचार्यके शिष्य माघनन्दि व्रतीके शिष्य भोगराज-द्वारा शान्तिनाथकी मूर्तिकी स्थापनाका इसमें निर्देश है।]

[इ० म० वेल्लारी ४५८]

[रि० सा० ए० १९१३-१४ क्र० १११ पृ० १२]

३९४

होसाल (द० कनडा, मैसूर)

शक १२७९=सन् १३५७, कन्नड

[यह लेख स्थानीय भग्न जिनमन्दिरमें है। इसमें विजयनगरके राजा बुक्कण्ण महारायके जैन सेनापति वैचय दण्डनायकका उल्लेख है। तिथि शक १२७९ विलम्बि संवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० सा० ए० १९३१-३२ क्र० २८४ पृ० ३१]

३९५

तिरुनिडकोण्डै (मद्रास)

शक १२८३ = सन् १३६१, तमिल

[इस लेखकी तिथि धनु शुक्ल १३ बुधवार, शक १२८३ शुभकृत् संवत्सर ऐसी दी है। इसमें शेम्बादि विल्लवडरैयन्के पुत्र (नाम लुप्त)-द्वारा अप्पाण्डार् मन्दिरमें दीपके लिए भूमि दान दी जानेका उल्लेख है। यह दान गोप्पण्ण उडैयार्की प्रेरणासे दिया गया था। लेख अप्पाण्डार् चन्द्रनाथमन्दिरके मण्डपकी दीवालमें लगा है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०३ पृ० ६५]

३९६

साविकेरि (धारवाड, मैसूर)

शक १(२)९८ = सन् १३७६, कन्नड

[इस लेखमें मार्गशिर व० १(३), बुधवार, शक १(२)९८ नल संवत्सरके दिन बालेयहल्लिके बेल्लप्पके समाधिमरणका उल्लेख है। उस समय विजयनगरके वीरबुक्करायका शासन चल रहा था।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २३३ पृ० २७]

३९७

गेरसोप्पे (मैसूर)

शक १३०० = सन् १३७८, कन्नड

१ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छन जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन (१) श्रीमद्देव-

२ जिनेन्द्राय तस्मानतमहात्मने सर्वबोधविशिष्टाय भव्याब्जि-कुमुदेन्दवे (२) त वन्दे देवदेव सुरचि-

३ रमनघं चारुकैवल्यनेत्रं नित्यं निर्वाणरामाकुचविलिखितकाश्मीर-
रागं वरांगं तुंगं देवेन्द्रानम्रपा-

४ दं गुणविलसदनन्तं स्वबोधात्मतत्त्वं मांगल्यं भव्यसार्थं निहत-
मनसिजं नव्यधर्मस्वरूपं । (२) इट्टु

५ जम्बूद्वीपमंता भरतविषयदोल् पट्टुव मेरुसिर्द्द····पद्पिन्दा मेरुविं
दक्षिणद्दे तुलु कोंगिन्दवी शुद्ध-

६ दीपं मुदर्दि····लेंगु···वलि पनसं नदीतीरदोल् कौंगु जम्बूसदनं
चेल्वागि तोकुं

७···विढार हस्तिसमूहं । (४) आ तुलुवाधीशरमणि····वदनमागि
तोपुंटु नयर्दि नीतियुत गेरसोप्पे सोलि-

८ सुतिपुंटु विभवर्दिदायमरावतियं । (५) अन्ता नगिरिय राज्य-
कधीश्वरनेनिसिद मरुलयरसरन्वयसंप्रदायदा-

९ यर्दि वन्द कीर्तिगे जयस्तंभनेनिसिर्द्द हैवेभूपालन प्रतापवेन्तेंने
सान्द्र····देमकुन्दोद्गमकुसुदन-

१० मल्मल्लिकाफुल्लसुख्यवृन्दं गंगातरंगतरलहरहासं तारनीहारहारं
मन्दिर्द्दीं चारुकीर्ति····

११ प्रभवदनुनयर्वेविन····माल्पुट्टु श्रीहैवेभूपालन निजयशमं
वण्णिमल् वल्लना-

१२ वं दक्षिणमण्डलिक····निजनिवास····सल्लक्षण राजराजकटकंगल
मूरंयन।-

१३ यद्दे तोण्डमण्डलभूपर मन्दि रक्षिसु हैवेराज वेनुतिपुंटु-

१४ नलियदे नोल्पडं मावनियंककाररतिचक्रद हस्तपराक्रमांकनी
हैवनृपाल चित्रय-

१५ शो····निश्चय दुन्दुभिताडनंगलिं जावलिशब्ददि परिदु दूरदि
संचरिसुत्तमिपुंद्द।····

१६ येसेव राजहृदयगलु मिन्नगलाद वद्भुत । श्रीमद्देव गुरुगुणाद्भुतमहानागेन्द्रपचा-

१७ स्य ॰ सन्दिर्द हासद बैहालि महाडाकिनीनामोपद्रव ण्लव श्रीपार्श्वतीर्थेश्वरा-

१८ वासम श्रीमदनन्तपालगीगे नित्य दीर्घायुम श्रीयुम अन्ता नगिरियपुरवराधीश्वर मामा

१९ वनियककार मावगेमलेव रायरगण्ड शिवसिंहामनचक्रवर्ति परसालुवदङ्कुविमाड कलिगल मुरद

२० सम्यक्तचूडामणि वसन्तराज्यचातुर्वर्ण्यक्के इलुव रायरगण्ड हैवेभूपाल सुखमकथाविनो-

२१ दर्दि राज्य गेय्युत्तिरलु आ गेरसोप्पेय महाजनगल गुण-गलेन्तेम्दोडे ॥ वृ ॥ अदरोल् नानाजा-

२२ तिपरदरप्रणी सम्यक्तरादी जैनर् पडेवर् जैनमार्गाश्रयजलनिधि-सवर्धितपूर्णचन्द्रर् मुदम क्रोधादि-

२३ मू मादुद्धर्पकुलनिवर् विट्टु रादर् मुख्यमादधिपनखिल कलावल्लभर् कीर्तिवेत्तरताता-

२४ मादण्डाधिपगलु सहजात कुलक्षत्रियरादरसुगलन्वयमेन्तेन्दोडे स्वस्ति समधिगतपचमहा-

२५ महिमप्रसिद्धमाद बनवासिपुरवराधीश्वरर् वैजयन्ती मधुकेश्वर-लब्धवरप्रसाद मृगमदामोद गोकण

२६ महाबलेश्वरदिव्यश्रीपादपद्माराधकर परबलसाधकर हरमित्तरवर-शूल निगलकमल्ल चत्तदकराम राय-

२७ रगण्ड साहसमल्ल गण्डरडावणि सत्यराधेय साहसोत्तुग शरणागतवज्रपंजर पश्चिमसमुद्राधिपतियप्प हैवे-

२८ क्षत्रियकुलकमलवनमार्तण्ड परनृपनामरस पूर्णचन्द्रनेनिसिद बसवदेवरसर देवरसर-

२९ राज्यलक्ष्मियेनिसिद चन्द्रपुरवेम्ब पट्टणदोलु राज्यं गेय्युव कालदोलु आ अरसुगलिगे पट्टवर्धनवाहत्तरनियो-

३० गिगल् जिनसेव्यनुं त्रिशक्तियुतनुं षड्गुणसमर्थनुं राजलक्ष्मि-

चतुरन्तं सोमेश्वरदण्डनायक-

३१ न अन्वयद कीर्तियेन्तेन्दोडे श्रीसोमदण्डपुत्रनु मासुर कामण्ण-

दण्डनायकनेनिपं शासनचक्र-

३२ वर्ति धर्मधारक सामन्तं कीर्तिवेत्तनमलचरित्रं श्रीमत्सोमदण्ड-

नायकंगे कामार्थ......गलु पुट्टिदर् श्रीमद्रामण्णनेम्ब हेग्गडेय-

३३ सुवर्ण्णपुत्रसलेम्बकं रामं पुट्टिद......दशरथसामर्थ्यंदि......यपराजिता-

रमणिगं साहित्यरत्नाकारमेन्ता-

३४ रामण्णनेम्ब हेग्गडे रामक्कंगे तां पुट्टिदं शान्तं चोजणनम्बिपुत्र-

नेनिसल् कुर्न्तादेवि ममन्तु

३५ आपाग्रुराजंगे तां शान्तं धर्मजनन्तु पुट्टिद बोला सम्यक्त्व-

रत्नाकरमन्ता चोजणसेट्टिय जननि रामक्कनन्वयमेन्तेन्दोडे-

३६ वसुधेयोलु नेगल्द......अखमैश्वर्यसम्पन्नरं दानगुणसम्पन्नरुमप्प

नम्बिसेट्टियर तम्मसेट्टिसहोदररेनिसिद म-

३७ हिसेट्टि होळसेट्टि......गुणाढ्यरं जैनजनबान्धवरं आ सेट्टरोलगे

महावननेनिसिद आ होळपसेट्टि-

३८ ....

३९ ......शककाल......माविरद सुन्दर......

(अवशिष्ट ६ पंक्तियाँ पढ़ी नहीं जा सकतीं।)

[यह लेख शक १३०० में लिखा गया था। गेरसोप्पेके राजा हैवेय नृपालके शासनकालमें चन्द्रपुरमें बसवदेवरस शासन कर रहे थे। उनके दो मन्त्री सोमण्ण दण्डनायक और कामण्ण दण्डनायक थे। सोमण्णका पुत्र रामण्ण था जिसकी पत्नी रामक्क थी। उनके पुत्रका नाम चोजणसेट्टि

था। इनके कुलके होयसलेद्वि तथा नम्बिहेट्टि इन बन्धुओंने दिये हुए दानका विवरण इस लेखमें दिया था।]

[ए० रि० मै० १९२८ पृ० ९५]

३९८

हडजन (मैसूर)

शक १२०(६)=सन् , १२८४, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीमनु शकवरिष १२० सवत्सरद

२ ज्येष्ठ ब १ आ। श्रीमनु मैसुनाड इ-

३ डजनद तडेयर कुल्लद बम्मय्यनवर सुपुत्र हिरि-

४ य माद्ण्णनवर देवरिगे। श्रीमद् रायराजगुरु मडलाचार्य

५ सकलविद्वज्जनचक्रवर्तिगलुमप्प सैद्धान्तिदेवर प्रियगुड्डि केशवदे-

६ (वि)यर आ केशवदेवियर अक्क मारदेवियर स्वर्ग-

७ तरादर। अवर निसिदिय मादिसि आ निसिदिय अर्चनेगे बि-

८ ट वह क्षेत्र बसदिगे पूर्वदलुलगद्देयि तेंकण ब

९ त्तिन अमरिसदलु हत्तु खडुग गद्देयनु धारा-

१० पूर्वकवागि सर्व हागे आ हिरिय माद्ण्णनवरु बिट्टरत्ति-

[यह लेख मण्डलाचार्य सैद्धान्तिकदेवकी शिष्या केशवदेवीकी बड़ी बहन मारदेवीके समाधिमरणका स्मारक है। इस निसिदिकी पूजाके लिए हिरिय माद्ण्णने स्थानीय बसदिको कुछ भूमि दान दी थी। लेखकी तिथि ज्येष्ठ ब० १, रविवार शक १२० (चौथा अंक लुप्त है) दी है। तिथि और वारके योगसे यह शकवर्ष १२०६ निश्चित होता है।]

[ए० रि० मै० १९२८ पृ० १६४]

३९९

इन्दौर म्युजियम (मध्यप्रदेश)

संवत् १४४२ = सन् १३८६, संस्कृत-नागरी

[यह लेख शान्तिनाथमूर्तिके पादपीठपर है। इसमें संवत् १४४२ में प्रौढाचार्य श्री महाकीर्तिका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० १५९]

४००

गेरसोप्पे (मैसूर)

शक १२१४ = सन् १२९२, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं। जिनगिरियदेशवेम्ब ललनामु-

२ खक्के बेसेदिर्पा गेरसोप्पेगे वर सेज्जेकार सले दण्डिगेय छत्रसुचामरालियिं बगेवुगे तोर्प हैवेनृप रामकं····बम्मपु-

३ त्रनोब्बणं नेगले सन्नुतनाद जिनचैत्यजिनालय-मन्दिरंवरं कलियुगदोल् महापुरुष योजण तन्न मंगल····

४ मण समवेन्दु माविसि नितान्त····स्थानमं जिनालयंगलं सले माडि गोपुरसुमनोहर····विचित्र····वलयं अनन्तनाथन पति-

५ य····र्द कृतार्थनो। अन्ता योजणसेट्टिय प्राणवल्लभेयाद रामक्कन गुणंगलेन्तेन्दोडे श्रीमतु सन्····

६ तनाथन पदाम्बुभृंगनु यो-

७ जणसेट्टि प्र····निनिचरु

८ लांग····रम्य····गोत्रचिं-

९ तामणि पार्थिव····सपमेने

१० दोल् सत्थर्धारोदात्त
११ सेव रामकनोप्पिदलॆ धरित्रियोलु
१२ पतिमन्ते शीलवति भूनुतचारुचरि-
१३ त्रे सकलजीवदयापर मन्ततचतुर्वि-
१४ धदानदोल् अतिनिपुणतेयिन्देसदलॊ
१५ रामक्क । जिनमतवाक्यदोलु
१६ ' सद जिनराजपदाब्जभृगे ता जननुत चारु-
१७ सीले गुण सुव्रत दान पूजेयिं
१८ सुखि कामिनीजनशिरोमणि यो-
१९ याम्र निजग्रामदिं निजकुलोन्नति रामकनाप्पुतिदलु । श्रीजिनराजपूजेयोलु श्रीमुनिराजपदान्नसवे-
२० योलु नैजगुणगलिं विनयदिं मयदिं निजभावनुद्दियिं पूजिमि भक्तियिंदरगि ता स्तुतिमाडिसु कीर्ति-
२१ योलिन्नु बण्णि कोण्डी निजनामदि रामकनी धरित्रियोलु कमलदलायताक्षि कमलानने कमलसुगन्धि कोमल
२२ विमलल्लतागि रसयुतरी जिनराजपूजेयोल् समरमभावदोल् सले माणिकसेट्टिपुत्रि राम-
२३ क क्रमगुणहलिकररलतेय नेरे योप्पुवलॆ धरित्रियोलु कमला-कारदोलु कमलिनि कमलदोल
२४ कमले पुट्टुवन्तिर नागमनमलान्वयदोलु रामक विमलगुणाभरणे पुट्टिदल् कलियुगदोलु
२५ रामक्कन अन्वयमन्तेन्दोडे । हुलिगेरय पचरदिजय मुन्दण हिरिय अगडिग मुन्य-
२६ वाड किरिय रामसेट्टि आ मडुवलिगे गगायि अवर मक्कलु बैचेसेट्टियरु आतन तगि सोमव्वे

२७ आ सोमव्वेयनु आ हुलिगेरेय माणिकसेट्टिगे विवाहमादी····
अवर मगलु नागव्वे

२८ आकेय तन्दे माणिकसेट्टि समस्तरू आ वैचिसेट्टि हुलिगेरेगेद्दि
हन्दिगुलदलि प्र-

२९ ····आ नागव्वेयनू सलहि हिरिय हन्दिगुलद चन्द्रनाथ-
स्वामिगल चैत्यालयदोलु पूजे

३० आदिके आकार्य नडेवन्तागि वृत्तियनू बिट्टु शासनव हाकिसिदरु
आ वैचरसियु तम्-

३१ म सासे नागवेयनू गेरसोप्पेय सेट्टि गुरुवायि ओजेय मग
माणिकसेट्टियनू तानु विवा-

३२ हव माडि आ माणिकसेट्टियनन्वयमेन्तेन्दोडे गुच्छविकय
नागिसेट्टिय मगलु रामव्वे आकेय पु-

३३ त्र माणिकसेट्टि माणिकसेट्टिगू नागव्वेयवरिगू जनिसिद मकलु
हरिसेट्टि कामण-

३४ नेमण्णसेट्टि सरणसेट्टि संगप यिन्तिवरोलगे रामक्कननू गेरसोप्पेय
रामण हेग्गडेय संगराज-

३५ णन ओजणंगे विवाहव माडि आ वोजण्णसेट्टियू रामक्कनू
सुखसंकथाविनोददिं-

३६ दिहलिगे गेरसोप्पेय अनन्ततीर्थंकरचैत्यालयनारंभिसि महा-
प्रतिष्ठेयनू माडिम्रि

३७ दिरुत्तं यिरलु सक वरुस सासिरद मूनूर हदिनाल्कनेय
प्रजापतिसंवत्सर-

३८ द कार्तिक शुद्ध पंचमि आदित्यवार सन्यसनसमन्वितवागि
स्वर्गास्तरादरु····मदवलिगे

३९ रामक्कनवर तन्दे मोदलुगोण्डु चरित्रदिं नेगले विक्रमसंवत्सरद
आषाढ-

४० सुध पचमि सुक्रवार रोहिणीनक्षत्रदल्लु तुगमसमाधि
४१ आचन्द्रार्कमागि
४२ मूडे मत्तवन् योजण-
४३ सेट्टि रामक्क
४४ निषधिय कट्टिसे मगल महा श्री

[इस निषिधिलेखमें कार्तिक शु० ५, रविवार, शक १३१८, प्रजापति सवत्सरके दिन योजणसेट्टिकी पत्नी रामक्कके समाधिमरणका उल्लेख किया है। रामक्कने गेरसोप्पेमें अनन्ततीर्थकरका मदिर बनवाया था। उसका वशवर्णन भी लेखमे दिया है। रामक्कके पिता माणिक्कसेट्टिकी मृत्यु आषाढ शु० ५, शुक्रवार, विक्रमसवत्सरके दिन हुई थी।]

[ए० रि० मैं० १९२८ पृ० ९७]

४०१

लक्कवरपुकोट (विजगापट्टम्, आन्ध्र)

सवत् १४४८=सन् १३९२, सस्कृत-नागरी

[इस मूर्तिलेखमें सवत् १४४८ में जिनचन्द्र भट्टारक-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। इस समय यह मूर्ति वीरभद्र मदिरमे है।]

[रि० सा० ए० १९११-१२ क्र० ४७ पृ० ५०]

४०२

संगूर (धारवाड, मैसूर)

शक १३१७=सन् १३९५, कन्नड

[इस लेखमें जैन मल्लप्पके पौत्र तथा मगमदेवके पुत्र नेमण्ण-द्वारा सगूरके पार्श्वनाथ मदिरको भूमि दान देनेका उल्लेख है। विजयनगरके सम्राट् हरिहरके समय गोवाके शासक माधवका यह सेनापति था। नेमण्ण-

के पिताका समाधिमरण पुष्य शु० ११, गुरुवार, युव संवत्सर, शक १३१७ मे तथा पितामहका समाधिमरण फाल्गुन व० १४, सोमवार, नल संवत्सर-मे हुआ था ।]

[रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई १६७ पृ० १०७]

४०३

गूटी (अनन्तपुर, आन्ध्र)

१४वीं सदी, संस्कृत-कन्नड

[इस लेखमें विजयनगरके राजा हरिहरके समय इरुग दण्डनायक-द्वारा एक जिनमन्दिरके निर्माणका उल्लेख है। कोण्डकुन्दान्वयकी परम्परामें वक्रग्रीव, एलाचार्य, अमरकीर्ति, सिंहनन्दि तथा वर्धमानदेशिकका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२०-२१ क्र० ३२६ पृ० १८]

४०४

हम्पी (वेल्लारी, मैसूर)

शक १३१७ = सन् १३९५, संस्कृत-तेलुगु

[यह लेख एक जिनमूर्तिके खण्डित पादपीठपर है। तिथि फाल्गुन व० १, सोमवार, भावसंवत्सर ऐसी दी है। शक वर्षके अंक लुप्त हुए हैं। मूलसंघ-बलात्कारगण-सरस्वतीगच्छके धर्मभूषण भट्टारकके उपदेशसे इम्म-डिबुक्क मन्त्रीश्वर-द्वारा कुन्दनवोलु नगरमें कुन्थुतीर्थकरका चैत्यालय बनवाये जानेका इसमे उल्लेख है। यह मन्त्री वैचय दण्डनायके पुत्र थे। संवत्सरनामानुसार यह शक १३१७ का लेख प्रतीत होता है।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ३३६ पृ० ४१]

४०५

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

१४वीं सदी, तमिळ

[यह लेख विजयगण्डगोपालदेवके २०वें वर्षमें लिखा गया था। पोन्नूरके निवासी अरवन्दै आण्डाल् तिरुच्चोरुत्तुरै उडैयार्-द्वारा इस जिन-मन्दिरमें सन्ध्यासमय छह दीप प्रज्वलित रखनेके लिए तीन पलवनमाडै तथा कुछ चावलके दानका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३८]

४०६

हिरेचौटि (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

१ नमो वीतरागाय। श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघला-

२ छन जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन। सागरवारि-वेष्टितसमस्त-

३ धरारमणीघनस्तनाभोगविडम्बिन विदितविस्तृतभारतामहारदिं

४ नागरखण्डपत्रपरिवेष्टनदिं जननेत्रपुत्रिकारागमनित्तु माण्दुदे मनस्सु-

५ खद वनवासिमण्डल। नागरखण्ड वनवासेगागिकुं भूषण-वोलु

६ गिरेयागि मेरेगु नागलतापूगवनदिनेसेव तवे सॊ

७ नागरखण्ड सागरमागे तॊपु

८ सुखक्किम्बागि गे मरेवुदी मनुजना सेणिमेट्टि

९ बसदिय माडिसिदर इन्तप्पतम्मदिरिव्वरु शान्तिजिनेश्वर-

१० बसदिय माडिसि सन्तोषदिं सन्तमदिं पडेदर्द धराचन्द्र

११ गुणवार्धिय पडेदु बालुत्तिरे पलकाल पुण्यनिधि नाग-

१२ सेट्टि तन्नय पेर्म्मि देसेवल्लरसियक्कनुमत मतं
१३ पडेद्दु सुखर्दि वाल्वुदु स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर अरिराय-
१४ विभाड अगलि····भापेगे तप्पुवरायरगण्ड चतुस्समु-
१५ द्राधिपति श्रीवीरबुक्करायमहारायरु राज्यं गेय्युत्तमि····वि-
१६ रोधिसंवत्सर कार्तिकशुद्धतदिगे····वर देवर नि-
१७ ····चन्द्रगुड्डिगलुमप्प····सान्तिना-
१८ नाथदेवर अमृतपडि नन्दादीप····
१९ केरेय केलगे गद्दे ख ४····
२० ····र्या धर्म्मम प्रतिपालिसु····
२१ वारणासि कुरुक्षेत्र····
२२ कविलेय-
२३ पातकनक्कु श्रीशान्तिनाथ,

[यह लेख कार्तिक शु० ३, विरोधिसंवत्सरके दिन वीरबुक्करायके राज्यकालमें लिखा गया था। वनवासि प्रदेशके नागसेट्टि तथा सेणिसेट्टि-द्वारा शान्तिनाथमन्दिरके निर्माणका तथा उसमे दीपादि पूजाके लिए ४ खण्डुग भूमि अर्पण किये जानेका इसमें उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९२८ पृ० ८३]

४०७

हले सोरब (मैसूर)

१४वीं सदी उत्तरार्ध, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं जीयात् त्रै-
२ लोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं। अमरावतियलकावति स-
३ मर्म्मेनिसुव सोरब तवनिधियुमेंबेरडं समनागि वि-
४ पालिसिर्द्दं सुमनसतरु सद्धंस तवनिधिय ब्रह्माख्यं ॥

५ तिगलवेन्तिर्दंडे नाक

६ युविल

७ वाधि

[यह निसिधिलेख बहुत खण्डित है। सारव और तवनिधिके शासक ब्रह्मके समय किसी व्यक्तिके समाधिमरणका यह स्मारक है। मृत व्यक्ति कोई महिला थी क्योंकि लेखके पाषाणपर एक स्त्रीमूर्ति उत्कीर्ण है।]

[ए० रि० मैं० १९४२ पृ० १७९]

४०८

तवनन्दी (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

१ जिनर जिनमुनिगलु मत्तनु-
२ पम प्राणेश हरियन-
३ दन नेनदु वनजाक्षि महा
४ लक्ष्मियु घनतर शौर्य-
५ दोलुमग्निपोल् म-
६ ळे पायिदल्
७ महालक्ष्मिय सद्गुण-
८ समुद्रोपमान ॥ म-
९ गलमहा श्री श्री

[इस लेखमें महालक्ष्मी नामक किसी महिलाके अग्निप्रवेश-द्वारा मरणका उल्लेख है। जिन, मुनि और अपने पति हरियनदनका स्मरण करते हुए उसने धैर्यपूर्वक प्राणत्याग किया था। लिपि १४वी सदीकी है।]

[ए० रि० मैं० १९४२ पृ० १८५]

४०९

तलकाड (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

[यह लेख द्रविल संघ-नन्दिगणके कमलदेवके शिष्य लोकाचार्यके समाधिमरणका स्मारक है। लिपि १४वीं सदीकी है। यह लेख वैकुण्ठ-नारायणमन्दिरकी दीवालमें लगा है।]

[ए० रि० मैं० १९१२ पृ० ६३]

४१०

मत्तावार (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

१ मरुलजिन जकवेहट्टि चटवे-

२ गन्ति मत्तवूर वसदि तपसु

३ माडि सिद्धि आदलु अवेय मा-

४ चरन मग मार कल्लु निलिसि-

५ द

[यह निषिधिलेख मरुलजिन-जकवेहट्टि नामक ग्रामकी निवासी चटवेगन्तिके समाधिमरणका स्मारक है। उसका मृत्यु मत्तवूरकी वसदिमें हुआ था। अवेय माचरके पुत्र मारने यह स्मारक स्थापित किया था। लेखकी लिपि १४वीं सदीकी प्रतीत होती है।]

[ए० रि० मै० १९३२ पृ० १७१]

४११

हुलेकल (उत्तर कनडा, मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

[यह लेख १४वीं सदीकी लिपिमें है और बहुत घिसा है। इसके प्रारम्भमें जिनशासनकी प्रशंसा है तथा बादमें किसी मठमें आहारदान आदिके लिए कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० ई० क्र० २१ पृ० २२९]

४१२-४१३

कोनकोण्डल (अनन्तपुर, आन्ध्र)

१४वीं सदी, कन्नड

[ये दो लेख १४वी सदीकी लिपिमें रसासिद्धुलगुट्ट नामक पहाडीपर पाषाणोंपर खुदे हैं। इनमें चिप्पगिरिके श्रीविद्यानन्दस्वामी तथा बोलय नागका उल्लेख हुआ है। अक्षर कुछ अस्पष्ट हुए हैं।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४५२-५३]

४१४

उद्दरि (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादा-

२ मोघलांछनं । जीयात् त्रैलोक्यना-

३ थस्य शासनं जिनशासनं ॥ स्वस्ति श्रीमतु

४ विजयकीर्तिभटारर

[*यह लेख खण्डित है इसलिए विजयकीर्तिभटार इस नामके अतिरिक्त* अन्य विवरण इससे प्राप्त नहीं होता। लिपि १४वी सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९२९ पृ० १४२]

४१५

सक्करेपट्टण (मैसूर)

संस्कृत-कन्नड, १४वीं सदी

१

२ *तस्मिन् सेनगणान्तरिक्षतरणि श्रीवीरसेनो भुवि संसाराम्बु-*
धितारणैकतरणि श्रेयोवनीसारणी । तच्छिष्य प्रचुर-

३ प्रबन्धरचनाचातुर्यपद्मासनः पायाद् वो जिनसेन इत्यभिधया ख्यातो मुनिग्रामणीः । (१) श्रीमत्पुस्तक-
४ गच्छसूरसदृशो विश्वप्रकाशात्मकस्त्रैविद्यो गुणभद्रदेवयतिपः श्रीसूरसेनस्ततः (१) शिष्यः श्रीकमलादिभद्रगणभृद् दे-
५ वेन्द्रसेनस्ततः । तेनाकारि कुमारसेनमुनिपो वादीन्द्र-चूडामणिः (२) तच्छिष्याः हरिसेनदेवादयः । मा-
६ धुर्यं वाचि कारुण्यं हृदि तीव्रं तपस्ततः । श्रीप्रभाकरसेनाख्य-गुरुश्रेयो विराजते । (१३) तत्पद्मोदय-
७ शैलतिग्मकिरणस्त्रैविद्यपारंगतो भूपालार्चितपादपंकजयुगः श्रीलक्ष्मिसेनो मुनिः (।) लोके सत्त-
८ पसां निधानमनवं कारुण्यवारांनिधिः दाने कल्पकुजोपमो विजयते कामेभकण्ठीरवः । (४)
९ श्रीमदनसेपमुनिपो सज्ज्ञानामृतपयोधिपूर्णेन्दुः (।) सुदृढतपोगुण-युक्तो भाति श्रीमत्प्रभा-
१० करार्यसुतः । (५) द्वीपितटाकनामनगरीपति शंखजिनेन्द्रचन्द्र-मश्रीपादपंकजालिरमलाम-
११ रकीर्तिमुनीन्द्रपादसेवापरिपक्वबुद्धि वलगारसमाह्वयवंशपद्म-तारापति रंजिपं स्वजनकं-
१२ जनमोमणि वैश्य मायणं । (६) गुणतुंगं होल्लराजं पितृ गुणवति देवमाम्बेतन्नम्बेयु-
१३ द्यद्गुणरत्नं नागराजं परिकिपोडे पितृव्यं गुणैकाश्रयं माकणन् आत्मीयानुजं ताननिपगणित-
१४ सौभाग्यदिं भाग्यदिं धारिणियोल् विख्यातिवेत्तं जिनसमय-सरस्सारसं मायणार्यं । (७) मत्तं लोकै-
१५ कमित्रं प्रचुरतरकलावल्लभं वन्दिवृन्दोत्करपुण्यत्-कल्पभूजं बुधनुतचरितं बावपरं

१६ काव्यगोष्ठि सरस विद्विष्टशैलाशनि सुरपुरमोदलान्तगल मीन-
　केतूद्धर रूप सद्गुणोदय-
१७ हमयन् एनल् आश्चर्यमे मायणार्य। (८) इन्तु होय्सल-
　भूविभुलक्ष्मीलपनमु
१८ श्रीवीरबुक्कराजसाम्राज्यरमारमणीयविलासदर्पणोपम पुनिमि
　सोगयिसुव होसपट्टणदोलु प्रसिद्धिवडेद वै-
१९ श्य मायण्ण माकप्पगलु न दनागि माडिद श्रीलक्ष्मीसेन-
　भट्टारकर निषधिय प्रतिष्ठे शासन मगल महा श्री श्री श्री श्री श्री

[यह निषिधिलेख सेनगणके लक्ष्मीसेनभट्टारककी मृत्युका स्मारक है। इनकी गुरुपरम्परा इस प्रकार थी — वीरसेन — जिनसेन — गुणभद्र त्रैविद्य-देव — सूरसेन — कमलभद्र — देवेन्द्रसेन — कुमारसेन — हरिसेन — प्रभा-करसेन — लक्ष्मीसेन। लक्ष्मीसेनके गुरुबन्धु मदनसेन थे। यह निषिधि बलगार वशके मायण तथा माकण नामक दो वैश्यों-द्वारा स्थापित की गयी थी। ये होसपट्टणके निवासी थे। यह नगर होयसल प्रदेशमें था तथा वीरबुक्कराजके राज्यके अंतर्गत था।]

[ए० रि० मै० १९२७ पृ० ६१]

४१६

तेरकणाम्बि (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीमूलसंघ देशियगण पुस्तक-
२ गच्छ कोंडकुदान्वय हनसोगेय बलि-
३ य राजगुरु (मंड) लाचार्यरमप्प (सम)-
४ यामरण ललितकीर्तिभट्टारकरु माडिसिद
५ (प्रतिमे) मगल महा श्री श्री श्री

[यह लेख पार्श्वनाथमूर्तिके पादपीठपर है। इस मूर्तिकी स्थापना मूलसंघ-हनसोगे बलिके ललितकीर्ति भट्टारकने की थी। लिपि १४वीं सदी की है।]

[ए० रि० मै० १९३४ पृ० १९१]

४१७

तगडूर (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

१ (कों)डकुन्दान्वय
२ (मू)लसंघ नागनन्दि
३ (अन)न्तभट्टारकशिष्य
४ नन्दिभट्टारकरशि-
५ ····यन्तगड्डू
६ ····यिल्लेकन्तिय(र्)
७ (स)न्यसनंगेय्दु सुर-
८ (लोकक्के) सन्दर्

[इस निसिधिलेखमें मूलसंघ-कोण्डकुन्दान्वयके नागनन्दि भट्टारकके शिष्य नन्दिभट्टारककी शिष्या···यिल्लेकन्तिके समाधिमरणका उल्लेख है। पाषाण टूटा होनेसे कुछ अक्षर नष्ट हुए हैं। लिपि १४वी सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९३८ पृ० १७३]

४१८

चामराजनगर (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

१ श्रीमूलद संगद का-
२ णूरुगणद अन-
३ न्तकीर्तिदेवर गुड्ड
४ बोप्पय सन्य-
५ सनविधियिं
६ ····(स्व)र्गस्त

[इस लेखमें मूलसंघ-काणूर गणके अनन्तकीर्तिदेवके शिष्य बोप्पयके समाधिमरणका उल्लेख है। लिपि १४वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९३१ पृ० ११२]

४१९

माविनकेरे (कडूर, मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीमतु मन्मथसवत्सर प्रथम श्रावण शु । गुरुवार पुष्य-नक्षत्रदल् श्रीचन्द्रनाथन चैत्यालयदल्

२ तोल्हरवल्लिय अनतकमेट्टितिय मग आन्दिसेट्टिय येरगिसिद चतुर्विंशतितीर्थंकरप्रतुमेयनु यिरिसि कु-

३ तार्थं नादेनु भद्र शुभ मगल भूयात् पुनदर्शन शुभ मगल महा श्री श्री श्री

[इस लेखमें चतुर्विंशति तीर्थंकर मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। अनतकमेट्टितिके पुत्र आदिसेट्टिने यह मूर्ति स्थापित की थी। तिथि प्रथम श्रावण शु० (?) मन्मथ सवत्सर ऐसी दी है। लिपि १४वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९४६ पृ० ३७]

४२०

गेरसोप्पे (मैसूर)

शक १३२३=सन् १४०१, कन्नड

१ श्रीमत्परमगभीरस्याद्वादामोघलाछन जा-

२ यात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन

३ नगिरिय कुलचक्रवर्ति राजनिर्जित

४ ला सामन्तर बल्लिय यिन्ता होन्नभूपनल्लिय आ साम-

५ न्तन पुत्रनधिकाम कोमल मरस अरिनृपालमातन

६ दे धर चारुकीर्तिपण्डित सद्गुरुप्रभु आ कामनृपालन मान

७ योजि राज्यमे नगिरियुमनितु तनगागे वैचणभूपति म

८ नेगल्द रिपुसैन्य नवर न पद्मरसि जिनमुनिपादाब्जनात

नृपाल

४२१

सक्करेपट्टण (मैसूर)

शक १३२८=सन् १४०५, कन्नड

१ श्रीमत् परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छन (।) जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन (॥)

२ श्रीमद् रायराजगुरु मण्डलाचार्य पुरविक्रमादित्य मध्याह्न-

३ कल्पवृक्ष सेनगणाग्रगण्यरप्प श्रीमल्लक्ष्मीसेनभट्टारकावर श्रीमत् श्रीमानसेनदेवर निषिधि शकव-

४ ष १३२८ नेय पार्थिव सवत्सर १० लु

५ श्रीमुत्तद् होसऊर बैचसेट्टिय मक्कलु मायसेट्टि बोम्मिसेट्टि नागणसेट्टि अवर मोम्मक्कलु बैच-

६ शेट्टिय तम्मसेट्टि कोवरिसेट्टि चिक्कबैचसेट्टि मादिसेट्टियर मक्कलु कोवरिसेट्टियर

[यह लेख सेनगणके भट्टारक लक्ष्मीसेनके शिष्य मानसेनदेवकी समाधिका स्मारक है। यह निषिधि मुत्तदहोसऊरके बैचसेट्टिके पुत्र मायसेट्टि, बोम्मिसेट्टि आदिने शक १३२७ में स्थापित की थी।]

[ए० रि० मै० १९२७ पृ० ६२]

४२२

कोरग (द० कनडा, मैसूर)

शक १३३१=सन् १४१०, कन्नड

[यह लेख केरवसेके राजा सातर वशीय वीरभैरवके पुत्र पाण्ड्यभूपालके समय पुष्य शु० १०, गुरुवार, शक १३३१, सर्वधारि सवत्सरका है। इसमें बलात्कारगणके वसन्तकीर्तिराउलकी प्रार्थनापर बारकूरकी बसदिके लिए राजा-द्वारा कुछ भूमिके दानका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५३० पृ० ४९]

४२३-४२४
भटकल (उत्तर कनडा, मैसूर)
शक १३३२=सन् १४१०, कन्नड

[ये दो लेख हैं। कार्तिक शु० १०, सोमवार, शक १३३२ सर्वधारी संवत्सर, यह इनकी तिथि है। एकमें संगिराव ओडेय-द्वारा उनके किसी सम्बन्धित मल्लिराय नामक व्यक्तिके समाधिमरणपर निसिधिकी स्थापनाका उल्लेख है। दूसरेमें किसी राजकन्याके समाधिमरणपर निसिधिस्थापनाका उल्लेख है। इसमें हैवभूप, भैरादेवी तथा संगिरायका भी नामोल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० ३३९-४०]

४२५
लक्ष्मेश्वर (मैसूर)
शक १३३४=सन् १४१२, कन्नड

[यह लेख विजयनगरके देवराय महारायके समय मार्गशिर शु० २, रविवार, नन्दन संवत्सर, शक १३३४ को लिखा गया था। शंखवसतिके आचार्य हेमदेव तथा सौम्यदेव (शिवमन्दिर) के शिवरामय्य-द्वारा दोनों मन्दिरोंकी भूमिकी सीमाके बारेमें कुछ विवादका समझौता किये जानेका इसमें उल्लेख है। यह कार्य नागण्ण दण्डनायक-द्वारा सम्पन्न हुआ था।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ३३ पृ० १६३]

४२६-४३०
टोंक (राजस्थान)
संवत् १४७०=सन् १४१३, संस्कृत-नागरी

[ये ५ मूर्तिलेख हैं। मूलसंघके आचार्य प्रभाचन्द्रके शिष्य पद्मनन्दिके उपदेशसे खण्डिल्लवाल कुलके कुछ व्यक्तियों-द्वारा ज्येष्ठ शु० ११, गुरुवार, संवत् १४७० को ये मूर्तियां स्थापित की गयी थीं।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४६६-७० पृ० ६९]

४३१

मुलगुन्द (धारवाड, मैसूर)

शक १३४२=सन् १४२०, कन्नड

[यह लेख वैशाख शु० १४, रविवार, शक १३४२, शार्वरी संवत्सरका है। इस समय रायराजगुरु हेमसेनके शिष्य बुल्लिसेट्टिका समाधिमरण हुआ था।]

[रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई० ९५ पृ० ८]

४३२

मुलगुन्द (धारवाड, मैसूर)

शक १३४३=सन् १४२१, संस्कृत-कन्नड

[यह लेख चन्द्रनाथबसदिमें है। इसकी तिथि भाद्रपद शु० ९, शुक्रवार शक १३४३ प्लव संवत्सर है। इस समय स्वरटोरके तिलकरसके मन्त्री हेग्गडे मद्दुवरसके पुत्र नागरसकी मृत्यु हुई थी।]

[रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई० ९४ पृ० ८]

४३३

गेरसोप्पे (मैसूर)

शक १३४३=सन् १४२१, संस्कृत-कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं। जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ श्रीजम्बूद्वी-

२ पमध्यस्थितजनमरं रमणरवाप्यकूलश्रायर् वद्दर ज्जिनपद-पद्मभृंग स्तभित जायात पत्तन स्यन्तपक

३ ····त्रैविद्यवल्ली····मुक सुलमरारम्य····न्थितजिनेन्द्रपादयुगपद्म-भृंगा मंसा-

४ र····माविध····तेमेद····दुदुभूञरें-

५ द्रः तदीयवशोद्भवमंगभूपो साहित्यलक्ष्मी····भामाति लक्ष्मी जिनमंदिरेषु कामं कामितदायक कन-

६ रुद्र कन्दर्पमर्वप्रिय: कल्याणकलनानन्त····श्रीमंगभूपस्य जिनेन्द्र-पादद्वयपद्मगन्धमिलद्भृंगोभवत् सन्ततं

७ तदीयवंशसंभूतः केशवाख्यः क्षितीश्वरः वशीकरोति सहसा वन्दिगेहेषु सम्पदं····मुपासितुं भवतु ते गात्रं हि-

८ मार्द्रीकृतं । श्रीमत्केशवभूमिपालचरितं श्रुत्वा स्तुवन् किन्नरैः तोपाकम्पितशंभुमौलिविलसद्गंगातरंगास्पदं आश्रयाशो दह-त्याशु स्वाश्रयं स्वतनाथ सा (? स्वीयतेजसा)

९ केशवेन्द्रप्रतापाग्निः नाश्रयं तापयत्यहो । केशवेन्द्रगुणान् वक्तुं को वा शक्नोति पण्डितः आकाशस्थितनक्षत्रगणना केन मुच्यते ॥ वर्धमानान्वयोद्भवे निर्धूताश्रित-

१० दरिद्रे निजपतिनियमांतर्धियुते ह्वोन्नवरमि विशुद्धात्मिके श्राने-वलिगे तिलकमेनिक्कुं १ आ ह्वोन्नवरमियरसं श्रीहेवनृपं जिनक्रमांबुजभृंगं बाहुबलनिर्जितरि-

११ पुभूपं साहससमुद्रनमिनवकामं । तयोरभून्निर्मलजक्कवरसी नुता सुशीला जिनभक्तियुक्ता तं चोपयेमे वरमंगभूपो जामातृवर्यो भुवि हे-

१२ वराजः अनिन्द्राद्रपि निर्गन्तुं भीरवः खलु योषितः मंगभूपाल-कीर्तिस्तु कामिनीवातिलंघिनी तयोरभूतां जिननाथनम्रौ मात्रा पुनीताखिलजैनल····

१३ धात्रीव हैवणश्री ‘भावल्दर्मी समूर्जिताह्वानयुता सुशीला श्रीमन्नमिनिलिम्ब – मौलिविल्सन्माणिक्य स्मर्पुनिपादपद्म - नखर श्रीपार्श्वना-

१४ थेन तु काम मगरसाग्मजो गुरुगुणश्रीहैवणार्योभवत् जैनयोगिनिकरर् साहित्यरत्नाकरर् श्रीमद्धात्रुनिनभिवमीव नितरा नृपालकृता भू-

१५ मौ भूरिगुणोजभास्करत्सत्प्रत्ययभामान्विता काम मगलूपा गुन्दया देवी श्रीमानलावा सुधामूतिद्युति प्रत्यह १ क।

१६ आ भावलरसियरस भूमीशविलम्रपाद् केशवभूप कामारिमसित-मस्तकसोमद्युनिकीर्ति को सुरलोकद् सुरतरुविन गुरुफ-

१७ लम मेदुदु नृप्तियिल्लदे सुरग धरेयोल् भूसुराढ्य वरकेशवभूप-कल्पभूजरूढहोयि भाति’ ‘कीर्त्या श्रीकेशवक्ष्मापतिरप-

१८ रावुभिर्तारगा जिनपतिश्रीपादपद्मानवा भूमौ भाविजिनेन्द्रचन्द्र-विम्बसच्चारित्रनु’ ‘रागोद्या क्षसारमारोढ्या।

१९ व्यत्स्यान्यैकसमन्विते शककृते श्रीशार्वरीवत्सरे माघे मासित-पचमीतिथियुते श्रीसौम्यवारे सिते पक्षे आदिराजवनिता धर्माभिधाने पुरे काम कारयति स्म

२० जक्यधर्मो पार्श्वप्रतिष्ठा मुदा। अनन्तर। नगिरद राज होन्नरसनन्वयवार्धिगे चन्द्र सले ता भोगयिप हैजैभूपनलिय कलिकालद्

२१ कर्णनेम्बरी जगदलु मगभूवरन वान्यवे तगल्देविनन्दन नगेमोगदा कल्पभूज केशवरायनु कीर्तिवल्लभ। क। अन्ता नगिरद रान-

२२ र सन्तानाब्धियोलु लक्ष्मीमाणिरदेवीकान्तनु एनिपवीरायगे कन्तुविनन्तुदयिसिदं सगनृपाल सगविन्र क्षेमपुरताधजिनेन्द्र पाद-

२३ पद्मकं शंगणजीयनालजनु अम्त्रमहीशन पुत्र संगमं····तन्त मनमोल्वन्तीधर्मवं माडि पूर्वदोल् पिंगिद धर्मवेल्ल-

२४ वनु पालिसिदं रविचन्द्रल्लिनं। अन्ताधर्मप्रतिपालकनेनिप श्रीसंगभूपालं सुखदिं राज्यं गेयुत्तिरल् यिलेयोलु कुन्तलनाडु करं रंजि-

२५ से पश्चिमनाडु देशदोल् कलवे वापी कूप नदी मामरनिं पनसीले वालेयि वालेयिं नलसिकोण्डु कोकमिथुनमोदलागिर-लल्लियारवेगल नडवोप्पु

२६ वी पुरवनालुवन् अज्जनृपालनेम्ब्रवं। यिरून्दूरधिपति तां करमोप्पुव अडियरबलियिं करमेसेवनु तम्मरस····यलियं कीर्ति-

२७ वेत्तना तम्मरसं। आ तम्मरसनग्रजेय तनूजं धरेयोल् इरून्दूर भूसुरनुत कल्लरसननुजे तंगदेविगे वरनेनिप हेवेयरसन वरपुत्रं प-

२८ द्मणरस जैनपद्मभक्तं। आ पद्मण्णरसनू आतनग्रजे जक्कल-देविय···तन्दे हेवण्णरसरु पार्श्वतीर्थेश्वर····माडिद नित्यपूजे-

२९ आहारदानमोदलाद (वु) मेल्लवं पुरो···दिगे सलिसि मुन्निन धर्मवेल्लवं नेरेमाडि बलिक तन्नोलु सन्नुतबुद्धि पुट्टे जिनेन्द्र-नमिणेकनु नित्यपू-

३० जनं मुन्नेसेवन्नदानमोदलादवनुं पिरिदागि माडि···तृप्तियिन्दो-लिट्टु पद्मरसं मिगे कोट्ट वृत्तियं। श्रीपार्श्वतीर्थेश्वरद श्रीकार्य-

३१ वकेयू अंगभोगचैत्यालयद जीर्णोद्धारक्के धारापूर्वकवागि कोट्टन्ता वृत्तिय विवर हेवण्णरसरु तावु मूलवागि आकुतिदं कोणुवणिय-

३२ लि कंगन कुलिय हन्नेरडु मूडे सुनिगे सीमे मूडलु अमिन-सेट्टिर्त हित्तल गद्दे तेंकलु हरिदु कोडि गाडि पडुवलु तम्मरसर होसगद्देयलु यिक्किद कल्लुगडि

३३ वडगलु हीलेयमागे गडियिन्ती चतुस्सीमेयिदोलगुल्ल कलवेय समस्तवृत्ति पद्मरसरु तावु मूलवागि आलुत्तिद होन्नमन केरेय

३४ मेले येत्ति होन्नाबरद् नाल्कुवरे होन्ननू तम्म अम्म तगल-
देवियरिगे पुण्यार्थ परिहारमागे बिट्टुदु हैवण्णरसर त-
३५ म्म मन पूर्वकवागि कोट्टु सर्वमान्यवागि मूलस्थलवागि ताबु
आलुत्त यिट्टु यडेय मन्नन वृत्तिगे गद्दि मूडलु होले तंकलु
होले गद्दि पडुवलु
३६
३७ समस्तवृत्तियनू आहारदानक्कवागि याचन्द्रार्कवागि
३८ धारापूर्वक माडि कोट्टरु मत्तु आहारदानक्के या चित्याळयद
गृह

[इस लेखमें पद्मण्णरस-द्वारा पार्श्वतीर्थकरमन्दिरके लिए ४ होनु कीमतकी भूमि दान दिये जानेका निर्देश है। पद्मण्णरसकी माता तगलदेवी तथा पिता हैवण्णरस थे। उसकी बडी बहिन जक्कलदेवी थी। तगलदेवी-का बन्धु कल्लरस था जो इरुवुन्दूरके शासक तम्मरसका भानजा था। यह कुन्तलनाडुके राजा अज्जका जामाता था। अज्जका समकालीन राजा सग था जो अम्बराजाका पुत्र था। अम्बका पिता सग था जो अम्बीराय और माणिकदेवीका पुत्र था तथा राजा केशवका वंशज था। केशवकी पत्नी माबलरसि मग राजाकी कन्या थी। मगकी पत्नी जक्कब्बरसि हैवण और होनबरसिकी कन्या थी। इस दानकी तिथि माघ शु० ५ बुधवार, शक १३४३, शार्वरी संवत्सर ऐसी दी है।]

[ए० रि० मै० १९२८ पृ० ९३]

४३५

उडिपि (द० कनडा, मैसूर)

शक १३४६=सन् १४२४, संस्कृत कन्नड

[यह लेख (ताम्रपत्र) विजयनगरके देवरायमहाराजके राज्यकालमें पुष्य शु० ६, बुधवार, शक १३४६ क्रोधि संवत्सरके दिनका है। इसमें

मूलसंघ-बलात्कारगण-सरस्वतीगच्छके वर्धमान भट्टारककी प्रार्थनापर राजा-द्वारा वरांग नामक ग्राम नेमिनाथमन्दिरको अर्पित किये जानेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ए १२ पृ० ५]

[इस ताम्रपत्रकी प्रतिलिपि वरांग ग्रामस्थित नेमिनाथवसदिमें एक पाषाणपर उत्कीर्ण है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५२५ पृ० ४९]

४३५

माण्डू (धार, मध्यप्रदेश)

(संवत्) १४८३ = सन् १४२६, संस्कृत-नागरी

[इस लेखमें सम्भवनाथकी मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। तिथि (संवत्) १४८३, वैशाख (चैत्र) शु० ५, गुरुवार ऐसी दी है।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १८२ पृ० ४४]

४३६

बसरूर (दक्षिण कनडा, मैसूर)

शक १३५२ = सन् १४३१

[यह लेख देवराय २ के राज्यमें शक १३५३ में लिखा गया था। इसमें जैन मन्दिरके लिए बसरूरके चेट्टियों-द्वारा वहाँके बाजारमें आनेवाली चावलकी हर गाड़ीपर एक 'कोलग' दान दिये जानेका उल्लेख है।]

[इ० म० दक्षिण कनटा २७]

४३७

कुण्णत्तूर (उत्तर अर्काट, मद्रास)

शक १३६३=सन् १४४१, तमिल

[यह लेख ऋषभनाथबसदिके पूर्वी दीवारपर खुदा है। कुण्ई (कुण्णत्तूर) के अर्हत् मन्दिरका निर्माण शक १३६३ में होनेका इसमें वर्णन है।]

[रि० सा० ए० १९४१-४२ क्र० १०३ पृ० १४०]

४३८

बदनोर (भीलवाडा, राजस्थान)

संवत् १(४)९७=सन् १४४२, संस्कृत-नागरी

[इस लेखमें संवत् १(४)९७ में शान्तिनाथका उल्लेख किया गया है।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४५० पृ० ६७]

४३९

कुण्डघाट (जि० मोंघीर, बिहार)

सवत् १५०५=सन् १४४९, संस्कृत-नागरी

भग्न मन्दिरमें एक महावीरमूर्तिके पादपीठपर

[इस लेखमें सवत् १५०५ फाल्गुन शु० ९ को महावीरमूर्तिकी स्थापनाका निर्देश है।]

[रि० इ० ए० क्र० ८ (१९५०-५१)]

४४०-४४१

वैन्दुरु (द० कनडा, मैसूर)

शक १२(७)१ = सन् १४५०, कन्नड

[यह लेख विजयनगरके मल्लिकार्जुन महारायके समय चैत्र शु० १०, गुरुवार, शक १३(७)१ शुक्ल संवत्सरका है। इस समय वैंदूरके पार्श्वनाथ वसदिके लिए कुछ लोगों-द्वारा दिये हुए दानोंका विवरण इसमें दिया है। देवप्प दण्डनायकका भी उल्लेख है। इसी समयका दूसरा लेख यहीं है। इसमे हाडुवलिय राज्यके शासक संगिराय ओडेयके पुत्र इंगरस ओडेयके समय पार्श्वनाथवसदिको प्राप्त दानोंका विवरण है।]

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ५३६-३७ पृ० ५३]

४४२

चितलद्रुग (मैसूर)

शक १३८५ = सन् १४६२, कन्नड

१ सखवरुस १३८५ सोमकृति सं-

२ वछरद कतिकसुध १५ आकिय मं-

३ गिसेट्टिय मग गुम्मिसेट्टियर नि-

४ सिनगे श्रीवीतराग

[यह एक निसिधिलेख है। आकिय मंगिसेट्टिके पुत्र गुम्मिसेट्टिके समाधिमरणका यह स्मारक है। तिथि कातिक शु० १५, शक १३८५, शोभकृत् संवत्सर इस प्रकार दी है।]

[ए० रि० मै० १९३९ पृ० १०४]

४४३-४४४

चितलदुर्ग (मैसूर)

१५वीं सदी (सन् १४७२), कन्नड

१ नदन स   २ वाचण्णगल   ३ निरितगे

[यह निसिधिलेख बाचण्णके समाधिमरणका स्मारक है। १५वी सदीकी लिपिमे नन्दन सवत्सरका उल्लेख है अत सन् १४७२ का यह लेख होगा। यहीका एक अन्य लेख इसी समयकी लिपिमें है जिसमें गुम्मटदेवकी निसिधिका उल्लेख है। यथा-

१ सखवरु – २ आसाडसु ३ (गु) मटदेव

इसमे तिथिके अक लुप्त हो चुके हैं।]

[ए० रि० मै० १९३९ पृ० १०४-५]

४४५

गुरुवयनकेरे (द० कनडा, मैसूर)

शक १४०६ = सन् १४८४, कन्नड

[इस लेखमें शक १४०६ में नरसिंह बग द्वारा कन्नडिबसदि नामक जिनमन्दिरको कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ४८१ पृ० ४५]

४४६

बिदिरूर (शिमोगा, मैसूर)

शक १४१० = सन् १४८८, कन्नड

१ स्वस्ति स (क) वरिष १४१० नेय प्लवग सवत्सरद जेष्ट शुद्द

पंचमि आदिवारदलु अदियर् वलिय गण्डलिकेय उटेकोंढ राम-
नायकनु विदिरूरलि तनगे स्वर्गापवर्गसुखक्के का-

२ (र)णवागि चैत्यालयव कट्टिसि आदीश्वरन प्रतिष्टेयन माडिसि-
दनु श्री

[इस लेखमे रामनायक-द्वारा विदिरूर ग्राममे चैत्यालय बनवानेका तथा आदिनाथकी इस मूर्तिकी स्थापना करवानेका वर्णन है। यह कार्य ज्येष्ठ शु० ५, शक १४१० के दिन सम्पन्न हुआ था।]

[ए० रि० मै० १९४३ पृ० ११३]

४४७

जबलपुर (मध्यप्रदेश)

संवत् १५४९=सन् १४९३, संस्कृत-नागरी

[यह लेख पार्श्वनाथकी भग्न मूर्तिके पादपीठपर है। तिथि वैशाख शु० ३, संवत् १५४९ ऐसी दी है।]

[रि० इ० ए० १९५१-५२ क्र० १२३ पृ० २१]

४४८

शिवडूंगर (राजस्थान)

सं० १५५६=सन् १५००, संस्कृत-नागरी

[यह लेख मूलसंघ-बलात्कारगण-सरस्वतीगच्छके आचार्य रत्नकीर्तिके समय सं० १५५६ मे लिखा गया था। इनकी गुरुपरम्परा पद्मनन्दि-शुभचन्द्र-जिनचन्द्र-रत्नकीर्ति इस प्रकार वतलायी है।]

[रि० आ० स० १९०९-१० पृ० १३२]

४४९

हुमच (मैसूर)

१५वीं सदी, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्या- २ द्वादामोघलांछन
३ जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शा- ४ सन जिनशासन
५ विरोधिकृत् संवत्सरद आश्वी- ६ ज बहुळ दसमि सोमवा-
७ रदलु । श्री मद्रायराज- ८ गुरु मंडलाचार्यरु
९ महावादवादीश्वर रा- १० यवादिपितामह सकल-
११ विद्वज्जनचक्रवर्तिगलु श्रीम- १२ द्वादींद्रविशालकीर्तिम-
१३ ट्टरकुलकमलमार्तंडर १४ श्रीमदमरकीर्तियतीश्वरप्रि-
१५ याग्रशिष्यर मूलसंघ ब- १६ ळात्कारगणाग्रगण्यरप्प
१७ श्रीधर्मभूषणभट्टारकदे- १८ वर प्रियगुड्ड श्रीमदम-
१९ रेंद्रवंदितजिनेंद्रपादार- २० विंदमधुकरनु चतुर्विधदा-
२१ नचिंतामणियु खडस्फुटि- २२ तजीर्णजिनालयोद्धारकनुम
२३ प्प बिटिसेट्टिय मग चोकिसेट्टि-२४ य निसिधि ॥

[इस लेखमें बिटिसेट्टिके पुत्र चोकिसेट्टिके समाधिमरणका उल्लेख है जो आश्विन व० १० सोमवार, विरोधकृत् संवत्सरके दिन हुआ था। चोकिसेट्टिके गुरु धर्मभूषण भट्टारक थे जो मूलसंघ बलात्कारगणके अमरकीर्ति यतीश्वरके शिष्य थे। लिपि १५वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मैं० १९२४ पृ० १७५]

४५०-४५१

आद्वनी (बेल्लारी, मैसूर)

१५वीं सदी, तेलुगु

[ये लेख पहाड़ीपर एक पाषाणपर खुदे हुए तीर्थंकरमूर्तिके पास और चरणपादुकाओंके पास है। ये बहुत घिसे हुए है। मूर्तिके पास एक शकवर्षकी संख्या खुदी है तथा पादुकाओंके पास किसी आचार्यका नाम है। दोनों अच्छी तरह पढ़ना सम्भव नहीं है। लिपि १५वीं सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९४१-४२ क्र० ७४-७५ पृ० १३७]

४५२-४५३

नरसिंहराजपुर (मैसूर)

१५वीं सदी, कन्नड

[यहाँके दो मूर्तिलेख १५वीं सदीके लिपिके हैं। इनपर देविसेट्टिके पुत्र दोडणसेट्टि तथा नेमिसेट्टिके पुत्र गुम्मणसेट्टिके नाम उत्कीर्ण हैं।]

[ए० रि० मैं० १९१६ पृ० ८४]

४५४

हनसोगे (मैसूर)

१५वीं सदी, कन्नड

१ हनसोगेय हिरियबसदिय

२ कोण्डिय कल्ल ओरसेय बोम्मि-

३ सेट्टियरु इक्किसिदरु

[यह लेख स्थानीय आदीश्वरबसदिके सभामण्डपके छतके पाषाणपर खुदा है। यह पाषाण (कोण्डियकल्लु) बोम्मिसेट्टि-द्वारा स्थापित किया गया था ऐसा लेखमें कहा है। लिपि १५वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मैं० १९३९ पृ० १९४]

४५५

मूडबिदुरे (मैसूर)

शक १४२६ = सन् १५०४, कन्नड

[इस ताम्रपत्रमें उल्लेख है कि कदब कुलके शासक लक्ष्मप्परस अपरनाम भैररसने जैनोंके ७२ सस्थानोके प्रधान आचार्य चारुकीर्ति पडिताचार्यके एक शिष्यको अपने राज्यके एक हिस्सेके धार्मिक अधिकार प्रदान किये। तिथि-आश्विन कृ० ५, शक १४२६, क्रोधि सवत्सर।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ पृ० २४ क्र० ए ५)

४५६

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

शक १४३१ = सन् १५०९, तमिल

[यह लेख मकर शु० १०, गुरुवार, शक १४३१ को लिखा गया था। विजयनगरके शासक नरसिहरायके समय रामप्प नायकने मन्दिरोकी भूमिपर जोडि सज्ञक कर लगाया था जिससे मन्दिरोकी हानि हुई थी। कृष्णदेवराय सिहासनारूढ हुए तब उन्होने मन्दिरोकी भूमिको करमुक्त घोषित किया। इस घोषणाका लाभ पडैवीट्टु तथा चन्द्रगिरि प्रदेशके जैन और बौद्ध मन्दिरोको भी हुआ। करन्दै स्थित जिनमन्दिर भी इससे लाभान्वित हुआ ऐसा लेखमें कहा गया है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १४४]

४५७

गुरुवयनकेरे (द० कनडा, मैसूर)

शक १४३१ = सन् १५१०, कन्नड

[यह लेख स्थानीय शान्तीश्वरवसदिके मण्डपमें है। इसमें माघ व० १०, सोमवार शक १४३१ को वेलतंगडीके कुछ लोगों-द्वारा कुछ भूमिके दानका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ४८० पृ० ४५]

४५८

वरांग (द० कनडा, मैसूर)

शक १४३७ = सन् १५१५, कन्नड

[यह लेख विजयनगरके कृष्णदेवमहारायके समय माघ शु० ५, शुक्रवार, शक १४३७ भावसंवत्सरका है। इसमें तुलुराज्यके शासक रत्नप्पोडेयका उल्लेख किया है। देवेन्द्रकीर्तिकी प्रार्थनापर इस वसदिके लिए देवराय-द्वारा पहले दी हुई भूमिके पुनः खेतीयोग्य वनानेका इसमें उल्लेख है। यह कार्य अवकम्म हेग्गिडिति तथा उनके सहयोगियों-द्वारा सम्पन्न हुआ था]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ पृ० ४९ क्र० ५२८]

४५९

चामराजनगर (मैसूर)

सन् १५१८, कन्नड

[इस लेखमें अरिकुठारके महाप्रभु कामैय नायकके पुत्र वीरैय नायक-द्वारा विजय (पार्श्व) नाथ मन्दिरके लिए सन् १५१८ में कुछ दानका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९१२ पृ० ५१]

४६०

कोह्न नगोरी (जयपुर, राजस्थान)

सवत् १५७७=सन् १५२१, सस्कृत-नागरी

[इस लेखकी तिथि माघ शु० ५, सवत् १५७७ यह है। इसमें मूलसघ बलात्कारगणके आचार्योंकी परम्परा दी है तथा खण्डुलवाल अन्वयके राय रामचन्द्रके शासनका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ४१६ पृ० ६९]

४६१

वराग (द० कनडा, मैसूर)

शक १४४४=सन् १५२२, कन्नड

[यह लेख पोबुच्चके राजा इम्मडि भैरवरसके समय चैत्र व० १२, सोमवार शक १४४४ चित्रभानु सवत्सरका है। इसमें राजा-द्वारा वरागके नेमिनाथ बसदिके लिए भैरवपुर नामक ग्रामके दानका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५२९ पृ० ४९]

४६२

सोदे (उ० कनडा, मैसूर)

शक १४४५=सन् १५२२, सस्कृत-कन्नड

[यह ताम्रपत्र आषाढ पूर्णिमा शक १४४५ चित्रभानु सवत्सरका है। तौलव प्रदेशके क्षेमपुर (गेरसोप्पे) नगरमे इम्मडि देवराय ओडेयर्ने बण्डुवाल ग्रामकी कुछ भूमि लक्ष्मणेश्वरके शखजिनबसतिके लिए दान दी थी। यह दान देशीगणके चन्द्रप्रभदेवके लिए था।]

[ए० रि० मै० १९१६ पृ० ६९]

४६३

सोंड (जि० उत्तर कनडा, मैसूर)

शक १४४४ = सन् १५२२, कन्नड

[यह ताम्रपत्र यहाँके भट्टाकलंक मठमें प्राप्त हुआ। हुलिगेरेकी शंख-जिनर वसतिके लिए मल्लिसेट्टिने मासूर मोसलेयकुरुवु विभागमें इम्मडि देवराज ओडेयरुसे कुछ जमीन खरीदकर दान दी। इसकी प्रेरणा देशिगणके विजयकीर्तिदेवके शिष्य चन्द्रप्रभदेवने दी थी। श्रावण शु० ५, गुरुवार, शक १४४४, विपु संवत्सर यह इसकी तिथि है।]

(रि० सा० ए० १९३९-४० ए० क्र० १५ पृ० २२)

४६४-४६५

शृंगेरी (मैसूर)

१६वीं सदी (सन् १५२३), कन्नड

[ये दो लेख हैं। पहला अनन्तनाथमूर्तिके पादपीठपर है। चैत्र कृ० ५, रविवार, स्वभानु संवत्सरके दिन यह मूर्ति अर्पित की गयी थी। इसका स्थापक हलुमिडि निवासी देविसेटिका पुत्र देवणसेटि था। मूर्तिका वजन १८० हल कहा गया है। दूसरा लेख चन्द्रनाथ मूर्तिके पादपीठपर है। यह मूर्ति आदिसेट्टिके पुत्र बोम्मरसेट्टि-द्वारा वैशाख शु० १, गुरुवार, स्वभानु संवत्सरके दिन अर्पित की गयी थी। दोनों लेखोंकी लिपि १६वीं सदीकी है अतः संवत्सरनामानुसार ये शक १४४५ अर्थात् सन् १५२३ के प्रतीत होते हैं।]

(मूल लेख कन्नडमें मुद्रित)

[ए० रि० मै० १९३३ पृ० १२८]

४६६

नेल्लिकर (द० कनडा, मैसूर)

शक १४४७=सन् १५२५, कन्नड

[यह लेख स्थानीय अनन्तनाथबसदिके प्राकारमें है। देवण्णरस उपनाम कोनकी बहन शंकरदेवी-द्वारा कीयरवुरकी बसदिके लिए धनु १५, रविवार, शक १४४७, तारण संवत्सरके दिन कुछ भूमिके उत्पन्नके दानका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५२२ पृ० ४९]

४६७

पञ्चिच्छन्दल् (द० अर्काट, मद्रास)

शक १४५२=सन् १५३०, तमिल

[यह लेख एक भग्न जैनमन्दिरके स्थानपर है जिसे शंनियम्मण् कोयिल् कहा जाता है। विजयनगरके राजा अच्युतदेवमहारायने वैयप्प नायकके निवेदनपर शर्वके नायनार् विजयनायकर् नामक जिनमूर्तिकी पूजाके लिए जोडि और शालुवरि करोंका उत्पन्न अर्पण किया था। यह राजाज्ञा वेलूर बोम्मुनायकके समय उत्कीर्ण की गयी ऐसा लेखमें कहा है। तिथि मिथुन शु० १०, बुधवार, शक १४५२, नन्दन संवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० सा० ए० १९३७-३८ क्र० ४४९ पृ० ५१]

४६८

पटना म्युजियम (बिहार)

संवत् १५९२=सन् १५३१, संस्कृत नागरी

[यह लेख एक पीतलकी जिनमूर्तिके पादपीठपर है। इसकी स्थापना मूलसंघ-कुन्दकुन्दाचार्यान्वयके मण्डलाचार्य धर्मचन्द्रके उपदेशसे खंडेलवाल

अन्वयके कुछ सज्जनोंने की थी। प्रतिष्ठा तिथि ज्येष्ठ शु० ३, सोमवार, संवत् १५९३ ऐसी दी है।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १६२ पृ० ३३]

४६९

हनुमंतगुडि (रामनाड, मद्रास)

शक १४५५=सन् १५३३, तमिल

मलवनाथ जैन मन्दिरके आगे पड़ी हुई शिलाओंपर

[इसमें शक १४५५ के लेखके खण्ड हैं। एकमें जिनेन्द्रमंगलम् अथवा कुरुवडिमिदिका निर्देश है जो मुत्तोरु कूरम् विभागमें था।]

(इ० म० रामनाड २७९)

४७०

नीलत्तनहल्लि (मैसूर)

सन् १५३४, कन्नड

[इस लेखमें सन् १५३४ में मदवणसेट्टिके पुत्र पदुमणसेट्टि-द्वारा अनन्तनाथचैत्यालयमें किसी व्रतके पालनका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९१५ पृ० ६८]

४७१

लक्ष्मेश्वर (मैसूर)

शक १४(६१)=सन् १५३९, कन्नड

[इस लेखमें जैन और शैवोंके एक विवादके समझौतेका उल्लेख है। यह विवाद जिनमूर्तियोंके सम्मानके सम्बन्धमें था। जैनोंकी ओरसे शंख-वसतिके शंखणाचार्य तथा हेमणाचार्यने और शैवोंकी ओरसे दक्षिणसोमेश्वर

मन्दिरके कालहस्ति और शिवरामने यह समझौता किया था। तिथि ज्येष्ठ शु० १ सोमवार, शक १४(६१), विलंबि संवत्सर ऐसी दी है। (शकवर्षकी संख्याके अंतिम अंक लुप्त हैं जो संवत्सरनामानुसार दिये गये हैं)।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई १८ पृ० १६२]

४७२

कारकल (द० कनडा, मैसूर)

शक १४६५=सन् १५४३, कन्नड

[यह लेख (ताम्रपत्र) चैत्र शु० ४ शक १४६५ शोभकृत् संवत्सर-का है। इसमें चन्दलदेवीके पुत्र पाण्डयप्परस तथा तिरुमलरस चौटर इनमें अनाक्रमण संधिका उल्लेख किया है। इसके साक्षीके रूपमें जैन आचार्य ललितकीर्ति भट्टारका उल्लेख हुआ है।]

[रि० सा० ए० १९२१-२२ पृ० ९ क्र० ए ५]

४७३

कुरुगोड्डु (बेल्लारी, मैसूर)

शक १४६७=सन् १५४५, कन्नड

एक भग्न मन्दिरके दक्षिणी दीवालपर

[विजयनगरके राजा वीरप्रताप सदाशिव महारायके समय शक १४६७, विश्वावसु संवत्सरमें यह लेख लिखा गया। रामराज्य-द्वारा जिनमन्दिरके लिए कुछ भूमिदान देनेका इसमें निर्देश है।]

(इ० म० बेल्लारी ११३)

४७४

कारकल (मैसूर)

शक १४६६ = सन् १५४५, कन्नड

[यह लेख माघ शु० ३, गुरुवार, शक १४६६, क्रोधि संवत्सरका है। चन्दलदेवीके पुत्र चन्द्रवंशीय पाण्डचप्प वोडेयके राज्यकालमें कारिजे निवासी सिदवसयदेवरस-द्वारा कारकलके गुम्मटनाथ स्वामीको कुछ भूमि अर्पण किये जानेका इसमें उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० ३३९ पृ० ५२]

४७५

मूडबिद्रे (मैसूर)

शक १४६८ = सन् १५४६, संस्कृत-कन्नड

[इस ताम्रपत्रमें बिलिगिके शासक वीरप्पोडेयकी वंशावली छह पीढियों तक दी है। बिदुरे नगरकी त्रिभुवनचूडामणि बसतिके लिए इस शासकने चिक्कमालिगेनाडु विभागके कुडुगिनवयलु ग्रामकी कुछ जमीनका उत्पन्न दान दिया था। इसी मन्दिरके चन्द्रनाथदेवको नैवेद्य अर्पण करनेके लिए एक चाँदीका प्याला और कुछ धन भी दान दिया था। यह दान वीरप्पके चाचा तिम्मरसकी पत्नी वीरम्मके नामसे था। इसी तरह घण्टोडेयके पुत्र तिम्मण्णके नामसे चन्द्रनाथदेवके दुग्धाभिषेकके लिए कुछ दान दिया गया था। कार्त्तिक शु० ७, शक १४६८, विश्वावसु संवत्सर, यह इस दानकी तिथि थी। प्रथम आषाढ़ शु० १०, पराभव संवत्सर यह दूसरी तिथि दी है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ए २ पृ० २३]

४७६

काप ताम्रपत्र (जि० दक्षिण कनडा, मैसूर)

शक १४७९ = सन् १५५६, संस्कृत-कन्नड

१ श्री धर्मनाथ (ने) शरणु ॥ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छन । जीया-

२ त्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ स्वस्तिश्रीसकलज्ञान-साम्राज्यपदराजित । व-

३ र्धमानजिनाधीश स्याद्वादमठभासुर ॥ तिन्त्रिणीगच्छवाराशे-सुधांशुर्जानदी

४ धिति । सद्धर्मसरसीहंस प्रवादिगजकेसरी ॥ काणूर्गण-नभोभागे भाभाति मुनि-

५ कु (ञ) र । अज्ञानतिमिरोद्धृति श्रीमान् भानुमुनी(श्व)र ॥ पंचाचारशरध्वस्तपंच-

६ बाणशरव्रज । अखण्डश्रीतपोलक्ष्मीनायको भानुसयमी ॥ श्रीमद्भानुमु-

७ नीश्व(रो) विजयते स्याद्वादधर्माम्बरे श्रीमद्ज्ञानविनूत्नदीधिति (श)तध्वस्तान्धका-

८ रव्रज । श्रीमूलामलसंघनीरजमहाषण्डेऽखखण्डश्रिय व्यात (न्व)न् मुनि-

९ लोकचारुनिकर सौम्यार्णवे मग्नयन् ॥ तुलुदेशवेम्बभूपन पोलेव महाप

१० दुकददे येसगं (सं) गु निच्क । धरेयोळगे कापिन नगरद नेलन-नाळ्व भूप महहेग्गडेयेम्ब ॥

११ पगुल्वलि अधिपतियनु पोंगल्सदं नेळके तानु नृपकुलतिलक । सगतसभेयोलु

१२ पो (गलुं) अंगजजयजिनपदाब्जमधुकरनेंबं ॥ भूदेविय मुखकंनडि
   यांडें हेल्व-
१३ नें कापुवेनिसिद नगरं । आदरदिंब्बदरो (ल्गा) मेदिनिमतधर्म-
   नाथनेन (से) गुं जिनपं ॥ आ नगर-
१४ क्कधिपतियुं श्रीपति तिरु (म) रस नृप (अ)वनीतिलकं ।
   चोमनदक्कि आतानुं चोतुकरं मुक्तिल-
१५ क्ष्मिगित्तं मनमं ॥ येनेम्बे मद्देग्गडे दानचतुर्विधक्के ताने
   चिंतारत्नं । सन्नुतगुणगण-
१६ निलेयं उन्नतशीलवनु ताल्द (नृ) परिपुसंहारं ॥ धर्मदोलं (दृढ)
   चित्तनु निर्मल-
१७ गुरुभक्तियलिल तिरुमरसनृपं । धर्मजिनजैनशासनमं चोम्मन्दि तानु
   माडि क्रिति (य)
१८ नित्तं ॥ स्वस्ति श्री जयाभ्युदयं शालिवाहनशकवर्ष १४७८ नेय
   संद नलसंवत्सर-
१९ द कार्तिक शुद्ध १ आदित्यवारदलु श्रीमन्महाराजाधिराजराजपर-
   मेश्वर सत्यरत्नाकर
२० शरणागतवज्रपंजर चतुःसमुद्राधीश्वर कलियुगचक्रवर्ति श्रीवीर-
   प्रताप सदाशिव-
२१ राय राजराजेंद्र दक्षिणभागभाग्यदेवतासंनिभरुमप्प रामराजय्य-
   नवरु ये-
२२ क (च्छ) त्रदि राज्यवनु प्रजिपालिसुतिर्द कालदलु वारकूरु
   मंगलूरलु सदा(शि)वनायकरु
२३ राज्यवं गे(यि)तिर्द कालदलु तुलु(व)देशकामिनीमुखकमलतिल-
   कायमानानादिसि-
२४ द्धप्रसिद्धकापिसिंहासनोदयाचलालंकरणतरुणतरणीप्रकाशरुं-
   अनन्यराजन्यसौ(ज)-

२५ न्य (श्री)दार्यवीर्यधैर्य(गा)म्भीर्यनयविनयमण्यशौचाद्यन-
तगुण-

२६ गणनूतनरत्नाभरणगणकिरणोद्योतितभरतादिसकल (पु)राणपुरुष-
रमदर

२७ तिरमलरसराद् मद्देग्गडेयर अवर नालिनवर गणरणमावतर
कापिन राज्यव-

२८ नु प्रतिपालिसुतिर्द्दु कालदल्लु ॥ स्वस्ति श्रीमद्रायराजगुरु मडला-
चार्य महा-

२९ वादवादीश्वर राज्यवादिपितामह सकलविद्व(ज्ज)नचक्रवर्तिगलु
इत्याद्यनेकवि-

३० रुदावलीविराजमानरु काणूर्गणाग्रण्यरगलुमप्प श्रीमदभिनव-

३१ देवकीर्तिदेवरगल शिष्यरु मुनिचन्द्रदेवरगलु (अ)वरगल शिष्यर
दवचन्द्रदे-

३२ वरगलु तम्म गुरु मुनिचन्द्रदेवरगलिगे स्वर्गापवर्गक्के कारणवागि
कापिन-

३३ लु धर्मवनु माड्बेकेंब चित्तदिंद तिरमलरसराद मद्देग्गडेयर
कू (कू)-

३४ डेयु अवर नालिनवर गण(प)णमामनर कूडेयु कापिन हलर
सहायदिं-

३५ द धर्मक्के थांट्ट क्षेत्रवनु कोडबेकु यॆंदु चित्तमलागि अवरगलु धर्म-

३६ परिणामस्वरूपवने तुलुवराद कारण गुरुभक्तियिंद तम्म सीमेय-

३७ लुम(छा)रेम्व (वू)रीलगे पडु(व)ण दिक्किनलु कलतोपनिना
व ट्टेयलु श्रगलि-

३८ द थोलगे वेट्टिन गद्देलक बीज बहु मूनसर ऐवकद वत्त मूडे र
मतम

३९ गाळिंदं होरगे पापिनादियेंब गद्देल्कं बीज वल्ल मूवत्तर लेक्कद बीज
४० मूडे ४ मत्तं बागिल गद्देल्कं बीज वल्ल मूवत्तर लेक्कद मूडे ४ गद्दे मू-

पिछला भाग

४१ रक्कं बीज मूडे १० ई भूमिगळिगे बुल्ल करं मुरे मने बावि हलसु मावु सुं-
४२ वे निक्किलिरुक्कंदें कदिरु जल पाषाण सह मूलधारेयनु एरदु को-
४३ ट्टु यिसिकोंद दोड्डवराहग ८० अक्षरदलु येंभट्टु वराह यी हों-
४४ न्निगे येरडु वेलेयलु सह वर्षक्के वह अक्कि अंगडिय होरिगेय
४५ वल्ल एवत्तर लेक्कद अक्कि मूडे २४ ई अक्किगे नडव धर्मद विवर कापिन वस्ति-
४६ य केळगण नेलेयलु धर्मतीर्थंकरसन्निधियलु मध्याह्नकालदलु नित्यद -
४७ लु दिन वोंदक्के वोंदुवल्ल अक्कि नैवेद्यवकु (मु) निचंद्रदेवरगल हेस-
४८ रिनलु नड(व) हालधारेगु सह अक्कि मूडे १० तिंगलु तिंगलु तप्पदे तिं-
४९ गळल्लि १७ होहाग नडव वार १ मत्तं इप्पत्तेदु २५ होहाग नडव
५० वार १ अंतु तिंगळल्लि येरडु वार समदाय नडवुदक्के अक्कि मूडेवु
५१ १२ई वारंगळल्लि मंगलत्रयोदशी वहाग आ मंगलत्रयोदशी नडव-

५२ (दँडु) विशेषवागि यिरिसिद अक्कि मूडे १ अनु अविक मूडे यिप्पत्तनाल्कु

५३ श्री धर्मद स्थलदविल वल्लारिगे अनाय सनाय मलदु इल श्रा स्य(ल)गदलु इद

५४ वोक्कलिगे बिट्टि बिडार सल्लदु काणिके देसे अप्पणे पद्दलि येत्तु सल्लदु येंदु

५५ सर्वमान्यवागि तिरमलरमराज महहेग्गडेयरु अवर नाळिनवर ग-

५६ णपणसामतर सह तम्म धर्मपरिणामनिमित्तवागि तम्म स्वरचि-

५७ यिंद गुरुभक्तियिंद वोडवट्टु वरसि कोट्ट ताम्रशासन इत-

५८ क्पुदक्के साक्षिगलु अधिकारि कातसेट्टि चट्ट विक्रमेट्टि सामणि सकर-

५९ सेट्टि राजसेट्टि बग्गे(से)ट्टिय अलिय केसण मूल्टर बेक्किले विरमाळ

६० दुग्ग बडारि विरमामणि यिंतिनवर वुसयाम्म(त)दिं म-

६१ गलूर मकै सेनबोजन बरह। यिंती धर्मशास(न)क्के मगल-

६२ महा श्री श्री श्री ।। स्वदत्ताद् द्विगुण पुण्य परदत्तानुपालन ।

६३ परदत्तापहारेण स्वदत्त निष्फल भवेत् ।। दानपालनयोर्मध्य

६४ दानाच्छ्रेयोनुपालन । दानात्स्वर्गमवाप्नोति पालनादच्युत

६५ पद ।। यी धर्मशासनक्के आवनानोब्ब जैननादव तप्पिदरे बेल्गु-

६६ ल्द गुम्मटनाथ कोपणद चद्रनाथ ऊज्जतगिरिय नेमीश्वर-

६७ रोदलाद जिनबिंबगलनोडद पापक्के होहर शैवनादरे प-

६८ र्वतगोकर्णमोदलादवरलि कोटिलिंगवनोडद पापक्के होहर

६९ वैष्णवनादरे तिरुमलेमोदलादवरल्लि कोटिविष्णुमूर्तियनोड-

७० द पापक्के होहर ।। भद्र भूयाज्जिनशासनस्य ।। श्री

[यह ताम्रपत्र शक १४७९ में लिखा गया था। उस समय विजयनगरसाम्राज्यके अधिपति सदाशिवराय थे तथा रामराज उनके प्रधान सेनापति थे। इस साम्राज्यके बारकूरु तथा मंगलूरु प्रदेशपर केलडि सदाशिव नायककी नियुक्ति की गयी थी। इस प्रदेशमें काप नगरका अधिकारी मद्द हेग्गडे था। इसने धर्म्मनाथ तीर्थंकरकी पूजा आदिके लिए मल्लारु गाँवमें कुछ जमीन दान दी जिसकी आय ८० वराह थी (वराह उस समयकी रौप्यमुद्राकी संज्ञा थी)। यह दान अभिनव देवकीर्तिके प्रशिष्य तथा मुनिचन्द्रके शिष्य देवचन्द्रके उपदेशसे दिया गया था। इसके पहले मूलसंघ-काणूरगण-तिन्त्रिणीगच्छके भानुमुनीश्वरकी प्रशंसा की गयी है। देवचन्द्र भी काणूरगणके ही थे। अन्तमें दानकी रक्षाके लिए जो शाप दिये है उनमें श्रवणबेलगोलके गोम्मटेश्वर, कोपणके चन्द्रनाथ तथा गिरनारके नेमिनाथकी मूर्तियोंका उल्लेख किया है]

[ए० इं० २० पृ० ८९]

४७७

चिप्पगिरि (जि० बेल्लारी, मैसूर)

शक १४८२ = सन् १५६०, कन्नड

[इस लेखमें आदवानीके विशालकीर्तिगुरु तथा चिप्पगिरिके श्रावकोंद्वारा चतुर्थमुनीश्वरकी वन्दनाका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९४४-४५ ई ७४]

४७८

मूडबिद्रे (जि० दक्षिण कनडा, मैसूर)

शक १४८५ = सन् १५६३, कन्नड

[इस ताम्रपत्रमें बिदुरे नगरकी चण्डोग्र पार्श्वतीर्थंकर वसतिके लिए शंकरसेट्टि ऊर्फ विरणन्तर-द्वारा उसकी बहन शंकरदेवीके आग्रहसे कुछ

धन दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान अभिनव चारुकीर्ति पण्डितके आज्ञावर्ती सेट्टिकारोंको सौंपा गया था। १२५० वराह मुद्राओंके एक और दानका भी इसमें उल्लेख है। तिथि मेष (त्रयोदशी), शुक्रवार, शक १४८५, रुधिरोद्गारी संवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ पृ० २३ क्र० १ ए]

४७९

प्रिन्स आफ वेल्स म्युजियम, बम्बई

शक १४८५=सन् १५६३, शिलालेख क्र० BB २०७, कन्नड

[यह लेख चैत्र शुक्ल १२, सोमवार, शक १४८५, दुन्दुभि संवत्सर, के दिन लिखा गया था। विट्ठप्प नायक तथा हेम्मरसि नायिकितिके पुत्र मालुब नायक-द्वारा गरसोप्पेमें शान्तिनाथका मन्दिर बनवाये जानेका तथा इस मन्दिरको कुछ जमीन दान देनेका इसमें निर्देश है। इसमें नगिरे, हैवे, तुलु तथा कोंकण इन पश्चिम समुद्रतटके प्रदेशोंपर रानी चैन्न भैरा-देवीके शासनका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० (१९५०-५१) क्र० २४]

४८०

मूडबिद्रे (मैसूर)

शक १४९३=सन् १५७१, कन्नड

[इस ताम्रपत्रमें मोचारमागाणे विभागके मरकत ग्रामकी कुछ जमीन बिदुरेकी बसतिमें आहारदानके लिए अर्पित करनेका उल्लेख है। यह दान चौट कुलकी अब्बक्कदेवीने उसकी बहन पदुमलदेवीकी पुण्यवृद्धिके लिए दिया था। पुत्तिगेके शासक इस दानका भंग न करें ऐसी सूचना अन्तमें दी है। तिथि पौष शु० ८, रविवार, शक १४९३ प्रजोत्पत्ति संवत्सर, इस प्रकार दी है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ पृ० २३ क्र० ए ३]

४८१

महेश्वर (मध्यप्रदेश)

सं० १६२७ = सन् १५७१, संस्कृत-नागरी

[यह लेख सम्राट् अकबरके राज्यकालमें संवत् १६२७ में लिखा गया था। मालवामें उस समय ख्वाजा अजीज़ बेग प्रान्तीय शासक नियुक्त था। इस समय मण्डलोई सुजानरायने महेश्वरस्थित आदिनाथ-मन्दिरका जीर्णोद्धार किया।

अकबरके शासनकालके अन्य दो लेख यहीं प्राप्त हुए हैं। इनमें मण्डलोई देवदास (सुजानरायके बन्धु) द्वारा संवत् १६२२ में महेश्वर मन्दिरका तथा संवत् १६२६ में कालेश्वर मन्दिरका जीर्णोद्धार किये जानेका उल्लेख है। इस तरह जैन सज्जनों-द्वारा जैनेतर मन्दिरोंकी सहायताका यह उदाहरण है।]

[इ० हि० का० १९४७ पृ० ३९२]

४८२

कुच्चंगि (तुंकूर, मैसूर)

सन् १५७२, कन्नड

[इस मूर्तिलेखमें कहा है कि नाल्कुवागिलु निवासी बोम्मिसेट्टिके पुत्र दानण्णने यह मूर्ति तथा प्रभावलि सन् १५७३में स्थापित की।]

[ए० रि० मै० १९१६ पृ० ८४]

४८३

चित्तामूर (द० अर्काट, मद्रास)

शक १५०० = सन् १५७८, कन्नड-तमिल-संस्कृत

[यह लेख स्थानीय जिनमन्दिरके मानस्तम्भपर है। इस स्तम्भकी

स्थापना जगतापिगुत्ति निवासी बायिसेट्टिके पुत्र बुरशेट्टिने शक १५००, बहुधान्य संवत्सरमें की ऐसा इसमे उल्लेख है। स्तम्भके दूसरी ओर संस्कृत भाषा और कन्नड लिपिमें इसी वर्णनका लेख है। इसमें बुरशेट्टिको भट्टानागकुलका कहा गया है।]

[रि० सा० ए १९३७-३८ क्र० ५१७-१८ पृ० ५७-५८]

४८४

कारकल (द० कनडा, मैसूर)

शक १(५)०१ = सन् १५८०, कन्नड

[इस लेखकी तिथि कार्तिक शु० १, शक १(५)०१ है। प्रारम्भ श्रीमत्परमगम्भीर ' आदि श्लोकसे है। अन्य विवरण लुप्त हुआ है।]

[रि० इ० ए० १९५३ ५४ क्र० ३३७ पृ० ५२]

४८५

सेतु (शिमोगा, मैसूर)

शक १५०५ = सन् १५८३, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीजयाभ्युदय शालिवाहनशक वरुष १५०५ चित्रभानु-संवत्सरद भाद्रपद सुद्ध १० शुक्रवारदलु करूरु माड चैपल्लिय तिम्म गौडर यिवल्लिय नायक्क गौडर जट्टिगौडर मग सेट्टि-गौडर आ समस्त श्रावकर सह मुताभि सेतुविन बसदि श्री आदितीर्थेश्वरारिगे माडिस्त लोहद

२ प्रभावलिगे आ समस्त जनगलिगे मगल महा श्री श्री श्री विरयनु माडिदुदु

[यह लेख आदिनाथमूर्तिके पादपीठपर है। इस मूर्तिकी स्थापना भाद्रपद शु० १० शक १५०५ के दिन हुई थी। स्थापक चैपल्लि ग्रामके तिम्मगौड तथा यिवल्लि ग्रामके सेट्टिगौड थे।]

[ए० रि० मैं० १९४४ पृ० १६७]

४८६

येडेहल्लि (मैसूर)

शक १५०६ = सन् १५८४, कन्नड

१ शुभमस्तु नमस्तुंगशिरश्चुंबिचंद्रचामर (चार)वे
२ त्रैलोक्यनगरारंभमू(ल) स्तंभाय शंभवे ॥ स्वस्ति श्री-
३ विजयाभ्युदय शालिवाहसकवरुष १५०६ नेय संद वर्तमान ।
४ तारण सं । आश्विजा शु १० मि आदिवारदलु श्रीमतु । दानिवा-
५ सद चेन्नरायवडेर । मक्कलु चिक्कवीरप्पवाडेर मक्कलु चेन्नवि-
६ रवाडेरु गेरसोप्पे समंतभद्रदेवर सिष्यरु गुणभद्रदेवरु सिष्य-
७ रु । वीरसेनदेवरिगे । कोट भूमि क्रयपत्रद क्रमवेन्तेन्दरे मालेपा(ल)
८ चन्दप्पन मग लिंगण्णनु । नष्टमन्तनवा(गि)होद सम्मंद । आतन भू-
९ मि नागलपुरद ग्रामद वलगे तेंगिनहित्तलगद्दे ख ६ कंदुग वंभ-
१० तु बीजवरि । आ भूमि नम्म आरमनिगे हरवरियागि बन्द
११ सम्मंद । श्री वीरसेनदेवरिगे क्रेयावागि कोट्टेवागि आ भूमि-
१२ गे सलुव क्रय द्रव्य । लक्षणलक्षित तत्कालोचित मध्यस्तपरिकल्पित उ-
१३ भयवादिसंप्रतिपन्न कालपरिवर्तनक्के सलुव पियसाहेनिजग-
१४ हि वरह ग ३२ अक्षरदलु मूवत्तु येरडु वरहनु । तरविस उलि-
१५ यदे । मले-साकल्यवागि सलिसि कोण्डेवागि । आ भूमिगे सलुव चतु-
१६ सीमेय विवर । मूडलु । ई गद्देय नीरण्णेकल आगलिदं पडुलु

१७ तंकलु केरेगळियिंद व(ड)गलु ॥ पडुवलु गुरवप्प हेबरजन तो-
१८ टदिंद मूडलु । वडगलु हालम्बियिंद तेंकलु । यिंती चतुस्सिम-
१९ मेयलुळ्ळ । निधि । निक्षेपजल । पासण अक्षीणि । आगमि ।
सिद्धसा-
२० ध्यगळेंब । अष्टाभोग तेजसाम्यवस्तु नीउ निम्म शिष्यरु पा-
२१ रम्पर्यवागि सुखदिं भोगिसि बहिरि यन्द बरसि कोट्ट क्रय शा-
२२ सन पटे यिदक्के अविलास बिट्टवरु देवलोक मर्त्यलोकक्के विर-
२३ हितरू । श्रीहत्य । गोहत्यके वजिनरहरू । विरपत्र
२४ डेर श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

[यह लेख आश्विन शु० १०, रविवार, शक १५०६, तारण सवत्सरके दिन लिखा है । इसमें दानिवासके शासक चेन्नरायके पौत्र तथा चिक्क-वीरप्पके पुत्र चेनवीरप्प वडेर-द्वारा गेरमोप्पेके वीरसेनदेवको कुछ भूमि दी आनेका उल्लेख है । वीरसेनके गुरु गुणभद्र तथा प्रगुरु समतभद्र थे । उन्होंने ३२ वराह मूल्य देकर यह भूमि खरीदी थी जो पहले भालेपाल वन्दप्पके पुत्र लिंगण्णकी थी और उसके सन्तानरहित स्थितिमें मृत्यु होनेसे राजाधीन हुई थी । यह भूमि नागलापुर गाँवके क्षेत्रमें थी ।]

[ए० रि० मैं० १९३१ पृ० १०४]

४८७

येडेहल्लि (मैसूर)

शक १५०७ = सन् १५८५, कन्नड

१ शुभमस्तु । नमस्तुगशिरश्चुम्बिचन्द्रचामरचा-
२ रवे त्रैलोक्यनगरारंभमूलस्तभाय शमवे (।) स्व-
३ स्ति श्रीजयाभ्युदय शालिवाहनशकवरुष १५०७
४ सद वर्तमान पार्थिवसंवत्सरद चयित्र ब ७ मि आदि-

५ वारदलु श्रीमत्तु । दानिवासद चेन्नरायवोडेयर म-
६ क्कलु । चिक्कवीरप्पवोडेयर मक्कलु । चेन्नवीरप्पोडेयरु । गेरसो-
७ प्पे समंतभद्रदेवर सिष्यरु । गुणभद्रदेवर सिष्य-
८ वीरसेनदेवरिगे । कोट भूमि क्रयपत्रद क्रमवेंतें-
९ दरे । चालेपाल तम्मयन मग नरसप्पनु नष्टसं-
१० तानवागि होद मम्मंद आतन भूमि यीचलदाल ग्रामदलि ।
११ एण्टु खण्डुग बिजवरि भूमि नम्म अरमनिगे हरवरियागि
१२ बन्द सम्मंद आ भूमिनू दानिवासद चेन्नरायवोडेय-
१३ र मक्कलु । चिक्कवीरवोडेयर मक्कलु चेन्नवीरवोडेयरु ।
१४ गेरसोप्पेय समंतभद्रदेवर शिष्यरु गुणभद्रदेवर शिष्यरु
१५ वीरसेनदेवरिगे । क्रेयवागि कोटवागि । आ भूमिगे । सलुव । क्र-
१६ यद्रव्य । लक्षणलक्षित तत्कालोचित मध्यस्तपरिकल्पित उभे-
१७ यवादिसंप्रतिपन्न कालपरिवर्तनक्के सलुव प्रिय-
१८ सूाहे । निजगति वरह गद्याण ग ३० अक्षरदलु मू-
१९ वत्तु वरहंनु तारविस वलियदे सल्लिसि कोण्डेवागि । आ एण्टु
२० खण्डुग भूमिगे सलुव चतुर्सीमेय विवर मूडलु नन्दिगाव ।
२१ तिम्मरसैयन गद्देयिंदलू पडुवलु । पडुवलु नरसोपुरदं-
२२ हल्लदि वलु(?) मूडलु । बडगलू दरेयिंदलू । तेंकलू । तें-
२३ कलु अरमनेगद्देयिंदलु बडगलू । यिंति चतुर्सीमेयोल्गु-
२४ ल निधि निक्षेप जल पाषाण अक्षीणि आगमि सिध साध्यंगलेंब
२५ अष्टभोग तेजसाम्यवनु आगुमाडिकोण्डु निवु निम्म शिष्य-
२६ रु पारम्परेयागि आचंद्रार्कस्तायियागि सुखदि भोगिसि
२७ वहिरि येंदुबरसि कोट क्रयस्थासनपटे यिदक्के अभिला-
२८ से बटवरु देवलोक मर्त्यलोकक्के विरहितरु । श्रीहत्य
२९ गोहत्यक्के वजनरहरु चेन्नवीरवोडेरु श्री
३० श्री श्री श्री

[यह लेख चैत्र व० ७, रविवार, शक १५०७, पार्थिव संवत्सरके दिन लिखा है। इसमें दानिवासके शासक चेन्नवीरप्प वोडेयर-द्वारा गेरसोप्पेके वीरसेनदेवको कुछ भूमि दी जानेका उल्लेख है। इस भूमिके लिए ३० वराह् कीमत दी गयी थी। यह पहले बालेपाल तम्मयके पुत्र नरसप्पकी थी जो पुत्ररहित स्थितिमें मृत्यु होनेसे राजाधीन हुई थी। भूमि यीचलदाल ग्रामके क्षेत्रमें थी।]

[ए० रि० मैं० १९३१ पृ० १०८]

४८८

चिक्कहनसोगे (मैसूर)

सन् १५८५, कन्नड

[यह लेख आदिनाथबसदिके गोमुखपर है। चारुकीर्ति पण्डितदेवके शिष्य तथा ब्राह्मणप्रमुख चिक्कण्णय्यके पुत्र पण्डितय्य द्वारा आदीश्वर, चन्द्रनाथ तथा शान्तीश्वरकी मूर्तियोंकी स्थापनाका इसमें उल्लेख है। समय सन् १५८५ है।]

[ए० रि० मैं० १९१३ पृ० ५१]

४८९

येडेहल्लि (मैसूर)

शक १५०९=सन् १५८७, कन्नड

१ शुभमस्तु। नमस्तुंगशिरश्चुम्बिचन्द्रचामर-
२ चारवे त्रैलोक्यनगरारम्भमू(ल)स्तम्भाय शंभवे।
३ स्वस्ति श्रीजयाभ्युदय शालिवाहन शक वर्ष १५०९
४ नेय सन्द वर्तमान। सर्वजित्तु स। वयिशाक शु ५ मि
५ थु आदिवारदलु श्रीमत्तु। दानिवासद चेन्नरा-

६ यवडेर मकलु । चिक्कवीरप्पवाडेर मक्कलु चेन्नविरवा-
७ डेरु । गेरसोप्पे समंतभद्रदेवर शिष्यरु । गुणभद्रदेव-
८ र सिष्यरु । वीरसेनदेवरिगे । कोट भूमि क्रयपत्रद क्रम-
९ वेंतेंदरे नालपुरद ग्रामदोलगे संकण्णन मग मल-
१० यन डोंकिन कोट्टिगे बिजवरि न्य १० हत्तु खण्डुग भूमि
११ यु । मलविट्टु नम्म आरमनिगे हरवरियागि मंद मं-
१२ मंद । यी वीरसेनदेवरिगे क्रयक्के कोटेवागि । आ भूमिगे सलु-
१३ व क्रय द्रव्य । लक्षणलक्षित । तत्कालोचितमध्यस्तपरिकल्पित
१४ उभयवादिसंप्रतिपन्न कालपरिवर्तनक्के सलुव प्रियसृा-
१५ हे । निजगटि वरह ग ४० अक्षरदलु नाल्वत्तु वरहनु । तम
१६ विम्म उलियदे माक्रयवागि । सलिसि कोण्डेवागि आ भूमिगे
मलु-
१७ व चतुसिमेय विवर । सुडलु यिशहेय नीरिरकलगालि-
१८ द पडुवलु । बटगलु केरेयगियिंद तेंकलु तेंकलु नं-
१९ म गद्देयिंद बडगलु । यिंती चतुर्सीमेयोलगुल नि-
२० धि निक्षेप जल पाषण अक्षाणि आगामि सिध सांध्यंग-
२१ लेंब आष्टभोग तेजस्साम्यवंनु निटनिम्म शि-
२२ ष्यरु पारम्परियवागि सुखदिं योगिसि वदिरि
२३ येंदु वरसि कोट क्रयशासनपटं । यिदक्के अविला(पे) बटवरु दे-
२४ वलोक मर्त्यलोकक्के विरहितरु श्रीहत्य गोहत्यक्के वजनरहु-
२५ रु । चेन्नवीरवडेरु श्री श्री श्री श्री श्री

[यह लेख वैशाख शु० ५, रविवार, शक १५०९, सर्वजित संवत्सर इस तिथिका है । दानिवासके शासक चेन्नवीरप्प वडेर-द्वारा गेरसोप्पेके वीरसेनदेवको कुछ भूमि दी जानेका इसमें उल्लेख है । नालपुर ग्रामकी यह भूमि ४० वराह क़ीमत देकर खरीदी गयी थी ।]

[ए० रि० मै० १९३१ पृ० ११०]

४९०

रत्नत्रयबसदि बीलिगि, (उत्तर कनडा, मैसूर)

१६वीं सदी (सन् १५८७)

[इस लेखमे मूलसंघ-देसिगण पुस्तकगच्छके श्रवणबेलगुल मठके चारु-कीर्ति पण्डितका उल्लेख किया है। इन्हें रायराजगुरु, मण्डलाचार्य, बल्लाल-रायजीवरक्षापालक आदि उपाधियाँ प्राप्त थी। इनकी परम्परामे श्रुतकीर्ति पण्डित हुए। इनकी शिष्यपरम्परा इस प्रकार थी – श्रुतकीर्ति – विजयकीर्ति – श्रुतकीर्ति (द्वितीय) – विजयकीर्ति (द्वितीय) अकलंक – विजयकीर्ति (तृतीय) – अकलंक (द्वितीय) – भट्टाकलंक। भट्टाकलंकदेवका समय शक १५१० = सन् १५८७ दिया है। संगीतपुरका लोकप्रयुक्त नाम हाडुवल्लि है। यहाँके राजा इन्द्रभूपालको विजयकीर्ति (प्रथम) की कृपासे सिंहासन प्राप्त हुआ ऐसा कहा गया है। विजयकीर्ति (द्वितीय) की प्रेरणासे पश्चिम समुद्र तटपर भट्कल नगरकी स्थापना हुई थी।]

[ए० इ० २८ पृ० २९२]

४९१

जि० दक्षिण कनडा (स्थान नाम अज्ञात)

शक १५१३ = सन् १५९१, कन्नड

[यह ताम्रपत्र शक १५१३ खर संवत्सरमे किन्निग भूपालने दिया था। इसमें एक जैन मन्दिरके लिए कुछ भूमिदानका उल्लेख है।]

(इ० म० दक्षिण कनडा २)

४६२-४६३

रायबाग (मैसूर)

शक १५१९ = सन् १५९७, संस्कृत-कन्नड

[ये दो लेख स्थानीय आदिनाथमन्दिरके दो स्तम्भोंपर हैं – एक कन्नडमें है तथा दूसरा उसीका संस्कृत रूपान्तर है। इसमें ज्येष्ठ व० १४, शक १५१९ के दिन मूलसंघ-सेनगणके सोमसेन भट्टारक-द्वारा इस मन्दिरके जीर्णोद्धारका तथा पार्श्वनाथमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १५२-५३ पृ० ३३]

४६४-४६५

मारूरु (दक्षिण कनडा, मैसूर)

शक १५२० = सन् १५६८, कन्नड

[ये दो लेख हैं। मारूरुके पार्श्वनाथवसतिमें स्थित तीर्थंकरमूर्तियोंकी पूजाके लिए पार्श्वदेवी विन्नाणि-द्वारा कुछ भूमि दान दिये जानेका इनमें उल्लेख है। पहला लेख चैत्र शु० ३, सोमवार, शक १५२० का है तथा दूसरा लेख पौष शु० २ शुक्रवार, शक १५२० का है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ७४-७५]

४९६-४६७

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

संस्कृत-ग्रन्थ, १६वीं सदी

[यह लेख १६वीं सदीकी लिपिमें है। पुष्पसेन योगीन्द्रके गुरु समन्तभद्रकी अक्षय कीर्तिका इसमें वर्णन है।

यहींके एक अन्य लेखमें मुनिभद्रस्वामीका नामोल्लेख किया है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १२४, १४५]

४९८

हुमच (मैसूर)

१६वीं सदी, कन्नड

१ श्रीबोम्मरसनु रूपवतिदिदनू

[यह लेख पार्श्वनाथबसदिमें स्थित क्षेत्रपालमूर्तिके पादपीठपर १६वीं सदीकी लिपिमें है। इसमें मूर्तिके निर्माताका नाम बोम्मरस दिया है।]

[ए० रि० मै० १९३४ पृ० १७७]

४९९

सेतु (शिमोगा, मैसूर)

१६वीं सदी, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीगुम्मैय सेट्टियर बसिनय श्रीवर्धमानस्वामिय सनि-
धानदल्लि गणपणसेट्टियर मग सघय्यसेट्टियर तमगे पुण्यार्त-
वागि प्रतिष्टे माडिसिद अभिनन्दनतीर्थेश्वरनिगे म-

२ गल महा श्री श्री श्री श्री श्री

[इस लेखमें सघय्य सेट्टि-द्वारा अभिनन्दन तीर्थकरकी इस प्रतिमा की स्थापनाका निर्देश है। इस समय गुम्मैयसेट्टिकी बसतिके वर्धमान-स्वामी उपस्थित थे। लिपि १६वी सदीकी प्रतीत होती है।]

[ए० रि० मै० १९४८ पृ० १६६]

५००-५०१

तिरुनिर्डकोण्डै (मद्रास)

१६वीं सदी, तमिल

[इस लेखमें एक पद्यमें कोण्डैमले निवासी गुणबद्दिरमुनिवन् (गुण-भद्रमुनि) की प्रशंसा की गयी है जो दक्षिणप्रदेशमें तमिल और संस्कृतके

सुप्रसिद्ध विद्वान् थे। लेख १६वीं सदीकी लिपिमें है तथा चन्द्रनाथमन्दिरके मुख्य द्वारके पास खुदा है। मन्दिरके मण्डपकी दीवालपर खुदे एक अन्य लेखमें इन्हीं आचार्यको वीरसंघप्रतिष्ठाचार्य यह विशेषण दिया है।

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र०, ३०२ पृ० ६५]

५०२

सोंदा (उत्तर कनडा, मैसूर)

शक १५३० = सन् १६०७, कन्नड

पहली ओर

१ श्री (।) स्वस्ति (।) श्रीजयाभ्युदय शालिवाह-

२ नशकवरुष १५३० नेय प्लवंगसंवत्सर-

३ द कार्तिक शु १० बुधवारदलि श्रीमद् राय-

दूसरी ओर

४ (राजगुरुमं) डलाचार्य महावाद-

५ (वादीश्वर रा) यवादिपितामह सकलविद्वज्ज-

६ (नचक्रवर्ति व) ल्लालरायजीवरक्षापा-

तीसरी ओर

७ लक देशिगणाग्रगण्य संगीतपुरसिंहा (सन)-

८ पट्टाचार्य श्रीमदकलंकदेवरुगलु

९ श्रीपंचगुरुचरणस्मरणियिंद स्वर्गस्थरा-

चौथी ओर

१० (दरु) (।) अवर निषिधिमंटपक्के मंगल महाश्री (।)

११ भट्टाकलंकदेवेन स्याद्वादन्यायवादिना(।)

निषि-

१२ धीमंटपो हृधः स्थेयादाचंद्रमा (स्क) रं (॥)

[इस लेखमें देशिगणके प्रमुख सगीतपुरके पट्टाचार्य अकलंकदेवके स्वर्गवासका निर्देश है जो कार्तिक शु० १० शक १५३० के दिन हुआ था। उनकी यह निषिधि उनके शिष्य भट्टाकलंकदेव द्वारा स्थापित की गयी थी।]

[ए० इ० २८ पृ० २९२]

५०३

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

शक १५४१ = सन् १६१९

[यह लेख विजयनगरके महामण्डलेश्वर रामदेव महारायके समय शक १५४१, कालयुक्ति, चैत्र ३ के दिन लिखा गया था। वाल नागम नायक और तलत्तार् लोगों द्वारा कविल्लायप्पुलवर् (नामक जैन विद्वान्) को कुछ भूमि दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३७]

५०४

मूडबिदुरे (मैसूर)

शक १५४४ = सन् १६२२, कन्नड

[इस ताम्रपत्रमें निर्देश है कि सेनगणके समन्तभद्रदेवने इक्केरिमें केलदि वेंकटप्प नायकसे मिलकर तथा उसके अधीन अधिकारी चिन्नभडार देवप्पसे साहाय्य पाकर बिदुरे नगरकी त्रिभुवनतिलक वसतिका जीर्णोद्धार कराया। तिथि वैशाख, शक १५४४, रुधिरोद्गारी संवत्सर।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ पृ० २४ क्र० ए ४]

५०५

कलकत्ता (नाहर म्युजियम)

शक १५४८ = सन् १६२६, कन्नड

१ सक १५४८ श्रीमूलसंघ भट्टारक
२ श्रीधर्मचंद्रोपदेशात् प्रणम
३ श्रीमतिर्वार

[यह लेख पीतलकी चौवीसतोर्थंकरमूर्तिके पादपीठ पर है। मूलसंघके धर्मचन्द्र भट्टारकके उपदेशसे श्रीमतिवीर-द्वारा इस प्रतिमाकी स्थापना शक १५४८ मे की गयी थी। लिपिसे पता चलता है कि यह मूर्ति कर्नाटकमे निर्मित है।]

[ए० रि० मै० १९४१ पृ० २४९]

५०६

कोलारस (शिवपुरी, मध्यप्रदेश)

संवत् १६८४ = सन् १६२८, हिन्दी-नागरी

[इस लेखमे शाहजहांके अधीन शासक अमरसिंहके समयमे एक जैन चैत्यालयके जीर्णोद्धारका उल्लेख है। तिथि आषाढ़ शु० ९, गुरुवार, संवत् १६०॥८४ इस प्रकार दी है।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० २४१ पृ० ४८]

५०७

मूडबिदुरे (मैसूर)

शक १५५४ = सन् १६३२, कन्नड

[इस ताम्रपत्रमे उल्लेख है कि बिदुरेके दो विभाग बेट्टकेरी तथा मारलंगडिकेरीमे रहनेवाले श्रावक पहले दीवालीका त्योहार मनाते वक्त

एक दूसरोंसे पत्थर, लाठी आदिसे लड़ते थे। सेनगणके समन्तभद्रदेवने उन्हें इस कार्यसे रोककर दीपारा्धना और अन्य पूजाओंमें यह त्योहार मनानेका आदेश दिया। तदनुसार दवण तथा अन्य शिष्योंने प्रभातमें उसका पालन भी कराया। तिथि-दीपावली, आंगिरस संवत्सर, शक १५५४।]

[रि० सा० ए० १९४० ४१ क्र० ए० ८ पृ० २३]

५०८

मूडबिद्रे (मैसूर)

शक १५६२=सन् १६४१, कन्नड

[इस ताम्रपत्र लेखकी तिथि शक १५६२ विक्रम, मार्गशिर शु० २ शुक्रवार, ऐसी है। संगलूर तथा बारकूरके शासक वेंगडि वीरभद्र नायकके समयका यह लेख है। पुत्तिगे निवासी चौटवंशके चिक्कराय ओडेयद्वारा अभिनव चारुकीर्ति पण्डितदेव तथा मूडबिदुरेके अन्य श्रेष्ठियोंको संरक्षणका आश्वासन दिये जानेका इसमें निर्देश है। इसके पूर्व अधिकारियोंद्वारा धार्मिक तथा वैयक्तिक सम्पत्तिका अपहरण किया गया था अत यह आश्वासन जरूरी हुआ था।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ए ८]

५०९-५१०

शिवपुरी (मध्यप्रदेश)

संवत् १७०३=सन् १६४७, हिन्दी नागरी

[इस लेखमें महाराज संग्रामके पोतदार जैन मोहनदास द्वारा कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। यहींके एक अन्य लेखमें गंगादास और गिरधर-

दास-द्वारा मालवदेशस्थित शिवपुरी ग्राममे एक जिनमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। प्रथम लेखकी तिथि वैशाख शु० ३, शक १५६८, संवत् १७०३ ऐसी दी है।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० २५०-५२ पृ० ४८-४९]

५११

सोंदा (उत्तर कनडा, मैसूर)

शक १५७७=सन् १६५५, कन्नड

१ स्वस्ति (।) श्रीनयाभ्यु(द)य शालिवाहनसकव(र्ष)
२ १५७७ जय सं(वत्सर)द कार्तिक सुध्ध दशमि
३ सू(र्यो)दयवाद यरडने वलिगेय-
४ ल्लि देसि श्रीमद् रायराजगुरु मंड-
५ लाचार्यरु महावादवादीश्वर रा-
६ यवादिपितामह सकलविद्वज्जनच-
७ (क्र) वर्तिग(लुं) वल्लालरायजीवरक्षपा-
८ लकरुमप्प श्रीमद् भट्टाकलंकजीय(दे)-
९ वरु
१० (श्री)पंचगुरुचरणस्मर(णेयिंद)
११ चतुसंघ(समक्ष) दल्लि स्व-
१२ र्गवनैदिदरु (।) इं-
१३ ती श्री श्री श्री (॥)

[इस लेखमें देसिगणके श्रीमद् भट्टाकलंकदेवके स्वर्गवासका निर्देश है जो कार्तिक शु० १० शक १५७७ के दिन हुआ था। उनकी समाधि पर यह लेख है।]

[ए० इ० २८ पृ० २९२]

५१२

टोडा रायसिंह (जयपुर, राजस्थान)

संवत् १७१८ = सन् १६६२, संस्कृत नागरी

[इस लेखमें अम्बावतीके कछवाह वंशके राजा जयसिंहके मन्त्री मोहनदास द्वारा विमलनाथ मन्दिरके निर्माणका वर्णन है। तिथि फाल्गुन व० १०, बुधवार, संवत् १७१८ ऐसी दी है। उस समय मुगल बादशाह शाहजहाँका राज्य चल रहा था।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ४१४ पृ० ६९]

५१३

श्रीरंगपट्टम् (मैसूर)

सन् १६६६, कन्नड

[यहाके आदीश्वरमन्दिरमें सन् १६६६ का एक लेख है। इसमें चारुकीर्ति पण्डिताचार्यके शिष्य पायण्ण-द्वारा अष्टाह्निकामहोत्सवके लिए कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९१२ पृ० ५६]

५१४

मुलगुन्द (धारवाड, मैसूर)

शक १५९७ = सन् १६७५, कन्नड

[यह लेख भाद्रपद व० ५, रविवार, शक १५९७ राक्षस संवत्सर-का है। इसमें नागभूपकी पत्नी बनदाम्बिके द्वारा अर्हत् आदिनाथकी मूर्तिकी पुनः स्थापनाका वर्णन है। यह मूर्ति मुसलमानों-द्वारा भ्रष्ट की गयी थी।]

[रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई ९३ पृ० ८]

५१५

वेल्लूर (मैसूर)

शक १६०२ = सन् १६८०, कन्नड

१ ॥शुभमस्तु॥ नमस्तुंगशिरश्चुम्बिचंद्रचामर-
२ चारवे । त्रैलोक्यनगरारम्भमूलस्तंभाय शम्भ-
३ वे ॥ स्वस्ति श्रीजयाभ्युदय शालिवाहनशकवरुषंग-
४ लु १६०२ ने रवुद्रि सं । भाद्रपद व १० ल्लु दिल्लिकोल्ला-
पुरजि-
५ नकंचिपेनुगोंडेसिंहासनद समंतभद्रस्वामिगल शि-
६ ष्यराद वीरसेनभट्टारकरवर प्रियशिष्यराद लक्ष्मीसेनभ-
७ ट्टारकरवरिगे आत्रेयगोत्रद आपस्तंभसूत्रद य-
८ जुःशाखाध्यायिगलाद श्रीमन्महाराजश्रीहरति सम्मेटरंग-
९ प्पराजरवर पौत्रराद कृष्णप्पराजरवर पुत्रराद राय
१० प्पराजरवरु रत्नगिरिवस्ति देवस्थानदल्लि श्री जिनेश्वर-
स्वामिप्रतिष्ठा-
११ कालदल्लि दारागृहीतवागि कोट्ट भूदानद दर्मशासनदान-
१२ पट्टे क्रम वेंतेंदरे

(पंक्ति ३ से १२ तकका पाठ पंक्ति २६ तक दो बार दोहराया है ।)

२७ क्रम वेंतेंदरे यी रत्नगिरि स्थलदल्लि अनादियागियिद्दंथाव-
२८ स्ति देवस्थानदल्लि जिनेश्वरस्वामिगे आराधने नडेयदे यिद्द-

पिछला भाग

२६ थादरल्लि नीनु मत मरक्षण्यकर्तरागि बुद्मविसिद्था यो—
३० गनिष्टरादरिंद् श्री देवस्थानवनू पुन जीर्णोद्धारव माडि
३१ सम्प्रोक्षणे प्रतिष्ठेयनू माडि दवता नित्य नैमत्तवु मार्त्त-
३२ कालवु नडद्दु आ मुन्नत नमगू बुनागुव रीतिगे नडसिधिरागि
३३ अदु निमित्य आ महोत्सवाकालदल्लि निशमे नम्म सिरेहद सीमे-
३४ यालगण सर्ने दोड्डेरि होत्रलि गूडिद बङ्कुवन हलिस्थ-
३५ कदोलगण आपिनहल्लियनू सहिरण्योदकदानधारा-
३६ गृहीतवागि त्रिवाचनु त्रिकरणयुक्तवागि धारेयने-
३७ रदु कोट्टेवागि आ ग्रामक्के सलुवता चरेनेल कॅनेल्का-
३८ डारम्भ नीरारम्भ अणे अच्चुकट्टु यात कपिगे गूडेगू-
३९ यिलु केरे कुटे कालुवे मोद्लागि आ ग्रामक्क सलुवता परिस्तरण-
४० दोळगागि बुत्पत्ति आदता सकल सुवर्णादाय सकलभत्ता-
४१ दायवनू निम्म सिष्यपारम्पर्यवु अनुभविसि कोंडुसु-
४२ एन्दिल्लि यिद्दुर्देदु बरसि कोट्ट दानपट्टे । स्वदत्ताद्द्वि-
४३ गुण पुण्य परदत्तानुपालन । परदत्तापहारण
४४ स्वदत्त निष्फल भवेत ॥ श्रीराम।

[इस दानपत्रकी तिथि भाद्रपद कृ० १०, शक १६०२ रौद्रि संवत्सर, ऐसी है इसमें रगप्पराजके पौत्र तथा कृष्णप्पराजके पुत्र रायप्पराज-द्वारा लक्ष्मीसेन भट्टारकको रत्नगिरिबस्तिके लिए आपिनहल्लि नामक ग्राम दान दिये जानेका उल्लेख है । लक्ष्मीसेनको दिल्ली, कोल्लापुर, जिनकचि तथा पेनुगोंडे के सिंहासनाधीश कहा है । वे समतभद्र स्वामीके प्रशिष्य तथा वीरसेन भट्टारकके शिष्य थे । दानदाता रायप्प राजा हरति नगरके र १ स थे । उन्हें आत्रेय गोत्रके आपस्तम्बसूत्रानुयायी कहा है ।

[ए रि मै १९३९ पृ १८७]

५१६

चेल्लूर (मैसूर)

कन्नड (सन् १६८०)

[यह लेख विमलनाथमूर्तिके पादपीठपर है। पद्मकुलके शर्कर-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापना हुई थी। यह हुलिकल निवासी था तथा समन्तभद्राचार्य के शिष्य लक्ष्मीसेनाचार्यका शिष्य था। समय लगभग सन् १६८० का है।]

[ए० रि० मै० १९१५ पृ० ६८]

५१७-५१८

पोन्नूर (उ० अर्काट, मद्रास)

शक १६५५ = सन् १७३३, तमिल

[स्थानीय जिनमन्दिरके छतमें लगे स्तम्भपर यह लेख है। तिथि वैगाशि २७, प्रमादी संवत्सर, शक १६५५, कलिवर्ष ४८३४ यह है। इसमें कहा है कि स्वर्णपुर—कनकगिरिके जैन हेलाचार्यकी साप्ताहिक पूजाके लिए प्रति रविवारको पार्श्वनाथ तथा ज्वालामालिनीकी मूर्तियाँ नीलगिरिपर्वतपर ले जाते हैं। यहींके अन्य लेखमें पार्श्वनाथकी स्तुतिमें कुछ मन्त्र लिखे है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ४१६-१८ पृ० ४०]

मूललेख

१ स्वस्ति श्री शालिवाहनशकाब्द: १६५५ कल्यब्द: ४८३४ क्कु मेळ् चेल्ला निण्रा प्रमवादि श (श) काब्द: वरुषं ४६ क्कु प्रमादिच वरुषं वैगाशिमादं १७ (ट) गुळुदिय शासनमावदु (।) स्वस्ति श्रीस्व (र्ण) पु (र) कनकगिरि आदीश्वरस्वामिचैत्यालय सम्यन्दमान वायुमूलैयिलि—

२ रक्कु नीलगिरि हेलाचार्यपादपूजै आदिवारत्तू तोरम् मेपाढि आळयत्तिन् श्रीपार्श्वनाथस्वामियु ज्वालामा (लि) निश्रमणैयु मेपाढि स्वर्णपुरजैनगॅल् एडुत्तुकोण्डु पोय् पूजिप्पद्दु (।) इन्द शासनमनन्तसनदेव (नाले) लुइपट्टु (॥)

[ए० इ० २९ पृ० २०२]

५१६

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

शक १६६९ = सन् १७४८, तमिल

[यह लेख ज्येष्ठ शु० ५, शुक्रवार, शक १६६९ को लिखा गया था। मुनिगिरि स्थित कुन्थुनाथस्वामीके मन्दिरके गोपुरका जीर्णोद्धार अगस्तियप्प नायिनार्ने किया ऐसा इसमें कहा गया है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३६]

५२०

मूडबिद्रे (मैसूर)

शक १६७९ = सन् १७५७, कन्नड

[विद्यानगर (विजयनगर) के राजा विजय सदाशिव महारायके अधीन सोंदे प्रदेशके शासक अरसप्पोडेयके पुत्र इम्मडि अरसप्पोडेयने बेण्णेगावे ग्रामकी कुछ जमीन अपने गुरु चारुकीर्ति पण्डितदेवको अर्पित की ऐसा इस ताम्रपत्रमें उल्लेख है। तिथि-मार्गशिर शु १ शक १६७९, राक्षस संवत्सर।]

[रि सा ए १९४०-४१ पृ २४ क्र ए ६]

५२१

वालूर (धारवाड, मैसूर)

शक १(६)८५ = सन् १७६२, कन्नड

[जैन मन्दिरके सन्मुख दीपमाला स्तम्भपर यह लेख है। देवण्ण और उसके पुत्रोंका इसमें उल्लेख है। तिथि कार्तिक शु. १०, सोमवार, विक्रम, शक १६८५ ऐसी दी है।]

[रि. इ. ए. १९४५-४६ क्र. २१३]

५२२

तिलिवल्लि (धारवाड, मैसूर)

१८वीं सदी, कन्नड

[इस निसिधि लेखमें वैशाख शु. ५ सोमवार, स्वर्भानु संवत्सरके दिन पुजारी पेवय्यके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि. इ. ए. १९४५-४६ क्र. २५३]

५२३

काकन (जि० मोंघीर, बिहार)

संवत् १८२२ = सन् १७६६, संस्कृत – नागरी

जैन मन्दिरमें चरणपादुकाओंके चारों ओर

[इस लेखमें काकन्दीके जैन संघ-द्वारा संवत् १८२२ वैशाख शु० ६ को जैन मन्दिरके जीर्णोद्धारका तथा सुविधिनाथके चरणोंकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० ३]

५२४
मैसूर
कन्नड

शान्तीश्वर बसतिमें दीपस्तम्भोंपर

[इस लेखमें चामराजकी रानी देवीरम्मणि-द्वारा उक्त दीपस्तम्भ शान्तीश्वर बसतिको अर्पित किये जानेका उल्लेख है। ये चामराज मैसूरके राजा चामराज वोडेयर (नवम) (सन् १७७६–९६) होंगे।]

[मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित]

[ए० रि० मै० १९३६ पृ० १०२]

५२५
मैसूर
कन्नड

उपर्युक्त बसतिमें चार कलशोंपर

[इस लेखमें उपर्युक्त रानी देवीरम्मणि-द्वारा शान्तिनाथके अभिषेक-के लिए इन चार कलशोंके दानका निर्देश है।]

[मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित]

[ए० रि० मै० १९३६ पृ० १०२]

५२६–५२७
नरसिंहराजपुर (मैसूर)
सन् १७७८–७९, कन्नड

[यहाँके दो लेख सन् १७७८ तथा १७७९ के हैं। पहलेमें वियग वरमैयके पुत्र नागप्प-जो काम्बोदि वैश्य था तथा निषडेवृक्षसघका था –

द्वारा एक मण्डपकी स्थापनाका उल्लेख है। दूसरेमें इसी व्यक्ति-द्वारा मूर्तिका पादपीठ अर्पित करनेका उल्लेख है। रविवारव्रतकी समाप्तिपर यह दान दिये गये थे।]

[ए० रि० मै० १९१६ पृ० ८४]

५२८
मैसूर

शक १७३६=सन् १८१४, कन्नड

शान्तीश्वर वसति—गर्भगृहके द्वारके पीतलके आवरणपर

[इस लेखमें दनिकार पद्मैयके पुत्र नागैय-द्वारा ३९½ (सेर) वजनके इस पीतलके गन्धकुटी (द्वार) के आवरण दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान आश्विन शु० १, शक १७३६, भाव संवत्सरके दिन दिया गया था।]

[मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित]

[ए० रि० मै० १९३६ पृ० १०२]

५२९
मैसूर

(शक १७३६=सन् १८१४) संस्कृत-कन्नड

शान्तीश्वर वसति-सुखनासि द्वारके आवरणपर

श्रीमच्छांतिजिनेन्द्रस्य पंचकल्याणसंपदः।
श्रिया मेरुजिनागारं हसतश्चैक्यवेश्मनः ॥१॥
परार्ध्यरचनोपेतं कवाटमिदमद्भुतं।
कारयामास सद्भक्त्या श्रावको जैनमार्गतः ॥२॥
नागनामा पितुः स्वस्य मरिनागाह्वयस्य च।
धनिकारपद्माह्वयस्य स्वर्मोक्षसुखलब्धये ॥३॥

[इस लेखमें निर्देश किया है कि प्रस्तुत द्वारका निर्माण धनिवार मरिनागके पुत्र नाग-द्वारा किया गया। इस लेखमें समयनिर्देश नहीं है किन्तु पिछले लेखका ही समय इसका भी होगा ऐसा अनुमान होता है।]

[ए० रि० मैं० १९३६ पृ० १०३]

५३०

मैसूर

शक १७५४ = सन् १८३२, संस्कृत-कन्नड

अनन्ततीर्थंकरकी मूर्ति – शान्तीश्वर बसति

१ श्रीमत्काश्यपगोत्रजो जिनपदाम्भोजे लसत्षट्पद क्षात्रोत्तम-
 देवराजनृपति सद्धर्म-

२ पत्न्या सह (।) केंपम्मण्यभिधानया मतयुता स्वर्गापवर्गप्रदं
 कृत्वानन्तव्रतं तदा-

३ रचितवान् बिंब सुदेवच्छुभ ॥ अब्धीषुद्रिधरेन्दु-प्रमितेस्मिन्
 शकाब्दके।

४ नन्दने वत्सरे भाद्रमासे शुक्लाष्टमीतिथौ। अनन्तनाथबिंबस्य
 प्रतिष्ठा जग-

५ दुत्तरा (।) कारयामास पूर्वोक्तदेवराजनृपोत्तम ॥

[इस लेखमें काश्यप गोत्रके उत्तम क्षत्रिय राजा देवराज तथा उनकी धर्मपत्नी केंपम्मण्णि-द्वारा अनन्तव्रतकी पूर्णताका उल्लेख है। उक्त दम्पतिने इस अवसरपर भाद्र शुक्ल अष्टमी, शक १७५४, नन्दन संवत्सर, के दिन अनन्तनाथकी यह मूर्ति स्थापित की। इस समय मैसूरमें कृष्णराज वडेयर (तृतीय) का राज्य चल रहा था। अतः लेखोक्त देवराज नृपति मैसूरकी अरसु जातिके प्रमुखोंमें-से एक थे ऐसा अनुमान होता है।]

(ए० रि० मैं० १९३६ पृ० १०१)

५३१

हले हुब्बलि (जि० धारवाड, मैसूर)

शक १७८४=सन् १८६२, कन्नड

[यह लेख शक १७८४ का है । कहा गया है कि इस वर्ष एक नया जगट बनवाया गया । यह उस पुराने जगटसे बनवाया था जो यहांके अनन्तनाथवसदिमे पिछले ११०० वर्षोंसे था ।]

[रि० सा० ए० १९४१-४२ ई० ३५ पृ० २५७]

५३२

चित्तामूर (द० अर्काट, मद्रास)

शक १७८७=सन् १८६५, संस्कृत-ग्रन्थ

[यह लेख स्थानीय जिनमन्दिरके गोपुरकी दीवालपर है । इस गोपुरका निर्माण अभिनव आदिसेन भट्टारकने सार्वजनिक सहायतासे किया ऐसा उल्लेख है । तिथि ज्येष्ठ पूर्णिमा, शुक्रवार, शक १७८७ क्रोधन संवत्सर ऐसी दी है । इसी दीवालपर एक अन्य लेखमे जिनालयनिर्माणसे प्राप्त पुण्यकी प्राप्त पुण्यकी प्रशंसाके कुछ श्लोक है ।]

[रि० सा० ए० १९३७-३८ क्र० ५१९-२०पृ० ५८]

५३३

मैसूर

१९वीं सदी, कन्नड

शान्तीश्वर बसतिमें सर्वाण्ह यक्षकी मूर्तिके पादपीठपर

इस लेखमे मरिनागैय नामक व्यक्ति-द्वारा महिसूरके शान्तीश्वर वसतिमे सर्वाण्हयक्षकी मूर्तिके पादपीठपर पीतलका आवरण लगानेका

उल्लेख किया है। मरिनागय दनिकार पर्वायका पुत्र था। लिपि १९वी सदीकी है।

[मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित]

[ए० रि० मै० १९३६ पृ० १००]

५३४
मैसूर
१९वीं सदी, कन्नड

उपर्युक्त बसतिमें घण्टापर

[इस लेखमें शिरसैयके छोटे भाई पुट्टैय-द्वारा इस घण्टेके दानका उल्लेख है। लिपि १९वी सदीकी है।

(मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित)

[उपर्युक्त पृ० १००]

५३५
मत्तावार (मैसूर)
१९ वीं सदी, कन्नड

मत्तवूर बस्ति पार्श्वनाथस्वामिचैत्यालयक्क

ऐवर अबणनुव

[यह लेख एक घण्टेपर खुदा है। ऐवर अबण-द्वारा यह घण्टा मत्तवूरके पार्श्वनाथस्वामी चैत्यालयमें अर्पण किया गया था। लिपि १९वी सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९३२ पृ० १७५]

५३६

कन्नुपर्तिपाडु (नेलोर, आन्ध्र)

तमिल

[इस लेखमें करिकालचोल जिनमन्दिरके लिए मतिसागरदेवके उपदेशसे प्रमलदेवी-द्वारा सीढ़ियाँ बनवानेका निर्देश है। यह लेख सम्राट् राजराजदेवके ३७वें वर्षका है।

नोट—चोल राजराज नामक किसी भी राजाका राज्य ३७ वर्षकी दीर्घ सीमा तक नहीं पाया जाता। अतः इस लेखकी तिथि गलत प्रतीत होती है।]

(इ० म० नेलोर ५०२)

५३७

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

तमिल

[यह लेख पल्लव राजा सकल भुवनचक्रवर्ति पेरुंजिगदेवके तीसरे राज्यवर्षका है। इसमें इस देव-मन्दिरकी प्रदक्षिणामालिकाका निर्माण पालैयूर निवासी····शिगन्-द्वारा किये जानेका उल्लेख है। लेख चन्द्रनाथ-मन्दिरके प्राकारके पश्चिमी दीवारपर खुदा है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३१४ पृ० ६६]

५३८

गेरसोप्पे (मैसूर)

संस्कृत-कन्नड

१ वनशोकवलीमंजुलदेशीगणललितकीर्तिमुनिसूनोः (।) श्रीदेव-चन्द्रसूरेरुपदेशान्नेमिजिनविम्बं ॥

२ श्लोक ॥ ओजणश्रेष्ठिपुत्रोसौ कल्लपश्रेष्ठिपुगव (।) अकारयन् मुतो यस्य मावाम्बागर्भजोजण ॥

[यह नेमिनाथ मूर्ति ओजणश्रेष्ठिके प्रपौत्र तथा कल्लपश्रेष्ठि एव मावाम्बाके पुत्र अजणश्रेष्ठिने देशीगण-पनसोगवलीके आचार्य ललितकीर्तिके शिष्य देवचन्द्रसूरिके उपदेशसे स्थापित की।]

[ए० रि० मैं० १९२८ पृ० ९५]

५३९

गेरसोप्पे (मैसूर)

कन्नड

१ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाछन (।) जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन (॥)

२ श्रीजिनराजराजितपदाम्बुजराजमराल मगिरिय राजशिरो-

३ मणि प्रचुरकीर्तिदिशावलयप्रकाशनु तेनमुजप्रतापरिपुराजमुखा-

४ बुज इस्तवीरनु भूजनवन्द्य होन्ननृपनर्थिजनावन कल्पवृक्षनु होन्-

५ नमहीशनात्मजेयु माल्यिब्बरसिगे कामराजग सद्गुनमूर्ति होन्न-नृपनात्मभवान्-

६ धव मगराजनु मन्मथरूप हरिहरनृपालकनातन पुत्र हैवणरसग मन प्रियान्-

७ गनेयु सान्तलदेवि समाधिकारदोलु आकेय गुरुगलु लोकख्यातियनान्तिद् अनन्-

८ तवीर्यर रतिसकाशसोवगेनिसि सन्दिदी कान्तेग हैवणरस वल्लमनाद । स्मररूप

९ सूद्रकगी पुरदोलु कीर्तिवेत्त बोम्मणसेट्टिय वरवनिते बोम्मकग वरसुगु-

१० णि सान्तलरसि पुट्टिदलागल्। अरसप्पोडेयर तनुजे वरगुणि वोम्मकनाकियात्मजे सान्तकरसि-

११ यु परनन पद्मं स्मरिरियिसि सुरलोकवेय्दि सुखदिन्दिर्दलु अर्हन्तन पादाम्बुजमं

१२ स्मरयिसुतं नम्वि(?) पद्म नालगेयोलु उच्चरिसुत्त सान्तकरसि शरीरमं पत्तेण्डुदिन-

१३ दोलु सन्द्लु वरवत्सर तारणदोलु सुरुचिर-फाल्गुणद शुद्ध पाडिवतिथियोलु हरिदश्व-

१४ दिनदि सान्तकरसियु स्वर्गस्थलादल् आकेनिमित्तं माडिसिद निषिधिय कल्लिगे मंगल महाश्री-

[यह निषिधि-लेख रानी सान्तलदेवीके समाधिमरणका स्मारक है। इसकी तिथि फाल्गुन शु० १, रविवार, तारण संवत्सर ऐसी थी। यह देवी वोम्मणसेट्टिकी कन्या तथा हैवणरसकी पत्नी थी। हैवणरसका पिता मंगराज था जो कामराज और मालियव्वरसिका पुत्र था। मालियव्वरसिके पिता गेरसोप्पेके राजा होन्न थे। उसका एक और पुत्र हरिहर नृपाल था। सान्तलदेवीकी माता वोम्मवका अरसोप्पोडेयकी कन्या थी।]

[ए० रि० मैं० १९२८ पृ० ९९]

५४०

सालूर (मैसूर)

कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादा-

२ मोघलांछनं।···

३ ···शासनं जिनशा···

४ सनं श्री···चन्द्रनाथदेव-

५ र शुद्धि नादोव्वेय
६ नागय्यगलु निलि-
७ सिद कल्लु सालियूर
८ महाजन

[इस निषिधिलेखमें चन्द्रनाथदेवकी शिष्या नादोव्वेके समाधिमरण तथा नागय्य-द्वारा इस निषिधिकी स्थापनाका उल्लेख किया है।]

[ए० रि० मै० १९२७ पृ० १२९]

५४१

सक्करेपट्टण (मैसूर)

कन्नड

१ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाछन । जीया-
२ त् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासन । श्रीमद् राजगुरु
३ मौनपाचार्य श्री होसूर शिष्य नूल्वागि-
४ सेट्टिय मग नूल्वन्दिसेट्टिय निषिधि
५ शार्व्वरि सवत्सरद ६ आषाढ सुध १४ आदि

[यह निषिधिलेख होसूरके राजगुरु मौनपाचार्यके शिष्य नूल्वागि-सेट्टिके पुत्र नूल्वन्दिसेट्टिका स्मारक है। तिथि आषाढ शु० १४, रविवार, शार्वरी सवत्सर, इस प्रकार बतलायी है।]

[ए० रि० मै० १९२७ पृ० ६३]

५४२

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

तमिल

[इस लेखमें अप्पाण्डार (चन्द्रप्रभ) मन्दिरके इस गोपुरका निर्माण परमजिनदेवजीयर्-द्वारा किये जानेका उल्लेख है। लेखकी तिथि पगुणि

द्वितीया, रेवती नक्षत्र, रविवार, युव संवत्सर इस प्रकार दी है। लिपि आधुनिक है।

[रि० सा० ए० १९३९–४० क्र० ३१५ पृ० ६७]

५४३

मुत्तगदहोसूर (मैसूर)

कन्नड

१ सिद्धजिनालय

२ सान्तेऔवेय बसदि

३ यगे माडिसिदनु

[इस छोटे-से लेखमें सान्तेऔवे नामक महिला-द्वारा एक जिनमन्दिरके निर्माणका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९२४ पृ० २३]

५४४

उम्मत्तूर (मैसूर)

१ स्वस्ति श्री....राज- २ भटारर....नोन्तु

३ सन्यसनं गेय्दु मुडि ४ पिदर् कल्ल निलिसिद ज्ञा-

५ न....पण्डितं....

[इस लेखमें...राज भट्टारकके समाधिमरण तथा ज्ञान...पण्डित-द्वारा इस निषिधिकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९२८ पृ० ४७]

५४५

कम्मनहल्लि (मैसूर)

कन्नड

१ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलांछन जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जि

२ श्रीमति मूलसघ सघोद्भवे शुभे देशीगणे

३ स्याद्वादारिनगाशनि कैवल्यजन्मावनि.

४ भयचन्द्रकरणा कलियुगे

५ बुल्लप शोभते

६ जिनपदसेवेयोलुचित्तदानदोलु यिन्तु सुख

७ जिनेश्वरनाम मनदोल् बुल्लप

८ प्रभवसवत्सर देवाल

९ माडिसि (।) हारदानक्क

[यह लेख बहुत घिस गया है। प्रभवसवत्सरमें बुल्लप-द्वारा किसी मन्दिर-निर्माणका तथा उसमें आहारदानके लिए कुछ व्यवस्थाका इसमें उल्लेख है। मूलसघ देशीगणके अभयचन्द्र आचार्यका भी उल्लेख हुआ है।]

[ए० रि० मै० १९२८ पृ० ८७]

५४६

गोणिबीड (मैसूर)

कन्नड

१ स्वस्ति श्री- २ मतु अ-

३ नन्तन उ- ४ धापनेय

५ चउवीस तीर्थंक ६ र प्रति-
७ मे मंगल

[यह चौवीसतीर्थंकरमूर्ति अनन्तव्रतके उद्यापनके समय स्थापित की गयी थी। इस समय वन्नि महाकाली मन्दिरमें सुनारों-द्वारा इसकी पूजा की जाती है।]

[ए० रि० मै० १९२७ पृ० ७४]

५४७

कल्लहल्लि (मैसूर)

कन्नड

१ स्वस्ति श्रीमूलसंग देसिगण पुस्तकगत्स कुण्डकुन्दान्ववायं.... श्रीजयदेवभ-
२ ट्टारकदेवर प्रियसिस्यरु श्रीअनन्तवीर्यदेवर प्रियगुड्डगलु जीय-
३ गौड मल्लिगौडन मग मुद्दिगौडन मग राय-
४ गौड माडिसिद आदिपरमेश्वरप्रतिमेश्वररु मंगल म-
५ हाश्री श्री श्री रूवारि बूपोजन मग रूवारि नागोज माडिद

[इस लेखमें देसिगणके जयदेवभट्टारकके शिष्य अनन्तवीर्यदेवके शिष्य रायगौड-द्वारा आदितीर्थकरकी मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। यह मूर्ति रूवारि बूपोजके पुत्र रूवारि नागोजने उत्कीर्ण की थी।]

[ए० रि० मै० १९२५ पृ० ९३]

५४८-५५६

तंगले (मैसूर)

कन्नड

[यहाँ एक शिलाखण्डपर कुछ मुनियोंकी मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं तथा उनके नीचे इस प्रकार नाम दिये है – १ नमोर्हते अजितकीर्तिगलु २

देवनन्दिव्रतिगलु ३ गुणसागरभटारकरु ४ कीर्तिसागरभटाररु ५ अजितसेन-भटारकरु ६ प्रभाचन्द्रदेवर ७ विमलगुणव्रतिगलु ८ अजितसेनभटाररु ९ शुभचन्द्ररु ।]

[ए० रि० मै० १९२५ पृ० ५१]

५५७

कनकरायनगुड्ड (मैसूर)

कन्नड

१ श्रीकोण्डय्यसेट्टियर् २ मूलस्थानबसदिय स्था-

३ नक्के　कन्तियर मगल् ४ बिजयक्क कोट्ट मण्णु

५ मू-

[इस लेखमें कोण्डय्य सेट्टि-द्वारा निर्मित मूलस्थान जिनालयके लिए विजयक्का-द्वारा कुछ भूमि दान दी जानेका उल्लेख है ।]

[ए० रि० मै० १९२५ पृ० ३८]

५५८

हुलदेनहल्लि (मैसूर)

कन्नड

१ परमेश्वर पृथ्वीराज्य—

२ रमारपुर बूरबेल्लिय—

३ योल्कट्टि क्लिगगकेरे -

४ नन्दियडिगल् पडेद्रातद—

५ र माक्षि मिद्दिलवड्डु तोरेदे—

६ पालु अरगोल केरेय केलग—

७ ण देसे पलु मने तार इदके सा—

८ वत्तर वेक्कलूनाड मूलपत्ताल द--

[इस लेखका ऊपरका और दाहिना भाग टूटा है। नन्दियडिगल् आचार्यको कुछ भूमि दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९२६ पृ० ८३]

५५९

तोललु (मैसूर)

कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादा-
२ मोघलांछनं जीयात् त्रैलोक्यना-
३ थस्य शासनं जिनशासनं। स्वस्ति यमनि-
४ यमस्वाध्यायगुणसम्पन्नरप्प अभयच-
५ न्द्रदेवर सर्गगानिगलाद् परोक्ष-
६ वनमागल् पद्मावतियक्क माडिसिद् साम-
७ नं ॥ कोवेसनागिरद् वसदियं माडि-
८ सिदरु देवर मनेय परिसूत्रद् गद्दुं कहि-
९ चिसिदरु मनेयं माडि नडुम्बरनुर्म नट-
१० रु इनिसक्कं चिक्कि पूजिसिद् गद्याणवेप्प-
११ तु। इन्तप्पुदक्के साक्षि मुद्दगुण्डनु माम-
१२ गवुण्डनुं तम्मडिय''''रंरु। विट्टियणनुं ने-
१३ मणनुं ईस्तानकोटेयरु।

[इस लेखमें कहा है कि आचार्य अभयचन्द्रकी मृत्यु होनेपर उनकी शिष्या पद्मावतियक्काने एक अधूरे जिनमन्दिरको पूर्ण किया। इस कार्यमें ७० गद्याण खर्च हुए। इस मन्दिरके व्यवस्थापक विट्टियण तथा नेमण थे। मुद्दगवुण्ड तथा मामगवुण्ड इसके साक्षी थे।]

[ए० रि० मै० १९२६ पृ० ४२]

५६०-५६१

यलवट्टि (जि० धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यहाँ दो लेख हैं । एकमे मूलसघ-देशीयगणके सकलचन्द्रदेवके गृहस्थ शिष्य सेनबोव केतय्यकी मृत्युका उल्लेख है । इसकी तिथि मार्गशिर शु० ८ शुक्रवार, आनन्द सवत्सर ऐसी दी है ।

दूसरे लेखमे मूलसघ-देशीगण-पोस्तक गच्छ — कोण्डकुन्दान्वयके देवकीर्ति भट्टारकके एक शिष्यकी मृत्युका उल्लेख है । इसकी तिथि श्रावण कृ० ९ रविवार, साधारण सवत्सर ऐसी है ।]

(रि० सा० ए० १९४४-४५ एफ् ६०-६१)

५६२

शावल (जि० धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें देशीयगणके बालचन्द्र त्रैविद्यदेवके एक गृहस्थ शिष्यकी मृत्युका उल्लेख है । मार्गशिर कृ० ३, व्यय सवत्सर ऐसी तिथि दी है ।]

(रि० सा० ए० १९४४-४५ एफ् ५४)

५६३

दानवुलपाडु (जि० कडप्पा, आन्ध्र)

कन्नड

[इस लेखमें कनककीर्तिदेवके शिष्यकी — जो पेनुगोण्डका एक व्यापारी था — निसिधिका उल्लेख है ।]

(इ० म० कडप्पा १४९)

५६४

मुल्कि (दक्षिण कनडा, मैसूर)

कन्नड

[जैन बसदिके आगे मानस्तम्भकी दक्षिण बाजूपर। इसमे तीर्थकरों-की प्रशंसामे पांच श्लोक लिखे गये है।]

(इ० म० दक्षिण कनडा ९३)

५६५

मद्रास (म्यूजियम)

कन्नड

[यह लेख शान्तिनाथकी मूर्तिके पादपीठपर है। महाप्रधान ब्रह्देवण-द्वारा स्थापित किये हुए येरग जिनालयमे यह मूर्ति थी। मूलसंघ, कुण्ड-कुन्दान्वय, काणूरगण, तिन्त्रिणि गच्छके महामण्डलाचार्य सकलभद्र भट्टारक ब्रह्देवणके गुरु थे।]

(इ० म० मद्रास ३२४)

५६६

मद्रास (म्युजियम)

कन्नड व संस्कृत

[इस लेखमें साहित्यप्रिय साल्व-राजा द्वारा शास्त्रोक्त रीतिसे शान्ति-नायकी मूर्तिके निर्माणका तथा स्थापनाका निर्देश है।]

(इ० म० मद्रास ३२५)

५६७

कोगलि (बेल्लारी, मैसूर)

कन्नड

जैन मन्दिरमें एक मूर्तिके पादपीठपर

[चैत्र शु० १४, रविवार, परिधावि संवत्सरमें अनन्तवीर्यदेवके शिष्य ओबेयमसेट्टि-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापनाका इस लेखमें निर्देश है।]

(इ० म० बेल्लारी १९०)

५६८

कीलक्कुडि (मदुरा, मद्रास)

तमिल

[गुहामें जैन मूर्तिके पादपीठपर।

गुणसेनदेवके शिष्य वर्धमानव पण्डितके शिष्य गुणसेनपेरियडिगल-द्वारा यह मूर्ति खुदवायी गयी ऐसा इस लेखमें निर्देश है। यहाँकी अन्य दो मूर्तियोंके लेखोंमें भी गुणसेनदेवका उल्लेख है।]

[इ० म० मदुरा ३९]

५६९

कुण्डघाट (जि० मोंघीर, बिहार)

संस्कृत–गौडीय

जैन मन्दिरमें महावीरमूर्तिके पादपीठपर

[इस लेखमें वीरेश्वरन-द्वारा इस मूर्तिके दिये जानेका निर्देश है।]

[रि० इ० ए० १९५०–५१ क्र० ९]

५७०

पेनुकोण्ड (जि० अनन्तपुर, आन्ध्र)

कन्नड

पार्श्वनाथमन्दिरके समीप एक कुँएके पास शिलापर

[यह जिनभूषणभट्टारकदेवके शिष्य नागय्यका समाधि लेख है।]

[इ० म० अनन्तपुर १६७]

५७१

कायाम्पट्टि (मद्रास)

तमिल

[यह लेख शमणर् तिडल् नामक भग्न जिनमन्दिरके पास है। जयवीर पेरिलमैयान्-द्वारा तिरुवेणायिल् स्थित ऐन्नूरुवपेरुम्पल्लि (जिन-मन्दिर) के आगे फर्श बनवानेका इसमें उल्लेख है।]

[इ० पु० क्र० १०८३ पृ० १५१]

५७२-५७३

मलैयकोविल् (मद्रास)

तमिल

[इस लेखमें जैन आचार्य गुणसेनका नाम दिया है। उनके परवा-दिनिदा यह उपाधि है। स्थानीय गुहामन्दिरके पास पाषाणपर यह लेख उत्कीर्ण है। ऐसा ही लेख तिरुमय्यमुके सत्यगिरीश्वरमन्दिरके एक पाषाण-पर भी है।]

[इ० पु० क्र० ४-५ पृ० १]

५७४

तेणिमलै (मद्रास)

तमिल

[यह लेख एक पाषाणपर उत्कीर्ण जिनमूर्तिके नीचे है। यह मूर्ति (तिरुमेणि) श्रिवल्ल उदण सेरवोट्टि-द्वारा उत्कीर्ण थी ऐसा लेखमें कहा है।]

[इ० पु० क्र० १० पृ० १]

५७५

पूण्डि (जि० उत्तर अर्काट, मद्रास)

तमिल

पार्श्वनाथ जैन मन्दिरके पश्चिमी दीवालपर

[इस लेखमें शम्बुवरायका उल्लेख है। वीरवीरजिनालय नामक मन्दिरकी स्थापनाका तथा उसे एक गाव दान देनेका उल्लेख इस लेखमें है।]

[इ० म० उत्तर अर्काट २१०]

५७६

मूडबिदुरे (मैसूर)

कन्नड

[इस ताम्रपत्रके तीन भाग हैं। पहला भाग वृषभ २२, गुरुवार, तारण संवत्सरके दिनका है। इसमें चन्द्रकीर्तिदेव-द्वारा २४ तीर्थंकरोंकी पूजाके लिए २०० होन्नु अर्पण किये जानेका उल्लेख है। यह रकम विष्णु कलुम्बरको कर्ज दी गयी थी। उसने अपनी कुछ जमीन गिरवी रखकर इस रकमके व्याजके रूपमें १६ मन चावल देना स्वीकार किया था। दूसरा भाग कर्क ९, बुधवार, स्वर्भानु संवत्सरके दिनका है। इसमें श्रीधर पंडि-

कोदि-द्वारा ज़मीन गिरवी रखकर २१०० वीररायफण क़र्ज प्राप्त करनेका उल्लेख है। इसके व्याजके रूपमे २८ मुडे चावल देना स्वीकार किया था। इसका उपयोग गेरुसोप्पेकी ललितादेवी-द्वारा स्थापित वसदिमें पूजाके लिए होना था। तीसरा भाग मेष १, रविवार, नन्दन संवत्सरके दिनका है। इसमें तीन बन्धुओं-द्वारा पार्श्वनाथवस्तिसे कुछ क़र्ज़ लेनेका तथा उस-पर कुछ निश्चित रक़म व्याज देनेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ए ९]

५७७

मूडविदुरे (मैसूर)

कन्नड

[इस ताम्रपत्र-लेखमें चारुकीर्ति पण्डितदेव-द्वारा निर्मित चण्डोग्र पार्श्वनाथवसदिके लिए कर्बरवलिके वर्मनन्द तथा उनके बन्धु कुंगिय वर्मिसेट्टि-द्वारा ७०१ गद्याण दान दिये जानेका निर्देश है। लेखकी तिथि वृषभ १५, रविवार, दुर्मुखि संवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ए ७]

५७८

निट्टूर (मैसूर)

कन्नड

१ चित्रभानु २ संवत्सर ३ द फाल्गुण
४ द शुद्ध ८ ५ यु सोम ६ वार बोम्मण्ण
७ गलु स्वर्गस्त ८ राद निषिधि

[इस निषिधिलेखमे फाल्गुन शु० ८, चित्रभानु संवत्सरके दिन बोम्मण्णके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९३० पृ० २५७]

५७९

तल्लूर (मैसूर)

कन्नड

१ भावसवत्सरद श्राव-	२ ण शुद्ध त्रयोदसि आ-
३ दिवारदंदु स्वस्ति	४ श्रीमद् अजितेश्व-
५ रदेवर महाजन	६ वागि
७ ˙ केशवदेवर बम्म-	८ व्वे तोटदिं
९ वागि कम्म २	१० कोण्डु
११ येनुल्ल	

[यह लेख काफी अस्पष्ट हुआ है। श्रावण शु० १३, रविवार, भावसंवत्सरके दिन किसी ग्रामके महाजनों द्वारा अजितेश्वर देवके मन्दिरके लिए कुछ भूमि दान दी गयी ऐसा इसमें उल्लेख है। केशवदेवकी कन्या बम्मव्वेके उद्यानके समीपकी २ कम्म जमीन भी इस दानमें सम्मिलित थी।]

[ए० रि० मै० १९३० पृ० ११३]

५८०

अंबले (मैसूर)

कन्नड

१ जिनचद्रदेवर　　२ मुडि(पि) ˙

[इस छोटे से लेखमें जिनचन्द्रदेवके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९३० पृ० १३३]

५८१-५८४

हैदराबाद (म्युजियम) (आन्ध्र)

संस्कृत-कन्नड

[ये चार मूर्तिलेख है जो घिसनेसे अस्पष्ट हुए है । एकमें मूलसंघके किसी व्यक्तिका उल्लेख है । दूसरेमें एक मूर्तिकी स्थापना फाल्गुन शु० १५, बुधवार, शर्वरी संवत्सरके दिन किये जानेका उल्लेख है । तीसरेमें पण्डित मल्लिसेनका उल्लेख है । चौथेमे नेमिचन्द्रदेवके शिष्य कुमार मायिदेव महामण्डलेश्वर-द्वारा पार्श्वनाथ मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । इन लेखोंका समय निश्चित नही है ।]

[रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० १४९, १५०, १५२, १५४]

५८५

भोसे (सातारा, महाराष्ट्र)

कन्नड

[इस लेखमें मूलसंघ-काणूरगणके वामनन्दि व्रतीश्वरका उल्लेख है । लेख बहुत घिस गया है । समय निश्चित नहीं है ।]

[रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० २४३]

५८६

बेलगामे (मैसूर)

संस्कृत-कन्नड

१ गणप्राच्यमहीभृदर्कः श्री-
२ भव्याब्धिवर्धिष्णुशशांकमूर्तिः

[यह लेख एक जिनमूर्तिके पादपीठपर है और इसका आधा भाग अस्पष्ट हो जानेसे अधूरा हुआ है। इसमें किसी गणके एक आचार्यका उल्लेख रहा है।]

[ए० रि० मै० १९२९ पृ० १२६]

५८७

कारकळ (मैसूर)

संस्कृत

[यह लेख गोम्मट मूर्तिके सम्मुख ब्रह्मस्तम्भके समीप उत्कीर्ण पादुकाओंके पास है। लिपि आधुनिक है –
(मूल-) श्रीगणधरपादम।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० ३३८ पृ० ५२]

५८८

कोप्पल (रायचूर, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें चावय्य-द्वारा जटासिंगनन्दि आचार्यकी पादुकाओंकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १६१ पृ० ४१]

५८९

बादगट्टि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख बोम्मिसेट्टिके समाधिमरणका स्मारक है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० १६९ पृ० २२]

५९०
बालेहल्लि (धारवाड, मैसूर)
कन्नड

[इस लेखमे मार्गशिर व० १०, शुक्रवार, शुभकृत् संवत्सरके दिन माधवचन्द्रदेवके शिष्य नागगौडकी पत्नी सायिगवुडिके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० १९१ पृ० २३]

५९१
गुडुगुडि (धारवाड, मैसूर)
कन्नड

[यह लेख सरस्त (सूरस्त) गणके किसी आचार्यकी शिष्या नागवेके समाधिमरणका स्मारक है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २०० पृ० २४]

५९२
मन्तगि (धारवाड, मैसूर)
कन्नड

[यह लेख टूटा है। हरिकेसरिदेव, हरिकान्तदेव तथा तोयिमरस द्वारा विभिन्न वसदियोंको दिये गये भूमिदानोंका इसमे उल्लेख है। इनमे वंकापुरकी उम्पंटाय्चण वसदि तथा कोन्तिमहादेविय वसदिका भी समावेश है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २०८ पृ० २५]

५९३

मन्तगि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें फाल्गुन – ? – बुधवार, सर्वधारि संवत्सरके दिन सूरस्तगणके सहस्रकीर्तिदेवके शिष्य तथा मल्लिगुण्डके महाप्रभु विठगौडके समाधिमरणका उल्लेख है ।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २१० पृ० २५]

५९४

येलबर्गि (रायचूर, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख एक भग्न मूर्तिके पादपीठपर है। इसमें मूलसंघ, सुरस्तगण तथा कन्निसेट्टिका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० २२५ पृ० ३९]

५९५

तिरुप्परकुण्डम् (मदुरै, मद्रास)

तमिल (?) – ब्राह्मी

[यहाँ पहाडोंपर दो गुहाओंमें निम्न पंक्तियाँ खुदी हैं। ये गुहाएँ जैन श्रमणोंके लिए उत्कीर्ण की गयी थीं –

(१) न य　(२) मा ता ये व

(३) अ न तु वा ण को टु पि ता वा ण]

[रि० इ० ए० १९५१-५२ क्र० १४०-४२ पृ० २२]

५९६

देवत्तूर (मदुरा, मद्रास)

वट्टेलुत्तु

[यह लेख वहुत अस्पष्ट है। इसमे किसी पल्लि (जैन वसति) तथा तुंग पल्लवरैयन्का उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३१-३२ क्र० ५९ पृ० १२]

५९७

अक्कूर (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख वीरभद्र मन्दिरकी एक भग्न मूर्तिके पादपीठपर है। इसमें शान्तिनाथ, सोमदेव तथा वसुधाकरदेवकी स्तुति की है। सातोज-रामोज-द्वारा इस वसदिके निर्माणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई० ७ पृ० ९२]

५९८

हावेरी (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें मादरस-द्वारा जिनमन्दिरकी सीढ़ियाँ वनवाये जानेका उल्लेख है। इस समय यह लेख वीरभद्र मन्दिरमे लगा है।]

[रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई० ९६ पृ० १०१]

५९९-६०२

इंगलेश्वर (विजापूर, मैसूर)

कन्नड

[ये चार समाधिलेख हैं। पहलेकी तिथि तारण, अमावास्या, शुक्रवार यह है। यह सत्यण्णकी समाधि है। दूसरा लेख अग्गलसेट्टिके पुत्र शान्ति-

सेट्टिकी समाधिपर है। तिथि आंगिर संवत्सर, चैत्र १ सोमवार यह है। तीसरी समाधि शान्तिदेव मुनिकी है। तिथि प्रमादि संवत्सर, मास व ६, शुक्रवार यह है। चौथी समाधि माघनन्दि मुनिपकी है। तिथि श्रावण शु० ११, शुक्रवार, युव संवत्सर है।]

[रि० सा० ए० १९३०-३१ क्र० ई १५ १८ पृ० ८५]

६०३

कागिनेल्लि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख एक स्तम्भपर है। इसमें दानविनोद वैरिनारायण लेंकमसण आदित्यवर्माकी स्तुति की है तथा उसके द्वारा काणूरगण, मेपपाषाणगच्छकी बसदिमें एक स्तम्भकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३३ ३४ क्र० ई० २८ पृ० १२१]

६०४

माकनूर (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें खर संवत्सर, कार्तिक शु० (?), शुक्रवारके दिन मूल संघ-सूरस्थगणके नन्दिभट्टारकके शिष्य बोप्पगौडके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० ई ५० पृ० १५१]

६०५

लक्कुण्डि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख एक भग्न जिनमूर्तिके पादपीठपर है। इसकी स्थापना त्रैविद्य नरेन्द्रसेनके शिष्य वैश्य जेमिसेट्टिकी कन्या राजव्वेने की थी।]

[रि० सा० इ० १९३४-३५ क्र० ई ७५ पृ० १५४]

६०६
देवूर (विजापूर, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें मूलसंघ-देसिगण-इंगलेश्वर वलिके नेमिदेव आचार्यके शिष्य सिगिसेट्टि, देविसेट्टि, पदुमव्वे तथा सिगेयके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३६-३७ क्र० ई २२ पृ० १८३]

६०७
शिरूर (जमखंडी, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें यापनीय संघ-वृक्षमूलगणके कुसुमजिनालयमें कालिसेट्टि-द्वारा पार्श्वनाथमूर्तिकी स्थापनाका वर्णन है।]

[रि० सा० ए० १९३८-३९ क्र० ई ९८ पृ० २१९]

६०८
इडैयालम् (द० अर्काट, मद्रास)

तमिल

[यहाँ जैन मन्दिरके समीप पाषाणोंपर चरणपादुकाएँ उत्कीर्ण हैं तथा निम्न नाम खुदे हैं —

(१) मल्लिषेणमुनीश्वर (२) विमलजिनदेव
(३) अप्पाण्डार् नायिनार् (४) इडैयालम्के जिनदेवर्]

[रि० सा० ए० १९३८-३९ क्र० ३११-१४ पृ० ४२]

६०९

तोरनगल्लु (बेल्लारी, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख अकलंकदेवके शिष्य बयिचिसेट्टिके समाधिमरणका स्मारक है।]

[रि० सा० ए० १९२२-२३ क्र० ७२९ पृ० ५१]

६१०

लोकिकेरे (बेल्लारी, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख श्री रत्नभूषण भट्टारकके प्रिय शिष्य लोक्कियकेरे निवासी भरगोण्डके समाधिमरणका स्मारक है।]

[रि० सा० ए० १९२४-२५ क्र० २९९ पृ० ४९]

६११-६१२

गरग (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख यापनीय संघ-कुमुदिगणके शान्तिवीरदेवके समाधिमरणका स्मारक है। तिथि श्रावण व० ४, गुरुवार, विकृति संवत्सर ऐसी दी है। यहींके एक अन्य लेखमें भी यापनीय संघ-कुमुदिगणका उल्लेख है। अन्य विवरण लुप्त हुआ है।]

[रि० सा० ए० १९२५-२६ क्र० ४४१-४४२ पृ० ७६]

६१३

कुमठ (उत्तर कनडा, मैसूर)

कन्नड

[स्थानीय जैन वसदिमें पार्श्वनाथमूर्तिके पादपीठपर यह लेख है। मूलसंघ, सूरस्तगण, चित्रकूट गच्छके मुकुन्ददेव-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापना की गयी थी।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २३७ पृ० २७]

६१४

कुमठ (उत्तर कनडा, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें पुष्य शु० (?) क्रोधन संवत्सरके दिन क्राणूरगणके गंजिय मलधारिदेवकी शिष्या कंचलदेवीके समाधिमरणका उल्लेख है। इसके पतिका नाम त्रिभुवनवीर था तथा कदम्ब राजाओंकी उपाधियाँ उसे दी गयी हैं।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २४२ पृ० २८]

६१५

रायदुर्ग (वेल्लारी, मैसूर)

कन्नड

[यहाँके निसिधि लेखोंमें निम्न व्यक्तियोंके नाम है – मूलसंघके चन्द्रभूति, यापनीय संघके चन्द्रेन्द्र, बादय्य तथा तम्मण्ण। एक लेखपर माघ शु० १ सोमवार, प्रमाथि संवत्सर यह तिथि दी है।]

[रि० सा० ए० १९१३-१४ क्र० १०९ पृ० १२]

६१६-६१७

कोगलि (बेल्लारी, मैसूर)

कन्नड

[इस मूर्तिलेखमें अनन्तवीर्यदेवके शिष्य ओडेयमसेट्टि-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। यहाँके एक स्तम्भपर जिनमूर्तियोंके अभिषेकके लिए कई व्यक्तियों-द्वारा दिये गये दानोंका उल्लेख है। प्रथम लेखकी तिथि चैत्र शु० १४ रविवार, परिधावि संवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० सा० ए० १९१४ १५ क्र० ५२०-२१ पृ० ५३]

६१८

मुलगुन्द (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें देसिगण-हनसोगे अन्वयके ललितकीर्ति भट्टारकके शिष्य सहस्रकीर्तिकी मृत्युका उल्लेख है। मुस्लिमों-द्वारा पार्श्वनाथबसदिपर आक्रमणके समय उनकी मृत्यु हुई थी।]

[रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई ९२ पृ० ८]

६१९

कलकेरि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें मूलसंघ-काणूरगण-तिन्त्रिणी गच्छके भानुकीर्ति सिद्धान्तदेवके शिष्य हलिगावुण्ड-द्वारा कल्केरेके अकलंकचन्द्रभट्टारकके लिए एक बसदिके निर्माण तथा पार्श्वनाथमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२७-२८ क्र० ई ५१ पृ० २४]

६२०

कम्मरचोडु (बेल्लारी, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें पद्मप्रभमलधारिदेवके प्रियशिष्य महावड्डव्यवहारि रायर-सेट्टिकी पत्नी चन्दव्वे-द्वारा इस जिनमूर्तिके जीर्णोद्धारका वर्णन है। इस समय यह मूर्ति हिन्दू देवताके रूपमें पूजी जाती है।]

[रि० सा० ए० १९१५-१६ क्र० ५६० पृ० ५५]

६२१-६२२

कोट्टशीवरम् (अनन्तपुर, आन्ध्र)

कन्नड

[यह लेख एक स्तम्भपर है। काणूर गणके पुष्पनन्दि मलधारिदेवके शिष्य दावणन्दि आचार्य-द्वारा एक बसदिके निर्माणका इसमें उल्लेख है। यहींके एक अन्य लेखमें काणूरगणके (?) आचार्यकी शिष्या इरुंगोल राजाकी रानी आलपदेवी-द्वारा इस बसदिकी रक्षाका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९१६-१७ क्र० २०-२१ पृ० ७२]

६२३-६२९

अमरापुरम् (अनन्तपुर, आन्ध्र)

कन्नड

[यहांके निसिधिलेखोंमें निम्न व्यक्तियोंके नाम है—(१) प्रभाचन्द्र-देवके शिष्य कोम्मसेट्टि (२) पोतोज तथा उसका पुत्र सयवि मारय (३) मूलसंघ-देसियगणके बालेन्दु मलधारिदेवके शिष्य बिरूपय तथा मारय (४) मूलसंघ-सेनगणके प्रसिद्ध वादि भावसेन त्रैविद्यचक्रवर्ति (५) इंगलेश्वरके प्रभाचन्द्र भट्टारकके शिष्य बोम्मिसेट्टियर बाचय्य (६) बेरिसेट्टिके पुत्र सम्बिसेट्टि। यहांके एक अन्य लेखमें इंगलेश्वरके त्रिभुवनकीर्ति राउलके शिष्य देसियगणके बालेन्दु मलधारिदेव-द्वारा एक बसदिके निर्माणका उल्लेख है।] [रि० सा० ए० १९१६-१७ क्र० ४१-४७ पृ० ७४]

६३०

तम्मदहल्लि (अनन्तपुर, आन्ध्र)

कन्नड

[इस लेखमें मूलसंघ देसियगणके चारुकीर्ति भट्टारकके शिष्य चन्द्राक भट्टारकके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९१६-१७ क्र० ४८ पृ० ७४]

६३१

रामपुरम् (अनन्तपुर, आन्ध्र)

कन्नड

[इस लेखमे मूलसंघ-देसियगणके देवचन्द्रदेवके शिष्य बेट्टिसेट्टिके पुत्र कृष्णसेट्टिके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९१७-१८ क्र० ७१४ पृ० ७४]

६३२

रामतीर्थम् (विजगापटम्, आन्ध्र)

तेलुगु

[यह लेख एक भग्नजिनमूर्तिके पादपीठपर है। ओगेरमार्गस्थित चनुद (ओ) लु निवासी म (मि) सेट्टि-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापना हुई थी।]

[रि० सा० ए० १९१७-१८ क्र० ८३२ पृ० ८५]

६३३

वेलूर (द० अर्काट, मद्रास)

तमिल

[इस लेखमें जयसेन द्वारा इस जिनमन्दिरके जीर्णोद्धारका उल्लेख है। लिपि उत्तरकालीन है।]

[रि० सा० ए० १९१८-१९ क्र० १२४ पृ०५९]

६३४
निडुगल (मैसूर)
कन्नड

[इस लेखमे वेल्लुम्बट्टेके भव्यों-द्वारा—जो मूलसंघदेसिगणके नेमिचन्द्र भट्टारकके शिष्य थे—पार्श्वनाथ मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है ।]

[ए० रि० मै० १९१८ पृ० ४५]

६३५-६३६
नेल्लिकार (द० कनडा, मैसूर)
संस्कृत-कन्नड

[यह लेख स्थानीय अनन्तनाथवसदिमे है । इसके मण्डपका निर्माण मंजण कोन्नभूप-द्वारा किया गया ऐसा कहा है । यहींके दूसरे लेखमें इस मन्दिरका निर्माण ललितकीर्ति भट्टारकदेवके शिष्य कल्याणकीर्तिदेवकी सम्पत्तिसे देवचन्द्र-द्वारा किये जानेका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५२०-५२१ पृ० ४८-४९]

६३७
मुनुगोडु (गुण्टूर, आन्ध्र)
तेलुगु

[इस लेखमें विल्लम नायक-द्वारा पृथिवीतिलकवसदिके लिए कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० १९ पृ० ६]

६३८-६३९
लक्कुण्डि (धारवाड, मैसूर)
कन्नड

[ये दो लेख है । एकमें मूलसंघ—देवगणके शंखदेव-द्वारा एक जिन-

मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। दूसरेमें वसुधैकबान्धवजिनालयके त्रिभुवन-तिलक शान्तिनाथदेवके लिए एक दानशालाके समर्पणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई ३१, ३४ पृ० ३]

६४०

जावूर (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें बोचिसेट्टि-द्वारा सकलचन्द्र भट्टारकको जावूर ग्रामके पुन दानका उल्लेख है। नविलगुन्दमें जयकीर्तिदेव-द्वारा निर्मित ज्वाला-मालिनीवसदिके लिए मल्लिदेवने पहले यह गाँव अपण किया था।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई २२८ पृ० ५५]

६४१

कोमरगोप (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें त्रिभुनतिलक जिनालयमें आहारदानादिके लिए बालचन्द्र सिद्धान्तदेवके शिष्य पेर्गडे नाभियण्णकी पत्नी चामिकब्बे-द्वारा सुवर्णदानका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई २३० पृ० ५५]

६४२-६५०

गुण्डकेर्जिगि (बिजापूर मैसूर)

कन्नड

[यहाँ भग्न मूर्ति-पाषाणोंपर निम्न नाम खुदे है। (१) देशियगण-इंगलेश्वर (बलि) के चन्द्रकीर्तिदेव तथा जयकीर्तिदेव (२) अपराजिता देवी (३) वृषभयक्ष (४) पातालयक्ष (५) कुबेरयक्ष (६) महामानसीयक्षी (७) अनन्तमती (८) चक्रेश्वरी (९) (शा) न्तनाथस्वामी]

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ई १६-१७ पृ० ६६]

६५१
हुलूर (विजापूर)
कन्नड

[इस लेखमें कण्डूर गणकी एक वसदिके लिए पुलुवरणिके महाजनों-द्वारा भूमिदानका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२९-३० पृ० ६७ क्र० ई २९]

६५२
तम्मदहड्डि (विजापूर, मैसूर)
कन्नड

[इस निसिधि लेखमें इंगलेश्वरतीर्थकी वसदिके आचार्य देवचन्द्र भट्टारकके शिष्य बोगगावुण्डके समाधिमरणका उल्लेख है।

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ई ७० पृ० ६९]

६५३
तुम्बिगि (विजापूर, मैसूर)
कन्नड

[यह लेख पुष्य शु० १०, सोमवार, ईश्वरसंवत्सर, राज्यवर्ष ८ का है। राजाका नाम लुप्त हुआ है। इस समय बोचुवनायककी निसिधिकी स्थापना की गयी थी तथा तदर्थ पार्श्वदेवको कुछ भूमि अर्पित की गयी थी।]

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ई० ७४ पृ० ६९]

६५४
हविन हिप्पर्गि (विजापूर, मैसूर)
कन्नड

[इस लेखमें हवु रेमरस तथा रेचरस-द्वारा ऋषियोंके आहारदानके लिए देवचन्द्र भट्टारकको कुछ भूमि दान देनेका उल्लेख है। इंगलेश्वरके देवकीर्ति भट्टारकका भी उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ई ९१ पृ० ७१]

परिशिष्ट १

श्वेताम्बर लेखोंकी सूचना

[पहले संग्रहकी पद्धतिके अनुसार हम यहाँ श्वेताम्बर सम्प्रदायसे सम्बद्ध लेखोंकी सूचना दे रहे हैं। इस सूचीमें सरकारी प्रकाशनोंमें प्रकाशित लेखोंका अन्तर्भाव है। श्री० पूरणचन्द नाहरका प्राचीन जैनलेखसंग्रह, श्री० अगरचन्द नाहटाका बीकानेर जैनलेखसंग्रह, आदि ग्रन्थोंमें प्राय श्वेताम्बर सम्प्रदायके ही लेख हैं। इन लेखोंकी संख्या ३५००से ऊपर है। इनका प्रस्तुत सूचीमें उल्लेख आवश्यक नहीं समझा गया।]

१ अकोटा (बडोदा, गुजरात) – ८वीं सदी

रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० १६–१९

२ अकोटा – ९वीं–१०वीं सदी

रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० २०–३५ तथा ३९–४८

३ बडोदा (गुजरात)–सं० १०९३=सन् १०३७

रि० इ० ए० १९५३–५४ क्र० १६९–७१

४ भरतपुर (राजस्थान)–सं० ११०९=सन् १०५२

रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० ३८८, ३९४

५ आबू (राजस्थान)–सं० ११११=सन् १०६३

ए० इ० ९ पृ० १४८

६ सिरोही (राजस्थान) सं० ११३५=सन् १०७९

रि० आ० स० १९२१–२२ पृ० ११९

७ लाडोल (गुजरात) –सं० ११४०=सन् १०८४

रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० ए २

८ लाढोल–सं० ११५६ = सन् ११००

रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० ए २

९ उदयपुर (राजस्थान)–सं० ११७६ = सन् ११२०

रि० आ० स० १९३०–३४ पृ० २३७

१० नाडोल (राजस्थान)–सं० १२१२ = सन् ११५७

इ० ए० ४१ पृ० २०२

११ लखनऊ (उत्तरप्रदेश)–सं० १२१६ = सन् ११६०

रि० आ० स० १९१३–१४ पृ० २९

१२ जालोर (राजस्थान)–सं० १२२१ = सन् ११६५

ए० इं० ११ पृ० ५४

१३ मथुरा (उत्तरप्रदेश) सं० १२३४ = सन् ११७८

रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० ५२६

१४ मद्रेशर (गुजरात)–सं० १३१५ = सन् १२५९

रि० इ० ए० १९५४–५५ क्र० १६९

१५ मद्रेशर–सं० १३२३ = सन् १२६७

रि० इ० ए० १९५४–५५ क्र० १७०

१६ जालोर (राजस्थान)–सं० १३३१ = सन् १२७५

ए० इं० ३३ पृ० ४६

१७ आमरण (राजस्थान)–सं० १३३३ = सन् १२७७

पूना ओरिएण्टलिस्ट ३ पृ० २५

१८ चितोड (राजस्थान)–सं० १३३४ = सन् १२७८

रि० इ० ए० १९५३–५४ क्र० २३२–२३३

१९ उदयपुर (राजस्थान)–सं० १३३५ = सन् १२७९

रि० इ० ए० १९५४–५५ क्र० ४८५

२० वम्बई—सं० १३५६ = सन् १३००

रि० इ० ए० १९५३–५४ क्र० २०१–३

२१ उदयपुर—१३वीं सदी

रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ५०७

२२ खंभात (गुजरात)—सं० १४२०से सं० १४६८=सन् १३६४से सन् १४१२

रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १५९-१९५

२३ आतरी (राजस्थान) सं० १४६८=सन् १४१२

रि० आ० स० १९२९-३० पृ० १८७

२४ मेड़ता (राजस्थान)—सं० १५०७से १६८७ =सन् १४५१से १६३१

रि० आ० स० १९०९-१० पृ० १३३

२५ ब्रिटिश म्यूजियम—सं०१५१५से १५८३ =सन् १४५९से सन् १५२७

रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ५३०-५३८

२६ सिरोही (राजस्थान)—सं० १५२४=सन् १४६८

रि० आ० स० १९२१-२२ पृ० ११९

२७ बरवई—सं० १५२५=सन् १४६९

रि० आ० स० १९३०-३४ पृ० २४९

२८ उदयपुर—सं० १५५६=सन् १५००

रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४८६

२९ मौगामा (राजस्थान)—सं० १५७१=सन् १५१५

रि० आ० स० १९२९-३० पृ० १८८

३० अलवर (राजस्थान)—सं० १५७३=सन् १५१७

रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ३८६

३१ अकबर—सं० १६२६=सन् १५७०

रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ३७८

२२ वैराट (राजस्थान)-शक १५०६ = सन् १५८७

रि० आ० स० १९०९-१० पृ० १३२

२३ अलवर—सं० १६४५ = सन् १५८९

रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ३७६

२४ लखनऊ—सं० १६५२ = सन् १५९६

रि० आ० स० १९१३-१४ पृ० २९

२५ भद्रेशर (गुजरात)-सं० १६५९ = सन् १६०२

रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १७०

२६ उदयपुर—सं० १६६२ = सन् १६०६

रि० आ० स० १९३०-३४ पृ० २३७

२७ भद्रेशर—सं० १९०५-१९३४ = सन् १८४८-१८७८

रि० इ० ए० १९५४-५५ पृ० ४२

■

परिशिष्ट २

जैनेतर लेखोंमे जैन व्यक्ति आदिके उल्लेख ।

(१) बेलगामे

कन्नड

सन् १२९४

[इस लेखमें यादव राजा रामचन्द्रके समय बल्लिगावेके भेरुण्डस्वामी-मन्दिरका उल्लेख है। इस मन्दिरके हेग्गडे पदपर वैद्य दासणकी स्थापना कर उसे कुछ भूमि अर्पित की गयी थी। इस भूमिमें प्रथमसेनबसदि (जिनमन्दिर) की कुछ भूमि भी शामिल कर दी गयी थी।]

[ए० रि० मै० १९२९ पृ० १२४]

(२-६) देवगेरी तथा कोल्लूर (जि० धारवाड, मैसूर)

(११वीं-१३वीं सदी)-कन्नड

पहला लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्ल (सोमेश्वर प्रथम) के राज्यकालका है। इनके अधीन बासवूर १४० प्रदेशमें जीमूतवाहन अन्वयमें उत्पन्न हुआ कलियम्मरस शासन कर रहा था। इसे सम्यक्त्व-चूडामणि तथा पद्मावतीलब्धवरप्रसाद ये विशेषण दिये हैं। इसने कोल्लूरके कलिदेवेश्वरके मन्दिरमें दीपदानके लिए कुछ दान दिया था। इस दानकी तिथि पौष शु० ५, शक ९६७, उत्तरायण संक्रांति थी।

दूसरे लेखकी तिथि शक ९९७, पौष शु० १४, उत्तरायण संक्रांति थी। इस समय चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्ल सोमेश्वर द्वितीयका राज्य चल रहा था। इसमें भी कलियम्मरसके शासनका उल्लेख है तथा देवगेरी-के काक्लेश्वर मन्दिरके लिए दण्डनायक वणामय्य द्वारा कुछ दान दिये

जानेका निर्देश है। इसी लेखके दूसरे भागमें उसी कुलके एक दूसरे कलियम्मरसका उल्लेख है जो चालुक्य सम्राट् भूलोकमल्ल सोमेश्वर तृतीयका सामन्त था। इसने सम्राट्के राज्यके ९वें वर्ष अर्थात् शक १०५६ में उक्त मन्दिरको कुछ दान दिया था। इस कलियम्मरसने माहेश्वर दीक्षा ग्रहण की थी।

तीसरे लेखमे उक्त कलियम्मरस (द्वितीय) का उल्लेख सम्राट् विक्रमादित्य (षष्ठ) के राज्यके दसवें वर्ष (सन् १०८५) मे किया है जब उसने कोलूरमे कुछ धार्मिक दान दिया था।

चौथा लेख सम्राट् विक्रमादित्य (षष्ठ) के राज्यके ४६वें वर्ष (स० ११२१) का है। इसका सामन्त हेर्माडियरस था जो उक्त कलियम्मरस (द्वितीय) का पुत्र था। इसने कोलूरमे त्रिभुवनेश्वर तथा भैरवके मन्दिरोंको कुछ दान दिया था। तथा माहेश्वर दीक्षा ग्रहण की थी।

पाँचवाँ लेख यादव राजा सिंघण (तेरहवी सदीका पूर्वार्ध) के राज्यकालका है। इसका सामन्त मल्लिदेवरस था जो उक्त जीमूतवाहन अन्वयमें उत्पन्न हुआ था। इसने कोल्लूरके क्षेत्रपाल मन्दिरको कुछ दान दिया था।

यहाँ द्रष्टव्य है कि कलियम्मरस (द्वितीय), हेर्माडियरस तथा मल्लिदेवरस शैव थे फिर भी उन्हे पद्मावतीलब्धवरप्रसाद यह पुराना विशेषण दिया है।

छठा लेख विक्रमादित्य (षष्ठ) के राज्यके ४थे वर्ष (सन् १०७९) का है। इसके अधीन नोलम्बवाडि तथा सान्तलिगे प्रदेशपर त्रैलोक्यमल्ल (जयसिंह तृतीय) शासन कर रहा था तथा वनवासि प्रदेशपर बलदेवय्यका शासन था। बलदेवय्यको जिनचरणकमलभृंग यह विशेषण दिया है। इसके अधीन कुछ करोंका उत्पन्न कोलूरके ग्रामेश्वर मन्दिरके लिए किसी कन्नडाचार्यको दान दिया था।]

[ए० इं० १९ पृ० १७९-१९७]

(७) शिवमन्दिर, नीडूर (जि० तञ्जोर, मद्रास)

तमिल – सन् १११६

[यह लेख कुलोत्तुंग चोलके राज्यके ४६वें वर्षमें लिखा गया था। इसमें कण्डन् माधवन्-द्वारा शोणवाररिवार (गणपति) देवका मंदिर बनवानेका निर्देश है। यह माधवन कुलत्तूर स्थानका शासक था जहाँ अमिदसागर (अमृतसागर) मुनिने कारिगै (याप्परुगलक्कारिगै) नामक छन्द शास्त्र तमिल भाषामें लिखा था। इस रचनाके लिए जिनने प्रेरणा की वे सज्जन माधवन्के चाचा (अथवा ससुर) थे।

इस छन्द शास्त्रमें ४४ कारिकाएँ हैं तथा उरुप्पियल्, शेय्युलियल् एवं ओलिबियल् ये तीन प्रकरण हैं। इसपर गुणसागरने टीका लिखा है।]

[ए० इ० १८ पृ० ६४]

(८) कमलापुर और हंपीके बीच

कृष्णमन्दिरके समीप एक मण्डपमें

शक १३३२ = सन् १४१०, कन्नड

[यह लेख मधुर नामक जैन कविने लिखा है जो वाजि कुलमें उत्पन्न हुआ था। लेखमें देवरायके मन्त्री लक्ष्मीधर-द्वारा महागणनाथ (शिव) की स्थापनाका वर्णन है। मधुरने धर्मनाथपुराण तथा गुम्मटाष्टक लिखा है। यह हरिहररायके मन्त्री मुद्दण्डेश्वरका आश्रित था। इस लेखमें लक्ष्मीधर-द्वारा मधुरको हाथी, घोड़े, रत्न, ज़मीन आदि दान देनेका उल्लेख है।]

[इ० ए० ५५, १९२६ पृ० ७७]

(९) गोकर्ण (उत्तर कनडा)

१५वीं सदी, कन्नड

[इस लेखमें महाबलेश्वर मंदिरमें अन्नसत्र तथा अन्यपूजाके लिए कुछ

दान दिये जानेका उल्लेख है। दानकी रक्षाके लिए कहे गये शापात्मक वर्णनमें गेरसोप्पेकी हिरियवस्तिके चण्डोग्र पार्श्वनाथका भी उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० ई० क्र० १०८ पृ० २३७]

(१०) वीराम्बुधि ताम्रपत्र (मैसूर)

शक १४८९ = सन् १५६७, कन्नड

[जिनशासनकी प्रशंसासे इस ताम्रपत्रका प्रारम्भ होता है। कुलोत्तुंग विक्रमरायके पुत्र चंगालराय-द्वारा भारद्वाजगोत्रके ब्राह्मण नरसीभट्टको वीराम्बुवि नामक ग्राम दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है। दानकी तिथि माघ शु० १०, शक १४८९, सर्वजित् संवत्सर ऐसी दी है।]

[ए० रि० मै० १९२५ पृ० ९३]

■

परिशिष्ट ३

नागपुर-प्रतिमा लेखसंग्रह

इस परिशिष्टमें हम नागपुरके समस्त प्रतिमालेखोंका संकलन दे रहे हैं। इन लेखोंका संग्रह श्री शान्तिकुमारजी ठवली (वर्तमान निवास–देवलगांव राजा, जि० बुलडाणा, महाराष्ट्र) ने कोई २७ वर्ष पहले सन् १६३५ में किया था। आपने यह संग्रह नागपुरके लोकप्रिय जैन श्रीमान् स्व० सवाई सिंगई श्री० नेमलालजी पासूसावजीकी स्मृतिमें अर्पित किया था। इस संग्रहके लिए स्व० पूज्य ब्र० शीतलप्रसादजीने भूमिका लिखी थी जो इस प्रकार थी – "जैनधर्मके इतिहासके निर्माणके लिए इस बातकी परम आवश्यकता है कि सर्व जैन स्मारकोंके लेख संग्रहीत किये जावें – इन स्मारकोंमें प्रतिमाओंके लेख, यन्त्रोंके लेख, अन्य शिलालेख तथा शास्त्रोंकी प्रशस्तियाँ आवश्यक हैं – श्री शान्तिकुमार ठवली नागपुरने नागपुरके सर्व दिगम्बर जैन मन्दिर व चैत्यालयोंके लेखोंको लिखकर पुस्तकाकार सम्पादन करनेमें जो परिश्रम उठाया है वह सराहनीय है। अच्छा हो यदि इन मूर्तियोंके लेखोंके साथ यन्त्रोंके लेख और शास्त्रकी प्रशस्तियोंका विवरण प्रकट किया जावे। एक संक्षिप्त तालिका ऐसी दी जावे कि लेख-रहित प्रतिमाएँ इतनी व अमुक संवत्की इतनी – जिससे पाठकको प्राचीनता व अर्वाचीनताका पता तुरत लग जावे। ऐसी पुस्तकोंसे भविष्यमें बहुत काम निकलेगा – आशा है ठवली महोदय मध्यप्रान्त व बरारके सर्व स्थानोंके लेखोंके संग्रहका प्रयत्न करेंगे। अन्य उत्साही युवकोंको अपने-अपने प्रान्तो-के लेखोंको प्रकट करना चाहिए जिससे किसी समय भारतीय दि० जैन लेख संग्रह पुस्तक निर्माण हो सके।

ब्र० सीतल

९–२–१९३६ नागपुर"

इस पुस्तिकाका प्रकाशन अन्यान्य कारणोसे अबतक नहीं हो सका था। अत. हमने इस परिशिष्टमें इसका पुन. संपादन किया है। संग्राहकने मूल लेख मन्दिरोंके क्रमसे अलग-अलग संग्रहीत किये थे तथा यन्त्रोंके लेखोंके परिशिष्ट अन्तमे दिये थे। हमने मन्दिरों तथा मूर्तियोंका विवरण अलग दिया है तथा लेख समयक्रमसे अलग दिये हैं। इन लेखोंके विशेष नामोंका समावेश सूचीमे कर दिया है तथा वहाँ लेखांकके साथ (ना०) यह संकेत दिया है।

नागपुर नगरका अस्तित्व यद्यपि राष्ट्रकूट साम्राज्यके समयसे ज्ञात होता है तथापि इसे भोंसला राजा रघूजी१ के समयसे — सन् १७३४ से प्रधान स्थान प्राप्त हुआ है। तबसे १९५६ तक यह मध्यप्रदेशकी राजधानी रही है। नागपुरके सभी मन्दिर प्रायः भोंसला राजाओंके राज्यमें ही बने है किन्तु इनमे कई प्रतिमाएँ अन्य स्थानोसे भी लायी गयी है। इस नगरमें कुल ९ मन्दिर है। विदर्भकी रीतिके अनुसार यहाँके प्रमुख जैन व्यक्तियों-के घरोंमें भी छोटे-छोटे चैत्यालय है। ऐसे गृहचैत्यालयोंकी संख्या ३७ है। इन सब स्थानोमे कुल मिलाकर ६४६ मूर्तियाँ आदि है जिनमें धातुकी ४४० तथा पाषाणकी २०६ है। इन मूर्तियों आदिके ४१ प्रकार है जिनकी संख्या इस प्रकार है — (१) आदिनाथ ४३ (२) अजितनाथ १३ (३) सम्भवनाथ १ (४) सुमतिनाथ २ (५) पद्मप्रभ ७ (६) सुपार्श्वनाथ १२ (७) चन्द्रप्रभ ४३ (८) पुष्पदन्त ३ (९) शीतलनाथ ५ (१०) श्रेयांस ३ (११) वासुपूज्य ६ (१२) अनन्तनाथ २ (१३) धर्मनाथ ३ (१४) शान्तिनाथ १० (१५) अरनाथ ६ (१६) मुनिसुव्रत १३ (१७) नेमिनाथ १४ (१८) पार्श्वनाथ १३३ (१९) महावीर १० (२०) चौवीसी ३४ (२१) पंचमेरु ९ (२२) नन्दीश्वर ७ (२३) सिद्ध ४ (२४) बाहुबली ६ (२५) रत्नत्रयमूर्ति ३ (२६) पंचपरमेष्ठि १ (२७) यक्षिणी २७ (२८) सरस्वती ३ (२९) क्षेत्रपाल १ (३०) सप्त ऋषि १ (३१) चौसठ ऋषि १ (३२) गुरुपादुका २ (३३) रत्नत्रय यन्त्र ५ (३४) सम्यग्दर्शन यन्त्र ४ (३५) सम्यक्चारित्र

यन्त्र ६ (३६) दशलक्षण यन्त्र ६ (३७) षोडशकारण यन्त्र २ (३८) कलि-कुण्ड यन्त्र १ (३९) सिद्ध यन्त्र १ (४०) नवग्रह यन्त्र १ (४१) जलयात्रा यन्त्र १। इन मूर्तियों आदिमें ५२९ के पादपीठों अथवा किनारोंपर लेख है। ऐसे लेखोंकी संख्या ३२४ है (जहाँ दो अथवा अधिक मूर्तियोंपर एक ही लेख है वहाँ हमने उस लेखको एक लेखके रूपमें ही गिना है।)

समयकी दृष्टिसे ये लेख आठ सदियोंमें इस प्रकार विभक्त है – विक्रम तेरहवीं सदी ४, पन्द्रहवीं सदी ३, सोलहवीं सदी २२, सत्रहवीं सदी ५१, अठारहवीं सदी ७२, उन्नीसवीं सदी ६९ तथा बीसवीं सदी १००।

इन सब लेखोंकी भाषा अशुद्ध संस्कृत है। कुछ लेखोंमें नागपुरकी स्थानीय भाषाओं–हिन्दी तथा मराठीका अंशतः प्रयोग हुआ है (लेख क्र० २०६,२६३,२६७,२६९,२७८,२८५) किन्तु शुद्ध हिन्दी या मराठीमें कोई लेख नहीं है। एक लेख (क्र० ७३) कन्नडमें तथा एक (क्र० ३१९) उर्दूमें है किन्तु इनका वाचन प्राप्त नहीं हो सका।

मूर्तिप्रतिष्ठाके स्थानोंके सोलह नाम उल्लिखित हैं – नागपुर (क्र० १५२,१९०-२,२१२ २१५,२१६,२२०-१,२२७,२२९ २३१,२३३, २३९, २४२,२४७,२४९,२५०,२५५-७,२५९,२६१,२७९,२८२,२९५) कारंजा (क्र० ८१,१२५ १५७-८,२१०), सिरसग्राम (क्र० २०२,२०४), रामटेक (क्र० ७३ २५३) भीसी (क्र० १४३), तळेगाव (क्र० १०६) उमरावती (क्र० १९९), इरोली (क्र० २३२), सबालपुर (क्र० ७०) बहादरपुर (क्र० ६५), अवडनगर (क्र० १२०) सिवनी (क्र० २८०) छनारा (क्र० २८८), कामठी (क्र० १५४), सावरगांव (क्र० २९३), सवाई जयनगर (क्र० १९३)।

प्रतिष्ठाकर्ता व्यक्तियोंकी पन्द्रह जातियोंका उल्लेख मिलता है – खण्डेलवाल (क्र० ९), अगरवाल (क्र० ५३), बघेरवाल (क्र० १०), गोलसिंघारा (क्र० ७२), पल्लीवाल (क्र० ५१), गुजरपल्लीवाल (क्र० २१), पद्मावती पल्लीवाल (क्र० १२४), उज्जैनीपल्लीवाल

(क्र० १०८,१२०,१४३), ओसवाल (क्र० ४९-५०) हुंबड (क्र० ८, २०,३०,३९,८६), गोलापूर्व (क्र० ६८,२११), परवार (क्र० ६९,१८८, १९१-९२,२५०,२५४,२६३,२७२,२८५), खंडेलवाल (क्र० १०७,२८२) सैतवाल (क्र० ९५,२७९,२८६,२८७), बघेरवाल (क्र० १४, २९,३८, ४४,४६,५५-६,६६,८०-८२,८८-९०,९२,९४,९६,१२२, १२५, १३०-१, १३५,१५७,१८२,१९८,२०१,२०२,२०४,२२७)।

प्रतिष्ठापक आचार्य अधिकांश मूलसंघके सेनगण तथा बलात्कारगणके थे, काष्ठासंघके नन्दीतटगच्छके कुछ आचार्योंके उल्लेख भी हैं। इन उल्लेखोंका उपयोग हमारे ग्रन्थ 'भट्टारक सम्प्रदाय' में किया गया है। उससे इन भट्टारकोंके बारेमें अन्य जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

संवत् १५४८ के दो लेख (क्र० १८,१९) विशेष रूपसे उल्लेखनीय हैं। इनमें पहला लेख कोई ७७ मूर्तियोंपर है। ये मूर्तियाँ मुडासा शहरमें शिवसिंहके राज्यकालमें सेठ जीवराज पापडीवालने प्रतिष्ठित करवायी थीं। इस समारोहके प्रमुख भट्टारक जिनचन्द्र थे। इस समारोहमें प्रतिष्ठित मूर्तियाँ प्रायः प्रत्येक दिगम्बर जैन मन्दिरमें पायी जाती हैं।

■

मूल लेख

१ समत १२०१ वैमाख वदी तान। (विवरण क्र० १४०)

२ स० १२३४ स तु हा ले (?) (विवरण क्र० १६६)

३ समत १२६२ माल । (विवरण क्र० ११५)

४ समत १२६९ वर्षे आषाढ सुदी ३ । (विवरण क्र० ११४)

५ समत १४५७ वर्षे वैसाख सुदी ६ श्रीमूलसघ भ० श्राजिन-
न्द साह माणिकचद । (विवरण क्र० २३१,२३२)

६ मूलसघ भ० धर्मभूषणोपदेशात् समत १४६५ वर्षे ।
(विवरण क्र० ३०२)

७ सवत १४८९ । (विवरण क्र० ४०)

८ सवत १५१० वर्षे माहमासे शुक्लपक्षे ५ रवौ श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुदकुदाचार्यान्वये भ० पद्मनदि तत्पट्टे भ० श्रीसकलकीर्ति तत्शिष्य ब्र० जिनदास हुबडज्ञातिय सा० तेजु भा० मलाई सुत हरिचद भा० नागाई सुत गोविंद भा० वजाई। (विवरण क्र० १६७)

९ स० १५२१ वर्षे वैसाख वदि २ श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीविद्यानदिगुरूपदेशात श्रीशाहकवालज्ञातिय भार्या अंबिदे सुत वेणा भार्या वनादे कारित श्रीचद्रप्रभचतुर्विंशति नित्य प्रणमति ॥ श्रीशुभ ॥ (विवरण क्र० १५७)

१० समत १५२४ मूलसघ सेनगणे माणिकसेनगुरु गगराडा माल-
सेठा भार्या तानाई। (विवरण क्र० ८०)

११ समत १५३१ फागुण वदी ५ मू० । (विवरण क्र० १८८)

१२ समत १५३५ श्रीमू० भ० भुवनकीर्तिस्तत्पट्टे भ० ज्ञानभूषणस्त-
दुपदेशात् स० दि० समाज। (विवरण क्र० ११३)

१३ सं० १५३५ वर्षे पौस वदी २ श्रीमूलसंघे भ० सकलकीर्तिस्त० भ० श्रीभुवनकीर्तिस्त० भ० श्रीज्ञानभूषणगुरूपदेशात् चांगा भार्या भूसनदे वदासा भा० तानो....जी वासपूज्य।

(विवरण क्र० १६०)

१४ [सक] १४०२ व० श्रीक....श....ज्ञात बघेरवाल...गोत्र सं० पासधन....सं० जेनराज मानापुत्र प्रणमंति (विवरण क्र० ४१३)

१५ सं० १५४२ श्रीमूलसंग भ० श्रीभुवनकीर्तिस्तत्पट्टे श्रीज्ञान-भूषणगुरूपदेशात्....दिवसी भा० गुणा सुत....भा० नामलाई।

(विवरण क्र० ३८०)

१६ सं. १५४३...पदमसी....दन...।(विवरण क्र० ४३३)

१७ संमत १५४५ का ज्येष्ठ....। (विवरण क्र० ३४३)

१८ संवत १५४८ वर्षे वैसाख सुदी ३ श्रीमूलसंघे भट्टारक श्रीजिन-चंद्रदेव साह जीवराज पापडीवाल नित्यं प्रणमंति शहर मुडासा राजा स्योसिंघ। (विवरण क्र० १-३,१०-२६,४६-४८,८७,९१-१०२,१४६-१५६,२३८-२६४,३६७-६९)

१९ संमत १५४८ वरषे वैसाखसुदी ३ श्रीमूलसंघे भट्टारकजी श्रीभानुचंद्रदेव साह जीवराज पापडीवाल नित्यं प्रणमंति सहर मुडासा श्रीराजा सोसिंघ। (विवरण क्र० २१८,२१९)

२० ॐ नमः सं० १५५२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ७ शुक्रे श्रीमूलसंघे भ० भुवनकीर्तिस्त० भ० श्रीज्ञानभूषणगुरूपदेशात् हुं० श्रे० पर्वत भा० देऊ सु० राजा भा० शलदे सुत कर्मसी प्रणमंति श्रीसुम-तिनाथ प्रणमंति। (विवरण क्र० १६५)

२१ सके १४२४ मूलसंघे सेनगणे भ० माणिकसेन उपदेशात् गुजर-पल्लिवालज्ञाति संघवी नेमा...। (विवरण क्र० १३७)

२२ सं० १५६१ वर्षे वैसाख सुदि १० बुधौ श्रीमूलसंघे भ० श्री-ज्ञानभूषण त० भ० श्रीविजयकीर्तिगुरूपदेशात् व० लाडण स०

क० राजा मा० माणिकी सु० कान्हा मा० रूपी भ्रा० गोईया मा० मरगदि भ्रा० श्रीरत्नत्रय नमति। (विवरण क्र० १६८)

२३ समत १५६१ वर्षे फागुण सुदी । (विवरण क्र० ११७)

२४ स० १५७८ मू० म० धर्मभूषण। (विवरण क्र० ३८३)

२५ समत १५८२ । (विवरण क्र० ४८२)

२६ स० १५८३ । (विवरण क्र० १२१)

२७ स० १५८३ तो १३ । (विवरण क्र० ४५३)

२८ समत १५८४ श्री मू स भ विजयकीर्ति तत्पट्टे म शुभचन्द्रगुरूपदेशात् ब्रह्म श्राशाना वेलाबाइ-ति प्रणमति। (विवरण क्र २०५)

२९ समत ६०० वर्षे फागुण वदी ५ शुक्र श्रीमूलसंगे भट्टारक श्रीरामकीर्ति प्रतिष्ठित सेनगणे बघेरवाल ज्ञातिय चवरियागोत्रे सा धाऊजी भार्या वोपाई सुत मा माणिक भार्या पद्माइ भ्रात रतन भार्या पसाई पुत्र धाऊजी एते श्रीसुपार्श्वनाथ नित्य प्रणमंति। (विवरण क्र २०९)

३० सवत १६०७ वर्षे वैसाख वदी ३ गुरु श्रीमूलसंघे म श्रीशुभ-चन्द्रगुरूपदेशात् हूँ सखेश्वरा गोत्रे सा जीना भा भाकी सु नाका भा नाकदे भ्रा जगा भा ललितादे भ्रा -गार एते सर्वे नित्य प्रणमति। (विवरण क्र ४०६)

३१ [स] १६०८ उपा-। (विवरण क्र ४८४)

३२ समत १६०१ फाल्गुण २ दिन-। (विवरण क्र १२९)

३३ सवत १६११ ते रागविदे (?) प्रणमति। (विवरण क्र ४१०)

३४ समत १६१४ सेनगण धरमाई बापाई चागापा। (विवरण क्र २००,२११)

३५ स० १६१५ मा० १३। (विवरण क्र ४६०)

३६ स० १६१६। (विवरण क्र ४६१)

३७ सके १४८१ मू० स- । (विवरण क्र. २२५)

३८ सक १४८७ प्रजापतसंवत्सरे श्रीमू. सरस्वती. वलात्कार. भ. धर्मचंद्राणाम् उपदेशात ज्ञाति वघेरवाल भुरा गोत्रे सा रतन सं. भार्या पुतली लखमाई-प्रणमंति । (विवरण क्र. ४३४)

३९ सं. १६२५ आषाढ शुद्धि ५ श्रीमूलसंघे ब्रह्म श्रीहंस ब्रह्म श्रीराजपालोपदेशात् हुंवड ज्ञातौ सा. समराज भा. लोकोई स. आसजी भा. वाकाई । (विवरण क्र. २६८)

४० श्रीमूलसंघ संमत १६२१ वर्षे फाग सुदी १० सोमे भ. श्रीगुणकीर्तिगुरूपदेशात् सं. कर भार्या सहागदेई सं. वीरदास भा. ताकमई श्रीअजितनाथ जिन प्रणमंति ।
(विवरण क्र. ३०७)

४१ संमत १६३६ मरानोजी पु (?) । (विवरण क्र. ३०६)

४२ संवत् १६२६ श्रीकाष्ठासंघे भ० विद्याभूषण प्रतिष्ठितं हुंवड सा. जयवंतभार्या तसमादे सु-जीवराजभा धनराजसा प्रणपालसा नित्यं प्रणमंति । (विवरण क्र. ४०८)

४३ शक १५०१ मा. तिथी ८ काष्ठासंघे भ. श्रीश्रीभूषणसदुपदेशात् प० जयवंत (विवरण क्र. ४३६)

४४ सके १५०२ वृषा नाम संवत्सरे फागुण सुदि ७ श्रीमूलसंघ ब. भ. धर्मभूषणोपदेशात् वघेरवालज्ञाति ठवलागोत्रे सं. पासुसा भार्या सं० रुपाई तयो पुत्रौ आपुसा भार्या लिंबाई रामासा भार्या चांपाई एते प्रणमंति । (विवरण क्र. ४२१)

४५ सके १५०६ माघ वदी १ गोत्र चवरिया गुणासा ।
(विवरण क्र. ३९१)

४६ संमत १६४५ वैसाख सुदी ७ सोमवार श्रीकाष्टासंघे लाडवागडगणे पुष्करगच्छे भट्टारकश्रीप्रतापकीर्ति तस्य आम्नाये वघेर-

वालज्ञातिये बोरखंडियागोत्रे स गई पुजासा स० घराई प्रणमति ।
(विवरण क्र० ४५०)

४७ समत १६४६ वर्षे श्रीमूलसंघ भट्टारक श्री वीर त पट्टे भ श्री सेन तस्य शिष्य पंडित श्रीगंगा उपदेशात् साहु बावजी भार्या दामाई तयो पुत्र ठकुरसाह तस्य भार्या पेमाइ तयो सुत तुकाशासाह भार्या रूखमाइ तेषां नित्य प्रणमति सात्र फागुण शुदी १० गुरुवासरे श्रीचिंतामणी पार्श्वनाथचैत्यालये प्रतिष्ठित ॥ शुभ भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥ ज पूजता ते भवतु ॥ जयस्तु ॥
(विवरण क्र० ३११)

४८ स. १६४९ फा शु १३ भ. बलात्कार भ पद्मकीर्ति उपदेशात् । (विवरण क्र० ४२०)

४९ [स०] १६५२ वैसाख सुद १४ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे *पद्मकीर्ति विद्याभूषण हेमकीर्ति सदुपदेशात् श्रीश्रीमाळ*
(विवरण क्र० २६६, २६९)

५० समत १६५३ वैसाग शुद्ध १४ श्रीमूलसंघे बळात्कारगणे भट्टारक हेमकीर्ति उपदेशात् श्री श्रीमाळज्ञातौ महासा नित्य प्रणमतु
(विवरण क्र० ४०५)

५१ शके १५१९ मन्मथनामसंवत्सरे वैसाख सुदि त्रयोदशीदिने प्रतिष्ठित श्रीमूलसंघे सरस्वतिगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीधर्मभूषणोपदेशात् पलीवालज्ञातीय स बायामा तस्य भार्या गगाई तयो पुत्र स लखमसा तस्य भार्या द्वौ गोमाई काळाई तेषां पुत्र द्वौ प्रथमपुत्र स भोतामा द्वितीय नेमा प्रणमति । (विवरण क्र० १२४)

५२ श्रीमूलसंघे सेनगणे वृषभसेनगणधरान्वये श्रीमत्समंतभद्र लक्ष्मीसेनभट्टारकउपदेशात् शके १५२१ फागुण सुद पा रवौ संघवी सोमसेठी श्रीमंगल । (विवरण क्र० १२०)

५३ संवत् १६५८ वर्षे आषाढ वदी⋯अगरवालज्ञा० । (विवरण क्र० ४८३) ।

५४ शके १५२५ वर्षे शुभकृत् नाम संवत्सरे ज्येष्ठशुक्लपक्षे १३ तिथौ प्रतिष्ठिता । (विवरण क्र० २७१)

५५ संमत १६६० वर्षे फाल्गुण शुद्धि १० श्रीकाष्टासंघे लाडवागडगच्छे भ० श्रीप्रतापकीर्ति नंदिसंघे वघेरवालज्ञातिय-सा भारया वीरूना परिनबाई तयो पुत्र सा० नोगु भा. परिहाई श्रीपद्मावति प्रणमंति श्रीकाष्टासंघे नंदितटगच्छे भट्टारक श्री श्री श्रीभूषण प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० ४१४)

५६ शक १५२५ वर्षे श्रीमूलसंघे सेनगणे श्रीमतवृषभसेनगणान्वये भ० श्रीसोमसेन तत्पट्टे भ० श्रीमाणिकसेन तत्पट्टे भ० श्रीगुणभद्र तत्पट्टे भ० श्रीगुणसेन उपदेशात् बघेरवालज्ञातीय खटवडगोत्रे सं० श्रीहरकसा भार्या गोजाई तयो सुत सं० गणासा भार्या कडताई येते श्रीरत्नत्रयचतुर्विंशति प्रणमंति । (विवरण क्र० १९०)

५७ संमत १६६० वर्षे फाग सुद ॥ गु० श्री एतत्-बा- भुन्नाबाई श्रीशीतलनाथबिंबका भ०-। (विवरण क्र० २७८)

५८ सक १५२६ माहो सुद १२ भट्टारक हेमकीर्ति उपदेशात् प्रतिष्ठितं मितलसिंघवी-ताजी सवाल तुरासु (?) रुपा नित्यं प्रणमंति । (विवरण क्र० ४३९)

५९ संवत १६६२ वर्षे⋯श्रीमूलसंघे⋯भ० जगतकीर्ति सदुपदेशात्-खंडेरान्वये-प्रतिष्ठितं (विवरण क्र० ४८६)

६० संमत १६६४⋯महाराजाधिराज⋯श्रीचन्द्रकीर्ति-तत्पट्टे भट्टारक देवेन्द्रकीर्तिजी आम्नाय सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वय प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० २७)

६१ संमत १६६९ चैत्रसुद १५ रवौ मूलसंघे कुं० भ० यशोकीर्ति

तत्पट्टे भ० ललितकीर्ति तत्पट्टे भ० धर्मकीर्ति उपदेशात्-पट्टे-।
(विवरण क्र० २१३)

६२ ॐ नम समत १६७१ वर्षे वैसाख सुद ५ मूलसघे बलात्कार-
गणे सरस्वतीगच्छे कुदकुदाचार्यान्वये भ० यशकीर्ति तत्पट्टे भ०
धर्मकीति तदुपदेशात् पोरपट्टे सा उदयचद भार्या-अचिजारा मूले
गोहिलगोत्रे-उदयगारेट प्रतिष्ठा प्रसिद्ध सोनी दामोदर निमापित
समवानि समाहित प्रतिष्ठामध्ये प्रतिष्ठित नदिश्वरजिनबिंब।
(विवरण क्र० २१५)

६३ सवत् १६७२ वर्षे फागुण सित २ तिथौ मेडतानगरे लोढागोत्रे
स० वारपाल भार्या सकतादेवीभ्या श्रीधर्मनाथबिंब कारित
प्रतिष्ठित श्रीजिनचद्रसूरिभि । (विवरण क्र० १५८)

६४ सके १५३७ । (विवरण क्र० ४४१)

६५ समत १६७६ वर्षे माघवदी ८ श्रीकाष्टासघे लाडवागडगच्छे
भट्टारक श्रीप्रतापकीर्ति आम्नाये बघेरवालज्ञातौ बोरखड्यागोत्रे
धमतासा भाया अवाई तयो पुत्र लखमणसा प्रमुख पचपुत्र
सभार्या सपुत्र श्रीचन्द्रप्रभु प्रणमति। श्रीकाष्टासघे नदितट-
गच्छे भ० श्रीभूषण प्रतिष्ठित बहादरपुर। (विवरण क्र० २९८)

६६ समत १६७६ वर्षे माघवदा काष्टासगे लाडवागडगच्छे श्रीप्रता-
पकीर्ति उपदेशात् बघेरवाल ज्ञातिय गोवालगात्रे स० बापु
भार्या जमुना (विवरण क्र० १४३)

६७ [स०] १६८१ पार्श्वनाथ मानिक। (विवरण क्र० ४३८)

६८ सवत १६८१ वरषे चैत्र सुदी ५ रवऊ श्रीमूलसघे भट्टारकश्री-
ललितकीर्तिदेवास्तत्पट्टे मडलाचार्यश्रीरत्नकीर्तिदेवास्तत्पट्टे
आचार्यश्रीचद्रकीर्तिस्तदुपदेशात् गोलापूर्वान्वये खाग नाम गोत्रे
सेठि भानु भार्या चदनसिरी तत्पुत्र सेठि कनुर भार्या किसना
तस्य पुत्री जादी नित्य प्रणमति (विवरण क्र० २६५)

६९ संमत १६८१ वर्षे माघ सुदी १५ गुरौ भ० धर्मकीर्ति उपदेशात् परवारज्ञातो···। (विवरण क्र० २२३)

७० संमत १६८१ वै० सु० १ दिने संजालपुरवास्तव्य सं० चंद्रा श्रीपार्श्वनाथबिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्रीविजयदेवसू [रिभिः]। (विवरण क्र० २०१)

७१ संवत १६८१ माघ सुदी १ दिन····। (विवरणक्र० १०८)

७२ संवरगोत्र पानासा संमत १६८६ । (विवरण क्र० १४४)

७३ संवत १६८६ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीधर्मचंद्र तदाम्नाय श्री(चार्य)पासकीर्ति तदुपदेशात् संघवि बरहरसाह गोलसिंघारा रामटेक सांतिनाथ प्रसादेन् ज्येष्ट वद्य ५ शमि तिलक मंगलं शुभं भवतु ॥ छ ॥ (विवरण क्र० २७४)

७४ सं० १६९१ भ० रत्नकीर्ति । (विवरण क्र० ३८२)

७५ संमत १६९२ मिति वैसाख वदी ११ सोमवासरे भ० धर्मचंद्रजी । (विवरण क्र० १२०)

७६ शके १५६१ प्रमवनामसंवत्सरे फालगुण सुदी द्वितीया मूलसंघे पुष्करगच्छे सेनगणे भट्टारक श्रीसोमसेनउपदेशात् प्रतिष्टितं···। (विवरण क्र० १११)

७७ शके १५६१ फालगुण सुदी २ गुरु श्रीमूलसंघे पुष्करगच्छे सेनगणे····हुंबड···। (विवरण क्र० १३४)

७८ शक १५६१ फालगुण····श्रीमूलसंघ सेनगण भ० श्रीसोमसेन तुकसाव गुणासाव···बोपासा नित्यं प्रणमंति । (विवरण क्र० २११)

७९ शके १५६१ फाग वदी १० शनैश्चरे काष्टासंघे लाडवागड वन्हाडगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये श्रीनरेंद्रकीर्ति तत्पट्टे तमो०····

उ० सा० पामादि पु० देवासा नि० प्रतिष्ठित श्रीलक्ष्मासेन प्रतिष्ठित। (विवरण क्र० २३५)

८० शके १५६१ पार्थीवनामसंवत्सरे श्रीमू० ब० स० भ० धर्मचन्द्रोपदेशात् बघेरवालज्ञातीय खडारियागोत्रे श्रावण सा० गगाई तयोपुत्र माणिकसा भार्या गोपाई प्रतिष्ठित। (विवरण क्र० ३८९)

८१ समत १७०३ वर्षे ज्येष्ठ वदी १० गुरे श्रीकाष्ठासंघे लाडवागडगच्छे लोहाचार्यान्वये वराडप्रदेशे कारंजानगरे प्रतापकीर्तिआम्नाय बघेरवाल ज्ञातीय कावला गोत्र सा श्रीपागसा भार्या पद्माई तया सुत सा वण भार्या मणकाइ तयो पुत्र द्वौ प्रथमपुत्र स० श्रीरामा भार्या अजाई द्वितीय पुत्र सा पतसा एते समस्तै श्रीकाष्ठासंघे नदितटगच्छे भ० श्रीरामसेनान्वय तदनुक्रमेण भ० श्रीविश्वसेन तत्पट्टे श्रीविद्याभूषण तत्पट्टे भ० श्रीश्रीभूषण तत्पट्टे श्रीचन्द्रकीर्ति तत्पट्टे भ० श्रीराजकीर्ति तत्पट्टे भ० श्रीलक्ष्मीसेनजी प्रतिष्ठित। (विवरण क्र० १३५)

८२ मूलसंघे बलात्कारगणे भ० धर्मभूषणगुरूपदेशात् बघेरवाल पुत्र सा (मिट अक्षरमे) समत १७०६ वर्षे मी माह सु० ५ भो पुजासा । (विवरण क्र० ३१०)

८३ शके १५७२ । (विवरण क्र० ११८)

८४ समत १७११ भ० सकलकीर्ति सा० शाले पुनवंते प्रणमति। (विवरण क्र० ३०६)

८५ ॐनम सिद्धेभ्य सा भ० संवत १७११ श्रीभट्टारक । (विवरण क्र० ४७६)

८६ संवत १७१३ वर्षे माघ सुदि ११ गुरौ श्रीमूलसंघे ब्रह्म श्रीशांतिदास तत्पट्टे ब्रह्मश्रीवादिराज गुरूपदेशात् हुंबड ज्ञातीय बाई

लावाई इति सिद्धयंत्रं नित्यं प्रणमंति । शुभं भूयात् ।
(विवरण क्र० २७५)

८७ शक १५७८—सुखनाम मू० स० म० श्रीधर्मभूषण उपदेशात् तिमासा भार्या वखाई तयो पुत्र भूतसा त० देवाई ।
(विवरण क्र० १८४)

८८ शके १५८० माघ सुदी ५ सोमे कारंजानगरे काष्टासंघे नंदितट-गच्छे म० इंद्रभूषण प्रतिष्ठितं बघेरवालज्ञाति गोवलगोत्रे···भा० दुलणबाई····प्रणमंति । (विवरण क्र० १४१)

८९ संवत १७१५ वर्षे माघ सुदी ५ काष्टासंघे नंदितटगच्छे विद्या-गणे····बघेरवाल ज्ञातीय वोरखंड्यागोत्रे स० खामा भार्या पुतलाई तयो पुत्र सं० धनजी भार्या पदाई येन सुपार्श्वनाथ प्रणमंति । (विवरण क्र० १४२)

९० शके १५८० माघ सुदी ५ सोमवार काष्टासंघे नंदितटगच्छे भट्टारक श्री इंद्रभूषण प्रतिष्ठितं बघेरवालज्ञातौ वोरखंडियागोत्रे तेऊजीसा भार्या जसाई तयो पुत्र पौत्र नाथुसा सा० चिंतामणसा एते अंबिका नित्यं [प्रणमंति] (विवरण क्र० ४४७)

९१ संमत १७१५ माघ सुदी ५ सोमवार काष्टासंघे नंदितटगच्छे विद्यागणे भट्टारकरामसेनान्वये राजकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक लक्ष्मी-सेन तत्पट्टे म० इंद्रभूषण प्रतिष्ठितं संघवी खांमा भार्या पुतलाई तयो पुत्र सं० धनजी भार्या पदाई अंबिका प्रणमंति काष्टासंघे लोहाचार्यान्वये प्रतापकीर्ति संघवी खांमा भार्या पुतलाई सं० धनजी । (विवरण क्र० ४२८)

९२ संवत १७१५ माघ सुदी ५ सोमे काष्टासंघे लाडवागडगच्छे म० प्रतापकीर्ति तदाम्नाये बघेरवालज्ञातौ कावरी····।
(विवरण क्र० ५)

९३ शके १५८१ सौ० फा० व० ३ मू० स० भ० पद्मकीर्ति सो० ज्ञा० बुलमेट भाग्या आता। (विवरण क्र० २०२)

९४ श० १५८१ फ० व० ९ प्र० म० जे० का० ज्ञा० बघेरवाल लुगाई दा पु ता सा मा वा मा त (?) ग गु ।
(विवरण क्र० ४०६, ४०१)

९५ सक १५८२ स्थावरी नाम संवत्सरे तीथ फाल्गुण सुद दसमी १०॥ श्रीशातीनाथचै यालय श्रीबलात्कार गणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचायान् भट्टारक श्रीपद्मकाति उपदेशात् रामटेक नग्र ज्ञाती सइतवाल रायाजी जाई। (विवरण क्र० २७३)

९६ सके १५८२ फाल्गुण शुद्ध ७ तिल्क सेन भट्टारक श्रीजिनसेन बघेरवालज्ञाती चवरियागोत्रे सा० भार्या " नित्य प्रणमति।
(विवरण क्र० ४४५)

९७ समत १७१८। (विवरण क्र० १२३)

९८ शके १५८३ प्रभवनामसंवत्सरे ज्येष्टवदी प्रथम व० कु० म० । (विवरण क्र० २२९)

९९ शके १५८६ वर्षे क्रोधनामसंवत्सर तिथी फागुण शुद ५ श्रीमूल-संघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे भ० धर्मचंद्र तत्पट्टे भ० धर्म-भूषण महाराज प० नेमाजी भार्या राजाई पुत्र सोयराजी ता प्रतिष्टित। (विवरण क्र० २०८)

१०० शक १५८६ । (विवरण क्र० ३८८)

१०१ शके १५८९। (विवरण क्र० ७)

१०२ शके १५९२ वैसाख मुलसघ सरस्वतीगच्छ बलात्कारगणे कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक कुमुदचंद्र तत्पट्टे भ० अजितकीर्ति त० भ० विशालकीर्ति उपदेशात् सोनोपाटित रोडे।
(विवरण क्र० १८०)

१०३ समत १७२१। (विवरण क्र० १२२)

१०४ सके १५९६ फा० शु ॥ ३ भ०...कीर्ति तत्पट्टे दयाभूषण श्रीमू० स० व० । (विवरण क्र० २२१)

१०५ शके १५९७ मुलसंघ बलात्कारगण भ० धर्मभूषण ॐ हरीसाव पुत्र फकीचंद प्रणमंति । (विवरण क्र० २२८)

१०६ श० १५९७ मू० सेनगणे भ० जि० तजेगामग्रामे गु० गनसेठ भा० सिशबाई पु० कृस्नाजी भा० मेगाई पु० जोगाजी प्रणमंति । (विवरण क्र० ४५७)

१०७ संमत १७३२ वर्षे ज्येष्ट सुदी २ श्रीमूलसंघे भट्टारक श्रीसुरेंद्र-कीर्तिस्तदाम्नाये खंडेरवालान्वये गृध्रवालगोत्रे सा देवसी पुत्र संगहान...प्रतिष्टा कारिता...। (विवरण क्र० ३७७)

१०८ शाके १५९७ मू ॥ ब ॥ भ० श्रीधर्मचंद्रोपदेशात् ऊजानीपल्ली-वालज्ञातीय माणिकमा तत्पुत्र नारसा सुत शतसा प्रणमंति । (विवरण क्र० १५९)

१०९ [श०] १५६७ मु० जीनसेन उ० लखसेट माहोरकर प्रण-मंति । (विवरण क्र० १६२)

११० शके १५९९पिंग्ल श्रीमू० । (विवरण क्र० ४९७)

१११ सक १६०१ संमत १७३६....। (विवरण क्र० ३५९)

११२ सक १६०१ मार्गशिर्ष....। (विवरण क्र० २२०)

११३ १६०१ सं० श्रीमू० । (विवरण क्र० ४९१)

११४ सके १६०१ फालगुण सुदि ११ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे भट्टारकश्रीपद्मकीर्तिसदुपदेशात् श्रीपद्मावतीपल्लीवालज्ञातौ अडनाव कुसनानी पानसी भार्या मगनाई तयोपुत्र बाबुजी प्रणमंति । (विवरण क्र० २७२)

११५ सांतिनाथ सके १६०४ श्री....। (विवरण क्र० ३७५)

११६ रा० अरजुनसा सके १६०७ क्रोधनामसंवत्सरे मार्गशिर्ष सुदी ५ श्रीमूलसंघे खंडारियागोत्रे सः पौ० । (विवरण क्र० १२९)

११७ मानस्तम्भ सके १६०७ ४ माघेर । (विवरण क्र० ४६२)

११८ सके १६०७ । (विवरण क्र० ४७४)

११९ सके १७०७ समत १७४२ । (विवरण क्र० ४७२)

१२० शाके १६०७ प्रमवनामसंवत्सर फाल्गुण वदी १० म० धर्मचन्द्र उपदेशात् सु० नगरे ज्ञाते उज्जैनीपल्लीवार गोदसा भार्या सेमाई ब० साह भार्या नागाई प्रणमति । (विवरण क्र० १८०)

१२१ सके १६०८ फागण वदि १० श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीविशालकीर्तिस्तत्पट्टे भ० श्रीपद्मकीर्तिस्तत्पट्टे भ० श्रीविद्याभूषण स्वकर्मक्षयार्थं । (विवरण क्र० २६७)

१२२ सवत १७४४ सके १६०९ फालगुण सुद १३ श्रीमत्काष्टासंघे लाडबागडगच्छे भ० प्रतापकीर्ति आम्नाय बघेरवालज्ञातौ गोवालगोत्रे सघवी पदाजी भार्या तानाई तयो पुत्र सघवी जमनाजी भार्या हासुबाई तयो पुत्रा तुर्य म० पुतलाबा भार्या गगाई म० पुजाबा भा० देवकु म० शीतलाबा भा० मनाई इ० पदाजी एतैं सह नित्य प्रणमति श्रीकाष्टासंघे नंदितटगच्छे भ० इंद्रभूषण भ० सुरेंद्रकीर्ति । (विवरण क्र० १७२, १७०, २४६)

१२३ सके १६०९ फा० सु० १३ काष्टासंघे लाडबागडगच्छे प्रतापकीर्त्याम्नाय भ० सुरेंद्रकीर्ति स० पदाजी भा० तानाई पु० रायबा भा० सोनाई पु० अनतोबा भा० पामाई जी प्रतिष्ठित (विवरण क्र० १०५)

१२४ सके १६०० बलात्कार । (विवरण क्र० ४७८)

१२५ सवत १७४५ ज्येष्ठ सुदी २ सोमवार श्रीकारंजानगरे काष्टासंघे प्रतापकीर्तिआम्नाये बघेरवालज्ञातौ बोरखडियागोत्रे सा० मनासा भार्या शकाई तया पुत्रा श्रत सा अर्जुन भा० रगाई शितलसा भार्या सायरा लक्ष्मणसा भा० जीवाई येसोबा पुतळाबा नित्य प्रणमति । (विवरण क्र० ५४९)

१२६ मिर्ती वैसाख सुदी २ संमत १७४५····। (विवरण क्र० ६६)

१२७ संमत १७४६····। (विवरण क्र० ३२६)

१२८ शके १६११ श्री···। (विवरण क्र० ३६१)

१२९ सं० १७४६ । (विवरण क्र० ३८४)

१३० संमत १७४७ सके १६१२ ज्येष्ट वदी ७ भ० श्रीइंद्रभूषण त० भ० सुरेंद्रकीर्ति प्रतिष्टितं श्रीकाष्टासंघे लाडवागडगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये भ० श्रीनरेंद्रकीर्ति प० भ० श्रीप्रतापकीर्ति आम्नाये ववेरवालज्ञाति गोवालगोत्रे सं० वापु पुत्र सं० भोज संघवी पदाजी भार्या तानाई पुत्र सं० वापु सं० जमनाजी सं० राजवा अथ संघवी जमनाजी भार्या हसाई समस्त कुटमपरिवार नित्यं प्रणमंति दर्शनयंत्र श्रीअवडनगर प्रतिष्टितं । (विवरण क्र० १७६)

१३१ शके १६१२ ज्येष्ट वदि ७ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छ बलात्कारगणे भ० श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वय भ० धर्मभूषण त० भ० विशालकीर्ति त० भ० धर्मचंद्रोपदेशात् ववेरवालज्ञाति खडासो गोत्रे सा० रावुसा सुत रुपुसा अंबिका नित्यं प्रणमंति । (विवरण क्र० ४३२)

१३२ संमत १७५० सवधारी नाम संवत्सरे आपाढ कृष्ण तिथ····भार्या श्री···· । (विवरण क्र० ७३)

१३३ शके १६१७ फा० ५···। (विवरण क्र० ३७८)

१३४ सं०.१७५२ माघ वदी ८ श्रीमूलसंघ भ० श्रीहेमकीर्ति गु० त० न न जा सवजी (?) । विवरण क्र० ४११)

१३५ संवत १७५३ वर्षे वैसाख सुदि ६ सनौ श्रीकाष्टासंघे लाडवागडगच्छे लोहाचार्यान्वये तदनुक्रमे भट्टारक श्रीप्रतापकीर्ति तदाम्नाये ववेरवालज्ञातौ गोवालगोत्रे संघवी भोज भार्या पदमाई तयोपुत्र अरजुन भार्या सकाई तासो पुत्र सं० तवना भार्या

सिता पुत्र स० मामा मार्या देगई सथवी धर्मा मार्या फाळाइ तयो पुत्र स० सितल मार्या देनकु मार्या हिराई तयो पुत्र मोन द्वितीयमार्या इत्यादि सपरिवार नित्य प्रणमति । श्राकाशसघे नदीतटगच्छे भ० रामसनान्वये तदनुक्रमेण भ० इंद्रभूषण तत्पट्टे भ० सु (रेंद्रकीति) । (विवरण क्र० १६९)

१३६ समत १७५३ वरषे मिती वैसाख सुदी ३ पापडीवाल प्रतिष्ठित । (विवरण क्र० ५८,६३,६४,८८)

१३७ शके १६१९ वै० सु० ३ श्रीमूलसघ सनगण । (विवरण क्र० १६४,२१६)

१३८ सवत १७५४ मूलसघे सेनगणे पुष्करगच्छे भ० छत्रसेनोपदेशात् । (विवरण क्र० ८)

१३९ [स०] १७५६ श्रासु० वा० स० श्रीदेवद्रकीर्ति भ० प्रतिष्ठित मिती माघ सुद ५ । (विवरण क्र० २०४,४६९)

१४० सके १६२२ भ० श्री चद्रगुरूपदेशात् । (विवरण क्र० ३३०)

१४१ शके १६२४ चित्रभानुनामसंवत्सर माघ ।

१४२ स० १६२६ भ० हेमकीति उपदेशात् प्रतिष्ठित सी० स० । (विवरण क्र० ४१२)

१४३ शक १६२६ तारणनामसवत्सर माहो सुद १३ शुक्रे मुळसघ बलात्कारगण कुदकुदाचार्यान्वये भ० पद्मकीर्ति तत्पट्टे भ० विद्याभूषण त० भ० हेमकीति उपदेशात् उज्जैनीपल्लीवालज्ञातीय सिंगवी लखमप्रसादजी भार्या गोमाई तस्य पुत्र नेमासिंगवी सितलसिंगवी मिलसिंगवीप्रतिष्ठित भागानगर चंद्रनाथचैत्यालये गुमासा चितामणिसा नित्य प्रणमतु (विवरण क्र० २१०)

१४४ शक १६२६ तारण सवसरे माद सुद १३ मूलसघ व० भ०

हेमकीर्ति उपदेशात् सितलसंगई प्रतिष्ठितं शुभं भूयात् । (विवरण क्र० १८६)

१४५ शके १६२८-विभवनामसंवत्सरे माव····। (विवरण क्र० २०५, २३८,४०१)

१४६ सक १६३६ जय० फा० दताजी । (विवरण क्र० ४३५)

१४७ संमत १७७२ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंद (कुंदाचार्यान्वये)····। (विवरण क्र० ५७)

१४८ संमत १७७८ चैत्र सुदी ६ श्रीमू० स० । (विवरण क्र० २९)

१४९ सं० १७८३ । (विवरण क्र० ४६३)

१५० संमत १७९१ मूलसंघ । (विवरण क्र० ११९)

१५१ संमत १७९३ प्र० श्रीमू० स० ब० भ० श्रीधर्मचंद्रना उपदेशात् ज्ञान वा० मोजसा मा: नाबाई त० पु० फदशा (?) नित्यं प्रणमंति । (विवरण क्र० ४०५)

१५२ संवत १८०० वैसाख शु॥ ३ सोमवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये····नागपुरमे····प्रतिष्ठितं। (विवरण क्र० ५१,५६)

१५३ संमत १८०० वैसाख सुदी ३ । (विवरण क्र० ५६)

१५४ संमत १८१० माघ सुद २ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये गोपाचलपट्टे भट्टारक श्रीचारुचंद्रभूषण तत्ोपदेशात्····नगरे प्रतिष्ठा करापिता····कामठी सदर····। (विवरण क्र० २०९)

१५५ शके १६७६ । (विवरण क्र० २३५)

१५६ श्रीमूलसंगे सके १६७६····। (विवरण क्र० ४४३)

१५७ शके १६७७ क्रोधनामसंवत्सरे मार्गशिर्ष सुदी १० बुधे मुलसंघ पुष्करगच्छे सेनगणेम्नाये भट्टारकजी सोमसेनदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनसेनगुरूपदेशात् कारंजाग्रामवास्तव्य बघेरवालज्ञात

सावलागोत्रे वीरासाह भाया हिराई तयोपुत्र जिनासाह भाया गोपाई तयो पुत्र द्वौ प्रथम पुत्र तवनासा भार्या अबाई द्वितीयपुत्र शितलसाह भार्या पदाई नित्य प्रणमति। (विवरण क्र० १७७)

१५८ शक १६७८ माघ सुद १४ मूलसंघ भ० शान्तिसेनोपदेशात् प्रतिष्ठित कारंजाग्रामवास्तव्येन बघेरवाल ज्ञाति फु० गोत्र पु० चिंतामणसा नित्य प्रणमति । (विवरण क्र० २१२)

१५९ समत १८१४ शक १६७९ । (विवरण क्र० ४४४]

१६० शक १६८१ फा० व ॥ ६ मू० स० ब० कु० भ० धर्मचंद्र पार्श्वनाथबिंब । (विवरण क्र० १३८)

१६१ शक १६८६ म० म० ब० भ० धर्मचन्द्र। (विवरण क्र० २०३)

१६२ शके १६८७ फा० ५ भ० । (विवरण क्र० ४३१)

१६३ सके १६८७ मन्मथ अजितकीर्तिउपदेशात् स० छ रे म टा क (?) फा० सु० २ । (विवरण क्र० ४७०)

१६४ संवत १८२३ चैत्र वदी ८ । (विवरण क्र० ३१६)

१६५ समत १८२७ सके १६९२ वैसाख सुदी १२ उपदेशात् । (विवरण क्र० २९९)

१६६ सके १६०२ मिती वैसाख वद ११ श्रीमूलसंघे स० ब० भ० धर्मचंद्र प्रतिष्ठित । (विवरण क्र० ६)

१६७ शके १६९५ । (विवरण क्र० ४६७)

१६८ सक १६९५ मन्मथनामसंवत्सरे । (विवरण क्र० २३६)

१६९ सके १६९७ फा ॥ ५ अ० वाबजि । (विवरण क्र० ४५३)

१७० सके १६९७ स० भ० म० भ० अजितकीर्ति । (विवरण क्र० ४६५)

१७१ सक १६९७ म० फा० सु० ५ भ० अ० मना । (विवरण क्र० ४०३)

१७२ सके १६९७ फा० ५ अ० अय ति० । विवरण क्र० ४७७)

१७३ (सके) १६६७ फा० ५ अ० ज० ल० । (विवरण क्र० ४७६)

१७४ शके १६९७ मन्मथनामसंवत्सरे अजितकीर्ति उपदेशात् परवार हिरामन फाल० शु० द्वितीया २ । (विवरण क्र० ४८०)

१७५ सके १६६७ मनाजी सेठ भ० अ० । (विवरण क्र० ४२३)

१७६ शके १६९७ मि० फा० २····नथु । (विवरण क्र० ३१५)

१७७ समत १८३२ मन्मथनामसंवत्सरे मू० ब० स० कु० भ० पद्मकीर्ति भ० विद्याभूषण भ० हेमकीर्ति तत्पट्टे अजितकीर्ति फाल्गुण मासे शुद २ पचपरमेष्टी । (विवरण क्र० २२७)

१७८ शक १६६७···नाम संवत्सर भ० अजितकीर्ति उपदेशात् फा० सु० २ । (विवरण क्र० २०६)

१७९ शके १६९८ सु०····(विवरण क्र० ३२४)

१८० श्रीमूलसंघी सके १७०५ । (विवरण क्र ४४०)

१८१ सक १७०७ चैत्र वद १३ श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छ बलात्कार-गण । (विवरण क्र० ७३)

१८२ समत १८४५ सके १७१० श्रीमत्काष्टासंघे लाडबागड नंदितट-गच्छे भ० सुरेंद्रकीर्ति तत्पट्टे भ० सकलकीर्ति तत्पट्टे भ० लक्ष्मी सेनजी····श्रीबघेलवालज्ञाति जुगिया गोत्रे···काष्टासंघ गादी···· । (विवरण क्र० १३३)

१८३ सके १७१० शौ कीलनामसंवत्सरे मिती श्रावण सुद १२ श्री-मूलसंघ चिमनाजी सरावगे तय पुत्र मुरारजी । (विवरण क्र० १२८)

१८४ सा० १७१० काष्टासंघी बघलिा जोगी । (विवरण क्र० १७३)

१८५ संमत १८४६ कार्तिक सुदी ४ काष्टासंघे नंदितटगच्छे···· श्रीलक्ष्मीसेनजी प्रतिष्टित···। (विवरण क्र० १३२)

१८६ संमत १८५२ भट्टारक····उपदेशात् रामलालेन प्रतिष्टितं । (विवरण क्र० ४६८)

१८७ सके १७१८ सवत १८५३ मार्गश्वर । (विवरण क्र० ४६२, ४६६)

१८८ ॐ नम सिद्धेभ्य समत १८५७ शके १७२२ भादवा सुदी १० सोमवासरे कुंदकुंदाचार्याम्नाय सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भ० श्री श्री श्री अजितकीर्ति तस्य उपदेशात् गोहिल परवार ज्ञाते मगल भूयात् । (विवरण क्र० ३१)

१८९ साल १७२३ सवत १८५८ फागवदी २ । (विवरण क्र० ४२५)

१९० समत १८५९ शके १७२४ ला नागपूरमध्ये भ० रत्नकीर्ति उपदेशात् । (विवरण क्र० ३०, ४४, ४५)

१९१ समत १८५९ दुदुभिनामसवत्सरे नागपूरनगरे रघुवरराज्ये भ० श्रीरत्नकीर्तिउपदेशात् श्रीपरवार वशे । (विवरण क्र० ३२)

१९२ समत १८५९ शके १७२४ श्री मूलसघ बलात्कारगणे सरस्वती-गच्छे भ० रत्नकीर्ति उपदेशात् नागपूरनगरे रघुवरराज्ये परवारा-न्वये सेतगागर गोहिल्लगोत्र भाया प्रतिष्ठा करापित । (विवरण क्र० ३३, ४३)

१९३ समत १८६१ वैसाख सुदी ५ सोमवासर सवाईजयनगर श्री-सुरेंद्रकीर्तिउपदेशात् हिरा प्रतिष्टा कारिता । (विवरण क्र० ३४६)

१९४ सवत १८६६ फाल्गुण कृष्ण ५ शुक्रवारे श्रीमूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये प्रतिष्ठित । (विवरण क्र० ३७०, ३७२)

१९५ संमत १८६८ फागुण सुदी ७ बुध श्रीमूलसघ बलात्कारगण सरस्वतीगच्छ प्रतिष्ठित । (विवरण क्र० ११०)

१९६ शके १७४२ श्रीमूल । (विवरण क्र० ४८१)

१९७ शके १७४४ श्रीमूलसघ । (विवरण क्र० ९०, १७१)

१९८ सवत १८८१ वर्षे माघ मासे शुद्ध ५ सोम श्रीकाष्टासघे भ०

सुरेंद्रकीर्ति तत्शिष्य भ० देवेंद्रकीर्ति राजेमान ज्ञाति बघेरवाल। (विवरण क्र० १७०)

१९९ संमत १८८१ मू० स० ब० आचार्य श्रीरामकीर्ति उपदेशात्... प्रतिष्ठित श्रीउमरावतीनगरे। (विवरण क्र० १६२)

२०० सवत १८८४ श्रीमूलसंघ सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वय भट्टारक श्रीदेवेंद्रकीर्ति उपदेशात्...प्रतिष्ठितं। (विवरण क्र० ५२)

२०१ संवत १८८५ मार्गशिर्ष वद १२ गुरुदिने श्रीमत्काष्टासंघे लाडबागडगच्छे भ० प्रतापकीर्ति आम्नाय नंदितटगच्छे भ० सुरेंद्रकीर्ति तस्य भ० देवेंद्रकीर्ति राज्यमान ज्ञाति बघेरवाल गोत्र बोरखंड्या सा० खेमासा पु० पूनासा यंत्र प्रणाम्यंति। (विवरण क्र० ३९२)

२०२ संमत १८८७ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्याम्नाये श्रीमत्भट्टारक धर्मचंद्रदेवात् तत्पट्टे भट्टारक देवेंद्रकीर्तिदेवात् तत्पट्टे भ० पद्मनंदिदेवात् तत्पट्टे भ० देवेंद्रकीर्तिदेवात् उपदेशात् बघेरवाल पासमा मवसा सरसग्राममध्ये प्रतिष्ठा करापितं। (विवरण क्र० ४२८)

२०३ संमत १८८७ शके १७५२ श्रावणमासे शुक्लपक्षे ती० ५ आदितवासरे बालात्कारगणे कारंजापुरपट्टाधिकारी श्रीमंत भ० देवेंद्रकीर्तिस्वामीजी मोर्दं बिंब प्रतिष्ठितं। (विवरण क्र० ४७१)

२०४ शक १७५२ संमत १८८७ वैसाख सुदी ७ गुरुवार स्वस्ति श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० धर्मचंद्रदेवात् तत्पट्टे भ० देवेंद्रकीर्तिदेवात् त० भ० पद्मनंदिदेवात् कार्यरंजकपुरपट्टाधिकारी श्रीमत् देवेंद्रकीर्तिउपदेशात् वैरामक्षेत्रे सिरसग्रामे माणिकसा बघेरवाल तत्पुत्र पामा गोत्र चवरे प्रतिष्ठा करावितं। (विवरण क्र० १९१)

२०५ समत १८८७ का ज्येष्ठ सुदी ९ विंशतिनामसंवत्सरे श्रीमू० स० ब० कुं० भ० पद्मनंदिदेवात् तत्पट्टे भ० देवेंद्रकीर्ति प्रतिष्ठा करान्वित। (विवरण क्र० २८)

२०६ संवत् १८८८ वैसाख कृष्ण ५ रविवासरे श्रीमूलसंघे ब० स० श्रीकुं० इद प्रतिमा कारयेत् श्रीमकलपचक्रमेटिक स्वकर्मक्षयार्थं प्रतिमा प्रतिष्ठितिय। (विवरण क्र० ४५)

२०७ समत १८८८ । (विवरण क्र० १०६)

२०८ समत १८८९ वैसाख शुक्ल ११ गुरुवासर मलसंघ ब० स० कुंदकुंदाचार्यान्वय। (विवरण क्र० ८५)

२०९ समत १८८९ वृषभायणे । (विवरण क्र० १०३)

२१० समत १८९१ शके १७५६ जयनामसंवत्सरे श्रावणमासे कृष्णपक्षे पराति मूलसंघे स० ब० कारंजानगरे इद पद्मादेवि श्रीमद्देवेंद्रकीर्तिस्वामिना प्रतिष्ठितम्। (विवरण क्र० २३७)

२११ समत १८९३ वर्षे माघ सुद १० बुधदिनी मुलसंघ कुंदकुंदाचार्याम्नाय ब० स० भट्टारकपद्मनंदिदेवात् ततशिष्य भ० देवेंद्रकीर्तिदेवात् तत् उपदेशात् भार्या हिला पुत्र नेमुराम भ्राता दामूजी भार्या राढव प्रतिष्ठित प्रणमति। (विवरण क्र० १८९)

२१२ स० १८९३ श्रीमू० नागपूर श्रीपार्श्व च०। (विवरण क्र० ३९६)

२१३ श्रीमूलसंघ सक १७५९। (विवरण क्र० ४५४,४५८)

२१४ श्रीसंवत १८९४ साल आषाढ व॥ ९ श्रीमहावीर स्वामीजीका मुख। (विवरण क्र० ४९,५०)

२१५ समत १८९७ शके १७६२ भगवतिनामसंवत्सरे वैसाख सुदी ३ बुधवासरे इद श्रीपार्श्वनाथस्वामी श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीमद्देवेंद्रकीर्तिस्वामी

नागपूरे प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० २१४)

२१६ संवत १८९८ मिती श्रावण सुदि ८ सोमदिने नागपूरे श्रीपार्श्वनाथचैत्यालये इदं जलयात्रायंत्र प्रतिष्ठितं (विवरण क्र० २७०)

२१७ संमत १८९९ फागुण सुदी ७ बुधवासरे श्रीमूलसंग बालात्कार गण सरस्वतीगच्छ कुंदकुंदाम्नाये तेन प्रतिज्ञानुसारेण प्रतिमा प्रतिष्ठितं गोपीसाह । (विवरण क्र० ३३२)

२१८ श्रीमूलसंघे शाके १७६४ । (विवरण क्र० ११२)

२१९ श्रीपारसनाथजी सक १७६५ र...नाम संवत्सरे । (विवरण क्र० ७७)

२२० संमत १९०० सके १७६५ सोयल नाम संवत्सरे चैत्र सुदी ३ सोमवासरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे नागपूर पार्श्वनाथचैत्यालये अयं मेरू देवेंद्रकीर्तिस्वामीना प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० १८१)

२२१ संवत १९०० शाके १७६५ सोमवक नाम संत्वसरे चैत्र सुद ३ सोमवार मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीनागपूरे श्रीमत् चिंतामणिपार्श्वनाथचैत्यालये श्रीशांतिनाथस्वामी देवेंद्रकीर्तिस्वामीना प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० १७८,१७९)

२२२ संमत १९०२ माघ शु॥ १३ (विवरण क्र० २८३,२००)

२२३ संमत १९०२ माघ सुदी तेरसी भ० देवेंद्रकीर्ति हस्तेन सुखालाल प्यारेलाल...प्रतिष्ठा करापिता । (विवरण क्र० २४२)

२२४ शाके १७६७ । (विवरण क्र० ३९५)

२२५ संमत १९०२ शाके १७६७ तेरसीदिवसे प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० ३९)

२२६ संवत १९०४ शाके १७६९ मिती वैसाख सुदी १३ बुधवासरे इदं श्रीचन्द्रनाथस्वामी प्रतिष्ठा श्रीमतदेवेंद्रकीर्तिस्वामी तेन प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० ६०,६१)

२२७ समत १९०४ शके १७६९ प्लवगनामसंवत्सरे मिती वैसाख सुदी १२ बुधवासरे इदं मुनिसुव्रत स्वामी श्रीमूलसंघ बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीमद् देवेंद्रकीर्ति उपदेशात् बघेरवालज्ञा चवरियागोत्रे रतनसाजी श्रीनागपूरे प्रतिष्ठित। (विवरण क्र० २२४)

२२८ समत १९०५ मिती वैसाख सुदी १३। (विवरण क्र० २८२)

२२९ संवत् १९०७ शके १७७२ मिती श्रावणसुदी ५ सोमवार नागपूरनगरे श्रीमूलसंघ सरस्वतीगच्छ बलात्कारगण श्रीपार्श्वनाथस्वामिचैत्यालये इदं पद्मावतिदेवि प्रतिष्ठित।

(विवरण क्र० २३५)

२३० संवत् १९०७ शके १७७२ मिती श्रावण सुदी ५ सोमवासरे नागपूरनगरे मुलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीपार्श्वनाथस्वामीचैत्यालये अयं पार्श्वनाथप्रतिमा भ० देवेंद्रकीर्तिस्वामिना प्रतिष्ठित। (विवरण क्र० १९६)

२३१ समत १९०७ मिती श्रावण सुद ५ मू० स० ब० नागपूरे पार्श्वनाथदेवालये प्रतिष्ठित। (विवरण क्र० १८५, ३८९)

२३२ अयं मेरू इंगोलीग्राम शांतीनाथस्वामीचैत्यालये स्थापित संवत् १९०८ शके १७७३ वर्षे विरोधकृतनामसंवत्सर श्रावणमास शुक्लपक्षे १० बुधवासरे मुलसंघ सरस्वतीगच्छ बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये नागपूरनगरे पार्श्वनाथस्वामीचैत्यालये अयं मेरू जिनान् श्रीदेवेंद्रकीर्तिस्वामीना प्रतिष्ठाप्य इंगोलीग्रामे स्थापित (विवरण क्र० १९५)

२३३ समत १९०८ शक १७७३ श्रावण सुद १० बुधवार मुलसंघ सरस्वतीगच्छ बलात्कारगण कुंदकुंदाचार्यान्वये नागपुरनगरे श्रीपार्श्वनाथचैत्यालये अयं श्रीनेमिजिन देवेंद्रकीर्ति प्रतिष्ठित।

(विवरण क्र० २१७, २३०)

२३४ शके १७७५ पार्थिवनामसंवत्सरं ज्येष्ट सुदी ११ तिलक श्री-मूलसंघे सेनगणे पुष्करगच्छे गुणभद्रदेवात् तत्पट्टे श्रुतवीरदेवात् तत्पट्टे भ० माणिकसेनदेवात् त० नेमसेनउपदेशात् बघनोरा ज्ञाति माणिकशेटी भार्या सोनाई तस्य पुत्र धायसेटी भार्या गुणाई तस्य पुत्र आयसेटी भार्या रत्नाई लखमणसेटी भार्या धरवाई रंगसेटी भार्या मालाई इदं प्रतिष्टा केली द्वितीय साखा भ० गुणभद्रदेवा तत्पट्टे भ० लक्ष्मीसेनश्री प्रतिष्टितं श्री आयार्जी लखमजी रंगो (विवरण क्र० २२६)

२३५ संमत १९१३ शके १७७८ मिती फाग सुदी २ मुलसंघ सरस्वतीगच्छ बलात्कारगण कुंदकुंदान्वय अनंतनाथस्वामी नागपूरं प्रतिष्टितं (विवरण क्र० १८३)

२३६ संमत १९१५ शके १७८० माघ सुदी ३ मू० म० ब० कुं० प्रतिष्टितं। (विवरण क्र० १९८)

२३७ मा ये धा म न (?) संवत १९१५। (विवरण क्र० ४१९)

२३८ संमत १९१६ मि० फाग सुद ११ श्री मू० स० ब० कुं० हिरालालसा ठाकूर। (विवरण क्र० ३४, ५३)

२३९ संमत १९१६ मि० फाग सुद ११ श्री मू० स० ब० कुं० लुखुसा चोणसाव। (विवरण क्र० ३५,३६,३२८,३२९)

२४० संमत १९१६ फागुण सुद ११ समतीवृतं (?) कुंदकुंदाम्नाय गणहु गंगाराम। (विवरण क्र० ३७)

२४१ संवत १९१६ मि० फागण सुदी ११ श० श्रीमू० स० ब० कुं० अयं श्रीअजितनाथस्वामी सुखासाव परवार तेन प्रतिष्टितं। (विवरण क्र० २१,२८६,२८८–२९०,२९३,३०३,३०८,३३१)

२४२ संमत १९१६ मिती माघ सुदी १० श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये अयं श्रीमहावीरस्वामीजी भट्टारक श्रीदेवेंद्रकीर्ति स्वामीजी उपदेशात् संभुरामजी तस्य

पुत्र भागचन्द्रजी अजमेरा खंडेरवाल श्रावकेन प्रतिष्ठित गुरुवासरे नागपुर शुक्रवारीपेठ श्रीजिनचैत्यालय। (विवरण क्र० ६५, ६६, ७२, ७५, ७६)

२४३ समत १९१६ मिती माघ सुदी १० गुरुवार। (विवरण क्र० ६७, ६८, ८२)

२४४ समत १९१६ मिती माघ सुदी १० सरूपचन्द्र अजमेरा तेन प्रतिष्ठित। (विवरण क्र० ७१)

२४५ समत १९१६ माघ सुदी १० मूलसंघे प्रतिष्ठित।
(विवरण क्र० ७८)

२४६ समत १९१६ माघ सुदी १० गुरुवारे श्रीमू० स० ब० कु० नेमिनाथस्वामीजिन। (विवरण क्र० ८१, १९९)

२४७ समत १९१६ मिती माघ सुदी १० गुरुवासर श्रीमू० स० ब० भट्टारकदेवेंद्रकीर्तिस्वामीजी हस्तेन प्रतिष्ठित नागपूरमध्य।
(विवरण क्र० ८६)

२४८ समत १९१६ मि० फा० सुदी ११ शनिवार श्रीमू० स० ब० कुन्द० अथ श्रीआदिनाथ श्रीदेवेंद्रकीर्ति स्वामीना प्रतिष्ठित।
(विवरण क्र० २८०)

२४९ समत १९१६ मिती फागुण सुदी ११ शनिवासरे नागपूरनगरे श्रीमहावीरस्वामीचैत्यालये श्रीमूलसंघे स० ब० कु० अथ श्रीपार्श्वनाथस्वामीजी श्रीदेवेंद्रकीर्ति स्वामीजी स्वहस्तेन प्रतिष्ठित। (विवरण क्र० २९१)

२५० समत १९१६ मिती फागुणसुदी ११ शनिवासर श्रीमू० स० ब० कु० नागपूरनगरे श्रीजिनचैत्यालये अथ श्रीआदिनाथस्वामी मूलनायक भ० श्रीदेवेंद्रकीर्तिस्वामी उपदेशात् मकुंददास तत्पुत्र मनीलाल परवार पोउल मुर कोठल गोत्र ते प्रतिष्ठित।
(विवरण क्र० २६६)

२५१ संवत १६१६ मिती माघ ''। (विवरण क्र० ८६,४२७)

२५२ संमत १६२५ मार्गशिर्ष सुदी ५ गुरु श्रीमू० भ० हेमकीर्ति तत्पट्टे भ०''''करा''''। (विवरण क्र० २८०)

२५३ संमत १९२५ का माघ सुदी ५ सोमवारे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये नागौरपट्टे भ० हेमकीर्ति उपदेशात् रामटेकमध्ये संघवी मनालालेन प्रतिष्ठितं।
(विवरण क्र० २८४)

२५४ संवत १९२५ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये नागौरपट्टे भ० श्रीविद्याभूषणजी तत्पट्टे भट्टारक श्रीहेमकीर्तिजी तदाम्नाय''''परवालान्वये कोछलगोत्रे संघवी भुरसीदास तत्पुत्र मनालालेन प्रतिष्ठा करान्वितं। (विवरण क्र० ५)

२५५ संवत १९२५ शके १७९० विभवनाम संवत्सरे शुक्लपक्षे तीर्थी ७ बुधवासरे श्रीमूलसंघ सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्याम्नाये इदं प्रतिमा देवेंद्रकीर्ति स्वामीन हस्ते नागपूरमध्ये चोखालाल तस्य भार्या बीराबाई ने प्रतिष्टा करान्वितं।''

२५६ श्रीजिनो जयति॥ श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्रेभ्यो नमः। संमत १९२५ का शके १७९० का विभवनामसंवत्सरे सिसरऋतौ मासातमासोत्तममासे मार्गशिर्षमासे शुभे शुक्लपक्षे तिथौ ५ पंचमी गुरुवासरे उत्तराषाढ नक्षत्रे गजनामयोगे श्रीनागपुरवास्तव्यमे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे नंद्याम्नाये कुंदकुंदाचार्यान्वये श्रीनागौरपट्टे भट्टारकश्री हरषकीर्तिजी तत्पट्टे भ० श्रीविद्याभूषणजी तराडेण (?)''''इक्ष्वाकुवंशे धुरामोरी गोत्रे संघवी कृपारामजी तत्पुत्र कलुपाऊजी भार्या हीराबाई तत्पुत्र वृषपाल सावजी छोटेलाल''''तेन सपरिवारेण संघवी कलुपाऊ श्रीप्रतिष्ठां-करापितं॥ श्रीरस्तु॥ श्रेयामस्तु॥ रक्षिवमस्तु॥ (विवरण क्र० २८५)

२५७ श्रीसमत १६२५ शक १७९० विभवनामसंवत्सरे मिती वैसाख मासे शुक्लपक्षे तीथी ७ बुधवासर श्रीमूलसंघे बालात्कारगणे श्रीसरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये श्रीचन्द्रप्रभस्वामीन प्रतिमाथा श्रीमद् देवेंद्रकीतिस्वामीहस्त श्रीनागपूरमध्य प्यारे- सावजी भार्या पुनाबाई परवार तेने प्रतिष्टा करार्पित ।

(विवरण क्र० २९४)

२५८ समत १९२५ वै० शु ॥७ बु० कु० दे० नागपूरमध्ये गुमान- साव तस्य पुत्र चुडामणसा तस्य पुत्र भोजराज परवार तेन प्रतिष्ठा कराव्वित । (विवरण क्र० २९६)

२५९ समत १९२५ बैसाख शुद्ध ७ बुध० श्रीमू० स० ब० कु० श्रीपार्श्वनाथस्वामीना देवेन्द्रकीतिस्वामीनहस्ते नागपूरमध्ये प्रतिष्ठित । (विवरण क्र० ३१२-१४)

२६० समत १९२५ वैसाख सुदी ७ प्रतिष्ठित मनबोध जिन मुगा- बाई । (विवरण क्र० ३२७)

२६१ समत १९२५ मिती श्रवण सुदी ५ प्रतिष्ठा नागपूरमध्ये आदि- नाथजी । (विवरण क्र० ३३६)

२६२ समत १९२५ शके १७९० आदिनाथस्वामी ।

(विवरण क्र० ३४४)

२६३ समत १९२५ का मिती माघ सुदी ५ सोमवासरे श्री मूलसंघ ब० स० कुंदकुंदाचार्यान्वय नागौरपट्ट भ० श्रीविद्याभूषणजी तत्पट्टे भ० हेमकीतिना तदाम्नायवरता पंडित सवाईरामोपदेशात् परवारान्वये कोछलगोत्रे सवई तुलसीदास तत्पुत्र म० लाल कुंजलाल विहारीलालेन प्रतिष्ठा की । (विवरण क्र० ३५९)

२६४ समत् १९२५ वैसाख सुदी ७ बुधवारे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्याम्नाये भट्टारकश्रीमद्देवेंद्रकीर्ति प्रतिष्ठित । (विवरण क्र० ३७१)

२६५ संमत १६२५ माघ सुदी ५ सोमे प्रतिष्ठितं।
(विवरण क्र० २७३-४)

२६६ श्रीमूलसंगचे····संमत १६२६ प्रभवनाम संवत्सरे श्रावण व ॥५॥
(विवरण क्र० ४५१)

२६७ संमत १९२८ प्रभवनामसंवत्सरे* माघ शुक्ल द्वादशीतिथौ बुधवासरे प्रतिष्ठाचार्य श्रीमत् देवेंद्रकीर्तिभट्टारक प्रतिष्ठा करणार प्यारेसाव मनासाव। (विवरण क्र० ३६३)

२६८ श्रीपारसनाथजी संमत १६२८। (विवरण क्र० २६२)

२६९ संवत १९२८ प्रजापतिनामसंवत्सरे माघशुक्ले द्वादशीतिथौ बुधवासरे प्रतिष्ठाचार्यश्रीमत् देवेंद्रकीर्ति भट्टारक प्रतिष्ठा करविणार मनालाल सवाईसंघवी। (विवरण क्र० ४२)

२७० संवत १६२८ (विवरण क्र० ३८)

२७१ ॐ चंद्रनाथ येन संमत १९३३। (विवरण क्र० ७०)

२७२ संमत १६३६ शके १८०४···प्रतिष्ठाचार्य विशालकिर्ती भट्टारक प्रतिष्ठा करविणार सुतीयाबाई परवारीन। (विवरण क्र० २७९)

२७३ श्रीपारसनाथजी सं० १९४८ (विवरण क्र० ३०५)

२७४ संमत १९५२ वैसाख सुदि १३ सोमवासर····प्रतिष्ठितं।
(विवरण क्र० ८४)

२७५ सं० १९५८ व० सु० १२ पदासा मोजासाव।
(विवरण क्र० ३०२)

२७६ संमत १६५८ वैसाख शुद्ध १५ मूलसंघे कुंदकुंदाम्नाये भट्टारक देवेंद्रकीर्ति प्रतिष्ठितं। (विवरण क्र० ३७६)

२७७ मा० शी० ७ श्री० रा० व० स्व० वा० शी० श्र० प्र० ना० सं० १९६१। (विवरण क्र० ४१८)

---

* यह संवत्सर नाम गलत प्रतीत होता है।

२७८ समत १९६१ मिती ज्येष्ठ शु ॥१० श्रीवीरसेन स्वामी उपदेशात् चागामाव गगासावजी चवरे याहानी प्रतिष्ठा करविली।

(विवरण क्र० १४५)

२७९ नागपूर शेतवाल मन्दिर प० रवि० समत १९६१ मागशिष व॥ सप्तम्या पण्डितवर्य रामचद्र ब्रह्मचारिणा पच शेतवाल अनुराधा प्रतिष्ठित इद प्रतिमा। (विवरण क्र० १०७)

२८० शमत १९६६ कु०म्नाय सिवनीनग्र प्रतिष्ठित।

(विवरण क्र० ३२५)

२८१ वीरसमत २४३६ मि० मा० शु ॥ ५ मु० बा० ग० प्रतिष्ठित।

(विवरण क्र० ४३७)

२८२ समत १९६८ ज्येष्ठ सुद ८ शुक्रवासरे मुलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कारजापुरे पट्टाधिकारी भ० देवेंद्रकीर्तिस्वामी उपदेशात् शिखरजीकी पादुका खडेलवालजातिय पाटणीगोत्र हजारीलाल गेंदालाल येन प्रतिष्ठा करावित नागपूरनगरे।

(विवरण क्र० १९७, २३२)

२८३ समत १९७६ पण्डित रामभाऊना प्रतिष्ठित कन्हैयालालजी गरीबे याचे आईचे नन्दिश्वर व्रतोद्यापनार्थं।

(विवरण क्र० २२२)

२८४ स्वस्ति श्री २४५८ श्रीवीरसवत्सरे १९८८ विक्रम माघमासे शुक्लपक्षे दशम्या तिथौ बुधवासर श्रीमूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुदाचार्याम्नाये फणिंद्रपुरनिवासी परवारजातिय सेलामूर गोइल्लगोत्रोत्पन्न परमानदीप्रजात्मज परवारभूषण फत्तेचद्दिपचदाभ्या ठपारानगर प्रतिष्ठित।

(विवरण क्र० २२०-२३)

२८५ श्रीमहावीरनिर्वाणसमत २४६० विक्रम समत १९९० शक १८५५ फाल्गुण शुद्ध १२ सामवार श्रीमूलसघ सरस्वतीगच्छ

बलात्कारगण श्रीकुंदकुंदाचार्याम्नायांतील वासल गोत्रांतील परवारज्ञाति नागपूरनिवासी शेठ कनईलाल नेमिचंदजी यांनी दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र गजपंथ येथील श्री ब्र० जीवराज गौतमचंद सोलापूर याचे प्रतिष्ठामध्ये श्रीमहावीर तीर्थंकराचे बिंब प्रतिष्ठित केले असे ॥ (विवरण क्र० ६२)

२८६ श्रीमद्देवाधिदेव १०८ भगवान शांतिनाथ तीर्थंकर जिनबिंब प्राणप्रतिष्ठा स्वस्ति श्री १०८ भ० विशालकीर्तिस्वामीमहाराज संस्थान तक्त लातूर गादी नागपूर पट्टाचार्य सदुपदेशात् नागपूरस्थ दि० जैन सेतवाल समाज वारसंवत २४६१ मिती मार्गशिर्ष कृष्ण १२ श्याम् कृतेति शम् । (विवरण क्र० १०४-५)

२८७ श्रीमद्देवाधिदेव १०८ भगवान आदिनाथ तीर्थंकर जिनबिंब प्राणप्रतिष्ठा स्वस्ति श्री १०८ भ० विशालकीर्तिस्वामीमहाराज संस्थान तक्त लातूर गादी नागपूर पट्टाचार्य सदुपदेशात् नागपूरस्थ दिगम्बर जैन सेतवाल समाज व श्री० राजाराम डुर्बीसाव काटोलकरेणप्रतिमा आणिता प्रतिष्ठाचार्य श्री० पंडितवर्य रामभाऊ महामहोपाध्याय पंडित श्री० अखिल सेतवाल जैन राजगुरुपीठ संस्थान तक्त लातूर गादी नागपूर वीरसंवत् २४६१ मिती मार्गशिर्ष कृष्ण १२ श्याम् कृतेति शम् ।

(विवरण क्र० १०६)

२८८ स्वस्ति श्री १०८ श्रीभट्टारकविशालकीर्ति उपदेशात् सं० २४६१ मार्गशिर्ष कृष्ण १२ श्याम् बुधौ प्रतिष्ठितं ।

(विवरण क्र० ३८६-७, ३९३-४, ४१५-७)

[अनिश्चित समयके लेख]

२८९ संवत १५४ – संघ रे नी गी पुत्रा न र नां (?)

(विवरण क्र० ४१०)

२९० सं० १५ सुद १३ सरला पुत्र मनसुख भार्या महला।
(विवरण क्र० ४२२)

२९१ सवत १५ – ६ वर्षे वैसाख सुदि ३ मगलदिने भट्टारकजिन-
चन्द्राम्नाये गोलापूर्व सघे हुलाम । (विवरण क्र० १६३)

२९२ समत १–६१ वर्षे वैसाख सुदी का जीवरान ।
(विवरण क्र० ७४)

२९३ सक १–७९ शुभकृत नाम सवत्सरे कातिक शुद्ध प्रतिपदा १
बुधवार सावरगावग्राम श्रीआदिनाथचैत्यालये श्रीमदिंद्र
भट्टारकउपदेशात् तस्य श्रावक तिमाजी पदमापुरे तस्य भार्या
बचाई व गगाई तस्य पुत्र येकुजि कानेरवा तस्य यत्र।
(विवरणक्र० २७६ २७७)

२९४ ७८ वैसाख सुदी ३ पुत्र मोती भार्या म ।
(विवरण क्र० ३०७)

[अज्ञात समयक लेख]

२९५ सवत वैसाख मासे शुद्ध ३ भौमवासरे श्रीमूलसघे बलात्कारगणे
सरस्वतीगच्छे कुदकुदाचार्याम्नाये तेन प्रतिज्ञानुसारेण प्रतिष्ठितं
नागपूरमध्ये । (विवरण क्र० २४)

२९६ मीकाजी। (विवरण क्र० ११६)

२९७ मूलसघ बलात्कारगण पिनदयागोत्रे रामासा भार्या नमाई पुत्र
रतनसा भार्या पदमाई द्वितीय पुत्र हिरामा भार्या पुताई तृतीय
पुत्र लखनासा चतुर्थ पुत्र परसाजी श्रीचद्रप्रभ प्रतिष्ठा
सवत । (विवरण क्र० १३१)

२९८ श्रीकाष्ठासघ नदितटगच्छ भ० श्रीरामसेनान्वये भ० श्रीलक्ष्मी-
सेनजी प्रतिष्ठित। (विवरण क्र० १३६)

२९९ श्रीवासुपूज्य जिनवर। (विवरण क्र० १८२)

२०० ····महाराजाधिराज····देवेंद्रकीर्ति····बलात्कारगण सरस्वती [गच्छ]····। (विवरण क्र० १९३)

२०१ भ० हेमकीर्ति उपदेशात्····स० प्रतिष्टितं । (विवरण क्र० २०७)

२०२ हेमराज तस्य पुत्र हंसराज भार्या तमाबाई प्रतिष्टा माव सुदी····। (विवरण क्र० २८१)

२०३ ····सातनाथ····। (विवरण क्र० ३५३)

२०४ श्री आदिसर । (विवरण क्र० ३५८)

२०५ श्रीमू० स० भ० श्रीधर्मचंद्रोपदेशात् रामसेन । (विवरण क्र० ३७९)

२०६ श्रीमू० म० जि० का प सेठ प्र (?) (विवरण क्र० ३८१)

२०७ श्रीमूलसंघे भ० श्रीभुवनकीर्ति····। (विवरण क्र० ३९०-४६२)

२०८ श्रीमूलसंग । (विवरण क्र० ३९८, ४०२, ४५६, ४८६)

२०९ श्रीमू० स० व० । (विवरण क्र० ४००)

२१० श्रीधर्मचंद्रउपदेशात् कपरसेट । (विवरण क्र० ४०४)

२११ लखमनसा रुपा । (विवरण क्र० ४०७)

२१२ ब्र० पं० नेमीचंद्रजी । (विवरण क्र० ४२०)

२१३ सेनगण भ० श्रीलक्ष्मीसेन····च्यारित्रमति सेवक देवीचे चंद्राइत्ये····। (विवरण क्र० १६४)

२१४ मू० व० स० धर्मचंद्र हेमसेठ नित्यं····ता । (विवरण क्र० ४४२)

२१५ मूलसंघे भ० सुरेंद्रकीर्ति····प्रतिष्टितं । (विवरण क्र० ४५५)

२१६ ····मू० भ० जि० पार वा गट (?) (विवरण क्र० ४६४)

२१७ श्रीआदिनाथ मा० श्रीवंत । (विवरण क्र० ४६६)

२१८ मू० संघ तानसेट वमनांमा । (विवरण क्र० ४७२)

२१९ श्रीमूलसंघ ब्रह्म. मल्लिदास मा····भार्या सखाई । (विवरण क्र० ४८८)

३२० श्रीमूलसंघ सक्राजी पुजारी ना। (विवरण क्र० १२५-६)

३२१ रसब्रमा ठवली। (विवरण क्र० १२७)

३२२ बावाजी बडलकार। (विवरण क्र० ४३८)

३२३ मू० भ० जि० गदसेठ स्वहित। (विवरण क्र० ४१५)

३२४ श्रीमूलसंघे भ० श्रीमल्लिभूषण सा० लखा भार्या अर्जी सुता सोनाइ। (विवरण क्र० १६१)

मन्दिरों व मूर्तियोंका विवरण

[१] अजितनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, केलीबाग, नागपुर।

१ अजितनाथ (सफेद पाषाण १½ फुट) लेख क्र० १८
२ पार्श्वनाथ (सफेद पाषाण १ फु० २ इं०) लेख क्र० १८
३ ,, ,, ,, लेख क्र० १८
४ पार्श्वनाथ (धातु ६ इं०) लेख क्र० २५४
५ चौवीसी (धातु ४ इं०) लेख क्र० ९२
६ पार्श्वनाथ (धातु ४½ इं०) लेख क्र० १६६
७ धर्मनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० १०१
८ पार्श्वनाथ (धातु ५ इं०) लेख क्र० १३८

लेखरहित प्रतिमाएँ – शान्तिनाथ (धातु ७ इं०), चौवीसी (काला पाषाण १½ फुट), पार्श्वनाथ (धातु ३½ इं०), चन्द्रप्रभ (काला पाषाण ९ इं०) पार्श्वनाथ (काला-पाषाण ६ इं०)
पार्श्वनाथ (काला पाषाण ८ इं०) यक्षिणी (कृष्ण पाषाण १० इं०)।

[२] दिगम्बर जैन मन्दिर, मस्कासाथ, नागपुर

९ आदिनाथ (सफेद पाषाण २½ फु०) लेख क्र० १८
१० पद्मप्रभ (सफेद पाषाण १ फु०) लेख क्र० १८
११ आदिनाथ (सफेद पाषाण १० इं०) लेख क्र० १८
१२ पार्श्वनाथ (सफेद पाषाण १ फु०) लेख क्र० १८
१३ अजितनाथ (सफेद पाषाण १० इं०) लेख क्र० १८

१४ चन्द्रप्रभ (सफेद पाषाण ७० इ०) लेख क्र० १८
१५ आदिनाथ (सफेद पाषाण १० इ०) लेख क्र० १८
१६ सुपार्श्वनाथ (,,) लेख क्र० १८
१७ पार्श्वनाथ (सफेद पाषाण १ फु०) लेख क्र० १८
१८ वासुपूज्य (सफेद पाषाण ११ इ०) लेख क्र० १८
१९ पार्श्वनाथ (काला पाषाण १ फु० २ इ०) लेख क्र० १८
२० पार्श्वनाथ (सफेद पाषाण १ फु०) लेख क्र० १८
२१ चन्द्रप्रभ (सफेद पाषाण १० इ०) लेख क्र० १८
२२ अजितनाथ (,,) लेख क्र० १८
२३ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० ७ इ०) लेख क्र० १८
२४ आदिनाथ (सफेद पा० ७ इ०) लेख क्र० १८
२५ नेमिनाथ (सफेद पा० ८ इ०) लेख क्र० १८
२६ सुपार्श्वनाथ (सफेद पा० १० इ०) लेख क्र० १८
२७ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० ३ इ०) लेख क्र० ६०
२८ पार्श्वनाथ (काला पा० ११ इ०) लेख क्र० २०५
२९ पार्श्वनाथ (काला पा० १० इ०) लेख क्र० १४८
३० पार्श्वनाथ (धातु १ फु०) लेख क्र० १६०
३१ पार्श्वनाथ (धातु १० इ०) लेख क्र० १८८
३२ पार्श्वनाथ (धातु ९ इ०) लेख क्र० १९१
३३ पद्मप्रभ (धातु ११ इ०) लेख क्र० १९२
३४ चौबीसी (धातु ७ इ०) लेख क्र० २२८
३५ चौबीसी (धातु ७ इ०) लेख क्र० २३६
३६ चौबीसी (धातु ७ इ०) लेख क्र० २२९
३७ पार्श्वनाथ (धातु ६ इ०) लेख क्र० २४०
३८ आदिनाथ (धातु ३ इ०) लेख क्र० २७०
३९ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ११ इ०) लेख क्र० २२५

४० मुनिसुव्रत (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० ७
४१ अजितनाथ (धातु ५ इं०) लेख क्र० २४१
४२ धर्मनाथ (धातु ७ इं०) लेख क्र० २६६
४३ चौबीसी (धातु १० इं०) लेख क्र० १६२
४४ यक्षिणी (धातु ५ इं०) लेख क्र० १९०
४५ यक्षिणी (धातु ७ इं०) लेख क्र० १९०। लेखरहित प्रतिमाएँ—
पार्श्वनाथ (धातु १ से ४ इं० की दस प्रतिमाएँ)

[३] दिगम्बर जैन मन्दिर, किराणा बाजार, नागपुर

४६ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८
४७ पार्श्वनाथ (काला पा० १ फु०) लेख क्र० १८
४८ सुपार्श्वनाथ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० १८
४९ महावीर (काला पा० ४½ फु०) लेख क्र० २१४
५० चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १ फु० ३ इं०) लेख क्र० २१४
५१ मुनिसुव्रत (सफेद पा० १ फुट) लेख क्र० १५२
५२ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फुट) लेख क्र० २००
५३ चौबीसी (धातु ६ इं०) लेख क्र० २३८
५४ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १½ फुट) लेख क्र० २९५
५५ पार्श्वनाथ (धातु १० इं०) लेख क्र० २०६
५६ पार्श्वनाथ (सफेद पा० २ फु० २ प्रतिमाएँ) लेख १५२
५७ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १२७
५८ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १३६
५९ सुपार्श्व (पीला पा० ७ इं०) लेख क्र० १५३
६० चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० २२६
६१ पार्श्वनाथ (पीला पा० १ फु०) लेख क्र० २२६
६२ महावीर (धातु १ फु० ३ इं०) लेख क्र० २८५

६३ चन्द्रप्रभ (काला पा० १ फु०) लेख क्र० १२६
६४ नेमिनाथ (काला पा० १ फु०) लेख क्र० १२६

लेखरहित प्रतिमाएँ – पार्श्वनाथ (सफेद पा० १½ फु०), पार्श्वनाथ (धातु २ से ३ इ० ४ प्रतिमाएँ), चन्द्रप्रभ (काला पा० ११ इ० २ प्रतिमाएँ), अज्ञातचिह्न मूर्ति (स्फटिक, १½ इ०), यक्षिणी (धातु ४ इ०)

[४] दिगम्बर जैन मन्दिर, जुनी शुक्रवारी पेठ, नागपुर

६५ महावीर (धातु ८ इ०) लेख क्र० २४२
६६ आदिनाथ (सफेद पा० १ फु० २ इ०) लेख क्र० १२६
६७ सिद्ध (धातु ४½ इ०) लेख क्र० २४३
६८ नन्दीश्वर (धातु ६½ इ०) लेख क्र० २४३
६९ पचमेरु (धातु १½ फु०) लेख क्र० २४२ (दो प्रतिमाएँ)
७० चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ६ इ०) लेख क्र० २७१
७१ चौबीसी (धातु ३ इ०) लेख क्र० २४४
७२ चौबीसी (धातु १ फु०) लेख क्र० २४२
७३ महावीर (सफेद पा० ६ इ०) लेख क्र० १३२
७४ आदिनाथ (सफेद पा० ११ इ०) लेख क्र० २४२
७५ शान्तिनाथ (धातु ७½ इ०) लेख क्र० २४२
७६ आदिनाथ (धातु १ फुट २ इ०) लेख क्र० २४२
७७ पार्श्वनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० २१६
७८ चन्द्रप्रभ (धातु ४ इ०) लेख क्र० २४५
७९ चौबीसी (धातु ४ इ०) लेख क्र० १८१
८० पार्श्वनाथ (धातु ४ इ०) लेख क्र० १०
८१ नमिनाथ (धातु ५ इ०) लेख क्र० २४६
८२ आदिनाथ (काला पा० ७ इ०) लेख क्र० २४३

८३ पार्श्वनाथ (लाल पा० ७ इं०) (लेख कन्नड है)
८४ पार्श्वनाथ (धातु ३½ इं०) लेख क्र० २७४
८५ चन्द्रप्रभ (धातु ४½ इं०) लेख क्र० २०८
८६ वासुपूज्य (काला पा० ७ इं०) लेख क्र० २५१
८७ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८
८८ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १२६
८९ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १ फु० १ इं०) लेख क्र० २४७
९० यक्षिणी (धातु ६ इं०) लेख क्र० १९७

लेखरहित प्रतिमाएँ – पार्श्वनाथ (काला पा० १ फु०), आदिनाथ (काला पा० ६ इं०), आदिनाथ (काला पा० ३½ इं०), सिद्ध (धातु ५½ इं०, दो मूर्तियाँ), यक्षिणी (धातु ४ इं० दो मूर्तियाँ)

[५] दिगम्बर जैन सैतवाल मन्दिर, इतवारी बाजार, नागपुर

९१ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० ६ इं०) लेख क्र० १८
९२ आदिनाथ (सफेद पा० १ फु० ६ इं०) लेख क्र० १८
९३ आदिनाथ (सफेद पा० १ फु० २ इं०) लेख क्र० १८
९४ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
९५ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
९६ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८
९७ पार्श्वनाथ (काला पा० १० इं०) लेख क्र० १८
९८ चन्द्रप्रभ (काला पा० ८ इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
९९ सुपार्श्वनाथ (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० १८
१०० अजितनाथ (लाल पा० ११ इं०) लेख क्र० १८
१०१ मुनिसुव्रत (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० १८
१०२ सुपार्श्वनाथ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० १८

१०३ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० २०६
१०४ शांतिनाथ (धातु ११ इ०) लेख क्र० २८६
१०५ बाहुबली (धातु १० इ०) लेख क्र० २८६
१०६ पार्श्वनाथ (काला पा० ८ इ०) लेख क्र० २०७
१०७ पार्श्वनाथ (धातु ११ इ०) लेख क्र० २७१
१०८ नन्दीश्वर (धातु ४ इ०) लेख क्र० ७१
१०९ आदिनाथ (धातु ११ इ०) लेख क्र० २८७
११० नेमिनाथ (काला पा० १ फु०) लेख क्र० १९५
१११ पार्श्वनाथ (काला पा० १० इ०) लेख क्र० ७६
११२ चौबीसी (धातु ५ इ०) लेख क्र० २१८
११३ शांतिनाथ (धातु ४ इ०) लेख क्र० १२
११४ शांतिनाथ (धातु ७ इ०) लेख क्र० ४
११५ पार्श्वनाथ (धातु ४½ इ०) लेख क्र० ३
११६ पार्श्वनाथ (धातु ५ इ०) लेख क्र० २९६
११७ पार्श्वनाथ (धातु ५ इ०) लेख क्र० २२
११८ पार्श्वनाथ (धातु ४½ इ०) लेख क्र० ८३
११९ पार्श्वनाथ (३½ इ० धातु) लेख क्र० १८०
१२० यक्षिणी (धातु ४ इ०) लेख क्र० ७५
१२१ यक्षिणी (धातु ५ इ०) लेख क्र० २६
१२२ यक्षिणी (धातु ७ इ०) लेख क्र० १०३
१२३ यक्षिणी (धातु ८ इ०) लेख क्र० ६७
१२४ रत्नत्रय यत्र (धातु ९ इ०) लेख क्र० ५१
१२५ सम्यग्दर्शन यत्र (धातु ८ इ०) लेख क्र० ३२०
१२६ दशलक्षण यत्र (धातु ८ इ०) लेख क्र० ३२०
१२७ सम्यक्चारित्र यत्र (धातु ८ इ० लेख क्र० ३२०
१२८ षोडशकारण यत्र (धातु १२ इ०) लेख क्र० १८३

११९ अज्ञातवर्णन यंत्र (धातु ७ इं०) लेख क्र० ११६

लेखरहित प्रतिमाएँ – चन्द्रप्रभ (काला पा० ६ इं० दो मूर्तियाँ), चरणपादुका (धातु २ इं०, दो पादुका), अजितनाथ (काला पा० ४ इं०), चौवीसी (धातु ५ इं० दो मूर्तियाँ) पार्श्वनाथ (धातु-छोटी छोटी ८ मूर्तियाँ) चरणपादुका (धातु ३ इं०, दो पादुका),

[६] दिगम्बर जैन सेनगण मन्दिर, लाडपुरा इतवारी, नागपुर

१२० पार्श्वनाथ (धातु १० इं०) लेख क्र० ५२
१२१ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० २६७
१२२ शीतलनाथ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० १८५
१२३ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८२
१२४ शांतिनाथ (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० ७७
१२५ बाहुबली (धातु ११ इं०) लेख क्र० ८१ (दो मूर्तियाँ)
१२६ बाहुबली (धातु १० इं०) लेख क्र० २६८
१२७ अस्पष्ट चिह्न मूर्ति (धातु ९ इं०) लेख क्र० २१
१२८ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० १६०
१२९ चौवीसी (धातु ३ इं०) लेख क्र० ३२
१४० पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १
१४१ पार्श्वनाथ (काला पा० ९ इं०) लेख क्र० ८८
१४२ सुपार्श्वनाथ (काला पा० १० इं०) लेख क्र० ८९
१४३ पार्श्वनाथ (काला पा० १ फु०) लेख क्र० ६६
१४४ पार्श्वनाथ (धातु १ इं०) लेख क्र० ७२
१४५ आदिनाथ (धातु १० इं०) लेख क्र० २७८
१४६ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० १८
१४७ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ६ इं०) लेख क्र० १८

१४८ अरनाथ (सफेद पा० १० इ०) लेख क्र० १८
१४९ पद्मप्रभ (सफेद पा० १० इ०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
१५० मुनिसुव्रत (सफेद पा० ११ इ०) लेख क्र० १८
१५१ अजितनाथ (सफेद पा० ११ इ०) लेख क्र० १८
१५२ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ११ इ०) लेख क्र० १८
१५३ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० २ इ०) लेख क्र० १८
(दो मूर्तियाँ)
१५४ अरनाथ (सफेद पा० ८ इ०) लेख क्र० १८
१५५ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ९ इ०) लेख क्र० १८
१५६ आदिनाथ (४ इ० धातु) लेख क्र० १८
१५७ चौबीसी (धातु ९ इ०) लेख क्र० ९
१५८ धर्मनाथ (धातु ६ इ०) लेख क्र० ६३
१५९ पार्श्वनाथ (धातु ४ इ०) लेख १०८
१६० वासुपूज्य (धातु ५ इ०) लेख क्र० १३
१६१ आदिनाथ (धातु ८ इ०) लेख क्र० ३२४
१६२ चिह्नरहित मूर्ति (धातु ३ इ०) लेख क्र० १०९
१६३ पार्श्वनाथ (धातु ६ इ०) लेख क्र० २९१
१६४ श्रेयान्सनाथ (धातु ३ इ०) लेख क्र० ३१३
१६५ सुमतिनाथ (धातु ७ इ०) लेख क्र० २०
१६६ आदिनाथ (धातु ३ इ०) लेख क्र० २
१६७ पंचपरमेष्ठी (धातु ५ इ०) लेख क्र० ८
१६८ रत्नत्रय मूर्ति (धातु ९ इ०) लेख क्र० २२
१६९ चौबीसी (धातु ११ इ०) लेख क्र० १३५
१७० सरस्वती (धातु ५ इ०) लेख क्र० ११८
१७१ यक्षिणी (धातु ३ इ०) लेख क्र० ११७
१७२ रत्नत्रय यन्त्र (धातु ३ इ०) लेख क्र० १२२

१७३ रत्नत्रय यंत्र (धातु ३ इं०) लेख क्र० १८४
१७४ दशलक्षण यंत्र (धातु ३ इं०) लेख क्र० १२२
१७५ रत्नत्रय यंत्र (धातु ३ इं०) लेख क्र० १२३
१७६ रत्नत्रय यंत्र (धातु ३ इं०) लेख क्र० १२०

लेखरहित प्रतिमाएँ – चौबीसी (काला पा० १ फुट), सिद्ध (धातु ६ इं०, दो मूर्तियाँ), नंदीश्वर (धातु ५ इं०), पार्श्वनाथ (काला पा० ३½ फु० चौबीसी के मध्यस्थित), पद्मावती (सफेद पा० २ फु०), पद्मावती (धातु ९ इं०), पद्मावती (धातु ६ इं०), पद्मावती (धातु १० इं०),

[७] पार्श्वप्रभु दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर, इतवारी, नागपुर

१७७ पार्श्वनाथ (धातु १½ फु०) लेख क्र० १५७
१७८ शांतिनाथ (धातु १ फु० २ इं०) लेख क्र० २२१
१७९ आदिनाथ (धातु १ फु० २ इं०) लेख क्र० २२१
१८० नन्दीश्वर (धातु ५ इं०) लेख क्र० १०२
१८१ पंचमेरु (धातु ११ इं०) लेख क्र० २२० (चार मूर्तियाँ)
१८२ वासुपूज्य (धातु ७ इं०) लेख क्र० २६६
१८३ अनन्तनाथ (धातु ९ इं०) लेख क्र० २३५
१८४ पार्श्वनाथ (धातु ४½ इं०) लेख क्र० ८७
१८५ चौबीसी (धातु ३½ इं०) लेख क्र० २३१
१८६ चौबीसी (धातु ८ इं०) लेख क्र० १४४
१८७ चौबीसी (धातु ९ इं०) लेख क्र० १२०
१८८ रत्नत्रय मूर्ति (धातु ६ इं०) लेख क्र० ११
१८९ महावीर (धातु १० इं०) लेख क्र० २११
१९० चौबीसी (धा ६ इं०) लेख क्र० ५६
१९१ क्षेत्रपाल (धातु ६ इं०) लेख क्र० २०४

१९२ सरस्वती (धातु ५ इ०) लेख क्र० ११६ (दो मूर्तियाँ)
१९३ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० २ इ०) लेख क्र० ३००
१९४ यक्षिणी (धातु ४½ इ०) लेख क्र० १२७
१९५ पचमेरु (धातु २ फुट ९ इ०) लेख क्र० २३१
१९६ पार्श्वनाथ (धातु १½ फु०) लेख क्र० २३० (दो मूर्तियाँ)
१९७ आदिनाथ (धातु १० इ०) लेख क्र० २८२
१९८ बाहुबली (धातु ७ इ०) लेख क्र० २२६ (दो मूर्तियाँ)
१९९ आदिनाथ (धातु ७½ इ०) लेख क्र० २४६
२०० पार्श्वनाथ (धातु ४ इ०) लेख क्र० ३४
२०१ पार्श्वनाथ (धातु ३½ इ०) लेख क्र० ७०
२०२ पार्श्वनाथ (धातु ३½ इ०) लेख क्र० ६३
२०३ पार्श्वनाथ (धातु ३ इ०) लेख क्र० १६१
२०४ चौबीसी (धातु ४ इ०) लेख क्र० १३६
२०५ चन्द्रप्रभ (धातु ५ इ०) लेख क्र० २८
२०६ पार्श्वनाथ (धातु ५ इ०) लेख क्र० १७८
२०७ पार्श्वनाथ (धातु ४ इ०) लेख क्र० ३०१
२०८ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १० इ०) लेख क्र० ९९
२०९ पचमेरु (धातु २ फु० ३ इं०) लेख क्र० १५४ (दो मूर्तियाँ)
२१० चौबीसी (धातु १० इ०) लेख क्र० १४३
२११ पार्श्वनाथ (धातु ५ इ०) लेख क्र० ७८
२१२ पार्श्वनाथ (धातु ४½ इ०) लेख क्र० १५८
२१३ चन्द्रप्रभ (धातु ४इ०) लेख क्र० ६१
२१४ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० ३ इ०) लेख क्र० २१५
२१५ नन्दीश्वर (धातु १ फु०) लेख क्र० ६२
२१६ चौबीसी (धातु ३½ इ०) लेख क्र० १३७
२१७ नेमिनाथ (काला पा० १ फु० ३ इ०) लेख क्र० २३३

२१८ आदिनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १६
२१९ पद्मप्रभ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० १६
२२० चौंसठ ऋद्धि (धातु ५ इं०) लेख क्र० ११२
२२१ पार्श्वनाथ (धातु ३½ इं०) लेख क्र० १०४
२२२ चौवीसी (धातु २½ इं०) लेख क्र० २८३
२२३ पार्श्वनाथ (धातु ५ इं०) लेख क्र० ६६
२२४ मुनिसुव्रत (काला पा० १ फु० २ इं०) लेख क्र० २२७
२२५ पार्श्वनाथ (धातु ५½ इं०) लेख क्र० ३७
२२६ चौवीसी (धातु १० इं०) लेख क्र० २३४
२२७ शांतिनाथ (धातु ६ इं०) लेख क्र० १७७
२२८ श्रेयांस (काला पा० ७ इं०) लेख क्र० १०५
२२९ चिन्ह रहित मूर्ति (काला पा० १० इं०) लेख क्र० ६८
२३० आदिनाथ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० २२३
२३१ मुनिसुव्रत (सफेद पा० २ फु० ३ इं०) लेख क्र० ५
२३२ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ३ फु० ३ इं०) लेख क्र० ५
२३३ शिखरजी पादुका (सफेद पा० १½ फु०) लेख क्र० २८२
२३४ पद्मावती (धातु ११ इं०) लेख क्र० २२९
२३५ यक्षिणी (धातु ७ इं०) लेख क्र० ७९
२३६ यक्षिणी (धातु ६ इं०) लेख क्र० १६८
२३७ पद्मावती (धातु ११ इं०) लेख क्र० २१०
२३८ आदिनाथ (सफेद पा० १फु० २इं०) लेख क्र० १८ (दोमूर्तियाँ)
२३९ आदिनाथ (सफेद पा० ९ इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२४० शीतलनाथ (सफेद पा० ९ इं०) लेख क्र० १८
२४१ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२४२ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० २ इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)

२४३ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ११ इ०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२४४ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १० इ०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२४५ पद्मप्रभ (सफेद पा० ६ इ०) लेख क्र० १८
२४६ मुनिसुव्रत (साँवला पा० ८ इ०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२४७ चन्द्रप्रभ (साँवला पा० ६ इ०) लेख क्र० १८
२४८ आदिनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२४९ सुपार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८
२५० सुपार्श्वनाथ (सफेद पा० ६ इ०) लेख क्र० १८
२५१ सुमतिनाथ (सफेद पा० ७ इ०) लेख क्र० १८
२५२ अरनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२५३ नेमिनाथ (सफेद पा० १० इ०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२५४ सुपार्श्वनाथ (सफेद पा० ९ इ०) लेख क्र० १८
२५५ अजितनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८
२५६ श्रेयासनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८
२५७ मुनिसुव्रत (सफेद पा० ११ इ०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२५८ पार्श्वनाथ (सफेद पा० २ फु० ४ इ०) लेख क्र० १८
२५९ अजितनाथ (लाल पा० १० इ) लेख क्र० १८
२६० चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ७ इ०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२६१ नेमिनाथ (लाल पा० ११ इ०) लेख क्र० १८
२६२ पार्श्वनाथ (लाल पा० १० इ०) लेख क्र० १८
२६३ पार्श्वनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२६४ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ५ इ०) लेख क्र० १८
२६५ सम्यक्चारित्रयंत्र (धातु ८ इ०) लेख क्र० ६८
२६६ दशलक्षण यंत्र (धातु ५ इ०) लेख क्र० ४६
२६७ सम्यक्चारित्र यंत्र (धातु ८ इ०) लेख क्र० १२१
२६८ सम्यग्दर्शन यंत्र (धातु ५ इ०) लेख क्र० ३६

२६९ सम्यक्चारित्रयंत्र (धातु ५ इं०) लेख क्र० ४९
२७० जलयंत्र (धातु ८ इं०) ले० क्र० २१६
२७१ सम्यग्दर्शनयंत्र (धातु ४ इं०) लेख क्र० ५४
२७२ सम्यग्दर्शनयंत्र (धातु ७ इं०) लेख क्र० ११५
२७३ दशलक्षणयंत्र (धातु ६ इं०) लेख क्र० ६५
२७४ कलिकुण्डयंत्र (धातु ७ इं०) लेख क्र० ७२
२७५ सिद्धयंत्र (धातु ९ इं०) लेख क्र० ८६
२७६ षोडशकारणयंत्र (धातु १४ इं०) लेख क्र० २९२
२७७ दशलक्षणयंत्र (धातु ११ इं०) लेख क्र० २९३
लेखरहित मूर्तियाँ – सप्तऋषि (धातु ५ से ८ "०), पार्श्वनाथ (काला पा० १ फु० २ इं०), आदिनाथ (पीला वालुकापाषाण २ फु० २ इं०)

[८] दिगम्बर जैन परवार मन्दिर, इतवारी, नागपुर

२७८ शीतलनाथ (धातु ४½ इं०) लेख क्र० ५७
२७९ नेमिनाथ (धातु ७ इं०) लेख क्र० २७२
२८० पुष्पदन्त (धातु ५ इं०) लेख क्र० २५२
२८१ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० ३०२
२८२ चन्द्रप्रभ (पीला पा० ६ इं०) लेख क्र० २२८
२८३ पार्श्वनाथ (काला पा० ६ इं०) लेख क्र० २२२
२८४ चौवीसी (धातु ५ इं०) लेख क्र० २५२
२८५ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ५½ फु०) लेख क्र० २५६
२८६ पार्श्वनाथ (धातु ६½ इं०) लेख क्र० २४१ (दो मूर्तियां)
२८७ आदिनाथ (धातु ६ इं०) लेख क्र० २४८
२८८ वासुपूज्य (धातु ६½ इं०) लेख क्र० २४१
२८९ महावीर (धातु ५ इं०) लेख क्र० २४१

२९० अजितनाथ (धातु ६ इ०) लेख क्र० २४१
२९१ पार्श्वनाथ (धातु १½ फु०) लेख क्र० २४९
२९२ पार्श्वनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० २६८
२९३ चौबीसी (धातु ६½ इ०) लेख क्र० २४१
२९४ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ५ फु०) लेख क्र० २५७
२९५ नेमिनाथ (सफेद पा० २ फु० २ इ०) लेख० क्र० २५७
२९६ नेमिनाथ (धातु ८ इ०) लेख क्र० २५८
२९७ पार्श्वनाथ (धातु ८½ इ०) लेख क्र० २५७
२९८ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १० इ०) लेख क्र० ६५
२९९ अजितनाथ (काला पा० ४ इ०) लेख क्र० १६५
३०० चिह्नरहितमूर्ति (काला पा० ५ इ०) लेख क्र० २२२
३०१ आदिनाथ (धातु ६ इ०) लेख क्र० २५७
३०२ चिह्नरहित मूर्ति (सफेद पा० १० इ०) लेख क्र० ६
३०३ चौबीसी (धातु ४½ इ०) लेख क्र० २४१
३०४ पार्श्वनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० २७३
३०५ पार्श्वनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० १४५
३०६ पार्श्वनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० ४१
३०७ अजितनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० ४०
३०८ अनन्तनाथ (धातु ८ इ०) लेख क्र० २४१
३०९ सुपार्श्वनाथ (काला पा० ११ इ०) लेख क्र० २९
३१० चिह्नरहितमूर्ति (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० ८२
३११ मुनिसुव्रत (काला पा० ११ इ०) लेख क्र० ४७
३१२ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ९ इ०) लेख क्र० २५९
३१३ मुनिसुव्रत (सफेद पा० ७ इ०) लेख क्र० २५९
३१४ आदिनाथ (सफेद पा० ११ इ०) लेख क्र० २५९
३१५ पार्श्वनाथ (धातु ३½ इ०) लेख क्र० १७६

३१६ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १६४
३१७ पार्श्वनाथ (सफेद पा० २ फु० ३ इं०) लेख क्र० २५७
३१८ पार्श्वनाथ (काला पा० २ फु० ४ इं०) लेख क्र० २५७
३१९ नन्दीश्वर (धातु ५ इं०) उर्दू लिपिमें लेख०
३२० आदिनाथ (धातु ६½ इं) लेख क्र० २८४
३२१ शीतलनाथ (लाल पा० १ फु० ४ इं०) लेख क्र० २८४
३२२ महावीर (धातु १ फु० ६ इं०) लेख क्र० २८४
३२३ पुष्पदंत (धातु १ फु० ९ इं०) लेख क्र० २८४
३२४ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १७६
३२५ महावीर (धातु ४ इं०) लेख क्र० २८०
३२६ चौवीसी (धातु ३ इं०) लेख क्र० १२७
३२७ चौवीसी (धातु ५ इं०) लेख क्र० २६०
३२८ यक्षिणी (धातु ४ इं०) लेख क्र० २३९
३२९ यक्षिणी (धातु ६ इं०) लेख क्र० २३९
३३० यक्षिणी (धातु ५ इं०) लेख क्र० १४०
३३१ यक्षिणी (धातु ८ इं) लेख क्र० २४१ (दो मूर्तियाँ)
३३२ चन्द्रप्रभ (धातु १ फु० २ इं) लेख क्र० २१७
३३३ चौवीसी (धातु ५ इं) लेख क्र० २४१
३३४ रत्नत्रयमूर्ति (धातु ५ इं) लेख क्र० २४१
३३५ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० १५५
३३६ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं) लेख क्र० ८४
३३७ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं) लेख क्र० २४१
३३८ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० १४५
३३९ आदिनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० २६१
३४० पार्श्वनाथ (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० २५७
३४१ चन्द्रप्रभ (काला पा० ८ इं०) लेख क्र० २५७

३४२ पार्श्वनाथ (लाल पा० १ फु०) टोंक क्र० २२३ (तीन मूर्तियाँ)
३४३ नेमिनाथ (सफेद पा० ११ इं०) टोंक क्र० १७
३४४ आदिनाथ (काला पा० ७ इं०) टोंक क्र० २६२
३४५ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १½ फु०) टोंक क्र० २५७
३४६ अरनाथ (काला पा० २ इं०) टोंक क्र० ११३
३४७ चन्द्रप्रभ (धातु ५ इं०) टोंक क्र० २४१
३४८ आदिनाथ (धातु ३½ इं०) टोंक क्र० २२९
३४९ शीतलनाथ (धातु ६ इं०) टोंक क्र० २४१
३५० आदिनाथ (धातु ६ इं०) टोंक क्र० २४१
३५१ पार्श्वनाथ (धातु ५ इं०) टोंक क्र० २४१
३५२ चौबीसी (धातु ४ इं०) टोंक क्र० २४१
३५३ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) टोंक क्र० ३०२
३५४ पार्श्वनाथ (धातु ५ इं०) टोंक क्र० २४०
३५५ चन्द्रप्रभ (धातु ७ इं०) टोंक क्र० २६२
३५६ अजितनाथ (धातु ७ इं०) टोंक क्र० २६२
३५७ आदिनाथ (धातु ७½ इं०) टोंक क्र० २४१
३५८ आदिनाथ (धातु ४½ इं०) टोंक क्र० ३०४
३५९ नन्दीश्वर (धातु ३½ इं०) टोंक क्र० १११
३६० सुपार्श्वनाथ (धातु ५ इं०) टोंक क्र० २४१
३६१ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) टोंक क्र० १२८
३६२ महावीर (धातु ५ इं०) टोंक क्र० २४१
३६३ आदिनाथ (धातु ८ इं०) टोंक क्र० २६७
३६४ आदिनाथ (धातु ८ इं०) टोंक क्र० २४१
३६५ महावीर (धातु ७½ इं०) टोंक क्र० २४१
३६६ आदिनाथ (धातु १ फु०) टोंक क्र० २५०
३६७ पुष्पदन्त (सफेद पा० १ फु०) टोंक क्र० १८

२६८ अरनाथ (सफेद पा० ७ इं०) लेख क्र० १८
२६९ चन्द्रनाथ (सफेद पा० ८ इं०) लेख क्र० १८
लेखरहित मूर्तियाँ – वासुपूज्य (काला पा० ५ इं०), पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० २ इं०), पार्श्वनाथ (काला पा० १० इं०), शान्तिनाथ (धातु ४ इं०), १५ मूर्तियाँ लेख तथा चिह्नके विना छोटी-छोटी हैं।

[९] दिगम्बर जैन मन्दिर, सदर बाजार, नागपुर

२७० पार्श्वनाथ (काला पा० १½ फु०) लेख क्र० १६४
२७१ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० २६४
२७२ पार्श्वनाथ (काला पा० १ फु०) लेख क्र० १९४
२७३ शांतिनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० २६५
२७४ यक्षिणी (धातु ५ इं०) लेख क्र० २६५
२७५ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ११५
२७६ चौवीसी (धातु ११ इं०) लेख क्र० २७६
२७७ दशलक्षण यंत्र (धातु ६ इं०) लेख क्र० १०७
लेखरहित – पद्मप्रभ (सफेद पा० १ फु०)

[१०] गृहचैत्यालय–श्री० सुन्दरसा हिरासा जोहरापुरकर, इतवारी, नागपुर

२७८ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० १२३
२७९ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० ३०४
२८० रत्नत्रय (धातु २½ इं०) लेख क्र० १५
२८१ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३०६
२८२ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ९४
२८३ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० २४

३८४ पार्श्वनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० १२९
लेखरहित – छोटी-छोटी धातुकी १० प्रतिमाएँ

[११] गृहचैत्यालय–श्री०अबादास गुलाबसा गहाणकरी, इतवारी

३८५ चौबीसी (धातु ४ इ०) लेख क्र० २३१

३८६ आदिनाथ (धातु ३ इ०) लेख क्र० २८८

३८७ पार्श्वनाथ (धातु ३ इ०) लेख क्र० २८८

३८८ पार्श्वनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० १००

[१२] गृहचैत्यालय–श्री० माणिकसा चिन्तामणसा दर्यापुरकर, इतवारी

३८९ चौबीसी (धातु ४ इ०) लेख क्र० ८०

३९० पार्श्वनाथ (धातु ४ इ०) लेख क्र० ३०७

३९१ यक्षिणी (धातु ४ इ०) लेख क्र० ४५

३९२ नवग्रह यंत्र (धातु ४ इ०) लेख क्र० २०१

[१३] गृहचैत्यालय–श्री०रतनसा गणपतसा देवलसी, इतवारी

३९३ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ४ इ०) लेख क्र० २८८

३९४ आदिनाथ (काला पा० ५ इ०) लेख क्र० २८८

३९५ चन्द्रप्रभ (काला पा० ४ इ०) लेख क्र० २२४

३९६ चौबीसी (धातु ४ इ०) लेख क्र० २१२

३९७ पार्श्वनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० २६४

३९८ पार्श्वनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० ३०८
लेखरहित पार्श्वनाथ (धातु २½ इ०), आदिनाथ (धातु २½ इ०)

[१४] गृहचैत्यालय–श्री० कन्हयालाल सुन्दरसा गरिबे, इतवारी

३९९ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० ३४
यक्षिणी (धातु ६ इं०)-लेखरहित

[१५] गृहचैत्यालय–श्री०सवाईसंगई मोतीलाल गुलाबसा, इतवारी

४०० पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३०९
४०१ यक्षिणी (धातु ५ इं०) लेख क्र० १४५
लेखरहित-पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०), चन्द्रप्रभ (स्फटिक, २ इं०)

[१६] गृहचैत्यालय-श्री०हिरासा पदासा खोरणे, इतवारी

४०२ आदिनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० २७५
४०३ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० ३०८
४०४ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३१०
४०५ यक्षिणी (धातु ६ इं०) लेख क्र० १५१

[१७] गृहचैत्यालय-श्री० दादा गुलाबसा मिश्रीकोटकर, इतवारी

४०६ चौवीसी (धातु ३ इं०) लेख क्र० ९४

[१८] गृहचैत्यालय-श्री० हिरासा खेमासा जोहरापुरकर, इतवारी

४०७ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३११

[१९] गृहचैत्यालय-श्री जयकुमार प्रभुसा किल्लेदार, इतवारी

४०८ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० ४२

[२०] गृहचैत्यालय-श्री तिलोकचंद येमूसा खेडकर, इतवारी

४०९ चौवीसी (धातु ३ इं०) लेख क्र० ९४
४१० पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० २८६
४११ आदिनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १३४

४१२ चरणपादुका (धातु २ इ०) लेख क्र० १४१
लेखरहित – शान्तिनाथ (धातु २ इ०), पार्श्वनाथ (धातु २ इ०)

[२१] गृहचैत्यालय-श्री विष्णुकुमार हिरासा जोगी, इतवारी

४१३ यक्षिणी (धातु ६ इ०) लेख क्र० १४
४१४ यक्षिणी (धातु ५½ इ०) लेख क्र० ५१
लेखरहित – (चौबीसी धातु ३ इ०), महावीर (धातु २½ इ०)

[२२] गृहचैत्यालय-श्री नागोराव गुजावा श्रविणे, इतवारी

४१५ सिद्ध (धातु ४ इ०) लेख क्र० २८८
४१६ आदिनाथ (चाँदी ३ इ०) लेख क्र० २८८ (दो मूर्तियाँ)
४१७ आदिनाथ (धातु ३ इ०) लेख क्र० २८८ (दो मूर्तियाँ)
४१८ पार्श्वनाथ (सोना २ इ०) लेख क्र० २७७
४१९ चौबीसी (धातु ५ इ०) लेख क्र० २३७
४२० चरणपादुका (चाँदी १ इ०) लेख क्र० ३१२
लेखरहित – पार्श्वनाथ (धातु २ इ०) (दो मूर्तियाँ), बाहुबली (धातु ३ इ०), सरस्वती (धातु २ इ०)

[२३] गृहचैत्यालय-श्री गुलाबसा व्यंकुसा मिश्रीकोटकर, इतवारी

४२१ चन्द्रप्रभ (धातु ३½ इ०) लेख क्र० ४४
४२२ पार्श्वनाथ (धातु ५ इ०) लेख क्र० २९०
४२३ यक्षिणी (धातु २½ इ०) लेख क्र० १७५
लेखरहित–पार्श्वनाथ (लाल पा० ३ इ०)

[२४] गृहचैत्यालय-श्री० हिरासा जिनदास चवडे, इतवारी

४२४ सिद्ध (धातु ४ इ०) लेख क्र० २८८
४२५ पार्श्वनाथ (धातु ३ इ०) लेख क्र० १८१

[२५] गृहचैत्यालय-श्री०नेमासा पासुसा जोहरापुरकर, इतवारी

४२६ पंचपरमेष्ठी (धातु ५ इं०) लेख क्र० २०
४२७ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० २५१
४२८ कलिकुण्ड यन्त्र (धातु ८ इं०) लेख क्र० २०२
४२९ षोडशकारण यन्त्र (धातु० ८ इं०) लेख क्र० २०३

[२६] गृहचैत्यालय-श्री०माणिकचंद बालाजी आगरकर, इतवारी

४३० पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० ४८
४३१ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र०१६३
४३२ यक्षिणी (धातु ४ इं०) लेख क्र० १३१

[२७] गृहचैत्यालय-श्री०सुंदरसा गंगासा खेडकर, इतवारी

४३३ पार्श्वनाथ (धातु ५ इं०) लेख क्र० १६
४३४ यक्षिणी (धातु ७ इं०) लेख क्र० ३८
लेखरहित–पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) चौबीसी (धातु ५ इं०)

[२८] गृहचैत्यालय-श्री०लक्ष्मणराव सेवाराम पिंजरकार, इतवारी

४३५ आदिनाथ (धातु ६ इं०) लेख क्र० १४६
४३६ पार्श्वनाथ (धातु ३½ इंच) लेख क्र० ४३
लेखरहित-यक्षिणी (धातु ६ इं०)

[२९] गृहचैत्यालय-श्री०पुरणलाल बापुसा खेडकर, इतवारी

४३७ चौबीसी (धातु २½ इं०) लेख क्र० २८१
४३८ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० ६७

[३०] गृहचैत्यालय-श्री०महादेवराव तानबा पिंजरकर, इतवारी

४३९ चौबीसी (धातु ४ इं०) लेख क्र० ५८
४४० पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० १८०

४४१ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० ६४
४४२ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० ३१४
४४३ यक्षिणी (धातु ६ इं०) लेख क्र० १५६

[३१] गृहचैत्यालय-श्री० वर्धासा सकुसा महाजन, इतवारी

४४४ चौबीसी (धातु ३½ इं०) लेख क्र० १५४
४४५ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० ११
४४६ षोडशकारण यंत्र (धातु ३ इं०) लेख क्र० १२२
४४७ यक्षिणी (धातु ५ इं०) लेख क्र० ६०
४४८ यक्षिणी (धातु ५ इं०) लेख क्र० ६१
४४९ यक्षिणी (धातु ५ इं०) लेख क्र० १२५
४५० यक्षिणी (धातु ५ इं०) लेख क्र० ४६
लेखरहित–पार्श्वनाथ (धातु ५ इं०)

[३२] गृहचैत्यालय-श्री० नत्थुसा पैकाजी चवरे, इतवारी

४५१ सुपार्श्वनाथ (सफेद पा० ५ इं०) लेख क्र० २६६
४५२ चन्द्रप्रभ (धातु २ इं०) लेख क्र० ११६
४५३ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० २०
४५४ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० २१३ (दो मूर्तियाँ)
४५५ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३१५
४५६ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० ३०८ (दो मूर्तियाँ)
४५७ यक्षिणी (धातु ५ इं०) लेख क्र० १०६
लेखरहित – पार्श्वनाथ (धातु २ इं०)

[३३] गृहचैत्यालय-श्री रूखबसा पिंजरकर, इतवारी

४५८ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० २१३

[३४] गृहचैत्यालय-श्री लक्ष्मणराव देवमनसा बोन्डे, इतवारी

४५९ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० १६६

४६० पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० २५
४६१ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० २६
४६२ चौवीसी (धातु ३ इं०) लेख क्र० ११७
४६३ चिह्नरहित मूर्ति (धातु २ इं०) लेख क्र० १४६
४६४ पार्श्वनाथ (काला पा० ३ इं०) लेख क्र० ३१६

[३५] गृहचैत्यालय-श्री वापुजी विश्रामजी गिल्लरकर, मस्कासाथ

४६५ आदिनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० १७०
४६६ आदिनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३१७
४६७ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० १६७
४६८ यक्षिणी (धातु ७ इं०) लेख क्र० १८६
लेखरहित – पार्श्वनाथ (धातु १½ इं०)

[३६] गृहचैत्यालय-श्री गोविंदराव शिवराम नाकाडे, इतवारी

४६९ चौवीसी (धातु ५ इं०) लेख क्र० १३६
४७० चिह्नरहित मूर्ति (धातु ३ इं०) लेख क्र० १६३
४७१ पार्श्वनाथ (धातु ६ इं०) लेख क्र० २०३
४७२ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३१८
४७३ यक्षिणी (धातु ३ इं०) लेख क्र० १७१
४७४ यक्षिणी (धातु ४ इं०) लेख क्र० ११८
४७५ दशलक्षणयंत्र (धातु ४½ इं०) लेख क्र० ५०

[३७] गृहचैत्यालय-श्रीमती तानावाई वापुजी गांधी, इतवारी

४७६ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० ८५
४७७ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० १७२
४७८ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १२४
४७९ चन्द्रप्रभ (धातु १½ इं०) लेख क्र० १७३
लेखरहित – पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) यक्षिणी (धातु ६ इं०)

[३८] गृहचैत्यालय-श्री राजाबापू लच्छाबापू ठवली, इतवारी

४८० चौबीसी (धातु ३ इ०) लेख क्र० १७४

४८१ यक्षिणी (धातु ३ इ०) लेख क्र० १९६,

४८२ यक्षिणी (धातु ४ इ०) लेख क्र० २५

[३९] गृहचैत्यालय-श्री जयकृष्णपत सावलकर, इतवारी

४८३ पार्श्वनाथ (धातु ३ इ०) लेख क्र० ५३

४८४ यक्षिणी (धातु ७ इ०) लेख क्र० ३१

[४०] गृहचैत्यालय-श्री कृष्णाजी भागवतकर, इतवारी

४८५ सिद्ध (धातु ३ इ०) लेख क्र० २८८

४८६ पार्श्वनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० ३०८

लेखरहित – यक्षिणी (धातु ३ इ०)

[४१] गृहचैत्यालय-श्री राजाराम डुब्बीसाव काटोलकर, इतवारी

४८७ चौबीसी (धातु ३ इ०) लेख क्र० २४३

४८८ पार्श्वनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० ३१९

लेखरहित – चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ४ इ०)

[४२] गृहचैत्यालय-श्री हिरासा नत्थुसा मुठमारे, इतवारी

४८९ पार्श्वनाथ (धातु ४ इ०) लेख क्र० ५६

४९० आदिनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० ३३

४९१ चौबीसी (धातु ३ इ०) लेख क्र० ११३

४९२ पार्श्वनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० १८७

४९३ पार्श्वनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० ३०७

लेखरहित – यक्षिणी (धातु ३ इ०)

[४३] गृहचैत्यालय-श्री रखनसा विनायकसा, इतवारी

४९४ पार्श्वनाथ (धातु ३ इ०) लेख क्र० ३२२

[४४] गृहचैत्यालय-श्री पांडुरंग बापूजी उदापूरकर, इतवारी

४९५ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० ३२३

[४५] गृहचैत्यालय-श्री गणपतराव पलसापुरे; इतवारी

४९६ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १८७

[४६] गृहचैत्यालय-श्री सुरेन्द्र गंगासा जोहरापुरकर, इतवारी

४९७ चन्द्रप्रभ (धातु २ इं०) लेख क्र० ११०

लेखरहित – पार्श्वनाथ (धातु २ इं०)

□

नामसूची

उल्लिखित अंक पृष्ठों के हैं।

MĀṆIKACHANDRA D. J GRANTHAMĀLĀ

* The Serial Numbers marked with asterisk are out of print

*1 **Laghīyastraya-ādi-saṃgrahaḥ** This vol contains four small works 1) *Laghīyastrayam* of Akalankadeva (c 7th century A D), a small Prakarana dealing with *pramāṇa, naya* and *pravacana* Akalanka is an eminent logician who deserves to be remembered along with Dharmakīrti and others His works are very important for a student of Indian logic Here the text is presented with the Sk commentary of Abhayacandrasūri 2) *Svarūpasambodhana* attributed to Akalanka, a short yet brilliant exposition of *ātman* in 25 verses 3-4) *Laghu Sarvajña siddhiḥ* and *Bṛhat Sarvajña-siddhiḥ* of Anantakīrti These two texts discuss the Jaina doctrine of Sarvajñatā Edited with some introductory notes in Sk on Akalanka, Abhayacandra and Anantakīrti by Pt KALLAPPA BHARAMAPPA NITAVE, Bombay Samvata 1972, Crown pp 8 204, Price As 6/

*2 **Sāgāra dharmāmṛtam** of Āśādhara Āśādhara is a voluminous writer of the 13th century A D , with many Sanskrit works on different subjects to his credit This is the first part of his *Dharmāmṛta* with his own commentary in Sk dealing with the duties of a layman Pt NATHURAM PREMI adds an introductory note on

Āśādhara and his works. Ed. by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1972, Crown pp. 8-246, Price As. 8/-.

*3. **Vikrāntakauravam** or **Sulocanānāṭakam** of Hastimalla (A.D. 13th century) : A Sanskrit drama in six acts. Ed. with an introductory note on Hastimalla and his works by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1972, Crown pp. 4-164, Price As. 6/-.

*4. **Pārśvanātha-caritam** of Vādirājasūri : Vādirāja was an eminent poet and logician of the 10th century A. D. This is a biography of the 23rd Tīrthaṅkara in Sanskrit extending over 12 cantos. Edited with an introductory note on Vādirāja and his works by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1973, Crown pp. 18-198, Price As. 8/-.

*5. **Maithilīkalyāṇam** or **Sītānāṭakam** of Hastimalla : A Sk. drama in 5 acts, see No. 3 above. Ed. with an introductory note on Hastimalla and his works by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1973, Crown pp. 4-96, Price As. 4/-.

*6. **Ārādhanāsāra** of Devasena : A Prākrit work dealing with religio-didactic topics. Prākrit text with the Sk. commentary of Ratnakīrtideva, edited by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1973, Crown pp. 128, Price As. 4/6.

*7. **Jinadattacaritam** of Guṇabhadra : A Sk. poem in 9 cantos dealing with the life of Jinadatta, edited by Pt. MANOHARLAL, Bambay saṁvat 1973, Crown pp. 96, Price As. 5/-.

8 **Pradyumnacarita** of Mahāsenācārya A Sk poem in 14 cantos dealing with the life of Pradyumna It is composed in a dignified style Edited by Pts MANOHARLAL and RAMAPRASAD, Bombay Samvat 1973, Crown pp 230, Price As 8/

9 **Cāritrasāra** of Cāmundarāya It deals with the rules of conduct for a house holder and a monk Edited by Pt INDRALAL and UDAYALAL, Bombay Samvat 1974, Crown pp 103, Price As 6/-

*10 **Pramānanirnaya** of Vādirāja A manual of logic discussing specially the nature of Pramānas Edited by Pts INDRALAL and KHUBCHAND, Bombay Samvat 1974, Crown pp 80, Price As 5/-

* 11 **Ācārasāra** of Viranandi A Sk text dealing with Darśana, Jñāna etc Edited by Pts INDRALAL and MANOHARLAL, Bombay Samvat 1974, Crown pp 2 98, Price As 6/-

* 12 **Trilokasāra** of Nemichandra • An important Prākrit text on Jaina cosmography published here with the Sk commentary of Mādhavacandra Pt PREMI has written a critical note on Nemicandra and Mādhavacandra in the Introduction Edited with an index of Gāthās by Pt MANOHARLAL, Bombay Samvat 1975, Crown pp 10-405 20, Price Rs 1/12/-

* 13 **Tattvānuśāsana-ādi-samgrahah** • This vol contains the following works 1) *Tattvānuśāsana* of Nāgasena 2) *Iṣṭopadeśa* of Pūjyapāda with the Sk

commentary of Āśādhara. 3) *Nītisāra* of Indranandi. 4) *Mokṣapañcāśikā*. 5) *Śrutāvatāra* of Indranandi. 6) *Adhyātmataraṅgiṇī* of Somadeva. 7) *Bṛhat-pañca-namaskāra* or *Pātrakesarī-stotra* of Pātrakesarī with a Sk. commentary. 8) *Adhyātmāṣṭaka* of Vādirāja. 9) *Dvātriṁśikā* of Amitagati. 10) *Vairāgyamaṇimālā* of Śrīcandra. 11) *Tattvasāra* (in Prākrit) of Devasena. 12) *Śrutaskandha* (in Prākrit) of Brahma Hemacandra. 13) *Ḍhāḍasī-gāthā* in Prākrit with Sk. chāyā. 14) *Jñānasāra* of Padmasiṁha, Prākrit text and Sk. chāyā. Pt. PREMI has added short critical notes on these authors and their works. Edited by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1975, Crown pp. 4-176, Price As. 14/-.

* 14. **Anagāra-dharmāmṛta** of Āśādhara : Second part of the *Dharmāmṛta* dealing with the rules about the life of a monk. Text and author's own commentary. Edited with verse and quotation Indices by Pts. BANSIDHAR and MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1976, Crown pp. 692-35, Price Rs. 3/8/-.

*15. **Yuktyanuśāsana** of Samantabhadra : A logical Stotra which has weilded great influence on later authors like Siddhasena, Hemacandra etc.. Text published with an equally important commentary of Vidyānanda. There is an introductory note on Vidyānanda by Pt. PREMI. Ed. by Pts. INDRALAL and SHRILAL, Bombay Saṁvat 1977, Crown pp. 6-182, Price As. 13/-.

*16 **Nayacakra-ādi-saṃgraha** This vol contains the following texts 1) *Laghu-Nayacakra* of Devasena, Prākrit text with Sk chāyā 2) *Nayacakra* of Devasena, Prākrit text and Sk chāyā 3) *Ālāpapaddhati* of Devasena There is an introductory note in Hindī on Devasena and his *Nayacakra* by Pt PREMI Edited by Pt BANSIDHARA with Indices, Bombay Samvat 1977, Crown pp 42 148 Price As 15/

*17 **Ṣatprābhṛtādi-saṃgraha** This vol contains the following Prākrit works of Kundakunda of venerable authority and antiquity 1) *Darśana prābhṛta*, 2) *Cāritra prābhṛta*, 3) *Sūtra prābhṛta*, 4) *Bodha prābhṛta*, 5) *Bhāva-prābhṛta*, 6) *Mokṣa prābhṛta*, 7) *Linga prābhṛta*, 8) *Sīla prābhṛta*, 9) *Rayaṇasāra* and 10) *Dvādaśānu prekṣā* The first six are published with the Sk commentary of Śrutasāgara and the last four with the Sk chāyā only. There is an introduction in Hindī by Pt PREMI who adds some critical information about Kundakunda, Śrutasāgara and their works Edited with an Index of verses etc by Pt PANNALAL SONI, Bombay Samvat 1977, Crown pp 12 442 32 Price Rs 3/.

*18 **Prāyascittādi-saṃgraha** The following texts are included in this volume 1) *Chedapiṇḍa* of Indranandi Yogīndra, Prākrit text and Sk chāyā 2) *Chedaśāstra* or *Chedanavati*, Prākrit text and Sk chāyā and notes 3) *Prāyascitta cūlikā* of Gurudāsa, Sk text with the commentary of Nandiguru 4) *Prāyaścittagrantha* in Sk verses by Bhaṭṭākalaṅka There is a critical

introductory note in Hindī by Pt. PREMI. Edited by Pt. PANNALAL SONI, Bombay Saṁvat 1978, Crown pp.16-172-12, Price Rs. 1/2/-.

*19. **Mūlācāra** of Vaṭṭakera, part I : An ancient Prākrit text in Jaina Śauraseni, Published with Sk. chāyā and Vasunandi's Sk. commentary. A highly valuable text for students of Prākrit and ancient Indian monastic life. Edited by Pts. PANNALAL, GAJADHARALAL and SHRILAL, Bombay Saṁvat 1977, Crown pp. 516, Price Rs- 2/4/-.

20. **Bhāvasaṁgraha-ādiḥ** : This vol. contains the following works. 1) *Bhāvasaṁgraha* of Devasena, Prākrit text and Sk. chāyā. 2) *Bhāvasaṁgraha* in Sk. verse of Vāmadeva Paṇḍita. 3) *Bhāva-tribhaṅgī* or *Bhāvasaṁgraha* of Śrutamuni, Prākrit text and Sk. chāyā. 4) *Āsravatribhaṅgī* of Śrutamuni, Prākrit text and Sk. chāyā. There is a Hindī Introduction with critical remarks on these texts by Pt. PREMI. Edited with an Index of verses by Pt. PANNALAL SONI, Bombay Saṁvat 1978, Crown pp. 8-284-28, Price Rs. 2/4/-

21. **Siddhāntasāra-ādi-Saṁgraha** : This vol. contains some twentyfive texts. 1) *Siddhāntasāra* of Jinacandra, Prākrit text, Sk. chāyā and the commentary of Jñānabhūṣaṇa. 2) *Yogasāra* of Yogicandra, Apabhraṁśa text with Sk. chāyā. 3) *Kallāṇāloyaṇā* of Ajitabrahma, Prākrit text with Sk. chāyā, 4) *Amṛtāśīti* of Yogīndradeva, a didactic work in Sanskrit. 5) *Ratna-*

mālā of Śivakoṭi 6) *Śāstrasārasamuccaya* of Māghanandi, a Sūtra work divided in four lessons 7) *Arhatpravacanam* of Prabhācandra, a Sūtra work in five lessons 8) *Āptasvarūpam*, a discourse on the nature of divinity 9) *Jñānalocanastotra* of Vādirāja (Pomarājasuta) 10) *Samavasaraṇastotra* of Viṣṇusena 11) *Sarvajñastavana* of Jayānandasūri 12) *Pārśvanāthasamasyā stotra* 13) *Citrabandhastotra* of Guṇabhadra 14) *Maharṣi stotra* (of Āśādhara) 15) *Pārśvanāthastotra* or *Lakṣmīstotra* with Sk commentary 16) *Neminātha stotra* in which are used only two letters viz *n* & *m* 17) *Śankhadevāṣṭaka* of Bhānukīrti 18) *Nityātmāṣṭaka* of Yogīndradeva in Prākrit 19) *Tattvabhāvanā* or *Sāmāyika pāṭha* of Amitagati 20) *Dharmarasāyana* of Padmanandi, Prākrit text and Sk chāyā 21) *Sārasamuccaya* of Kulabhadra 22) *Amgapannatti* of Śubhacandra, Prākrit text and Sk chāyā 23) *Śrutāvatāra* of Vibudha Śrīdhara 24) *Śalākānikṣepananiṣkāsana vivaraṇam* 25) *Kalyāṇamālā* of Āśādhara Pt PREMI has added critical notes in the Introduction on some of these authors Edited by Pt. PANNALAL SONI, Bombay Samvat 1979 Crown pp 32-324, Price Rs 1/8/-

*22 **Nītivākyāmṛtam** of Somadeva . An important text on Indian Polity, next only to *Kauṭilya Arthaśāstra* The Sūtras are published here along with a Sanskrit commentary There is a critical Introduction by PREMI comparing this work with Arthaśāstra Edited by

Pt. PANNALAL SONI, Bombay Saṁvat 1979, Crown pp. 34-426, Price Rs. 1/12/-.

* 23. **Mūlācāra** of Vaṭṭakera, part II: Prākrit text, Sk. chāyā and the commentary of Vasunandi, see No. 19 above. Bombay Saṁvat 1980, Crown pp. 332, Price Rs. 1/8/-

24. **Ratnakaraṇḍaka-śrāvakācāra** of Samantabhadra: With the Sanskrit commentary of Prabhācandra. There is an exhaustive Hindī Introduction by Pt. JUGAL KISHORE MUKTHAR, extending over more than pp. 300, dealing with the various topics about Samantabhadra and his works. Bombay Saṁvat 1982, Crown pp. 2-84-252-114, Price Rs. 2/-.

25. **Pañcasaṁgrahaḥ** of Amitagati: A good compendium in Sanskrit of the contents of *Gommaṭasāra*. Edited with a note on the author and his works by Pt. DARBARILAL, Bombay 1927, Crown pp. 8-240, Price As. 13/-.

26. **Lāṭīsaṁhitā** of Rājamalla: It deals with the duties of a layman and its author was a contemporary of Akbar to whom references are found in his compositions. There is an exhaustive Introduction in Hindī by Pt. JUGALKISHORE. Edited by Pt. DARBARILAL, Bombay Saṁvat 1948, Crown pp. 24-136, Price As. 8/-.

27. **Purudevacampū** of Arhaddāsa: A Campū work in Sanskrit written in a high-flown style. Edited with notes by Pt. JINADASA, Bombay Saṁvat 1985, Crown p. 4-206, Price As. 12/-.

28 **Jaina-Śilālekha samgraha** It is a handy volume giving the Devanāgarī version of *Epigraphia Carnatica* II (Revised ed) with Introduction, Indices etc by Prof HIRALAL JAIN, Bombay 1928, Crown pp 16 164-428-40, Price Rs 2/8/

29-30 31 **Padmacarita** of Ravisena This is the Jaina recension of Rāma's story and as such indispensable to the students of Indian epic literature It was finished in A. D 676, and it has close similarities with *Paümcariu* of Vimala (beginning of the Christian era) Edited by Pt DARBARILAL, Bombay Samvat 1985, vol i, pp 8-512 , vol ii, pp 8-436 , vol iii, pp 8-446 Thus pp about 1400 in all Price Rs 4/8/-

32-33 **Harivamsa purāna** of Jinasena I This is the Jaina recension of the Krsna legend These two volumes are very useful to those interested in Indian epics It was composed in A D 783 by Jinasena of the Punnāta samgha There is a Hindī Introduction by Pt PREMIJI Edited by Pt DARBARILAL, Bombay 1930, vol i and ii pp 48-12-806, Price Rs 3/8/-

34 **Nitivākyāmrtam**, a supplement to No 22 above This gives the missing portion of the Sanskrit commentary, Bombay Samvat 1989, Crown pp 4-76, Price As 4/-

35 **Jambūsvāmi-caritam** and **Adhyātma kamala-mārtanda** of Rājamalla See No 26 above Edited with an Introduction in Hindī by Pt JAGADISH-

CHANDRA, M. A., Bombay Saṁvat 1993, Crown pp. 18-264-4, Price Rs. 1/8/-.

36. **Triṣaṣṭi-smṛti-śāstra** of Āśādhara: Sanskrit text and Marāṭhī rendering. Edited by Pt. MOTILAL HIRACHANDA, Bombay 1937, Crown pp. 2-8-166, Price As. 8/-.

37. **Mahāpurāṇa** of Puṣpadanta, Vol. I Ādipurāṇa (Saṁdhis 1-37): A Jaina Epic in Apabhraṁśa of the 10th century A.D. Apabhraṁśa Text, Variants, explanatory Notes of Prabhācandra. A model edition of an Apabhraṁśa text. Critically edited with an Introduction and Notes in English by Dr. P. L. VAIDYA, M. A., D.Litt., Bombay 1937, Royal 8vo pp. 42-672, Price Rs. 10/-.

37(a) Rāmāyaṇa portion separately issued. Price Rs. 2.50.

38. **Nyāyakumudacandra** of Prabhācandra Vol. I: This is an important Nyāya work, being an exhaustive commentary on Akalaṅka's *Laghīyastrayam* with Vivṛti (see No. 1 above). The text of the commentary is very ably edited with critical and comparative foot-notes by Pt. MAHENDRAKUMARA. There is a learned Hindī Introduction exhaustively dealing with Akalaṅka, Prabhācandra, their dates and works etc. written by Pt. KAILASCHANDRA. A model edition of a Nyāya text. Bombay 1938, Royal 8 vo. pp. 20-126-38-402-6, Price Rs. 8/-.

39 **Nyāyakumudacandra** of Prabhācandra, Vol II See No 38 above Edited by Pt MAHENDRAKUMAR SHASTRI who has added an Introduction in Hindī dealing with the contents of the work and giving some details about the author There is a Table of contents and twelve Appendices giving useful Indices Bombay 1941 Royal 8vo pp 20+94+403-930 Price Rs 8/8/-.

40 **Varāngacaritam** of Jatā-Simhanandi A rare Sanskrit Kāvya brought to light and edited with an exhaustive critical Introduction and Notes in English by Prof A N Upadhye, M A, Bombay 1938, Crown pp 16+56+392, Price Rs 3/

41 **Mahāpurāna** of Puspadanta, Vol II (Samdhis 38 80) See No *37* above The Apabhramsa Text critically edited to the variant Readings and Glosses, along with an Introduction and five Appendices by Dr P L VAIDYA, M A, D Litt, Bombay 1940 Royal 8vo pp 24+570 Price Rs 10/-

42 **Mahāpurāna** of Puspadanta, Vol III (Samdhis 81-102) See No 37 and 40 above The Apabhramśas Text *critically edited with* variant Readings and Glosses by Dr P L VAIDYA, M A, D Litt The Introduction covers a biography of Puspadanta, discussing all about his date, works, patrons and metropolis (Mānyakheṭa) Pt PREMI'S essay 'Mahākavi Puṣpadanta' in Hindī is included here Bombay 1941 Royal 8vo pp. 32+28+314 Price Rs 6/-

42(a). **Harivaṁśa** portion is separately issued. Price Rs. 2.50.

43. **Ajanāpavanaṁjaya-nāṭakam** and **Subhadrā-nāṭikā** of Hastimalla: Two Sanskrit Dramas of Hastimalla (see also No. 3 above). Critically edited by Prof. M. V. PATWARDHAN. The Introduction in English is a well documented essay on Hastimalla and his four plays which are fully studied. There is an Index of stanzas from all the four plays. Bombay 1950. Crown pp. 8+68+120+128. Price Rs. 3/-.

44. **Syādvādasiddhi** of Vādībhasiṁha: Edited by Pt. DARBARILAL with Introductions etc. in Hindī shedding good deal of light on the author and contents of the work. Bombay 1950. Crown pp. 26+32+34+80. Price Rs. 1-50.

45. **Jaina Śilālekha-saṁgraha,** Part II (see No. 28 above): The texts of 302 Inscriptions (following A. Guérinot's order) are given in Devanāgarī with summary in Hindī. There is an Index of Proper Names at the end. Compiled by Pt. VIJAYAMURTI, M. A. Bombay 1952. Crown pp. 4+520. Price Rs. 8/-.

46. **Jaina Śilālekha-saṁgraha,** Part III (see Nos. 23 & 45 above): The texts of 303-846 inscriptions (following Guérinot's list) is given in Devanāgarī with summary in Hindī compiled by Pt. VIJAYAMURTI, M.A. There is an Index of Proper Names at the end. The Introduction by Shri G.C. CHAUDHARI is an exhaustive

study of inscriptions Bombay 1957 Crown pp 8+178 +592+42 Price Rs 10/-

47 **Pramānaprameyakalikā** of Narendrasena (A. D. 18th century) A Nyāya text dealing with Pramāna and Prameya The Sanskrit text critically edited by Pt DARBARILAL The Hindi Introduction deals with the author *and a number of topics connected with the* contents of this work Bhāratiya Jñānapītha Kashi, Varanasi 1961 Price Rs 1 50

For copies please write to—

BHĀRATĪYA JÑĀNAPĪTHA
Durgakunda Road,
Varanasi—5 (India)

Or

BHĀRATĪYA JNĀNAPĪTHA
3620/21 Netaji Subhash Marg,
Delhi—6 (India)